रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

RATANKUMAR SAMBHARIA KI KAHANIYON KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN

(मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध)

A THESIS SUBMITTED IN PARTIAL FULFILLMENT OF THE REQUIREMENTS FOR THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

बर्णाली गोगोई

BORNALI GOGOI

MZU REGN. NO: 2010703

Ph.D. REGN. NO.: MZU/Ph.D./1676 of 02.11.2020

हिंदी विभाग

मानविकी एवं भाषा संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF HUMANITIES AND LANGUAGES

जून, 2024

JUNE, 2024

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

RATANKUMAR SAMBHARIA KI KAHANIYON KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN

अनुसंधित्सु

बर्णाली गोगोई

हिंदी विभाग

By

BORNALI GOGOI

DEPARTMENT OF HINDI

शोध-निर्देशक

वरिष्ठ आचार्य सुशील कुमार शर्मा

SUPERVISOR

Senior Professor SUSHIL KUMAR SHARMA

DEPARTMENT OF HINDI

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के मानविकी एवं भाषा संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) की उपाधि के लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the Degree of Doctor of Philosophy in Hindi of Mizoram University, Aizawl.

प्रो .सुशील कुमार शर्मा
वरिष्ठ आचार्य
हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आइज़ोल-796004

केंद्रीय विश्वविद्यालय
A Central University
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

Prof. Sushil Kumar Sharma
Senior Professor
Department of Hindi
Mizoram University,
Aizawl-796004

Mobile No. - 09436105977; 09366112421; Email: sksharma19672@gmail.com ; Website : www.mzu.edu.in

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि बर्णाली गोगोई ने मेरे निर्देशन में मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल की डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) हिंदी की उपाधि हेतु **'रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन'** विषय पर शोध-कार्य किया है। प्रस्तुत शोध-कार्य अनुसंधित्सु की अपनी निजी गवेषणा का फल है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, प्रस्तुत शोध-प्रबंध या इसके किसी भी अंश को किसी विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी प्रकार की उपाधि हेतु अद्यावधि प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत शोध-प्रबंध को मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल की डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) हिंदी की उपाधि हेतु मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

(प्रो. सुशील कुमार शर्मा)

शोध-निर्देशक

हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आइजॉल
जून, 2024

घोषणा-पत्र

मैं बर्णाली गोगोई एतद् द्वारा घोषणा करती हूँ कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध की विषय सामग्री मेरे द्वारा किए गए शोध-कार्य का सुपरिणाम है। इस शोध-सामग्री के आधार पर न तो मुझे और जहाँ तक मुझे ज्ञात है, न किसी अन्य को कोई उपाधि प्रदान की गयी है और न ही यह शोध-प्रबंध मेरे द्वारा कोई अन्य उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में प्रस्तुत किया गया है। इस शोध-प्रबंध लेखन के दौरान जिन ग्रंथों की सहायता ली गयी है, उसे समुचित रूप से उद्धृत किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के सम्मुख हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी. - हिंदी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

(प्रो. संजय कुमार)	(प्रो. सुशील कुमार शर्मा)	बर्णाली गोगोई
अध्यक्ष	शोध-निर्देशक	अनुसंधित्सु

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य की गद्य विधाओं में से कहानी एक महत्वपूर्ण विधा है। कहानी ही एक ऐसी विधा है, जिसके माध्यम से कहानीकार अपने विचारों को कल्पनाओं के सहारे पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। पहले कहानियाँ मौखिक होती थीं। लोग मौखिक रूप से ही कहानियाँ सुनाते थे। उन मौखिक कहानियों को लोककथा की संज्ञा दी गई। वे कहानियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से प्रचलित रहीं। लेकिन धीरे-धीरे कहानियों ने लिखित रूप ले लिया। 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन वर्ष(1900) से ही हिंदी कहानी का प्रारंभ माना जाता है। वैसे इससे पहले भी हिंदी कहानी का पूर्व रूप मिलता है। हिंदी कहानी का विकास क्रम है – प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी(1900-1918), प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी(1919-1936), प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी(1937 से आज तक)। हिंदी कहानी का उद्देश्य मनोरंजन, नीतिपरक आदि से होते हुए यथार्थवाद, आदर्शवाद, मनोविश्लेषणवाद, आँचलिक आदि रहा है। रत्नकुमार सांभरिया समकालीन हिंदी कहानी के प्रमुख कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ समाज के यथार्थ का सजीव वर्णन करती हैं। समाज की सच्चाई का पर्दाफाश करती हैं। वे अपनी कहानियों के माध्यम से समाज का वास्तविक रूप प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियों में स्त्री की पीड़ा, दलित चेतना, वृद्ध जीवन की समस्या, पारिवारिक विघटन आदि का यथार्थ चित्रण है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय है – **"रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन।"** प्रस्तुत शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय- "रत्नकुमार सांभरिया: व्यक्तित्व और कृतित्व" है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला उप-अध्याय 'व्यक्तित्व'है। इसके अंतर्गत रत्नकुमार सांभरिया का जन्म, शिक्षा, परिवार, नौकरी और सम्मान पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरा उप-अध्याय 'कृतित्त्व' है। इसके अंतर्गत कहानी संग्रह, उपन्यास, नाटक, लघुकथा एवं आलोचनात्मक ग्रंथ का परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय **"समकालीन हिंदी कहानी लेखन और रत्नकुमार सांभरिया"** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला उप-अध्याय "समकालीन हिंदी कहानी लेखन" है। इसके अंतर्गत समकालीन की परिभाषा, समय और प्रवृत्तियों का विवेचन किया गया है। दूसरा उप-अध्याय "समकालीन हिंदी कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया" है। इसके अंतर्गत समकालीन हिंदी कहानीकार और उनकी कहानियाँ, समकालीन हिंदी कहानीकारों और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की समानताओं और असमानताओं का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय **"रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ: सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ"** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। पहला उप-अध्याय- "सामाजिक संदर्भ" है। इसके अंतर्गत समाज की परिभाषा, तत्व एवं समस्याएँ एवं रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सामाजिक जीवन का वर्णन किया गया है। इसके अंतर्गत स्त्री की समस्या, समाज में स्त्री का स्थान और स्त्री का अस्तित्व आदि का विश्लेषण किया गया है। "दलित चेतना" के अंतर्गत दलितों की समस्याओं की विवेचना की गई है। दूसरा उप-अध्याय- "सांस्कृतिक संदर्भ" है। इसके अंतर्गत संस्कृति की परिभाषा, तत्व एवं रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सांस्कृतिक जीवन का वर्णन किया गया है। इसमें रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में चित्रित सांस्कृतिक जीवन को अभिव्यक्त किया गया है।

चतुर्थ अध्याय **"रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ : राजनीतिक और आर्थिक संदर्भ"** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला उप-अध्याय 'राजनीतिक संदर्भ' है। इसके अंतर्गत राजनीति की परिभाषा और तत्व और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में राजनीतिक जीवन का चित्रण किया गया है। दूसरा उप-अध्याय 'आर्थिक संदर्भ' है। इसके अंतर्गत रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में आर्थिक संदर्भ को विवेचित किया गया है।

पंचम अध्याय **"रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का शिल्प"** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला उप-अध्याय 'रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की भाषा' है। इसके अंतर्गत रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में प्रयुक्त भाषा की विवेचना की गई है। दूसरा उप-अध्याय 'रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का शिल्प' है। इसके अंतर्गत रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में प्रयुक्त शिल्प के विविध रूप का विश्लेषण किया गया है।

अंत में, उपसंहार है। इसमें शोध प्रबंध का सम्पूर्ण सार प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरे शोध निर्देशक प्रो. सुशील कुमार शर्मा, वरिष्ठ आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल का अमूल्य योगदान है। उनके परामर्श के कारण ही इस शोध प्रबंध को पूरा करने में मैं सफल हो पाई। मैं उनका हृदयवत गहराई से आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं प्रो. संजय कुमार, डॉ. अमिष वर्मा और डॉ. सुषमा कुमारी के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने मेरे शोध कार्य के दौरान महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

मैं डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा का धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। उन्होंने शोध के दौरान मेरे विषय से संबन्धित अनेक पुस्तकें एवं सामग्री प्राप्त करने में मदद की।

मैं केंद्रीय पुस्तकालय, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के सभी कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। पुस्तकालय से मुझे बहुत सहायता मिली।

मैं कहानीकार रत्नकुमार सांभरिया के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने शोध कार्य के दौरान विषय से संबन्धित सामग्री उपलब्ध करवाने में मेरी सहायता की।

मैं अपने माता-पिता और बहनों का भी आभार व्यक्त करती हूँ। उन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया। मुझे समय से अपना शोध कार्य पूरा करने के लिए प्रेरित किया। जिनके कारण मैं अपना शोध कार्य करने में सफल हुई।

मैं अपने जीवन साथी डॉ. दिगंत बोरा को भी धन्यवाद करती हूँ। उन्होंने तकनीकी समस्याओं को समझाने में हर संभव मेरी सहायता की है।

अंत में, मैं पुनः सभी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरा सहयोग किया। जिनके सहयोग से ही मेरा यह शोध कार्य सफल हो पाया है।

बर्णाली गोगोई

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन : i- iv

प्रथम अध्याय : रत्नकुमार सांभरिया : व्यक्तित्व और कृतित्व 1-39

क. व्यक्तित्व

(i) जन्म (ii) शिक्षा

(iii) परिवार (iv) नौकरी

(v) सम्मान

ख. कृतित्व

(i) कहानी संग्रह (ii) उपन्यास

(iii) नाटक (iv) लघुकथा

(v) आलोचना

द्वितीय अध्याय : समकालीन हिंदी कहानी लेखन और रत्नकुमार सांभरिया 40-83

क. समकालीन हिंदी कहानी लेखन :

(i) परिभाषा (ii) समय

(iii) प्रवृत्तियाँ

ख. समकालीन हिंदी कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया :

(i) समकालीन हिंदी कहानीकार और उनकी कहानियाँ

(ii) समकालीन हिंदी कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ

(अ) समानताएँ (आ) असमानताएँ

तृतीय अध्याय: रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ: सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ 84-138

क. सामाजिक संदर्भ

(i) परिभाषा (ii) तत्व

(iii) समस्याएँ

(iv) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सामाजिक जीवन

(अ) स्त्री पक्ष (आ) दलित चेतना

ख. सांस्कृतिक संदर्भ

(i) परिभाषा (ii) तत्व

(iii) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सांस्कृतिक जीवन

(अ) परंपरा (आ) अंधविश्वास

चतुर्थ अध्याय : रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ: राजनीतिक और आर्थिक संदर्भ 139-180

क. राजनीतिक संदर्भ

(i) परिभाषा (ii) तत्व

(iii) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में राजनीतिक जीवन

(अ) भ्रष्टाचार (आ) सत्ता का दुरुपयोग

ख. आर्थिक संदर्भ

(i) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में आर्थिक जीवन

पंचम अध्याय : रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का शिल्प 181-229

क. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की भाषा

ख. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का शिल्प

उपसंहार 230-242

संदर्भ ग्रंथ-सूची 243-245

प्रथम अध्याय

रत्नकुमार सांभरिया : व्यक्तित्व और कृतित्व

क. व्यक्तित्व :

व्यक्तित्व किसी व्यक्ति की पहचान का मूल आधार है। व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के आचार-विचार, रहन-सहन, गुण-रूप, स्वभाव, प्रकृति आदि को ही दर्शाता है। व्यक्ति के आंतरिक और बाह्य् सभी प्रकार के गुणों का परिचायक तत्व ही व्यक्तित्व है। "व्यक्तित्व अंग्रेजी के 'Personality' शब्द का हिंदी पर्याय माना जाता है। पर्सनौलिटी की उत्पत्ति लैटिन शब्द पर्सोना से हुई है । जिसका अर्थ है - मुखौटा।"[1]

व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए डॉ. रामसागर यादव लिखते हैं कि – "विद्वान का व्यक्तित्व उसकी विद्वता के कारण बनता है। लेकिन इसके लिए शरीर को सुंदर, सुडौल, आकार-प्रकार से भरपूर हो । केवल विद्या से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को उदीयमान नहीं कर सकती।"[2]

डॉ. चोटलिया ने व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए अपना मत व्यक्त किया है – "व्यक्तित्व वस्तुतः 'व्यक्ति' शब्द की भावनात्मक संज्ञा रूप है, अतः जिन गुणों एवं विशेषताओं का प्रभाव व्यक्ति विशेष पर पड़ता है, उन सभी को व्यक्तित्व के अंतर्गत माना जा सकता है।"[3]

व्यक्ति के निर्माण में जिन गुणों की आवश्यकता है, उन गुणों को ही व्यक्तित्व कहा जा सकता है। अर्थात व्यक्ति के उन गुणों को व्यक्तित्व कहा जाता है, जिनके कारण व्यक्ति के स्वभाव दूसरे व्यक्ति से अलग दिखता है। व्यक्तित्व ही किसी भी व्यक्ति के आधारभूत तत्व है। उन्हीं गुणों के कारण व्यक्ति समाज में जाना जाता है। उन गुणों के अभाव में व्यक्ति व्यक्ति न रहकर केवल जानवर बन सकता है। व्यक्तित्व ही लोगों को जानवर से आदमी बनाता है। महान व्यक्तियों को महान उन व्यक्तियों के गुण ही बनाते हैं, जिसके कारण वे लोग महान बन पाए हैं। व्यक्तित्व ही व्यक्ति को महान बनाता है और व्यक्तित्व ही व्यक्ति को गिराकर जानवर भी बनाता है।

व्यक्तित्व से ही व्यक्ति महान और श्रद्धेय बनता है। आज यदि गौतम बुद्ध सबके पूज्य और श्रद्धेय हैं, तो उसका मूल कारण उनके व्यक्तित्व ही हैं। अपने व्यक्तित्व के कारण ही आज महात्मा गांधी, रवींद्र नाथ टैगोर आदि व्यक्ति महान और श्रद्धेय हैं। व्यक्तित्व ही सबसे पहले लोगों के सम्मुख उपस्थित होता है। किसी से मिलने से या यहाँ तक कि बाते करने से, लोगों के पहनावें से लोगों के व्यक्तित्व को समझ सकते हैं। किसी को आकृष्ट करना या किसी को अपनी ओर आकर्षित करने में व्यक्तित्व ही सर्वोपरि है। व्यक्तित्व से लोग एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। लोग दूसरों के व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं, यहाँ तक कि दूसरे व्यक्ति के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर लोग उस व्यक्ति की तरह ही बनना भी चाहता है। व्यक्तित्व के कारण ही लोग दूसरे व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर पाते हैं। व्यक्तित्व में किसी व्यक्ति के जन्मगत, अर्जित सभी गुणों का समंवय हैं।

किसी रचनाकार या साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने से पूर्व उनके व्यक्तित्व तथा जीवन दृष्टि का आलोचना करना अत्यावश्यक है। साहित्यकार के जीवन के अध्ययन से ही उनकी जीवन दृष्टि, साहित्यिक पृष्ठभूमि आदि को समझ सकते है। जिससे साहित्यकार के साहित्य को समझने में सहायता मिलती है। साहित्यकार के जीवन तथा उनकी जीवन दृष्टि के बारे में साहित्यकार के परिचित साहित्यकार एवं साहित्य से ही जान सकते है। प्रत्येक साहित्यकार के साहित्य में उसके जीवन, परिवेश, जीवन दृष्टि आदि की ही झलक दिखाई देती है। दूसरे शब्दों में कहें तो साहित्य साहित्यकार का ही जीवन है। उसके द्वारा भोगा हुआ जीवन यथार्थ का चित्रण साहित्यकार अपने साहित्य में करता है। साहित्य को विद्वानों ने समाज का दर्पण कहा है। साहित्यकार भी अपने समय के समाज तथा संस्कृति को साहित्य में अभिव्यक्त करता है। अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि परिवेशों को साहित्यकार साहित्य के द्वारा पाठकों तक पहुँचाने का कार्य करता है। साहित्यकार अपनी कल्पना और अनुभूति के माध्यम से अपने जीवन यथार्थ, परिवेश आदि को साहित्य में रूप प्रदान करता है। इसलिए साहित्य के अध्ययन से पूर्व साहित्यकार के जीवन, उसके मनोजगत आदि का अध्ययन करना आवश्यक है। जो पाठक को

साहित्यकार की साहित्यिक पृष्ठभूमि को समझने में सहायक सिद्ध हुआ है।

साहित्य को पढ़कर पाठक आनंद का प्राप्त करता ही है, परंतु साहित्य का मूल्यांकन साहित्यकार के जीवन तथा उसकी पृष्ठभूमि को समझकर ही किया जा सकता है। साहित्यकार अपने साहित्य में अपने समाज तथा जीवन को ही रूप प्रदान करता है। इसलिए साहित्यकार के साहित्य का मूल्यांकन उसके जीवन तथा पृष्ठभूमि को समझकर ही करना चाहिए।

(i) जन्म : रत्नकुमार सांभरिया का जन्म हरियाणा के रेवाड़ी तहसील के भाड़ावास गाँव में 6 जनवरी, 1956 को हुआ। उनके पिता का नाम श्री सिंहराम सांभरिया और माता का नाम जुगरी देवी है।

(ii) शिक्षा : रत्नकुमार सांभरिया ने 1972 में बलबीर सिंह अहीर हायर सेकेण्डरी स्कूल, रेवाड़ी से दसवी कक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने सन् 1976 में स्नातक की परीक्षा अहीर महाविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा से उत्तीर्ण की। उन्होंने सतीश पब्लिक महाविद्यालय से सन् 1978 में बी.एड की डिग्री प्राप्त की। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से 1986 में रत्नकुमार सांभरिया ने बी.जे.एम.सी से पत्रकारिता में डिप्लोमा कोर्स किया।

(iii) परिवार : रत्नकुमार सांभरिया के पिता का नाम श्री सिंहराम सांभरिया और माता का नाम जुगरी देवी है। उनकी दो बहनें हैं- अंगूरी देवी और प्रेमलता। जिनमें अंगूरी देवी का देहांत हो चुका है। रत्नकुमार सांभरिया सबसे छोटे हैं। रत्नकुमार सांभरिया का विवाह 31 मई 1974, को श्रीमती रामरती देवी से हुआ था। उनकी पत्नी का नाम श्रीमती रामरती देवी है। उनके दो सुपुत्र और एक सुपुत्री है। पुत्रों के नाम – हेमंत सिंह और सोरभ सिंह है। पुत्री का नाम अंजुलता है।

(iv) नौकरी : "इनकी नियुक्ति सन् 1980 के शुरुआत में प्राइमरी शिक्षक के रूप में उदयपुर की धरियावद पंचायत समिति की राजकीय प्राथमिक पाठशाला, गदवास में हुई।"[4] "सन 1984 में

कनिष्ठ लेखाकार के रूप में जयपुर में इनकी नियुक्ति हुई। सन 1990 तक इस पद पर कार्यरत रहने के पश्चात आकाशवाणी के जोधपुर और जयपुर केन्द्रों पर हिंदी अनुवादक रहे। जुलाई 1996 को राजस्थान सरकार के जनसंपर्क अधिकारी बने। वर्तमान में सांभरिया जी राजस्थान सूचना एवं जनसंपर्क सेवा के वरिष्ठ अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं।"[5]

(v) सम्मान : रत्नकुमार सांभरिया को अनेक सम्मानों से सम्मानित किया गया है। "आखेट कहानी पर वर्ष 2005 में 'नवज्योति कथा सम्मान'। 'चपड़ासन' कहानी के लिए उपराष्ट्रपति द्वारा 'कथा चयन सम्मान' से सम्मानित हुए तथा 'कथादेश अखिल भारतीय हिंदी कहानी' प्रतियोगिता में 'बिपर सूदर एक कीने' कहानी को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। राजस्थान पत्रिका सृजनात्मक पुरस्कार 2008 अम्बेडकर राइट मूवमेंट ऑफ कल्चर एंड लिटरेचर, नागपुर की ओर से राष्ट्रीय पुरस्कार उनकी नाट्यकृति 'वीमा' के लिए 'अश्वघोष नाट्य, पुरस्कार' से सम्मानित किया। कथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान जोधपुर की ओर से राज्य स्तरीय कथा अलंकरण समारोह में 19 दिसम्बर, 2021 में रत्नकुमार सांभरिया को पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी कथा सम्मान से सम्मानित किया गया। 14 अप्रैल, 2022 को डॉ. अम्बेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसायटी, जयपुर द्वारा डॉ. अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष में डॉ. अम्बेडकर भवन जयपुर में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने जनकथाकार श्री रत्नकुमार सांभरिया को 'भीम रत्न' सम्मान से सम्मानित किया।"[6]

रत्नकुमार सांभरिया का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली है। वे एक संघर्षशील रचनाकार हैं। उनका जीवन संघर्षो का पर्याय है। वे बचपन से ही बहुत परिश्रमी रहे हैं। जिसके फलस्वरूप आज वे एक प्रतिष्ठित साहित्यकार के रूप में हमारे समक्ष हैं। रत्नकुमार सांभरिया एक सहज एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। किसी भी रचनाकार की रचना का अध्ययन रचनाकार के व्यक्तित्व के अध्ययन तथा अनुशीलन के अभाव में अधूरा ही रहता है। क्योंकि साहित्यकार का साहित्य उनके व्यक्तित्व तथा परिवेश पर आधारित होता है।

ख. कृतित्व :

रत्नकुमार सांभरिया एक प्रतिभा सम्पन्न कहानीकार है। उन्होंने लिखने की शुरुआत स्कूल जीवन से ही कर दी थी। इसके बाद से वे निरंतर लिखते ही गए। उन्होंने बहुत सारी कृतियाँ लिखी है। उनकी अधिकतर कृतियाँ ग्रामीण जीवन पर आधारित हैं। उन्होंने ग्रामीण लोगों और उनकी समस्याओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, लघुकथा, आलोचना कृति लिखी हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कृतियाँ निम्नलिखित हैं –

(i) कहानी संग्रह : रत्नकुमार सांभरिया द्वारा लिखित पाँच कहानी संग्रह है। जो निम्नलिखित हैं- (1) 'हुकम की दुग्गी' (2003), (2) 'काल तथा अन्य कहानियाँ' (2004), (3) 'खेत तथा अन्य कहानियाँ' (2012), (4) 'एयरगन का घोड़ा' (2016), और (5) 'दलित समाज की कहानियाँ' (2017)।

1. हुकम की दुग्गी : 'हुकम की दुग्गी' रत्नकुमार सांभरिया का पहला कहानी संग्रह है। "यह रचना प्रकाशन, जयपुर से 2003 ई. में प्रकाशित है।"[7] इस संग्रह में 15 कहानियाँ संकलित हैं : फुलवा, बकरी के दो बच्चे, अनुष्ठान, आखेट, बूढ़ी, द्वंद्व, गूंज, सनक, इत्तफाक, बिल्लो का ब्याह, शर्त, मियाँजान की मुर्गी, हुकम की दुग्गी, मैं जीती और भैंस। रत्नकुमार सांभरिया ने अपने इस संग्रह में सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है। उन्होंने समाज में व्याप्त समस्याओं को यहाँ चित्रित किया है। उन्होंने सामाजिक, आर्थिक रूप से शोषित लोगों का मार्मिक चित्रण किया है। इस कहानी संग्रह में उन्होंने दलित, स्त्री, दिव्यांगों का सजीव वर्णन किया है। इस संग्रह की कहानियों से स्पष्ट है कि कमजोर लोग कभी हार नहीं मानते। वे मेहनत करके अपने हक के लिए लड़ते हैं। शोषक वर्ग शोषितों का खूब शोषण करता है। इस संग्रह में कहानीकार ने दिखाया है कि गरीबी, निर्धनता से जुझ रहे लोगों की समस्याओं का कोई अंत नहीं है। उन लोगों को जीवन जीने के लिए अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस संग्रह की

कहानियों में समाज में फैले भ्रष्टाचार का भी चित्रण किया गया है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों के पात्रों में जीने की इच्छा एवं साहस भरा है। कहानियों में फुलवा, मंगला, रेवती, अगनी, पानारम आदि ऐसे पात्र हैं जो साहस से भरे हैं। उनका यह साहस ही उन्हें कामयाबी तक ले जाता है। वे अपने साहस के कारण समस्याओं का डटकर सामना करने में सक्षम हैं। जीवन की समस्याओं को देखकर वे भाग नहीं जाते हैं; बल्कि उन समस्याओं को समाधान करने का प्रयास करते हैं।

'फुलवा' रत्नकुमार सांभरिया की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है। इस कहानी में उन्होंने दलित स्त्री की समस्या का चित्रण किया है। साथ ही जमींदारों द्वारा किए गए शोषण का चित्रण है। कहानी में दिखाया है कि जमींदार कमजोर एवं गरीब लोगों को अच्छे से रहते हुए देखकर सहन नहीं कर पाता। गरीबों को अमीर बनता देख उनका मन तनाव में रहता है। कहानी में फुलवा के साथ ऐसा ही होता है। गाँव में फुलवा बहुत ही गरीब थी। वह अपने बेटे को मेहनत करके पढ़ाती है। उसका बेटा शहर में नौकरी पाता है और फुलवा भी बेटे के साथ चली जाती है। एक दिन गाँव के जमींदार का बेटा शहर फुलवा के घर आता है। फुलवा का घर देख वह चौक जाता है। फुलवा रामेश्वर को पूरा घर दिखाती है। वह अपना डाइनिंग टेबल दिखाकर कहती है – "रामेश्वर जी, शाम को हम सब यहीं बैठकर भोजन करते हैं। मेहमान भी यहीं भोजन करते हैं। आज रात तुम भी यहीं बैठकर भोजन करोगे।"[8] रामेश्वर को सहन नहीं होता है कि फुलवा उसे साथ बैठकर खाने को कह रही है। "रामेश्वर को सुई सी चुभी। उसके यहाँ तो मेहमानों के लिए चटाई बिछती है।"[9] गाँव का कोई अगर अच्छे से रहता है तो जमींदार को या समाज में सभी को खुश होना चाहिए। कहानी में इसका उल्टा होता है। फुलवा की उन्नति होता देख रामेश्वर खुश होने के बजाये गुस्सा हो जाता है। फिर फुलवा उसे अपना कमरा दिखाती है। फुलवा का कमरा देख उसे बुरा लगता है – "कमरे की भव्यता को देखकर रामेश्वर का रोम-रोम सुलग उठा।"[10] फुलवा जब अपना घर दिखाती है रामेश्वर बार-

बार अपने घर से तुलना करने लगता है। वह फुलवा को खुश देखकर उसके अतीत को याद करने लगता है। उसको विश्वास ही नहीं होता कि यह वही फुलवा है, जिसके घर के अंदर-बाहर बरसात होती थी। इस कहानी में कहानीकार ने गरीब और अमीर लोगों के अंतर को चित्रण किया है। अमीर वर्ग के लोग कभी नहीं चाहते हैं कि गरीब घर का कोई व्यक्ति अमीर बनकर उनकी बराबरी करें।

'बकरी के दो बच्चे' कहानी में जमींदारों द्वारा गरीबों पर किए गए अत्याचार का चित्रण है। कहानी में जमींदार का बेटा गरीब दलपत की बकरी के दो बच्चों को मार देता है। दलपत उसकी शिकायत करने जमींदार के पास जाता है। जमींदार अपने बेटे को कुछ कहने के बजाये दलपत को कहता है – "धमका दूँ, धर्मपाल को? भैंसे मार दी हों जैसे तेरी। ढेड़ और भेड़ को हम जीव नहीं मानते। समझे।... ज्यादा मुंहजोरी की न, तो तुझे भी...।"[11] जबकि जमींदार को दलपत की मदद करनी चाहिए थी। उसकी मदद करने के बजाये उसे ही धमकी देने लगता है। दलपत अपनी शिकायत लेकर पुलिस के पास भी जाता है। पुलिस भी मदद करने से मना कर देती है। पुलिस एफ.आई.आर ही नहीं लिखती। इस कहानी में कहानीकार ने शक्ति तथा सत्ता के दुरुप्रयोग का वर्णन किया है।

दलपत अंत में अपने दोस्त शर्मचंद के पास जाता है। उसे सारी बात कहता है। शर्मचंद कहता है कि – "मैं पंच हूँ, गाँव का। धर्मपाल तो बावला है, परंतु मैं दानसिंह को अहसास कर देना चाहता हूँ, हम भी आदमी हैं, जैसा दानसिंह। हम भी वैसे ही जन्में हैं, जैसे दानसिंह। थाना-कचहरी। ये खूनी जोंकें हमारी मेनत पर इतनी मुटा गई हैं कि अब फटीं। हम मेनत के माई-बाप होते हुए भी जीव नहीं हैं। दलपत, ये इसलिए बड़े हैं, हम इनको बड़ा मानते हैं। जिस दिन हम इन्हें छोटा मानने लग जाएंगे, ये छोटे हो जाएंगे। इतने छोटे, जितना हम चाहेंगे।"[12] कहानीकार ने यहाँ जमींदार (दानसिंह) जैसे लोगों के प्रति विद्रोह का भाव उत्पन्न किया है।

'अनुष्ठान' कहानी में समाज में फैले अंधविश्वास का चित्रण है। कहानी में एक तांत्रिक बच्चे होने का आश्वासन देकर अनुष्ठान के नाम पर स्त्रियों को अपने हवस का शिकार बनाता है। स्त्रियाँ भी बच्चा होने की चाह में तांत्रिक का कहा मान लेती है। कोई उस पर सवाल नहीं करता। तांत्रिक अनुष्ठान के नाम पर दूसरों के बच्चों की बलि देने को कहता है। गाँव की कई स्त्रियाँ उसकी बात मान भी लेती है और उसके जाल में फस जाती है। पर इससे कुछ नहीं होता। इस तरह से तांत्रिक स्त्रियों की इज्जत के साथ-साथ निर्दोष बच्चों को भी मार देता है। कहानी में सरस्वती के साथ भी ऐसा ही होता है। उसे किसी बच्चे की बलि देने को कहा जाता है। पहले तो वह मना कर देती है। फिर वह सोचने लगती है – "बंजर भूमि और बाँझ नारी की कोई कदर नहीं है। दूसरे की क्षण वह विचारने लगी – कईयों के सात-सात लड़के हैं। न तो उनके पेट में रोटी है और न तन पर कपड़ा है। भगवान कृष्ण ने कहा है, देह चोला बदलती रहती है, आत्मा अमर है। अगर उनमें से किसी एक की आत्मा मेरी कोख में देह धारण कर लेती है, तो मैं माँ बन जाऊँगी और बालक कुलदीपक। आदमी की समझ कितनी-सी होती है। आज सारा गाँव मेरी छाया को भी दुत्कारता है, कल बधाई देने दौड़ेगा।"[13] सरस्वती बच्चे की चाह में यह तक भूल जाती है कि वह जिस बच्चे की बलि देगी, वह भी किसी माँ का बेटा है।

'आखेट' कहानी में एक जमींदार की स्त्री के प्रति नीच हरकत का चित्रण है। जमींदार (नानक सिंह) की बुरी नजर रेवती पर थी। वह रेवती को हवस का शिकार बनाने की कोशिश करता है। गाँव में जमींदार अपनी मनमानी करता है। वह गाँव की अनेक स्त्रियों के साथ ऐसा कर चुका था। किसी में भी जमींदार के खिलाफ जाने की हिम्मत न थी। वह अपनी ताकत तथा शक्ति का गलत प्रयोग करके स्त्रियों का शोषण करता था। कहानीकार ने रेवती के माध्यम से काम-वासना की आग से झुलसे हुए जानवरों का विरोध करता है। वे कहते हैं कि स्त्रियाँ स्वयं विरोध में खड़ी नहीं होगी, तो इस समाज में उनका शोषण होता ही रहेगा। गाँव में रेवती पहली स्त्री थी जिसने साहस दिखाया –"हद दर्जे के ऐयाश नानक सिंह ने गाँव की कई बहू-

बेटियों की आबरू पर हाथ डाला था। उस पर हाथ छोड़ने की किसी की हिम्मत नहीं हुई थी। अबलाए थीं। छटपटातीं। मुरझा जातीं। रेवती वीरांगना निकली। उसने सूद समेत सब वसूल किया था। सोमा सेर, बहू सवा सेर। नानक सिंह जिसे कुल्फी समझ रहा था, उसी से मुँह झुलसा बैठा था।"[14] इसी साहस के कारण वह जमींदार से बच पाती है। कहानी में इसका चित्रण है – "रेवती ने आव देखा न ताव, जिस खुरपी से वह घास छील रही थी, उसी को नानक सिंह के नाक में भोंक दिया। खुरपी लगते ही उसके नाक का अग्रभाग निबोरी की तरह लटक आया था। शरीर लहूलुहान। कपड़े रंग बादल गए थे।"[15] कहानी में रेवती को एक साहसी स्त्री के रूप में दिखाया है।

'हुकम की दुग्गी' कहानी में पारिवारिक विघटन का वर्णन हुआ है। साथ ही समाप्त होती मानवता का भी चित्रण है। पिता (जतनलाल) के मरने के बाद ही दोनों बेटे (शेरु और मेरु) जमीन-जायदाद का बंटवारा करने लगते हैं – "जब तक जतनलाल रहे। घर एक था। आँगन एक था। उनके चोला छोड़ते ही घर दुवार बंट गए थे। बीच आँगन दीवार खड़ी हो गई थी, सिर सवानी। जतनलाल की तीये की बैठक के दिन, जब लोग बैठने के लिए आ रहे थे, शेरु-मेरु में घर-बार का बंटवारा हुआ था। बंटवारे के समय की ही किसी बात को लेकर उनमें अबोला व्याप्त हो गया था। जैसे सास-बहू के बीच महीनों बातचीत नहीं हो कर भी घर का काम सुनियोजित और अनुशासित ढंग से चलता रहता है। शेरु-मेरु में आपस में पत्ता खड़कने तक की भी बोलचाल नहीं थी। तो भी दोनों भाई साथ-साथ खेलते थे, रोज।"[16]

कहानी में शेरु का बेटा बीमार पड़ता है। उसकी पत्नी के बुलाने पर भी वह नहीं आता। वह ताश खेलने में इतना गुल था कि बेटे की बीमारी को अनसुना कर देता है। अंत में बेटे की मृत्यु हो जाती है। शेरु तब भी नहीं आता। "शेरु के समूचे चौक में औरतें जुड़ी बैठी थीं। उनकी आँखों में आँसू थे। बाहर तक पुरुष खड़े थे। शोक संतप्त। प्रलय। बदहवास कविता ने अपने मृत बच्चे को गोदी में उठाया। वह जैसे रणचंडी बन गई थी। वह सबके बीचों-बीच होती हुई बच्चे को लेकर

भाग छूटी थी। बाहर आकर उसने बच्चे को शेरु की गोद में डाल दिया था। उसकी आँखों के आँसू सूख गए थे। आर्तनाद फूटा-'पापी, खूब खेलते रहना। बच्चे को माटी दे आओ। दिन डूब जाएगा।' मृत बच्चे की खरगोश की आँखों जैसी निरीह आँखें शेरु को देख रही थीं, मानो कहती हों – 'उठो बापू।' शेरु ने बच्चे को ढेले की तरह नीचे रख कर हुकम की दुग्गी चल डी थी।"[17] शेरु पर ताश का नशा इतना चढ़ गया था। बेटे की मृत्यु पर भी उसे गम नहीं हुआ। बेटे की लाश को वस्तु की तरह नीचे रख देता है। वह ताश खेल में इतना डूब गया था कि अपने मृत बच्चे को एक बार देखने को भी समय नहीं था। उक्त कहानी में कहानीकार ने समाप्त होती मानवता का चित्रण किया है।

उक्त कहानी संग्रह में रत्नकुमार सांभरिया ने समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। उन्होंने दलित जीवन, अंधविश्वास, दिव्यांग जीवन, स्त्री समस्या आदि का यथार्थ चित्रण अंकित किया है। उनके कहानियों के पात्र निडर एवं साहसी है। उनकी कहानियों में समाज के यथार्थ का स्वर है।

2. काल तथा अन्य कहानियाँ : 'काल तथा अन्य कहानियाँ' रत्नकुमार सांभरिया का दूसरा कहानी संग्रह है। यह कहानी संग्रह रचना प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित हुआ है। "रचना प्रकाशन, जयपुर से 2004 ई. में प्रकाशित कहानी संग्रह में लेखक ने दलित चेतना और सामाजिक सरोकार को माध्यम बनाया है।"[18] इस कहानी संग्रह में रत्नकुमार सांभरिया की बारह कहानियाँ संकलित हैं। लाठी, बात, झंझा, चपड़ासन, धूल, काल, चमरवा, कील, डंक, झुनझुना, तलाश और मूंगफली के दाने। यह कहानी संग्रह सामाजिक परिवेश पर आधारित है। इस संग्रह की कहानियों के माध्यम से रत्नकुमार सांभरिया ने समाज में फैली सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। पारिवारिक विघटन, जातिभेद, भ्रष्टाचार, स्त्री समस्या, वृद्ध समस्या, आदि यहाँ चित्रित है। इस कहानी संग्रह में भी पात्रों को साहसी चित्रित किया

है। वे कभी हार नहीं मानते हैं। अपनी मंजिल तक पहुँचने के लिए वे जी जान से प्रयास करते हैं। कहानीकार ने समाज की गरीबी का भी सजीव चित्रण किया है। कहानी के पात्र गरीब होते हुए भी मेहनती हैं। वे मेहनत करके अपना घर तथा परिवारों का पोषण करते हैं। वे अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिए लड़ने से पीछे नहीं हटते हैं। कहानीकार ने गरीबी को रूप प्रदान किया है। इस संग्रह की कहानियों के माध्यम से शिक्षा के महत्व को पाठकों के सामने उजागर किया है। वे दिन रात मेहनत करके भी अपने बच्चे को शिक्षित करना चाहते हैं। कहानीकार ने शिक्षा की उपयोगिता तथा महत्व को पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

'लाठी' कहानी में सांप्रदायिकता का चित्रण किया गया है। कहानी में कहानीकार ने हिन्दू मुस्लिम की समस्या को रूप प्रदान किया है। कहानी में दिखाया गया है कि सांप्रदायिकता की भावनाएँ लोगों के मन में इस प्रकार घर कर गई है कि थोड़ी सी गलत फहमी से एक दम्पति का बुरा हाल होता है। वह दम्पति रात भर डर के कारण सो नहीं पाते हैं। हिन्दू गाँव में एक मुस्लिम दम्पति रहते थे। एक दिन उनके पड़ोस के हरमन चचा एक लाठी खरीदकर लाता है। उस लाठी को देखकर सलमा को लगता है कि हरमन उन्हें मारने के लिए लाठी खरीदकर लाया है। साथ ही वह दम्पति सोचता है कि बाबरी मस्जिद की मसले के कारण वे लोग ऐसा कर रहे हैं। बाबरी मस्जिद के मसले से पूरे भारत वर्ष में सांप्रदायिक दंगा हुआ था। चाँद सलमा से कहता है- "गांठ है, सलमा। दस बरस हुए, जब से बावरी मस्जिद का मसला उठा है, दो मजहबों में दरार पैदा हो गई है। मुल्क के नेताओं का सवारथ दो कोमों के भाईचारे का गला रेत रहा है। फिरकापरस्ती के पैर गाँवों तक आ गए हैं। आसपास के दस बीस गाँवों में एक हमारा घर है, मुसलमान का। एक समय रोटी रुस्तम थी, हरमन चचा के लिए। आज दो पैसे हाथ में हो गए हैं न, धर्म के गुण गा रहे हैं, हरमन चचा।"[19]

कहानी में दिखाया है कि गलतफहमी मनुष्य के भीतर हिंसा उत्पन्न करती है। हिंसा का भाव अच्छे से अच्छा व्यक्ति की सोच को खराब कर देता है। चाँद सोचता है कि हरमन सच में उनको मारने के लिए लाठी खरीदकर लाया है। जब रात को हरमन साँप भगाने के लिए लाठी से मिट्टी पर प्रहार करता है। जिसे सुनकर चाँद का परिवार सोचता है कि वह उन्हें चेतावनी दे

रहा है। सांप्रदायिकता के कारण ही पड़ोसी एक-दूसरे को दुशमन मानने लगता है। वे एक दूसरे को धर्म के आधार पर दुश्मन मानने लगते हैं। 'लाठी' कहानी में सांप्रदायिकता के भयानक रूप का चित्रण हुआ है। जिसके परिणामस्वरूप चाँद सोचता है कि हरमन उसको मारने के लिए लाठी लाया है। सांप्रदायिकता दो धर्म के लोगों में मतभेद सृष्टि करती है। गलतफहमी पैदा करती है। उक्त कहानी में सांप्रदायिकता और उसके दुष्परिणाम को चित्रित किया गया है।

'बात' कहानी में स्त्री समस्याओं का चित्रण किया गया है। कहानी में दिखाया गया है कि अकेली स्त्री कहीं पर भी सुरक्षित नहीं है। वह अपने घर से बाहर डर-डर कर जाती है। सुरती अपनी गरीबी के कारण बहुत कुछ झेलती है। गरीब होने के कारण स्कूल के मास्टर उसके बेटे के साथ बुरा व्यवहार करता है। स्कूल की फीस जमा करने में असमर्थ होने के कारण सुरती के बेटे को सजा दी जाती है। पढ़ाई में तेज होने के पश्चात भी गरीबी सजा पाने के लिए मजबूर करती है। घर की हालत देखकर बेटा माँ को नहीं बताता है। सुरती को यह बात स्कूल के सामने से जाते हुए पता चलता है। वह स्कूल के शिक्षक को पैसा देने का वादा करके घर आती है। न चाहते हुए भी पैसा माँगने के लिए उसे धींग के पास जाना पड़ता है। धींग सुरती को पैसा देने के लिए तैयार हो जाता है। लेकिन पैसा के बदले वह सुरती को पाना चाहता है। सुरती मजबूर थी। उसे बेटे के लिए पैसे चाहिए थी। सुरती उसे कहती है कि यदि एक महीना में वह पैसा नहीं लौटा पाई तो वह उसकी बात मानेगी। कहानी में इसका वर्णन है- "इज्जत से बड़ी रकम नहीं होती। 'बात' गिरवी रख रही हूँ। एक महीने में पैसे नहीं लौटाऊँ.....।"[20] धींग जैसे व्यक्ति स्त्री को भोग तथा विलास की वस्तु समझता है। वे किसी न किसी तरह से केवल स्त्रियों का शोषण करना चाहते हैं।

सुरती इतनी बेवस थी कि अपनी बात गिरवी रख देती है। धींग के पैसे के लिए सुरती दिन-रात मेहनत करने लगती है। अंत में वह पैसा जुटा लेती है। धींग चालाकी से सुरती के पैसे छुपा देता है। सुरती को पता चल जाता है। वह धींग के पास सबक सिखाने चली जाती है। कहानीकार ने एक स्त्री की मेहनत को दिखाने के साथ-साथ धींग जैसे लोगों पर करारा प्रहार किया है। धींग जैसे लोग इतने बुरे होते हैं कि सुरती जैसे लोगों का जीना मुश्किल कर देते हैं।

उनकी मजबूरी देख उनका फायदा उठाने की कोशिश करता रहता है। लेकिन सुरती हार नहीं मानती। वह अपनी समस्या का सामना करती है।

'झंझा' कहानी में कहानीकार ने सत्ता का गलत प्रयोग और भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था का चित्रण किया है। कहानी का प्रमुख पात्र दरयाव है। गाँव के जमींदार का बेटा जमीन-जायदाद के लालच में आकर अपने भाई की हत्या करता है। पुलिस उसे पकड़ने के लिए ढूँढती है। परंतु जमींदार तथा उसका बेटा पुलिस को रिश्वत देकर दरयाव को फसाने के लिए कहता है। पुलिस भी मान जाती है। वह भी वैसा ही करने की कोशिश करती है। वह जमींदार से पिस्तौल लेकर उसकी फिंगर प्रिंट साफ करता है। फिंगर प्रिंट साफ कर वह पिस्तौल दरयाव को पकड़ने को कहता है। "पुराने फिंगर प्रिंट साफ करने के लिए दरोगा ने पिस्तौल को रुमाल से पोंछा। पिस्तौल रुमाल में फिर लपेटा। उसने पिस्तौल रुमाल सहित दरयाव की ओर बढ़ा कर कहा- 'इसे ठीक से पकड़ ले। रुमाल हटा कर मुझे पकड़ा दे। खिड़की से देख, जो कीकर नजर आ रही है न, उसकी जड़ में गोली दाग दे। ध्यान रखना, कभी छिटक कर तुझे ही मार दे।"[21] दरयाव सब देखता है, उसे अनहोनी का पता चल जाता है। वह दारोगा को जमींदार से रिश्वत लेते हुए देखता है। इस कहानी में कहानीकार ने जमींदार तथा दारोगा की नजर में स्त्री रूप को भी उजागर किया है। वे दरयाव को फसाकर उसकी पत्नी को अपने साथ रखकर शारीरिक शोषण करने की बात करता है। सारी बातें सुनने के पश्चात दरयाव पुलिस को ही मार देता है। कहानी में दिखाया गया है कि प्रशासन तथा जमींदार अपने फायदे के लिए गाँव के गरीब लोगों का शोषण करता है। जमींदार अपनी गलतियों को दूसरों पर थोपने का प्रयास करता है। वह अपने बेटे को बचाकर दरयाव को फसाने के बारे में सोचता है।

'धूल' कहानी पारिवारिक विघटन पर आधारित है। कथा हुलसीराम और धूलसिंह पर आधारित है। हुलसीराम मेहनत करके अपने छोटे भाई धूल को पढ़ाता है। धूल को नौकरी लगने के बाद वह अपनी पत्नी के साथ शहर में जाकर रहने लगता है। वह शहर जाकर अपने भाई को भूल जाता है। हुलसीराम सात साल बाद अपनी जमीन छुड़ाने को कहने के लिए भाई

के पास जाता है। परंतु धूल अपने बड़े भाई से अधिक महत्व बिल्ली को देता है। वह सीधे मुँह भाई से बातें नहीं करता है। यहाँ तक कि धूल के नौकर भी हुलसीराम के साथ बुरा व्यवहार करते हैं। दिन भर इंतजार करने के बाद धूल आता है। परंतु वह उसे अनदेखा कर चला जाता है। वह एक बार भी अपने भाई का हाल-चाल नहीं पूछता है। वह अपने भाई के सामने मदद के लिए हाथ फैलाए खड़ा रहता है। ऑफिस से फोन आते ही वह चला जाता है। जाते वक्त वह बिल्ली को प्यार से पुचकारता है। "धूलसिंह गाड़ी की ओर बढ़ने लगा था। बिल्ली पूंछ हिलाती जमीन सूंघती धूलसिंह के पैरों फुदकती चल रही थी। उसने उसे उठाया। हाथ फेर कर उसे पुचकारा। उसके मुंह से मुंह भिड़ा कर उसे चूमा और लाड़ से उसे नीचे छोड़ दिया था, 'जा'।"[22] धूल भाई से ज्यादा बिल्ली को महत्व देता है। उसके पास भाई से बात करने तक का समय नहीं होता। धूल बस घर जाने में देर होगी, भाड़ा बहू से ले जाय कहकर चला जाता है। इतने दिनों बाद आए भाई को वह रोकता तक नहीं। भाई को कुछ कहता तक नहीं। "मुझे आने में देर हो जाएगी, आज ही घर चले जाना। हाँ, अगर किराया भाड़ा न हो, माला से ले जाना।"[23] इस घटना से हुलसीराम अंदर से टूट जाता है। जिस भाई के लिए उसने अपनी जमीन तक गिरवी रख दिया। वह नौकरी मिलने के पश्चात उसे अनदेखा कर देता है। कहानीकार ने इस कहानी के माध्यम से रिश्तों में बढ़ती दूरी को प्रस्तुत किया है।

'काल' कहानी में अकाल में होने वाली समस्या का चित्रण किया गया है। कहानी का पात्र मिनखू इस समस्या का शिकार होता है। यह लोग चार साल से इस अकाल को झेल रहे थे। मिनखू खेत में बादल देखने पहुँच जाता था। वह बादलों को देख वर्षा होने की सोचता था। लेकिन बादल वर्षा में बदलने के बजाये गायब हो जाता था। "बेबसियाँ, बदहवासी का सबब बनती हैं। चार साल से अकाल की मार झेलता भूखा-प्यासा मिनखू शिखर दोपहर अपने खेतों में आ गया था, बादल देखने। घर उसके सिर पर मटमैले भूरे रंग की तीतर पंखी एक बदली मंडरा रही थी, राह भूली बच्ची सी। सिर पर मुंडासा बांधे, कंधे पर अंगोछा डाले, वह बदली

देखता, बदली के साथ-साथ खेत आया था। बदली पर अर्जुन सी उसकी आँखें बराबर टिकी हुई थीं। बदली सागर में बादल जाये। खेत-खेत पानी भर जाए।"[24] अकाल पड़ने के कारण मिनखू और उसके परिवार की बहुत बुरी हालत हो गई थी। खाने-पीने तक की दिक्कत हो गई थी। उनकी ऐसी हालत हो गई थी कि घर के सारे सामान बिक गए थे। फिर भी अकाल से छुटकारा पाने का कोई रास्ता नहीं था। वह पहले शहर गेहूँ बेचने जाते थे। लेकिन अब अकाल के कारण खाने तक गेहूँ नसीब नहीं हो पा रहा था। उसकी पत्नी (मल्ली) उधार में कुछ ही गेहूँ घर ला पाती है – "मल्ली घर लौटी। उसकी झोली में सेर भर गेहूँ थे। आज मल्ली सेर गेहूँ उधार लाई थी किसी से, सौ जी-हुजूरी, करके।"[25] कहानी में अकाल में होने वाली भयावाह स्थिति का चित्रण है। अकाल में मनुष्य खाने के लिए भींख माँगने पर विवश हो जाते हैं।

'मूंगफली के दाने' कहानी में एक मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण हुआ है। कहानी में पति-पत्नी के बीच के सम्बन्धों को उकेरा गया है। कहानीकार ने दिखाया है कि पति चाहे जैसा भी हो पत्नी उसका साथ कभी नहीं छोड़ती। हमेशा पति का ख्याल रखती है। उसकी चिंता करती है। चित्त देवी का पति दफ्तर में काम करता था। दफ्तर में काम करने के बावजूद उनके घर की स्थिति ठीक नहीं थी। इसी वजह से उसका पति का रोज शराब पीकर घर आना। पति की यही बात पत्नी (चित्त देवी) को सताती थी। "देवी को सदमा इस बात का था, उसके पति बड़े बाबू होने के बावजूद भी वे मजूरों से बदतर जी रहे हैं।.....उसे सोजत की थाह मिलती ही न थी।"[26] पति (सोजत सिंह) बच्चों के लिए कभी कुछ नहीं लाता था। वह इतना पियक्कड़ था कि नशा उतरने ही नहीं देता था। एक दिन घर आने के बाद उसकी जेब में से मूंगफली के दाने मिलते है। जिसे देख बच्चे खुश होते हैं और नाचने लगते हैं। मूंगफली पाकर बच्चों के साथ-साथ पत्नी (चित्त देवी) भी नाचने लगती है। दरअसल वह मूंगफली सोजत सिंह ने अपने लिए लिया था। आँधी की वजह से खा नहीं पाया और घर पहुँच गया। होश आने के बाद वह सभी को नाचते हुए देखता है। तो उसे अपने किए पर बहुत बुरा लगता है। अंत में वह प्रायश्चित के लिए काँच

से अपना हाथ काट लेता है – "ब्याह-बरात दूसरों को नाचता देख, शराबी झूमने लगते हैं। सोजत खाट से उतरा। बीवी-बच्चों को नाचते देख, उसके पैर फर्श पर थिरकने लगे थे। हाथ हवा में नाचने लगे थे। नाचते-नाचते एकाएक वह अपने आप में उतरता चला गया था। गहरी झील सा धीर कुएं सा गंभीर। उसने जेब में पड़ा पव्वा निकाला दारू के पव्वे को दीवार पर मार कर उसने तोड़ दिया था। दारू भीगे काँच इधर-उधर बिखर गए थे। पूरा परिवार सकते में आ गया था। सांसें उखड़ने लगी थीं। सोजत के हाथ में डाट जुड़ा एक नुकीला कांच था। उसने कांच से अपना हाथ काट लिया था। टप-टप टपकता लहू। उसने लहू की अंजलि भर ली थी। मुट्ठी जमीन पर निचोड़ता वह प्रायश्चित कंठ जोर-जोर से कहने लगा- मैंने दारू नहीं पी। अपने बीवी-बच्चों का खून पिया है। खून पिया है।.....।"[27]

कहानीकार कहना चाहते हैं कि घर का मुखिया पति होता है। अगर वही घर में ठीक से न रहे तो घर की स्थिति बुरी हो जाती है। पत्नी पति की खूब चिंता करती है। पति अपने परिवार का ध्यान ही नहीं रखता। उसे बस पीना था। अंत में पत्नी और बच्चे केवल मूंगफली के कुछ दानों को देखर ही खुश हो जाते हैं। यहाँ दिखाया है कि खुश होने के लिए किसी बड़ी चीज की आवश्यकता नहीं। मनुष्य को छोटी-छोटी चीजें भी खुश कर सकती है।

उक्त कहानी संग्रह में रत्नकुमार सांभरिया ने समाज का यथार्थ चित्रण किया है। और स्त्री समस्या, सांप्रदायिकता, गरीबी, पारिवारिक विघटन आदि का चित्रण किया है। अपनी कहानियों के माध्यम से कहानीकार ने समाज की परिस्थिति को रूप प्रदान किया है। उनकी कहानियों में समाज की सच्चाई को उकेरा गया है।

3. खेत तथा अन्य कहानियाँ : 'खेत तथा अन्य कहानियाँ' रत्नकुमार सांभरिया का तीसरा कहानी संग्रह है। यह कहानी संग्रह आधार प्रकाशन, पंचकुला से प्रकाशित हुआ है। "आधार प्रकाशन पंचकुला से सन् 2012 में प्रकाशित 'खेत तथा अन्य कहानियाँ' कहानी संग्रह विशिष्ट स्थान रखता है।"[28] इस कहानी संग्रह में पंद्रह कहानियाँ हैं। खबर, सवांखें, बाघ के दीदार,

राज, मुक्ति, बाढ़ में वोट, खेत, बिपर सूदर एक कीने, बदन-दबना, पुरस्कार, बेस, हथौड़ा, बदलू को बुलाओ, राइट टाइम और मेरा घर। इस कहानी संग्रह के अंतर्गत सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। यहाँ आधुनिकता का प्रभाव भी देखा जाता है। इस संग्रह में अधिकतर कहानियाँ नयेपन को लिए है। इस संग्रह की कहानियों के पात्र अपनी जिजीविषा को कभी मरने नहीं देते। वे अपने हक के लिए लड़ते हैं। खुद पर विश्वास रखते हैं। इस संग्रह की कहानियों में समाज में फैला भ्रष्टाचार, शोषण, पारिवारिक विघटन आदि का चित्रण किया गया है। उनकी कहानियों के पात्र आखिरी तक हार नहीं मानते। यह रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की बहुत बड़ी खूबी है। उन्होंने इन कहानियों के माध्यम से समाज की सच्चाई का चित्रण किया है।

'खबर' कहानी में छापाखानों में होने वाली घोटालों का चित्रण हुआ है। कहानी में प्रजीता (संवाददाता) सरकारी दफ्तर में होने वाली घोटाले का पोल खोलना चाहती थी। इसके लिए वह बहुत मेहनत करती है। काफी मेहनत के बावजूद उसकी खबर नहीं छपती। खबर न छपने के कारण वह अपनी नौकरी ही छोड़ देती है। प्रजीता खबर तैयार कर लेती है और वह अपने बॉस को देती है। पर वह व्यक्ति बॉस के पास आकर खबर रुकवा देता है। कहानी में इसका वर्णन है – "मैंने अपने फोटोग्राफर को बुला लिया था, सर। उसका फोटो खिंचवा कर समाचार के साथ बॉक्स में लगा दूँ कि शख्स ने दफ्तर आकर समाचार रुकवाने का साहस किया।...त्रासद यही रहा, वह रात साढ़े दस बजे जब दफ्तर आया, न्यूज बॉस की टेबल पर थी। वह सीधा उनके चैम्बर में चला गया। बैठा। बतियाया। बॉस ने उसके लिए कॉफी मँगवाई। बॉस का इंटरकाम आया – प्रजीता आप जाइए, यह खबर मैं लगवा दूँगा। मैं घर पहूँचूँ, मेरे कलीग का फोन आया, तुम जिस न्यूज को मुख्य पृष्ठ पर चाह रही थी, नहीं छपेगी। बॉस और वह आदमी दोनों साथ-साथ दफ्तर से निकल गए हैं। न्यूज बॉस के हाथ में ही थी।"[29] कहानी में छापाखानों में फैली भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण हुआ है। प्रजीता जैसे लोग ईमानदारी से

काम करने के बावजूद उसके बॉस जैसे लोगों के कारण सच्चाई दबा दी जाती है। बड़ी से बड़ी खबर रोक दी जाती है। सच्चाई बाहर नहीं आ पाती।

'सवांखें' कहानी में दिव्यांग जीवन का चित्रण है। साथ ही यहाँ जातिभेद का चित्रण भी हुआ है। कहानी में जमन और वीमा दोनों नेत्रहीन पात्र हैं। दोनों की शादी होती है। शादी की बात सुनकर वीमा के घर वाले उसे जबरदस्ती ले जाते हैं। जमन मदद मांगने के लिए कईयों के पास जाता है। उसकी मदद कोई नहीं करता। पुलिस भी उसकी मदद करने से मना कर देती है। बल्कि वह जमन और उसके दोस्त को गाली देकर भगा देता है। अंत में जमन का दिव्यांग दोस्त अन्य दिव्यांगों के साथ आकर जमन के लिए हरताल करते हैं। साथ ही वह वीमा की मांग करते हैं। जमन का दोस्त (देवत) कहता है- "सुनो, हमने कल से काका को दफ्तर में घुसने नहीं दिया है। काका अंदर जाने के लिए गिड़गिड़ाते रहे। चिरौरी करते रहे। आश्वासन देते रहे। जोरा-जोरी में उनकी कमीज फट गई। चश्मा गिर गया। थानेदार मौजूद था। ना काका कुछ कर पाए। ना पुलिस कुछ कर पाई। हम पहाड़ से अड़े है। हमारी एक ही मांग है, वीमा।"[30] कहानी में दिखाया है कि दिव्यांग होकर भी वे लोग अपने हक के लिए आवाज उठाते हैं। अपने लिए लड़ते हैं। जबकि अच्छे लोग उसकी मदद करने से मना कर देते हैं। बड़े लोग पैसे वालों का साथ देते हैं। पर दिव्यंग बस सच्चाई का साथ देते हैं। वह सच्चाई से कभी नहीं भागते।

'बाघ के दीदार' कहानी में अभयारण्य से लुप्त होती बाघ के बारे में है। कहानी में दिखाया है कि अभयारण्य से बाघ लुप्त होने के बावजूद बाघ देखने आए आका (पार्टी अध्यक्ष) को किस तरह बेवकूफ बनाया जाता है। इसमें मुख्य मंत्री, वनमंत्री आदि सभी मिले होते हैं। बाघ न होने के बावजूद वह इस तरह का दृश्य बनाते हैं जहाँ बाघ की उपस्थिति का पता चलता है। बाघ और उसके बच्चों के रहने का आभास होने लगता है। बाघ के दहाड़ने की आवाज सुनाई देती है। मुख्यमंत्री स्वयं खुश होकर मुख्य प्रधान वन संरक्षक को बधाई देने लगते हैं। कहानी में इसका जिक्र है – "हर्ष विभोर मुख्यमंत्री ने अपने कद-पद की सभी सीमाएँ ताक पर रख दी थीं। प्रोटोकाल बिसर गए थे। उन्होंने पास खड़े मुख्य प्रधान वन संरक्षक की बलाईयाँ ले ली

थीं। मटके की भांति उन दोनों की तोंदें बाहर आई हुई थीं। तोंदें अड़चन होने के बावजूद मुख्यमंत्री ने आला अफसर को थोड़ा ऊपर उठाकर फिर जमीन पर टिका दिया था, खिलखिलाते हुए। हुलस से उनकी ओष्ठसंधि अनियंत्रित हुई जाती थी। खुशी का इजहार करते वे देर तक आला अफसर की पीठ थपथपाते रहे। शाबाशी दी – सिंह साहब, गजब टेलेंट पाया है, तुमने। वैरी नाइस। वैरी नाइस। बाघिन और उसके शावकों की हत्थलों के हू-ब-हू ठप्पे। बाघिन और उसके शावकों का इतना जीवंत स्वांग। बाघ के दहाड़ने की सेम आवाज! वाह भाई, वाह! क्या कहने। ऐसी सफाई और सूझ तो तमाशगीर के हाथों में भी नहीं होती। वैरी नाइस। जान बची, लाखों पाए।"[31]

वन मंत्री आदि अपनी नौकरी जाने के डर से सत्य का बोध होने नहीं देते। साथ ही यहाँ अभयारण्य की हकीकत एवं दशा के बारे में चित्रित है। जो मात्र नाम के लिए अभयारण्य रह गया है। वर्तमान समय में बाघ इतने कम हो गए हैं कि बाघ होने का नाटक करना पड़ रहा है। कहानी में जंगलों की स्थिति का यथार्थ चित्रण हुआ है। कहानी में बाघ का न होना एक गंभीर समस्या है। बाघ का न होना देश से एक बड़ी प्रजाति का लुप्त होना है। मुख्यमंत्री, वन मंत्री आदि इस समस्या का हल निकालने के बजाये वह उस पर पर्दा डालते हैं। बाघ होने का नाटक रचते हैं। कहानी में गैर-जिम्मेदार पदाधिकारियों का चित्रण है। अगर वे जिम्मेदार होते तो झूठा नाटक करते ही नहीं।

'खेत' कहानी में वृद्ध जीवन का स्पष्ट चित्रण हुआ है। कहानी में बूढ़ा अकेला गाँव में रहता है। उसका बेटा नौकरी के कारण शहर में ही रहता है। बेटे के बुलाने पर भी पिता नहीं जाता। बूढ़ा अपना घर छोड़ कर जाना नहीं चाहता है। बूढ़ा अकेले होने के कारण लोग उसका फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। उसे ठगने की कोशिश करते हैं। वैसे बूढ़ा अकेला है, जानकर भी उसकी खबर कोई नहीं लेता। जब बूढ़ा बीमार पड़ता है, तो उसकी संपत्ति के लिए सभी हाल-चाल पूछने आते हैं। "एक हवा उड़ी। हवा गली-गली दस्तक देती गई कि बूढ़ा का जी उठ खड़ा

हुआ है। वह प्लाट बेचकर अपने बेटे के पास जाएगा। देखें किसके जोग हैं। हवा में रंगत आ गई। बीमार बूढ़ा के पास आने वालों का तांता लगा रहता; मरणासन्न कीट को कीरियाँ घेर लेती हैं। जिनका कोसों खोज नहीं था, वे तन के लत्ते से बूढ़ा के करीबी हो गए थे। खैरियत जानना जरिया रहा, साध बूढ़ा का खेत थी। बगुला इधर-उधर गर्दन घुमाए, टकटकी मछली पर होती है।"[32] बूढ़ा अकेला है देख लोग उसके घर रोज आना-जाना करने लगते हैं। इस बात का पता बूढ़ा को था। वह अपनी जमीन को छोड़ कर जाना नहीं चाहता था। वह गाँव में रहकर अतीत को याद करता है। कहानी में दिखाया है कि लोग इतनी लालची है कि मानवता उनमें रही ही नहीं। बूढ़ा का खबर लेने के बहाने उनकी नजर उसकी संपत्ति पर थी। वह कभी भी बूढ़ा को देखने आते ही नहीं। जब बूढ़ा के बीमार के बारे में सुना तो बस संपत्ति की चाह में आते हैं। यह कहानी समाप्त ही मानवता की पराकाष्ठा है। इसमें केवल लोगों की स्वार्थपरता ही है, जिसके कारण वे बीमार बूढ़ा के पास जाते हैं। ताकि उसकी जमीन ले सके। अन्यथा किसी के पास जाने के लिए वक्त भी नहीं है।

'बदन दबना' कहानी दलित जीवन पर आधारित कहानी है। कहानी में दलितों के बच्चों को अमीर वर्ग पाँच साल के लिए रखते दिखाया है। इसी पाँच साल के दौरान उसे अपने घर तक जाने की अनुमति नहीं थी। चाहे जैसी भी परिस्थिति हो वह घर नहीं जा सकता। बच्चे के घर वाले पैसे लेकर बच्चा रख जाते थे। गरीबी की मजबूरी का फायदा अमीर वर्ग इस तरह उठाते थे। कहानी में पूछाराम को उसका पिता पैसे लेकर हवेली में छोड़ जाता है। बेटी की शादी के लिए पैसों की कमी होने के कारण ऐसा करता है। पिता एक बच्चे के लिए दूसरे बच्चे को संकट में डालता है। वह बहुत मजबूर था। वह अपनी मजबूरी के अंधेपन में इतना डूबा था कि बेटे के हाल के बारे में भी नहीं सोचता। पैसे मिलने के बाद बेटे को बिना कुछ कहे ही चला जाता है। बेटे को एक बार भी नहीं देखता- "सौदा तय था। नोटों की गड्डी हाथ में आते ही रेमा के चेहरे से चिंता के बादल छंट गए थे। चैतन्य की रोशनी चमकने लगी थी। ब्याह की रौनक दिखने लगी थी। खुशी की गफलत उसे इतना भी होश नहीं, जिस बेटे को वह पाँच साल के लिए रखे

जा रहा है, उसे सिर पर जुदाई का हाथ फेर दे।"[33] कहानी में दिखाया है कि गरीबी मनुष्य को शारीरिक के साथ-साथ मानसिक रूप से भी मजबूर बना देती है। पूछाराम का पिता पैसे लेने के लिए अपने बेटे को गिरवी रख देता है। वह इतना भी नहीं सोचता है कि बेटे का क्या होगा पाँच साल तक। उसे बस अपनी बेटी की शादी करनी थी। एक पिता की विवशता ही है, जिसके कारण वह अपनी बेटी की शादी के लिए अपने बेटे को गिरबी रखता है।

कहानी में राजनीति का चित्रण भी मिलता है। यहाँ हल्कासिंह को सरपंच के लिए चुनाव में खड़ा होते दिखाया है। चुनाव में वह हार जाता है। फिर वह कभी नहीं जीतता- "अपने सरपंच बाप के मरने के बाद वह उनके उत्तराधिकारी के रूप में सरपंची के लिए खड़ा हुआ और मात्र दो वोटों से मात खा बैठा था। उसके बाद पंचायती राज कानून बन गया और गाँव के सरपंच की सीट आरक्षण की चकरी में आ गई। समय की सुरति। उसके बाद वह कभी वार्ड पंच नहीं जीता।"[34]

'बेस' कहानी में आदिवासी स्त्री की समस्या का चित्रण है। कहानी में दिखाया है कि आदिवासी स्त्रियों के साथ आदिवासी पुरुष ही बुरा काम करते हैं। उच्च वर्ग की स्त्रियों को हाथ तक नहीं लगाते। आदिवासी स्त्रियों का जीना तक हराम हो गया था। साथ ही कहानी में बेस का जिक्र है। बेस एक तरह का पोशाक है, जिसे केवल उच्च वर्ग की महिलाएं ही पहन सकती है। लेकिन अगनी इसका विरोध करती है और अपनी मंगनी में पहनने के लिए बेस सिलवाती है। इसी बेस के कारण उसके साथ बुरा होने से वह बच जाती है। शहर से घर आते वक्त रास्ते में गाड़ी खराब होने से अगनी को अकेले जंगल के रास्ते से आना पड़ता है। तभी कुछ लड़के उसके पीछे पड़ जाते हैं। खिच-खिची में अगनी के हाथों से बेस नीचे गिर जाता है। बेस देख लड़के कहने लगते हैं – "यह आदिवासी नहीं किसी राजपूत की बीनणी है। बेस देख। लहँगा काचली, कुरती, लूगड़ी, चूड़ा। तू खुद तो मरेगा ही, मुझे भी मरवाएगा।"[35] अगनी अपने जिद के कारण ही बच पाती है। कहानीकार ने दिखाया है कि उच्च वर्ग की स्त्रियों से सब दूर भागते हैं। लेकिन निम्न वर्ग की स्त्रियों के साथ कोई कुछ भी कर सकता है। शोषण अपने जाति के भाइयों द्वारा

किया जाता है। वे अगनी को निम्न जाति का समझकर शारीरिक शोषण करने का प्रयास करते हैं। अगनी के हाथ बेस देखकर वे भाग जाते हैं।

अतः इस कहानी संग्रह में समाज में व्याप विभिन्न सामाजिक मुद्दो का चित्रण हुआ है। समाज में फैले भ्रष्टाचार, वृद्ध, दलित, स्त्री समस्याओं को बारीकी से दिखाया है। उनकी कहानियों में वृद्ध जीवन, दलित जीवन, स्त्री समस्या की सच्चाई को उकेरा गया है. उनकी कहानियों में कमजोर, गरीब लोगों की जीत दिखाई गई है. उनके कहानियों के पात्र शरीर से कमजोर है लेकिन मानसिक रूप से नहीं.

4. एयरगन का घोड़ा : 'एयरगन का घोड़ा' रत्नकुमार सांभरिया का चौथा कहानी संग्रह है। यह कहानी संग्रह सन् 2016 में अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स(प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 21 कहानियाँ संकलित हैं। मांडी, गाड़िया, हुकम की डुग्गी, अनुष्ठान, मैं जीती, एयरगन का घोड़ा, बेस, झुनझुना, द्वन्द्व, पुरस्कार, विद्रोहिणी, बिल्लो का ब्याह, धूल, कील, हिरणी, राज, सनक, राइट टाइम, बंजारन, बाघ के दीदार और खबर। इस कहानी संग्रह में सामाजिक समस्याओं का अधिक चित्रण मिलता है, जैसे- स्त्री समस्या, अंधविश्वास, बाल विवाह, वृद्ध समस्या आदि। इसके साथ ही इसमें राजनीतिक पक्ष का भी चित्रण मिलता है। कुछ कहानियों में जातिभेद का भी चित्रण है। इनकी कहानियों में पात्रों में साहस दिखाई देता है। इनकी कहानियों के पात्र अपने हक के लिए आवाज उठाती हैं।

'गाड़िया' कहानी में स्त्री समस्या का चित्रण है। एक लोहार की लड़की के साथ जमींदार का बेटा कुकर्म करने का प्रयास करता है। लड़की के चिल्लाते ही उसके माता-पिता आ जाते हैं। जमींदार का बेटा वहाँ से भाग जाता है। लोहार के द्वारा सारी बातें बताने पर सरपंच लोहार को समझाने लगता है। सरपंच लोहार से कहता है कि वह जमींदार के बेटे को माफ कर दे। लेकिन लोहार सरपंच की बात नहीं मानता। वह जमींदार के बेटे को सजा दिलाने की बात करता है। सरपंच के समझाने पर भी जब लोहार नहीं मानता तो वह उसे डराने लगता है।

सरपंच कहता है "चौधरी जी, मान लो मेरी। भली इसी में है। घर जाओ अपने। लोहकूट गाड़िया हो। जमींदारों से मुँहजोरी ठीक नहीं।"[36] कहानी में घुमंतू समुदाय की समस्या का चित्रण हुआ है। सरपंच को सबके साथ न्याय करनी चाहिए। लेकिन वह नहीं करता। उसे लोहार की मदद करनी चाहिए पर वह जमींदार के बेटे का साथ देता है। सरपंच जमींदार के बेटे के दोष को छुपाने की कोशिश करता है। जमींदार का बेटा होने के कारण सरपंच उसे बचाने की कोशिश करता है। इस कहानी में अपनी शक्तियों के गलत प्रयोग के बारे में वर्णन किया है।

'एयरगन का घोड़ा' कहानी गरीब भूरजी राम मानु और जमींदार का बेटा कीरचंद सिंह के बारे में है। कहानी में दोनों के बदले की भावनाओं का चित्रण है। दोनों स्कूल साथ पढ़ते थे। तीस साल बाद जब मिले तो भूरजी मानू जेल का अधीक्षक था। कीरचंद सिंह उसी जेल में एक कैदी था। भूरजी के काका जमींदार के घर काम करता था। जिस कारण बचपन में कीरचंद भूरजी से बहुत काम करवाता था। "अरे भूर, पाँव दबा यार। मालिश कर यार। सिर भारी हो रहा है, भींच यार।"[37] एक बार मास्टर कीरचंद को सजा देता है। वह भूरजी से कहता है कि कीरचंद को थप्पड़ मारे। बस उसी का बदला कीरचंद लेता है। वह भूरजी को एक सुनसान जगह ले जाता है। वह एयरगन निकालता है और भूरजी के टांट पर मारता है। तीस साल बाद दोनों की मुलाकात होती है। भूरजी के मन में अतीत घूम रहा था। वह कीरचंद का पैरोल भी रुकवा देता है। जेल में उससे बहुत मेहनत करवाता है।

'बेस' एक स्त्री समस्या पर आधारित कहानी है। साथ ही इसमें 'बेस' पर अधिक ध्यान दिया गया है। बेस एक तरह का "पहनावा"[38] है जिसे सिर्फ राजपूत महिलाएं पहनती है। कहानी में अगनी नाम की एक आदिवासी लड़की इस परंपरा को तोड़ती है। वह अपनी मंगनी के लिए बेस सिलवाती है। उसके माँ द्वारा मना करने पर भी वह नहीं मानती। उसकी इसी जिद के कारण वह एक रात कुछ दरिंदों से बच जाती है। वह अपनी मंगनी के लिए घर आती है। रास्ते में बस खराब होने के कारण अगनी को घने जंगल में अकेले आना पड़ता है। कुछ

लड़के उसके पीछे पड़ जाते हैं। हाथापाई में अगनी के हाथ से बेस गिर जाता है। बेस देख वह लोग डर जाते हैं और अगनी को जाने देते हैं। वह कहने लगते है – "यह आदिवासी नहीं, किसी राजपूत की बीनणी है। बेस देख। लहंगा काचली, कुरती, लुगड़ी, चूड़ा। खुद तो मरेगा ही, मुझे भी मरवाएगा।"[39] यह दो पुरुष अगनी को अन्य लोगों से भी बचाते हैं। यह सब उस बेस के कारण ही हो पाता है। वह सही सलामत घर पहुँच जाती है।

'द्वंद्व' कहानी में एक दिव्यांग व्यक्ति (कंवलराम) की मानसिकता का चित्रण है। कंवलराम अपनी शादी का सपना देखता है। हालांकि उसे कोई लड़की नहीं मिलती फिर भी वह शादी के बारे में सोचता है। अपनी शादी को लेकर उसके मन में तरह-तरह की बातें चलती है। वह सोचने लगता है- "कुड़ी के भी दिन बहुरते हैं, एक दिन। मुझ जैसे नेक इन्सान को अपनी लड़की देने में किसी को क्या गुरेज, जिसे अपनी परमानेंट सर्विस का नेक गरुर नहीं है।"[40] कहानी का पात्र दिव्यांग था जिस कारण से उसे लड़की नहीं मिलती है। फिर भी वह शादी की आश नहीं छोड़ता। नौकरी करने के कारण उसे लगता है कि लड़की मिल ही जाएगी। इसी कारण से उसके मन में द्वंद्व चलती रहती है। वह जब लड़की देखने जाता है तब भी रास्ते में बड़बड़ाता जाता है। कहानी में एक दिव्यांग व्यक्ति के मन में चलने वाले द्वंद्व का चित्रण है।

'बिल्लो का ब्याह' कहानी स्त्री समस्या पर आधारित है। यहाँ बाल-विवाह का चित्रण है। साथ ही पुरुष की बदलती मानसिकता का चित्रण भी हुआ है। कहानी में एक सत्रह साल की लड़की की शादी पैंतालीस साल के एक अधेड़ के साथ कर दी जाती है। पपेन्द्र कहानी का पात्र है। उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है। पत्नी के माता-पिता अपनी छोटी लड़की बिल्लो की शादी जबरदस्त जीजा से करा देते हैं। कोई बिल्लो को उसकी मर्जी तक नहीं पूछता है। पपेन्द्र को पहले अच्छा नहीं लगता है। बाद में धीरे-धीरे बिल्लो के प्रति उसकी सोच बदलने लगती है। वह शादी से खुश होने लगता है। वह भूल जाता है कि वह उसकी बेटी की उम्र की है। वह बिल्लो को पाने की कोशिश करता है। शादी के बाद पपेन्द्र, बिल्लो और उसकी बेटी सपना

तीनों ही तनाव में रहते हैं। बिल्लो और सपना पपेन्द्र से ठीक से बाते भी नहीं करती। अंत में पपेन्द्र को बहुत बुरा लगता है। उसे अपनी करतूत से पछतावा होने लगता है। वह सपना और बिल्लो से माफी भी मांगता है। साथ ही दोनों का ख्याल रखने का दायित्व लेता है। कहानी में दिखाया है कि लालच के कारण उम्र में छोटी बेटी की शादी इतने बड़े व्यक्ति से करवा देते हैं। जबकि उसे और पढ़ा-लिखना चाहिए था। उक्त कहानी में कहानीकार ने बाल विवाह तथा उससे होने वाली समस्याओं को पाठकों के सामने उजागर किया है।

5. दलित समाज की कहानियाँ : 'दलित समाज की कहानियाँ' रत्नकुमार सांभरिया का पाँचवा कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन सन् 2017 में अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स(प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली से हुआ था। इस कहानी संग्रह के अंतर्गत 24 कहानियाँ हैं। फुलवा, बकरी के दो बच्चे, आखेट, बूढ़ी, गूंज, इत्तफाक, शर्त, मियांजान की मुर्गी, भैंस, काल, झंझा, लाठी, डंक, बात, चमरवा, चपड़ासन, सवांखें, मुक्ति, बाढ़ में वोट, खेत, बिपर सूदर एक कीने, बदन दबना, हथौड़ा और मेरा घर। इन कहानियों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। साथ ही गाँव शहर की ओर पलायन का भी चित्रण मिलता है। इस कहानी संग्रह में दलितों का भी चित्रण है। यहाँ दलितों को शोषित होते दिखाया है। साथ ही दलितों को साहसी एवं विद्रोही भी चित्रित किया है। इनके कहानियों के पात्र कभी हार नहीं मानते। वह हिम्मत से काम लेते हैं। इस कहानी संग्रह में 'काल', 'बाढ़ में वोट' जैसे कहानियों में राजनीतिक समस्याओं का भी चित्रण मिलता है।

'फुलवा' इस कहानी संग्रह का पहला कहानी है। कहानी में फुलवा नाम की एक स्त्री का चित्रण है। पति के देहांत के बाद वह अकेले ही अपने बेटे को पालती है। वह खूब मेहनत करती है अपने बेटे को पढ़ाने के लिए। वह जमींदार के घर मजदूरी भी करती है। उसने अपने बेटे की पढ़ाई में बाधा आने नहीं दिया। फुलवा की मेहनत के कारण उसका बेटा अफसर बना। वह अफसर बनकर शहर में घर बनाता है। फुलवा भी अपने बेटे के साथ रहने चली जाती है। वह

कभी हार नहीं मानी। कहानी में जमींदार का बेटा शहर फुलवा के घर आता है। वह फुलवा का घर देख सोचता है- "फुलवा चालाक निकली। इसने सौ पापड़ बेल लिए, लेकिन राधा मोहन के हाथ से किताब नहीं छूटने दी, वरना उसकी हथेली तले हमारा हल होता आज।"[41] गाँव से आए जमींदार फुलवा के शान और सोकत को देखकर यह सब सोचता है। कहानी में फुलवा का संघर्ष दिखाया है।

'बकरी के दो बच्चे' कहानी में भ्रष्ट पुलिस का चित्रण है। साथ ही जमींदारों का दूर व्यवहार का भी चित्रण किया गया है। कहानी में एक गरीब व्यक्ति के दो बकरी के बच्चों को जमींदार का बेटा मार डालता है। दलपत जब जमींदार को जाकर कहता है तो वह उस पर ध्यान नहीं देता। जमींदार अपने बेटे को कहने के बजाये दलपत को ही बुरा-भला कहता है। "धमका दूँ, धर्मपाल को? भैंस मार दी हों जैसे तेरी। ढेड़ और भेंड़ को हम जीव नहीं मानते। समझे।...ज्यादा मुंहजोरी की न, तो तुझे भी...।"[42] दलपत अपने दोस्त के साथ पुलिस के पास जाता है। पुलिस दलपत का एफ.आई.आर लिखने से मना कर देती है। साथ ही दलपत को पुलिस थाने से भगा देती है। दलपत द्वारा एफ.आई.आर. लिखने को कहने पर पुलिस कहती है- "अच्छा। फर्ज का पाठ तू मुझे पढ़ा रहा है। थाने के गेट से बाहर भाग जाने के लिए मैं तुम दोनों को दो मिनट का समय देता हूँ, वरना अंदर से चमड़ा मंगवाकर सालों की चमड़ी उधेड़ दूंगा। आ जाते हैं यहाँ, जैसे थाना-कचहरी मनोरंजन के साधन हों।"[43] कहानी में दलपत को गरीब होते हुए भी हार नहीं मानते दिखाया है। अंत में उसे न्याय मिल ही जाती है। इस कहानी में व्यवस्था की दुर्दशा का चित्रण हुआ है।

'आखेट' कहानी में स्त्री की समस्या का चित्रण मिलता है। कहानी में एक जमींदार रेवती नाम की एक स्त्री को अपने हवस का शिकार बनाने की कोशिश करता है। वह गाँव के अनेक स्त्रियों को अपना शिकार बना चुका था। रेवती साहसी थी जिस कारण वह बच जाती है। रेवती के पलटकर बार करने से जमींदार गुस्से से आग बबूला हो जाता है। वह रेवती और

उसके पति को सजा देने का सोचता है। जमींदार उनकी जमीन तक को हड़प लेता है। "बहुत खूब, उसकी दो बीघा जमीन की मेंड़ मिटा दो। उसके घर में भूसा भर दो। बुढ़िया से कह दो, वह भी गाँव छोड़ दे। हाँ, इन लाठियों को हाथ तले रख दो, सोमा आया, काम आएंगी।"[44] जमींदार स्वयं गलत करता है और सजा रेवती और उसके पति को देना चाहता है। रेवती अपने पति के साथ शहर चली जाती है। वहाँ भी लाला सुख प्रसाद नाम का एक व्यक्ति की नजर रेवती पर होती है। कहानी में दिखाया है कि स्त्री चाहे गाँव में हो या शहर में। वह कहीं भी सुरक्षित नहीं होती। उसे हर जगह शोषित होना ही पड़ता है। कहानी में रेवती की कोई गलती नहीं होती। फिर भी उसे घर छोड़ जाना पड़ता है। कहानी में एक जमींदार की क्रूरता का चित्रण है।

'इत्तफाक' कहानी में स्त्री समस्या का चित्रण है। कहानी में एक पति-पत्नी पैंतालीस साल बाद एक बस में मिलते हैं। शादी के बाद ही दोनों अलग हो जाने का कारण बस इतना था कि पत्नी काली थी। पति अपनी भाभी की बात सुनकर पत्नी को घर से निकाल देता है। "भाभी बैरन थी। बोली, तुम राजकुमार जैसे हो और बहू तवे का निचला भाग सी है। चाँद सा मुखड़ा लाऊँगी, इसे धकिया दो।...वह नई-नवेली ब्याह के भेस में थी। गाय की तरह डकरा रही थी, बेचारी। मैंने उसकी एक न सुनी। उसे देहरी से बाहर धकिया कर लात मारी, 'कालाटूरी कहीं की'। घर में घुसी गर्दन कलम कर दूंगा।"[45] कहानी में दिखाया है कि पति चाहे पत्नी पर कितना ही अत्याचार करे। पत्नी अपने पति को कभी नहीं भूलती। वह पति के लिए कुछ भी कर सकती है। कहानी में बूढ़ा बूढ़ी को मार-मार कर घर से निकाल देता है। उसका खबर भी नहीं लेता। जब बूढ़ी बूढ़ा को बस में मिलती है तो उसे अपने घर ले जाती है। घर ले जाकर उसका अच्छे से ख्याल रखती है। बेटे और बहू के मना करने पर भी वह नहीं मानती। समाज के बीच अपना पति कहकर परिचय कराती है। बूढ़ी अपने बहू से कहती है- "बहू, औरत सबसे पहले अपनी जगह कोख में खोजती है, मरद की मारफत। जब उसे कोख में जगह मिल जाती है, तो वह

आधी-अधूरी नहीं रह जाती है और औरत जिस दिन अपने उस मरद को भूलेगी, धरती मैया फट जाएगी।"[46] कहानी के माध्यम से एक स्त्री के कोमल मन को दिखाया गया है। अपने ऊपर हुए अत्याचार को भुलाकर पति को अपने साथ ले जाती है।

'शर्त' कहानी दलित के साथ-साथ स्त्री समाज पर आधारित कहानी है। कहानी में सरपंच का बेटा पानाराम की बेटी के साथ गलत करता है। पानाराम सरपंच के पास शिकायत करने जाता है। सरपंच (जसवीर) अपने बेटे को सजा देने के बजाये उसे बचाने की कोशिश करता है। वह उल्टे पानाराम की बेटी को दोष देता है। वह कहता है – "क्या बताऊँ? वह दिन ही मनहूस था, पानिया। रिश्तेदारी की शादी में हम सबका जाना हुआ और मेरे लड़के का तेरी लड़की के साथ...। अगर उसकी परीक्षा नहीं होती और तेरी लड़की उस दिन झाड़ू बुहारी को नहीं आती, तो आज का दिन नहीं दिखता।"[47] सरपंच होने के नाते उसे पानाराम को न्याय दिलाना चाहिए। परंतु वह ऐसा नहीं करता। वह पानाराम की बेटी को ही दोषी ठहराता है। उस घटना घटित दिन को मनहूस कहने लगता है। सरपंच पानाराम को किसी शर्त पर मानने को कहता है। पनाराम कहता है- "मुखिया साब, इज्जत का सवाल है यह। आपकी इज्जत सो मेरी इज्जत। आपकी लड़की मेरे लड़के के साथ रात रहेगी।"[48] पानाराम की शर्त सुनते ही सरपंच गुस्से से पागल हो जाता है। उसे दौरा पड़ने लगता है। गुस्से में आकार वह पानराम को गोली मार देता है। साथ ही दौरा पड़ने के कारण उसकी भी मृत्यु हो जाती है। सरपंच पानाराम की बेटी की कोई मदद नहीं करता। जब उसकी बेटी की बात आती है तो वह गुस्से से आग बबूला हो जाता है। कहानीकार कहना चाहते हैं कि व्यक्ति चाहे गरीब हो या अमीर नियम सबके लिए समान होनी चाहिए। व्यक्ति अमीर हो या गरीब लड़की की इज्जत सबके लिए एक होती है। कहानी में सरपंच ऐसा नहीं करता। पानाराम की लड़की की बात को टालने की कोशिश करता है। जब अपनी लड़की की बात आती है तो बरदास्त नहीं कर पाता।

'भैंस' कहानी में गरीबों को चूसने वाले लंबरदार जैसे अमीर लोगों का चित्रण हुआ है।

साथ ही यहाँ लालची डॉक्टर का भी चित्रण हुआ है। कहानी का पात्र मंगला है। उसकी माता-पिता की मृत्यु होने के पश्चात वह गरीबों की जिंदगी जीने लगता है। उसकी भाभी उसे एक भैंस पालने देती है। वह उस भैंस का बहुत ध्यान रखता है। साथ ही गाँव के दूसरे लोगों के भैंस को चराने ले जाता है और पैसा पाता है। कुछ ही दिनों बाद भैंस का बच्चा होने वाला होता है। मंगला पशु डॉक्टर के पास जाता है। वहाँ बैठा डॉक्टर उसकी बात ही नहीं सुनता। जब मंगला उसे पैसे देता है तब डॉक्टर उसके साथ जाता है- "डॉक्टर ने उसकी ओर एक उड़ती सी नजर डाली। वह अपने मिजाज फिर अखबार पढ़ने लग गया था। दूसरे के हीत (हृदय) में, अपने भीत (दीवार) में। मंगला ने दो सौ रुपए निकालकर टेबल पर रख दिये थे। अखबार पटक, डॉक्टर मैडिसिन बैग उठाकर चल दिया था, मंगला के साथ।"[49] कहानी में भ्रष्ट डॉक्टर का चित्रण हुआ है। जरूरत के समय पर भी वह जानवरों की मदद करने नहीं जाता है। उसे सिर्फ पैसों की फिकर थी। मंगला जब तक बिना पैसे का कहता है डॉक्टर नहीं सुनता। लेकिन उसके पैसे देते ही उसकी बात मानकर उसके साथ जाता है।

भैंस के बच्चा होने के बाद मंगला के सामने एक और समस्या उत्पन्न होती है। गाँव का लंबरदार मंगला के पिता द्वारा लिए कर्ज का बहाना देकर उसकी भैंस को ले जाने आता है। जबकि मंगला के साथ-साथ लंबरदार को भी पता था कि मंगला के पिता ने मरने से पहले ही सारे पैसे चुका दिए थे। लंबरदार कहता है – "छह साल पहले तेरा बाप बीमारी से मर रहा था। दस हजार लगे थे। अब जुड़कर बीस हजार हो गए हैं।"[50] तब मंगला कहता है – "मालिक साब, उसके एवज तो बापू ने साल काम किया था आपके घर। खुद मैंने भी उनका हाथ बंटाया था। उनकी मौत का कारण...। अब तो माँ और बापू दोनों नहीं हैं।"[51] मंगला के पिता के मौत का कारण लंबरदार ही था। ये सब जानने के बाद भी वह जानबूझकर मंगला की भैंस को लेने आता है। वह मंगला को ठगना चाहता था। यहाँ दिखाया है कि पैसा देने के बाद भी माता-पिता के मरने के बाद लोग बच्चों को ठगते हैं। उन्हें परेशान करते हैं।

अतः इस कहानी संग्रह में सामाजिक स्थिति का वर्णन है। साथ ही राजनीतिक और आर्थिक

स्थिति का भी चित्रण है। इस कहानी संग्रह के पात्रों को खूब मेहनत करते दिखाया है। कहानी के पात्र गरीब है, लेकिन ईमानदार है। इन कहानियों में जातिभेद का भी चित्रण हुआ है। जमींदार जैसे लोगों द्वारा निम्न जाति के लोगों पर अत्याचार करते दिखाया है। आर्थिक शोषण करते दिखाया है।

अतः रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में समाज के यथार्थ का चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में स्त्री समस्या, पारिवारिक विघटन, बाल विवाह, वृद्ध जीवन, भ्रष्टाचार आदि का स्पष्ट चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में साहस का स्वर है। कहानियों के पात्र समस्या से जूझते रहते हैं। फिर भी वह कभी हार नहीं मानते।

साहित्य केवल समाज का दर्पण ही नहीं, साहित्य समाज सचेतक भी है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों के माध्यम से केवल समाज की समस्याओं का चित्रण ही नहीं किया है। वे पाठकों में जागरुकता भी पैदा करने का प्रयास करते हैं।

(ii) उपन्यास : रतकुमार सांभरिया का केवल एक उपन्यास प्रकाशित है। उनके उपन्यास का नाम साँप है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 2022 में हुआ। यह सेतु प्रकाशन से प्रकाशित है। यह उपन्यास हाशिये के समाज पर लिखा गया है। इस उपन्यास में घुमंतू समुदायों के जीवनों का यथार्थ चित्रण किया गया है। दूसरे समुदाय के लोगों द्वारा घुमंतू समुदाय के लोगों के साथ किए गए व्यवहार पर प्रकाश डाला गया है। उच्च वर्ग उनसे काम तो करवा लेता है, पर उन्हें अपने बराबर नहीं समझता है। सपेरा लखीनाथ साँप पकड़ने के लिए सेठ के घर पर आता है। वह बार-बार कोशिश करने के पश्चात साँप को पकड़ने में सफलता प्राप्त करता है। परंतु समाज में जाति-भेद की भावना ने इस तरह घर कर लिया है कि मदद करने वालों को शाबाशी देने के लिए हाथ नहीं उठता है – "सेठजी का मन हुआ था, अकल्पनीय साहस के लिए सपेरा की कमर थपक दूँ। बड़ी जात हाथ, छोटी जात कमर की ओर नहीं बढ़ पाए।"[52] उपन्यास में जातिभेद का यथार्थ चित्रण हुआ है। सेठ सपेरा को घर लाते वक्त गाड़ी के आगे की सीट पर बिठाता है। साँप पकड़ कर लौटते वक्त सपेरा आगे बैठना चाहता है, पर उसे बैठने दिया नहीं जाता।

उपन्यास में सपेरा, मदारी, नट, कलंदर, बहुरूपियों आदि का चित्रण किया गया है। यहाँ इन लोगों की जीवनचर्या का चित्रण किया गया है। उपन्यास में दिया गया है कि –"ये लोग धरती पर सोते हैं। निरा जंगल है। साँप- बिच्छू, गोहरे, कीड़े, मकौड़े, कीट-पतंगें, मक्खी, मच्छर डॉस हैं। मौत के साया जूझते बदनसीबों की बेकसी। पल, पहर, दिन, हफ्ते, महीने, साल, सदियाँ दरिद्रता की दरिया में रहते बीत गए। भूख, गुरबत और तंगहाली। यातना-शिविर जैसे डेरे। समाज के अपराधी। कुदरत के कैदी। हे, योजनाकारों इन डेरों में एक रात गुजार जाओ, तुम्हारी जय-जयकार होगी।"[53] उपन्यास में घुमंतू समुदाय के रहन-सहन का यथार्थ चित्रण हुआ है। साथ ही उनकी जीवन स्थिति का चित्रण किया है। उपन्यास में हाशिए के समाज का मार्मिक चित्रण हुआ है। लेखक ने यहाँ उनके जीवन दुर्दशाओं का यथार्थ चित्र अंकित किया है।

(iii) नाटक : रत्नकुमार सांभरिया कहानीकार होने के साथ-साथ उपन्यासकार और नाटककार भी है। उनके द्वारा लिखे गए नाटक वीमा, भभूल्या और उजास है। उन्होंने अपने नाटकों में अपने समाज को रूप प्रदान करते हुए समाज में व्याप्त समस्याओं का चित्रण किया है। उन्होंने वर्तमान समाज में व्याप्त राजनीति की समस्या, दलितों का शोषण तथा उन पर किए जा रहे अत्याचार, सरकारी कर्मचारियों द्वारा आम जनता पर किए जा रहे शोषण, शासन व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार आदि को अपने नाटकों का विषय बनाया है।

रत्नकुमार सांभरिया का पहला नाटक वीमा है। इस नाटक में उन्होंने दो दिव्यांग पात्र वीमा और जमन की कहानी को विषय के रूप में चित्रण किया है। इस नाटक में नाटककार रत्नकुमार सांभरिया ने दिव्यांगों के प्रति समाज के नजरिए को चित्रित किया है। समाज के लोग उन दिव्यांगों का शोषण करते हैं। पुलिस भी उन लोगों का साथ देने के बजाये दिव्यांग होने के कारण उन लोगों का मजाक उड़ाता है। नेत्रहीन होने के कारण वीमा को घरवाले हर वक्त

गाली-गलोज करके अपमानित करते हैं। जिससे तंग आकर वीमा घर छोड़कर भाग जाती है। उसकी मुलाकात जमन से होती है। जमन वीमा से शादी करके अपना घर बसाता है। जब स्कूल के संस्थापक को वीमा का परिचय ज्ञात होता है, तो वह उसके घरवालों को बुलाकर वीमा को घर भेज देता है। क्योंकि वीमा उच्च जाति की थी और जमन निम्न जाति का। उच्च जाति के लोगों के लिए असहनीय है कि निम्न जाति से संबंध रखने वाले जमन से उच्च जाति की वीमा की शादी हो। नेत्रहीन स्कूल के संस्थापक श्यामा जमन को कहता है-"अरे भाई, यह पहेली नहीं है, तुम्हारी जात-बिरादरी की किसी निःशक्त लड़की के साथ तुम्हारे फेरे डलवा दूंगा।"[54]

जब जमन अपनी पत्नी को ढूँढने के लिए पुलिस की सहायता मांगने जाता है, तब पुलिस वाले उसकी सहायता करने के स्थान पर उसे अपमानित करते हुए भगा देता है। "अरे थानेदार तू है या मैं हूँ? तफ़्तीश कौन करेगा, यह तू जानता है या मैं जानता हूँ? क्या बताओगे उनको? जाओ-जाओ साहब आने को है। रवाना हो जाओ, यहाँ से। ..... वरना .....।"[55] इसमें थानेदार जमन की सहायता करने के स्थान पर उसे डांट-फटकार कर वहाँ से भगा देता है। यह एक पुलिस वाले की नजरिया है। वह जमन की पत्नी को ढुढ़ने में मदद नहीं करता है और न ही श्यामा को गिरफ्तार करता है।

इस नाटक में रत्नकुमार सांभरिया ने दिव्यांग व्यक्तियों की समस्याओं को विषय वस्तु बनाया है। वर्तमान समाज में जीने के लिए एक दिव्यांग व्यक्ति को किस तरह से संघर्ष करना पड़ता है। लोग इस हद तक अमानवीय हो गए हैं कि श्यामा जैसे लोग दिव्यांग जमन की पत्नी अंधी वीमा को मायके के लोगों को बुलाकर घर भेज देता है। क्योंकि श्यामा उच्च जाति के हैं। जमन एक शिक्षक होकर भी निम्न जाति से संबंध रखने के कारण ही वीमा के घर के लोग उसे ले जाते हैं। यहाँ दिव्यांगों की सम्स्याओं का चित्रण होने के साथ-साथ समाज में व्याप्त जाति-भेद की भावनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। जाति-भेद की भावनाओं के कारण ही श्यामा जमन की पत्नी वीमा के घर के लोगों को बुलाकर भेज देता है। क्योंकि वह नहीं चाहता है कि उच्च जाति की वीमा की शादी निम्न जाति के जमन से हो।

रत्नकुमार सांभरिया का दूसरा नाटक 'भभूल्या' में भ्रष्टाचार तथा सत्ता के दुरुप्रयोग का वर्णन हुआ है। इसमें रक्षक के रूप में पुलिस, पदाधिकारी लोगों का शोषण करते हैं। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए शक्ति का दुरुप्रयोग करता है। पुलिस अधिकारी साधारण लोगों को डरा-धमकाकर शोषण करता है। रक्षक के स्थान पर वे समाज में भक्षक के रूप में हैं। वे भ्रष्टाचारी होने के साथ-साथ अपने पद का फायदा उठाते हुए लोगों का शोषण करते हैं। स्वाधीनता दिवस के कारण शहर के सभी शराब तथा मीट की दुकाने बंद थी। घर में मेहमान आने के कारण आई.जी. अपने हेड कांस्टेबल को मीट लाने के लिए भेजता है। कांस्टेबल अपने पद तथा शक्ति का दुरुप्रयोग करते हुए धियानाराम को अपनी बकरी को मारने के लिए विवश करता है। नाटक में आई.जी. कहता है –"टुडे इज इंडिपेंडेंस डे। आल शॉप्स ऑफ वाइन एज़ वेल एज़ चिकेन एंड मटन विल बी क्लोज्ड। आज पंद्रह अगस्त है। किसी के कानोंकान खबर ना हो। मीडिया को तो बिल्कुल नहीं। सुनी है न वो कहावत, 'दीवारों के भी कान होते हैं।"[56] पंद्रह अगस्त के दिन पुलिस का काम है कि कहीं पर भी लोग शराब पीकर शोर-शराबा न करें। चारों ओर शांति बनी रहे। परंतु पुलिस स्वयं अपनी शक्तियों का गलत प्रयोग करते हुए शराब तथा मीट लाने के लिए जाती है।

'उजास' रत्नकुमार सांभरिया का तीसरा नाटक है। इसमें जातिभेद का चित्रण है। साथ ही शिक्षा का महत्व और राजनीति का भी चित्रण है। नाटक में दिखाया है किस तरह चुनाव के समय गरीब लोगों को ठगा जाता है। नाटक की शुरुआत मंदिर के दृश्य से होता है। जिसके अंदर निम्न वर्ग वालों का जाना वर्जित था। नाटक में संती कहती है- "हे प्रभु! तुमने आदमी-आदमी में फरक कर दिया! तुमने हम लोगों को वो बनाया ही नहीं, जो दरसन कर सकें तुम्हारे! फूल अरपत कर सकें, तुम्हारे चरणों में। फल, फरुट और मिठान चढ़ा सकें। गलती तुम्हारी है। यहीं से पिराथना सुन लो पिरभु।"[57] मंदिर के पंडित का भाई गाँव वालों को मंदिर में प्रवेश के लिए संघर्ष करने को कहता है। गाँव वाले पहले नहीं मानते। बाद में मान जाते हैं। पर अंत में वह गाँव वालों को ठग देता है। गाँव का एक शिक्षित युवक गाँव वालों को समझाता

है। वह शिक्षा के महत्व को बताता है। वह (कालिया) बच्चों को पढ़ाने की बात करता है। कालिया कहता है- "रामानन्द जी, मंदिर-प्रवेश कराने से कौनसा भला हो जाएगा, हमारा? कुछ करना चाहते हो, हमारे बच्चों को शिक्षा दिलाओ। हमारे लिए स्कूल मंदिर है। शिक्षा मूर्ति है। शिक्षा के मंदिर में भेदभाव होता है, हमारे साथ। मास्टर हमारे बच्चों को स्कूल से भगा देते हैं।"[58] नाटककार ने यहाँ शिक्षा को महत्व दिया है। अंत में सभी कालिया की बात मान लेते हैं। अंत में हार कर रामानन्द और उसका पंडित भाई गाँव वालों की बात मान लेता है। नाटक में दिखाया है कि अमीर किस तरह गरीबों का शोषण करते हैं। वह अपने अनुसार सभी को चलाना चाहते हैं। नाटककार ने दिखाया है कि उन्नति के लिए शिक्षा बहुत ही आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य जीवन में आगे बढ़ सकता है।

रत्नकुमार सांभरिया ने अपने नाटकों में समाज को विषय वस्तु बनाकर प्रस्तुत किया है। साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ-साथ सचेतक भी है। साहित्य समाज को आईना दिखाने के साथ-साथ जागरूकता भी पैदा करती है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपने नाटकों में समाज में व्याप्त समस्याओं को रूप प्रदान किया है। उन्होंने जाति-भेद, भ्रष्टाचार, शोषण आदि का चित्रण किया है। वर्तमान समाज के लोगों में मानवता, ममता, दया, प्रेम आदि भावनाएँ समाप्त हो चुकी है। अपनी भावनाएँ समाप्त होने के कारण ही श्यामा जमन की गर्भवती पत्नी को मायके के लोगों को बुलाकर भेज देता है। 'वीमा' नाटक में जाति-भेद की दीवार के तले कुचलते हुए लोगों का चित्रण हुआ है। तो 'भभूल्या' नाटक में सत्ता के आगे झुकते हुए आम जन को रूप प्रदान किया है। 'उजास' नाटक में ग्राम्य समाज में होने वाली राजनीति का वर्णन किया है।

(iv) लघुकथा : रत्नकुमार सांभरिया की लघुकथाओं का संपादन डॉ. जितेंद्र ने किया है। इसका प्रकाशन सन् 2020 में वनिका पुब्लिकेशन्स से हुआ था। इस लघुकथा संग्रह में 104 लघुकथाएँ संकलित है। "सांभरिया की लघुकथाएँ आवाज नहीं करती। उनके पास मूक बोलने की कला तो

है ही, पात्रों में शालीनता के साथ विरोध करने का संयम उनकी लघुकथा का प्रमुख आधार है। वे उन गरीबों के साथ हैं, जो चुपचाप अन्याय सहते जाते हैं, तो वे उनके साथ भी है, जो प्रतिरोध करना जानते हैं। समान्यतः उनके पात्र गांधी की भांति अहिंसा का प्रदर्शन करते हैं, जो निश्चित ही अवतार नहीं, सामान्य है।"[59]

रत्नकुमार सांभरिया की लघुकथाएं उद्देश्यपरक है। 'अंतर' लघुकथा में एक घोड़े की संवेदना को दिखाया गया है। इसमें एक जानवर और मनुष्य के बीच के अंतर का चित्रण है। 'आटे की पुड़िया' में भूख का संघर्ष दिखाया है। लघुकथा में मजदूरिन अपने बच्चे और पति की भूख का संघर्ष है। यहाँ गरीबों के कष्टों का चित्रण है। 'अपना-अपना संसार' में एक पक्षी और उसके बच्चे की कथा है। यहाँ माँ और बच्चे के बीच के संबंध को दिखाया है। पक्षी के द्वारा एक माँ की ममता और न खत्म होने वाली संवेदना का चित्रण है। 'आवरण' लघुकथा उपदेशात्मक है। इसमें दिखाया है कि सीधे-सरल लोगों को दुनिया जीने नहीं देती। जो ताकतवर है, वही जीतता है। 'चश्मा' लघुकथा कार्यालयों में हो रहे भ्रष्ट कार्यों का यथार्थ चित्रण है। यहाँ कार्यालयी व्यवस्था पर चोट किया गया है। 'जानवर' लघुकथा में जंगल के जानवर का नहीं बल्कि जानवर रूपी मनुष्य का जिक्र किया है। यहाँ जानवर एक सिपाही को कहा गया है। वह देश की रक्षा के वजाय जंगल में रहने वाले स्त्रियों पर बुरी नजर डालता है। 'समाज' लघुकथा में स्त्रियों की स्थिति का चित्रण हुआ है। यहाँ स्त्रियों के प्रति समाज की मानसिकता का चित्रण है। रानी के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों की दशा का यथार्थ चित्रण हुआ है।

(v) आलोचना : 'मुंशी प्रेमचंद और दलित समाज' रत्नकुमार सांभरिया की आलोचनात्मक कृति है। इसमें रत्नकुमार सांभरिया ने प्रेमचंद की दलित जीवन पर आधारित कुछ कहानियों की आलोचना की है। मुक्ति मार्ग, मंत्र, मंदिर, घासवाली, पूस की रात, सदगति, ठाकुर का कुआं, दूध का दाम और कफ़न। इन सभी कहानियों का उन्होंने निष्पक्ष भाव से विवेचन किया है।

पुस्तक की भूमिका में प्रो. दामोदर मोरे लिखते है – "सांभरिया का निरीक्षण सूक्ष्म है। अभ्यासपूर्ण है। प्रेमचंद की सामंती सोच ने दलित को अपनी कहानियों में नायक नहीं बनने दिया। सांभरिया की इस टिप्पणी का मतलब इतना ही है कि प्रेमचंद केवल वर्णव्यवस्था के गुलाम ही नहीं थे, बल्कि वर्णव्यवस्था के वाहक भी थे। प्रचारक थे।"[60]

रत्नकुमार सांभरिया ने आलोचना में प्रेमचंद का विरोध करते भी दिखाया है। वे कहते है कि "प्रेमचंद अपनी जातीय संकीर्णताओं के चलते वर्णव्यवस्था के जाल में इस कदर जकड़े थे कि वे वर्ग तक पहुँच ही नहीं पाए। दलित कथानकों पर लिखी उनकी कहानियों में नायकत्व नहीं है। बगैर नायक वर्ग संघर्ष हुआ है? सही बात तो यह है कि प्रेमचंद ने जिस कोण से अपनी कहानियों का ताना-बाना बुना है, वहाँ वर्ण का गुणगान है, वर्ग दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता है। कफ़न, सदगति, मुक्ति मार्ग, ठाकुर का कुआं, मंत्र में वर्णव्यवस्था का खुला प्रतिपादन है।"[61] रत्नकुमार सांभरिया ने प्रेमचंद का समर्थन तो किया है, साथ ही जगह-जगह विरोध भी किया है।

रत्नकुमार सांभरिया का कृतित्व हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने उपन्यास, नाटक, कहानी, लघु कथा, आलोचना आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है। इनका हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी रचनाओं में समाज के यथार्थ का सजीव चित्रण किया है। उनकी रचनाओं में समाज का स्वर है। उनकी कृतियों में समाज के निशक्त लोगों के प्रति एक नया दृष्टिकोण है। उन्होंने निशक्तों को असहाय नहीं, बल्कि संघर्षशील चित्रित किया है। रत्नकुमार सांभरिया के रचनाओं के पात्र जीने की इच्छा रखते हैं। उनमें लड़ने की क्षमता है। वे निराश होकर मरने की नहीं सोचते। उनकी रचनाएँ समाज की सच्चाई का चित्रण करती हैं। उनकी रचनाओं में भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, स्त्री चेतना, दलित चेतना, वृद्ध जीवन आदि का चित्रण हुआ है। उनकी कृतियाँ मानवतावादी चेतना की ओर उन्मुख हैं। उनकी रचनाएँ समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हैं।

संदर्भ:

1. उपन्यासकार शिवानी : व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ. विपिन कुमार, पृ. 44
2. कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु की वस्तुगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का अनुशीलन, डॉ. रामसागर यादव, पृ. 1
3. कथाकार भीष्म साहनी संवेदना और शिल्प, डॉ. चोटलिया, पृ. 85
4. शोध ऋतु, रत्नकुमार सांभरिया ई-विशेषांक, 30 मई, 2022, पृ. 76
5. वही, पृ. 76
6. वही, पृ. 114
7. रत्नकुमार सांभरिया के साहित्य में सामाजिक चेतना (अप्रकाशित शोध प्रबंध), स्नेह लता, हिंदी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र - 2009, पृ. 58
8. हुकम की दुग्गी, फुलवा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 3
9. वही, पृ. 3
10. वही, पृ. 4
11. वही, बकरी के दो बच्चे, पृ. 13
12. वही, पृ. 15
13. वही, अनुष्ठान, पृ. 22-23
14. वही, आखेट, पृ. 34
15. वही, पृ. 34
16. वही, हुकम की दुग्गी, पृ. 121
17. हुकम की दुग्गी, हुकम की दुग्गी, पृ. 129
18. रत्नकुमार सांभरिया के साहित्य में सामाजिक चेतना(अप्रकाशित शोध प्रबंध), स्नेह लता, हिंदी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र - 2009, पृ. 61
19. काल तथा अन्य कहानियाँ, लाठी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 4
20. वही, बात, पृ.18
21. वही, धूल, पृ. 37
22. वही, पृ. 70
23. वही, पृ. 76
24. काल तथा अन्य कहानियाँ, काल, पृ. 71

25. काल तथा अन्य कहानियाँ, काल, पृ. 73
26. वही, मूंगफली के दाने, पृ. 147
27. वही, पृ. 150-151
28. वही, पृ. 64
29. खेत तथा अन्य कहानियाँ, खबर, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 13-14
30. वही, संवाखें, पृ. 41
31. वही, बाघ के दीदार, पृ. 48
32. वही, खेत, पृ. 81
33. वही, वदन दबना, पृ. 110
34. वही, पृ.110
35. वही, बेस, पृ. 127
36. एयरगन का घोड़ा, गाड़िया, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 23
37. वही, एयरगान का घोड़ा, पृ. 66
38. वही, बेस, पृ. 77
39. एयरगन का घोड़ा, बेस, पृ. 81
40. वही, द्वंद्व, पृ. 102
41. दलित समाज की कहानियाँ, फुलवा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 23
42. दलित समाज की कहानियाँ, बकरी के दो बच्चे, पृ. 32
43. वही, पृ. 36
44. वही, आखेट, पृ. 47
45. वही, इत्तफाक, पृ. 78
46. वही, पृ. 86
47. वही, शर्त, पृ. 89
48. वही, पृ. 92
49. वही, भैंस, पृ. 108
50. वही, पृ. 109
51. वही, पृ. 109
52. साँप, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 48

53. साँप, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 29
54. रत्नकुमार सांभरिया तीन नाटक, वीमा, पृ. 25
55. वही, पृ. 66
56. रत्नकुमार सांभरिया तीन नाटक, भभूल्या, पृ. 143-144
57. रत्नकुमार सांभरिया तीन नाटक, उजास, पृ. 165-166
58. वही, पृ. 177
59. रत्नकुमार सांभरिया की लघुकथाएँ, संपादक – डॉ. जितेंद्र 'जीतू', पृ. 5
60. मुंशी प्रेमचंद और दलित समाज, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 10
61. वही, पृ. 9-10

द्वितीय अध्याय

समकालीन हिंदी कहानी लेखन और रत्नकुमार सांभरिया

क. समकालीन हिंदी कहानी लेखन

समकालीन हिंदी कहानी के प्रवर्तक डॉ. गंगा प्रसाद 'विमल' को माना जाता है। 'समकालीन' शब्द का अर्थ होता है समसामयिक अर्थात एक ही समय का। यानि समकालीन कहानी वह होती है जिसमें एक ही समय के कहानीकारों द्वारा एक ही विषय को आधार बनाकर कहानी लिखी गई है। "समकालीन का अर्थ यह नहीं है कि दो व्यक्ति एक विशेष काल खंड में जी रहे हैं और संयोग से वे रचनाशील भी हैं। जिस समकालीन या समकालीनता की चर्चा सन् 1960 के बाद की कहानी के संबंध में की जा रही है, उसका शब्दार्थ की धारणा से संबंध नहीं हैं, अपितु वह जीवन बोध के आधार पर समानधर्मी रचनाकारों के बोध की समानधर्मिता है।"[1]

समकालीन में जितने भी कहानीकार होते हैं वे सब एक ही समय के होते हैं। उनका विषय भी समय सापेक्ष होता है। इसलिए इस समय की कहानियों की विशेषताओं में एकरूपता दिखाई देती है। समकालीन कहानीकारों में विशेषताओं की एकरूपता होने के साथ-साथ एक ही समय से संबंधित होना भी आवश्यक है। एक ही समय में एक जैसे विषय पर लेखन कार्य करने वाले साहित्यकारों को समकालीन साहित्यकार कहा जाता है। अगर ऐसा होता तो मीराबाई, प्रेमचंद आदि सभी समकालीन ही कहलाते। क्योंकि उनकी कहानियों में समाज का यथार्थ मिलता है। पर ऐसा नहीं है। हम इन्हें समकालीन नहीं कह सकते। समकालीन होने के लिए एक ही समय के साहित्यकार होना आवश्यक है। चूँकि 'समकालीन' शब्द से ही इस बात का पता चल जाता है कि 'सम' का अर्थ है 'समान' और 'कालीन' का अर्थ है 'समय का'।

(i) परिभाषा :

"कोशगत अर्थों में समकालीनता और समसामयिकता को अंग्रेजी के 'कन्टम्प्रोरेनिटी' (contermporaneity) अथवा 'कोईवाल' (coeval) का समानवाची माना गया है जिनका अर्थ है 'उसी समय या कालखंड में होने वाली घटना या प्रवृत्ति या एक ही कालखंड में जी रहे व्यक्ति।"[2]

डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय कहते हैं कि " 'समकाल' शब्द यह बताता है कि काल के इस प्राचीन खंड या प्रवाह में मनुष्य की स्थिति क्या है, इसे उलटकर कहें तो कह सकते हैं कि मनुष्य की वास्तविक स्थिति को देखकर उसे अंकित चित्रित करके ही हम समकालीनता की अवधारणा को समझ सकते हैं।"[3]

गंगा प्रसाद विमल कहते हैं "समकालीन का अर्थ यह नहीं है कि दो व्यक्ति एक विशेष कालखंड में जी रहे हों और संयोग से वे रचनाशील भी हैं। जिस समकालीनता की बात की जा रही है उसका शब्दार्थ की धारणा से सम्बन्ध नहीं है, अपितु वह जीवनबोध के आधार पर समानधर्मी रचनाकारों के बोध की समानधर्मिता है।"[4]

डॉ. सुखबीर सिंह कहते हैं "समकालीनता का अर्थ समसामयिकता नहीं होता है। तत्कालीनता से इसका अर्थ लेने से भी इसके अर्थ का बहुत संकोच हो जाता है। वस्तुतः समकालीनता एक व्यापक एवं बहुआयामी शब्द है और आधुनिकता का आधारतत्व है। जो समकालीन है, वह आधुनिक भी हो, यह आवश्यक नहीं हैं किन्तु जो आधुनिक चेतना से संवलित दृष्टी है। वह निश्चित रूप से समकालीन भी होती है।"[5]

इस तरह अनेक विद्वानों द्वारा समकालीन पर अनेक परिभाषाएँ दी गई है। सभी ने अपने मतानुसार परिभाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी बात रखी है। इन परिभाषाओं से समकालीन के अर्थ को स्पष्ट रूप में जान पाए हैं।

(ii) समय :

समकालीन कहानी की शुरुआत नई कहानी के बाद सन् 1960 ई. के बाद से मानी

जाती है। गंगा प्रसाद विमल इसके प्रवर्तक माने जाते हैं। जिन कहानियों में कहानीकारों ने समकालीन परिस्थितियों को कहानी का विषय बनाया है। उन कहानीकारों की कहानियों को समकालीन कहानी कहा गया है। समकालीन कहानी आधुनिकता बोध से परिपूर्ण है। इन कहानियों में पहले की कहानियों से काफी गहराई देखी जाती है। यह कहानियाँ अपने समय के सामाजिक यथार्थ को बयान करती है। इन कहानियों में तत्कालीन परिवेश का चित्रण प्राप्त होती है। इससे पूर्व की कहानियों में यथार्थ तो थी पर वह सामाजिक यथार्थ थी। परन्तु समकालीन कहानियों में मानवीय मूल्यों के यथार्थ को अधिक दिखाया है। इन कहानियों में गहरी रूप में जीवन की जटिलताओं का चित्रण है। समकालीन कहानी में कहानीकारों ने मनुष्य के जीवन की यथार्थ की अभिव्यक्ति की है। इस कहानी में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, पारिवारिक विघटन, स्त्री की समस्याएँ, दाम्पत्य जीवन आदि विषयों पर गहराई से चर्चा की गई है। इन विषयों पर समकालीन कहानीकारों ने खुलकर लिखा है। मनुष्य के अनुभावों, उनकी प्रतिक्रियाएँ, उनका दुःख-दर्द, संवेदनाएँ, अकेलापन, अजनबीपन आदि इस समय की कहानियों का विषय है। समकालीन कहानीकार किसी भी समस्या की जड़ को ढूंढता है।

(iii) प्रवृत्तियाँ :

समकालीन कहानियों की निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ हैं :-

स्त्री विमर्श : स्त्री विमर्श में स्त्री की अस्मिता को केंद्र में रखकर बात की जाती है या विचार किया जाता है। सदियों से शोषित होती आई स्त्रियों की चेतना से स्त्री विमर्श सामने आया। प्राचीन काल से अपने हक या अधिकारों से वंचित स्त्रियों को उनका हक दिलाना ही स्त्री विमर्श का मूल उद्देश्य रहा है। प्राचीन काल से ही स्त्रियों को उनके अधिकारों से वंचित किया जा रहा है। उन्हें शिक्षा लेने की भी अनुमति नहीं थी। सिर्फ लड़कों को ही स्कूल जाने दिया जाता था। लड़कियों को सिर्फ खाना बनाने का काम ही दिया जाता था और घर के सारे काम करने देते थे। उन्हें सिर्फ घर की चार दीवारों के भीतर तक ही सीमित रखा जाता था। साथ ही उन्हें सिर्फ भोग विलास का सामान माना जाता था। उनको अपने हक में बोलने की कोई आजादी न थी। पितृसत्तात्मक समाज ने उन्हें अपने अनुसार इस्तेमाल किया। उन्हें खुलकर

जीने का मोका तक नहीं दिया। पुरुष द्वारा स्त्रियों का खूब शोषण एवं दमन किया गया। स्त्रियाँ अपने पति को ही अपना सब कुछ मानती थी। इसलिए पति जो कहता वह चुपचाप सुन लेती थी। लड़की के इतने काम करने पर भी दहेज के कारण पति और उसके घर वाले उसे बेरहमी से मारकर जला देते थे। समकालीन कहानी तक आते–आते स्त्रियों पर हो रहे अत्याचारों एवं शोषणों पर आवाज उठने लगी। विचार विमर्श होने लगा, जिसे आगे चलकर स्त्री विमर्श का नाम दिया गया। अब स्त्रियाँ पुरुष के सामान ही पढ़ लिखकर शिक्षित होने लगी। नौकरी करके स्वावलंबी होने लगी। मिथिलेश्वर कृत 'सावित्री दीदी', 'आखिरी बार', 'रात', पुन्नी सिंह कृत 'लकड़हारे की राखी', 'नन्दो', 'बाल वर्ष के बाद की माँ', राजी सेठ कृत 'तीसरी हथेली', विष्णु प्रभाकर कृत 'नए चेहरे ', ज्ञानरंजन कृत 'गोपनीयत', कुसुम अंचल कृत 'टूटी कुर्सी' आदि स्त्री विमर्श पर आधारित समकालीन कहानियाँ हैं।

दलित विमर्श : "दलित चेतना का उभार इस काल की एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति है। यों तो दलितों का सभी जातियों के भूमिपतियों द्वारा शोषण और दमन सदियों पुरानी परिघटना है, पर ज्योतिबा फुले, बाबासाहब अम्बेडकर आदि के नेतृत्व में हुए आंदोलनों ने दलितों को संघर्ष की भूमिका में ला खड़ा किया। इस काल तक आते-आते यद्यपि दलित अभी शोषित-पीड़ित अवस्था में ही थे। पर अब उन्होंने सवर्णों और सामंतों का विरोध करना आरम्भ कर दिया था।"[6]

दलितों पर अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं। स्वयं प्रकाश कृत 'जो हो रहा है', 'सूरज अब निकलेगा', मिथिलेश्वर कृत 'एक और हत्या', 'देर तक', 'न चाहते हुए भी', मणि मधुर कृत 'त्वमेव माता', 'फाँसी', पुन्नी सिंह कृत 'होरी', 'कसक' आदि दलित जीवन पर आधारित कहानियाँ हैं। दलितों की अस्मिता की खोज ने दलित विमर्श को जन्म दिया। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'सलाम' दलितों पर लिखी एक सशक्त कहानी है। इस कहानी में दलितों पर हो रहे शोषण का चित्रण किया गया है। "सलाम में गाँवों में सामाजिक विषमता का गहरा अहसास कराया गया है। आज भी हिन्दू समाज में दलित समाज के प्रति सवर्ण जातियों का व्यवहार घृणा और विरोध का है, जिसे यह कहानी बड़े प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। कहानी

दलित समाज के प्रति सवर्णों की घृणा की भावना को ही नहीं, दलित के आहत विद्रोह को भी गहराई के साथ प्रस्तुत करती है।"[7] सदियों से दलितों को उनके अधिकारों से वंचित रखा गया है। पर धीरे-धीरे इस पर विचार विमर्श होने लगा। जिसके फलस्वरूप दलित विमर्श ने जन्म लिया। समकालीन कहानीकारों ने इन्हीं समस्याओं को देखते हुए दलित विमर्श को अपनी कहानियों का विषय बनाया। वैसे साहित्य ही समाज की अभिव्यक्ति है। समाज में हो रही घटनाओं को ही इन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया। समकालीन कहानीकारों ने जितना हो सके दलितों की संवेदनाएँ, संघर्ष, शोषण, पीड़ा, आदि को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है।

आदिवासी विमर्श : आदिवासियों पर हो रहे अत्याचार, उन पर आए संकटों, उनके अस्तित्व की तलाश आदि पर हो रहे विचार-विमर्श ही आदिवासी विमर्श है। आदिवासी के लिए जंगल, जल, जमीन ही सब कुछ है। पर धीरे-धीरे आधुनिकता के कारण वे अपने घर से ही दूर होते जा रहे हैं। सरकार, बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ आदि अपने लाभ के लिए इनको घर से बेदखल कर रहे हैं। समकालीन कहानियों में आदिवासियों पर आए इन संकटों को विस्तार दिया गया है। कहानीकारों ने विकास के नाम पर हो रहे विस्थापन, आदिवासियों पर अत्याचार को अपनी कहानियों के द्वारा व्यक्त किया है। समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों के द्वारा आदिवासियों पर हो रहे शोषण, उनकी संवेदनाओं, संत्रास, पीड़ा, आदि प्रकट किया है।

"'टीस' में आदिवासी जीवन की पीड़ा और संगीत, बल्कि यों कहें कि पीड़ा का संगीत भरा हुआ है । कोइलरी के ठीकेदारों द्वारा आदिवासियों के शोषण और उनकी जमीन हड़प लेने की साजिश का, उन्हें दर-दर की ठोकरें खाने के लिए विवश कर देने का बहुत ही यथार्थ चित्रण इस कहानी में किया गया है। इस कहानी में अपनी पत्नी की हत्या कर डालने वाला शिब्बू भी पाठक की सहानुभूति नहीं खोता; जिन परिस्थितियों में वह अपनी पत्नी की हत्या करता है वे एक विवश मनुष्य की पीड़ा को ही झंकृत करती हैं।"[8]

समकालीन कहानीकारों ने आदिवासियों की संस्कृति, लोक जीवन, उनका रहन-सहन, उनकी समस्याएं, संघर्ष आदि को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। पुन्नी सिंह कृत 'नए

जिनावर', 'जंगल का कोढ़', 'धनी राम', ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'जंगल की रानी', 'सलाम', 'बैल की खाल' आदि आदिवासी विमर्श पर आधारित कहानियाँ है। आदिवासी वे हैं, जो बरसों से जंगल को ही अपना घर मानकर रहते आए हैं। जंगल की सुरक्षा करते आ रहे हैं। लेकिन इन्हीं जंगलों में यूरेनियम की प्राप्ति, कोइला खदान आदि से जंगल और इन आदिवासियों को मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। पहाड़ों की जोरदार खुदाई हो रही है। जिससे वहाँ निवास कर रहे आदिवासियों के घर उजर रहे हैं। सरकार ने जंगल में पावंदियाँ लगा दी है। फिर भी कम्पनी वाले अपनी सुविधा अनुसार वृक्ष काटे जा रहे हैं। पर वहाँ निवास करने वाले आदिवासियों को घर बनाने तक के लिए लकड़ी नहीं मिल रही है। विस्थापन के नाम पर हो रहे आदिवासियों पर अत्याचार को समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है।

किसान विमर्श : किसान विमर्श से तात्पर्य है किसानों पर हो रहे अत्याचार, शोषण आदि विषयों पर बात या विचार करना। पहले गाँव में किसानों को अपनी जमीन के लिए जमींदारों से बहुत कुछ सहना पड़ता था। जमींदार किसानों का शोषण करते थे। पहले किसानों द्वारा किए गए खेती का कर जमींदारों को देना होता था। जिस कारण बहुत से किसान आत्महत्या कर लेते थे। हर जगह किसानों की यही दशा थी। किसानों की बहुत ही दयनीय स्थिति रही है। किसान हमारे लिए अन्न उगाते है। फिर भी उन्हें आराम से दो वक्त की रोटी तक नसीब नहीं होती। किसान अपना पूरा जी-जान लगा देता है फसल उगाने में। वह बहुत ही मेहनत करता है। फिर भी उसका दर्द समझने वाला कोई नहीं है। पहले किसानों को डरा-धमका कर जमींदार लुटता था, उन पर अत्याचार करता था। जमींदार उन्हें कर्ज देता था। समय पर कर्ज न दे पाने पर उनकी सारी जमीन हड़प लेता था। अगर वह किसान कहीं से कर्ज चूका भी दे तो जमींदार कुछ न कुछ बहाना करके फिर से फसा ही लेता था। यानि जमींदार किसानों को अपनी मुट्ठी में रखना चाहता था। जिससे बेसहारा किसानों के पास आत्महत्या के अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं रह जाता है।

आज भी किसानों की समस्या खत्म नहीं हुई। किसान आज भी पीड़ित है। भले ही आज

जमींदार नहीं है, पर सरकार के कारण ही किसानों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। आज भी किसान आत्महत्या जैसी भयंकर कार्य करने के लिए विवश है। आज भी किसानों को वह सारी सुविधाएं नहीं मिल पा रही है, जो उसे मिलनी चाहिए। किसानों के लिए फसल उगाने के लिए पानी की समस्या एक बहुत बड़ी समस्या बनकर सामने आई है। इसके अलावा बैंकों से कर्ज लेकर जब कर्ज चूका नहीं पाते तब किसान के पास आत्महत्या के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं रह जाता है। इन सारी चीजों को देखते हुए किसान विमर्श सामने आई। जिसमें किसानों की समस्याओं पर चर्चा की जा सके। साथ ही उनका समाधान भी किया जा सके। समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से किसानों की समस्याएँ, उनकी पीड़ा, संवेदनाएँ, संघर्ष आदि यथार्थ रूप में व्यक्त किया है। समकालीन कहानीकारों द्वारा किसान विमर्श पर आधारित अनेक कहानियाँ देखि जा सकती है। पुन्नी सिंह की 'मोर्चा', मिथिलेश्वर की 'जमुनी', शिवमूर्ति की 'अकाल दण्ड', शेखर जोशी की 'आखिरी टुकड़ा', महेश कटारे की 'गोद में गाँव' आदि कुछ समकालीन कहानीकारों द्वारा लिखी गई किसानों पर आधारित कहानियाँ हैं।

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध : आधुनिक समय में स्त्री-पुरुष संबंधों में अधिकतर दरारें नजर आते हैं। पहले स्त्रियाँ इतनी पढ़ी-लिखी नहीं होती थी। वह अपने पति के लिए ही काम करती थी और उनका कहना ही मानती थी। वह घर के चार दीवारों के भीतर ही रहती थी। अधिकतर उनका काम रसोई घर ही होता था। अशिक्षित होने के कारण वह ख़ुशी-ख़ुशी सब कुछ सहन कर लेती थी। पर धीरे-धीरे स्त्रियाँ पढ़-लिखकर शिक्षित होने लगी। अपना निर्णय स्वयं लेने लगी। नौकरियाँ करने लगी। आत्मनिर्भर होने लगी। या यूँ कहे कि धीरे-धीरे स्त्रियाँ सजक एवं जागरुक होने लगी। इस कारण स्त्री-परुष संबंधों में दरार पड़ने लगी। पुरुष-स्त्री को घर से बाहर घूमना, नौकरी करना, किसी अन्य लोगों से मिलना पसंद नहीं करता। स्त्री इसका विरोध करते हुए वह सब करती है जो वह चाहती है। जिससे संदेह का भाव उत्पन्न होता है।

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध कई प्रकार के हो सकते हैं- पति-पत्नी सम्बन्ध, पिता-पुत्री सम्बन्ध, माँ-पुत्र सम्बन्ध, भाई-बहन सम्बन्ध, आदि। आधुनिक समय में पति-पत्नी सम्बन्ध को टूटता

दिखाया है। पति-पत्नी सम्बन्ध के बीच अधिकतर संदेह की मानसिकता को देखा गया है। "स्वयं प्रकाश की कहानी 'मेरे और कोहरे के बीच' में एक ऐसे पति-पत्नी के सम्बन्ध का चित्रण किया गया है, जिनके विवाहपूर्व अन्य स्त्रियों या पुरुषों के साथ सम्बन्ध रहे हैं। कहानी पति के मानसिक द्वन्द के रूप में प्रस्तुत की गई है, जिसमें पति-पत्नी के प्रति उदार भाव रखने और उस पर संदेह करने के द्वन्द में पड़ा हुआ है पहले नैतिकता का दबाव इतना अधिक था, कि कोई कहानीकार इतने साफ ढंग से यह सब नहीं लिखता। यह बदली हुई मानसिकता का परिचायक है।"[9]

वस्तुवादी दृष्टिकोण : समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में समकालीन परिवेश के यथार्थ का चित्रण किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में वर्तमान परिस्थितियों का सजीव रूप अंकन किया है। आज के लोग मानवीयता का गुण भूल ही चुके हैं। उनकी विचारधारा मानवीय मूल्यबोध से बिल्कुल परे है। आज का मनुष्य व्यक्ति से अधिक वस्तु पर ज्यादा ध्यान देते हैं। उनका मनुष्य से अधिक वस्तुओं से लगाव है। ममता कालिया की कहानी 'सेमिनार' इसका उदहारण है। जहाँ एक कमरे के भीतर एक चमगादड़ घुस जाने से उसे एक व्यक्ति पास रखे हुए झाड़ू से मारकर फैंक देता है। पर उसी कमरे में रहने वाले अन्य लोग उस पक्षी के बारे में नहीं सोचते। वह उस बेजान झाड़ू को देखकर दुखी होते हैं कि कहीं वह खराब तो नहीं हो गया। क्योंकि उस झाड़ू को वह खरीदकर लाए थे – "मानसिंह काफी ठिगाना था, फिर भी वह अपना सिर ऐसे बचा-बचा कर चमगादड़ को देखता रहा जैसे वह उसे छूने ही वाला हो। आखिरकार थक कर चमगादड़ फर्श के एक कोने में उलटा पड़ गया। मानसिंह ने पास रखी झाडुओं में से एक उठाकर पुरे जोर से उस पर पटकी। 'ओ नो' 'ओ नो' करती हुई सुरेखाजी, बीना और विवेक लपके लेकिन उनकी हिम्मत उस झाड़ू को छुने की नहीं हुई, जिससे मानसिंह ने चमगादड़ मारा था। इस बार मानसिंह कमरे में दाखिल हुआ तो कई आवाजें एक साथ उस पर चिल्लाने लगीं 'ए मानसिंह, तुमने हमारा इतना सुन्दर डैकोरेशन पीस ख़राब कर दिया, हाउ मीन।"[10]

इस कहानी में दिखाया गया है कि किस तरह जीवित पक्षी से ज्यादा लोग डैकोरेशन

पर अधिक ध्यान देते हैं। डैकोरेशन खराब होने के कारण कमरे में रहने वाले लोग दुखी होते हैं। वह खाना खाने तक को मना कर देते हैं। आज मानवीयता किसी में रही ही नहीं। लोग जीव से निर्जीव वस्तुओं पर अधिक ध्यान देने लगे हैं।

गाँव से शहर की ओर पलायन : पुराने समय में लोग गाँव में ही रहकर अपना जीवन यापन करते थे। लोग अधिकतर गाँव में ही रहना पसंद करते थे। सभी का मानना था कि रहने के लिए गाँव ही सबसे शुद्ध एवं उपयुक्त जगह है । धीरे-धीरे नौकरी ढूंढते हुए लोग गाँव से शहर की ओर पलायन करने लगे। गाँव के लोग गाँव में काम न होने के कारण शहर जाकर काम ढूंढने लगे। शहर में ही बसने लगे। इस तरह अधिकतर लोग गाँव से शहर की ओर जीविका खोजने जाने लगे। यह सब बदलते परिवेश एवं आधुनिकता के कारण हो रहा है। "जीविका की तलाश में गाँव से नगर की ओर पलायन छठे दशक में ही आरम्भ हो गया था। आठवें दशक तक आते-आते इस परिघटना ने नया रूप ग्रहण कर लिया बिहार और उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के किसान-मजदूर बड़ी संख्या में खेती के मौसम में पंजाब-हरयाणा आदि राज्यों में पलायन करने लगे। गाँव के कम पढ़े-लिखे युवक भी जीविका की तलाश में दिल्ली, मुंबई जैसे महानगरों की ओर रुख करने लगे। इसके फलस्वरूप मजदूरों को नौकरी दिलाने का धन्धा भी पनपने लगा। और शिक्षित युवक तथा कृषक-मजदूर दोनों ही दलालों के शिकार बनने लगे।"[11] गाँव के लोग अपनी बेहतर जीविका के लिए गाँव से शहर जाने लगे। अपनी उच्च शिक्षा पूरी करने के लिए भी युवक-युवतियाँ शहर जाते थे।

पारिवारिक संबंधों का विघटन : पारिवारिक संबंधों का विघटन यानी पारिवारिक संबंधों में उत्पन्न बाधा या समस्याएं। संबंधों का टूटना भी पारिवारिक संबंधों का विघटन ही है। संबंधों से ही एक परिवार बनता है और परिवार से ही समाज। इसलिए अगर परिवार में कोई समस्या हुई तो उसका सीधा असर समाज पर पड़ता है। माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, मामा-मामी, चाचा-चाची, मोसा-मोसी, भईया-भाभी आदि संयुक्त परिवार ही है। जब किसी भी सदस्य से अच्छी तरह बात नहीं हो पाती, तब संबंधों में दरारें आ जाती है। जब विचारों में भिन्नता, अजनबीपन, अलगाव, तनाव आदि आती हैं तब पारिवारिक संबंधों का विघटन होता

है। या यूँ कहे कि मूल्यों का विघटन ही संबंधों का विघटन है।

"इस काल की अनेक कहानियाँ मध्यवर्गीय समाज में पारिवारिक संबंधों के विविध पक्षों का चित्रण करती हैं। सातवें दशक के आते-आते मध्यवर्ग के युवकों-युवतियों का बेहतर जीविका की तलाश में विदेश, विशेषकर अमेरिका गमन शुरू हो गया था। उनमें से अधिकांश के विदेश में बस जाने, पारिवारिक जिम्मेदारियों से कन्नी काट लेने और माता-पिता के प्रति उदासीन हो जाने के कारण अकेले पड़ गए वृद्ध दंपत्ति लाचार स्थिति के शिकार हो जाते थे। कभी–कभी युवक विदेश चले जाते थे और उनकी पत्नियाँ देश में ही रह जाति थीं। उनका देश में छुटा हुआ परिवार अक्सर संयुक्त परिवार होता था, जहाँ पति-पत्नी, माँ-बाप और बेटी आदि युवक से अपने भरण-पोषण की अपेक्षा रखते थे। कई बार ऐसा भी होता था कि युवक विदेश जाकर विदेशी लड़की से विवाह भी कर लेता था। इसके फलस्वरूप पारिवारिक संबंधों की जटिल समस्याएं पैदा हो जाया करती थी।"[12]

मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ : समकालीन कहानीकारों ने मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों को अपनी कहानियों में भली भांति प्रस्तुत किया गया। उनकी अधिकतर कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन पर ही आधारित है। मध्यवर्ग की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उनकी आय सीमित होते हुए भी वह उच्च वर्ग जैसा दिखावा करते हैं। वे अपनी क्षमता से ज्यादा दिखने की कोशिश करते हैं। वे उच्च वर्ग जैसा खुद को बनाने का प्रयत्न करते हैं। जिससे उनके जीवन में भारी समस्या आ जाती है। मध्यवर्ग का व्यक्ति किसी भी बात से खुद को संतोष्ट नहीं कर पाता। मध्यवर्ग की स्त्रियों की भी यही दशा है। वह न तो संतोष्ट रह पाती है, न तो मनचाहा कुछ कर पाती है। दिन प्रतिदिन पाने की आश बढ़ती चली जाती है। जिससे पति-पत्नी के बीच या परिवार के अन्य सदस्यों के बीच का संबंध बिगरने लगता है। मध्यवर्गीय जीवन में अधिकतर अकेलापन, निराशा, संत्रास, तनाव, चिरचिरापन, समय की कमी, आदि देखा जाता है।

"बीसवीं सदी के मध्यवर्गीय परिवार एक ऐसे संक्रांति काल से गुजर रहे थे जहाँ दो विपरीत मानसिक स्थितियों वाली पीढ़ियाँ आपस में टकरा रही थीं, पर उसका खामियाजा

केवल स्त्रियों को भुगतना पड़ता था। पुरानी पीढ़ी अपने पुराने मूल्यों और विचारों से जकड़ी हुई थी और उसे किसी प्रकार भी छोड़ने को तैयार न थी। नए विचारों वाली पढ़ी-लिखी लड़की परिवार में बहू के रूप में आते ही इस पुरानी मानसिकता से टकराने को बाध्य थी। लड़की का पति उच्च शिक्षा पाने के बावजूद माता-पिता और पुत्र के सम्बन्ध परंपरागत मूल्यों से मुक्त नहीं हो पाया था। अतः वह भी पुराने मूल्यों का निष्क्रिय समर्थक हो जाता था और कभी-कभी आक्रामक समर्थक भी।"[13] मध्यवर्ग की विसंगतियों का कारण अधिकतर मनुष्य की मानसिकता ही है।

पीढ़ियों का टकराव : परंपरा से चली आई मान्यताएं पीढ़ी दर पीढ़ी समयानुसार परिवर्तित होती रहती है। हर पीढ़ी में समयानुसार चीजें बदलती रहती है। जिस कारण जब दो अलग-अलग पीढ़ी का आमना-सामना कभी होती है, तो दोनों की सोच मेल नहीं खाती। दोनों अपनी पीढ़ी के अनुसार सोच विचार करते हैं और अपनी बात को सही साबित करने लगते हैं। जैसे माता-पिता और उनके बच्चे की सोच। माता-पिता जो सोचते हैं और जो उनका बच्चा सोचता है इन दोनों की सोच में काफी अंतर होता है। ज्ञानरंजन की 'पिता' कहानी को ही देख सकते हैं। जिसमें एक पिता और पुत्र की मानसिकता को दिखाया है। पुत्र आधुनिक समय का होने के कारण अपने पिता को आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करने को कहता है। पर पिता आधुनिक को छोड़ अपने पुराने समय के साथ ही जुड़ा रहना चाहता है। पिता आधुनिकता को स्वीकार करने में असमर्थ है। वह स्वीकार करना नहीं चाहता।

समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में पीढ़ियों का टकराव को भली-भांति अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियों में यथार्थ जीवन में हो रहे पीढ़ियों के बीच की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। आज ऐसा देखने को मिलता है कि बच्चों के पास अपने माता-पिता के लिए भी समय नहीं है। सब अपने-अपने काम में व्यस्त हैं। वह अपने माता-पिता के परवाह ही नहीं करते। गोविन्द मिश्र की कहानी 'अंश' इसका उदाहरण है – "'अंश' में एक अपेक्षाकृत समृद्ध और जीवंत तथा बेटे को अमेरिका भेजने वाले पिता के मर जाने पर उसकी पत्नी की मानसिकता का चित्रण किया गया है। बेटा अमेरिका में अपनी गर्लफ्रेंड के साथ

रहता है और बड़ी मनवान के बाद अपने पिता का श्राद्ध करने आता है। पर उसे पिता के श्राद्ध में कोई रूचि नहीं, वह श्राद्ध के समाप्त होने से पहले ही माँ से अपना विवाह अमेरिकी लड़की से करने की इजाजत माँगता है।"[14]

समकालीन कहानीकारों ने आज की पीढ़ी एवं पुरानी पीढ़ी के बीच की टकराव को चित्रित किया है। साथ ही दोनों में से एक पीढ़ी द्वारा दूसरे पीढ़ी को समझने की भी मानसिकता का चित्रण किया गया है। सुर्यवाला की कहानी 'साँझबाटी' में पीढ़ियों की सोच में परिवर्तन दिखाया गया है- "सूर्यबाला की 'साँझबाती' में एक ऐसे वृद्ध पंजाबी दम्पत्ति की मानसिकता का अंकन हुआ है, जिनके आधुनिक बेटे-बहू अपनी व्यस्त जिंदगी में उन्हें कोई महत्त्व नहीं देते और निरंतर भाग दौड़ में लगे रहते हैं। पर वृद्ध पिता में सेन्स ऑफ ह्यूमर की इतनी प्रचुरता है कि वह सारी स्थितियों को झेल लेता है और अपनी बूढी पत्नी को हँसते-हँसते तसल्ली देता है। पीढियों की मानसिकता के बदलाव की अच्छी अभिव्यक्ति इस कहानी में हुई है।"[15]

ख. समकालीन हिंदी कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया:

समकालीन हिंदी कहानी में अनेक कहानीकारों ने लेखन कार्य किया है। जिनमें से मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, मणि मधुकर, चंद्रकांता, चित्रा मुद्गल, संजीव, रमणिका गुप्त, शैलेश मटियानी, उदय प्रकाश, ज्ञानरंजन, गंगा प्रसाद विमल, अमरकांत, रामदरश मिश्र, पुन्नी सिंह आदि कहानीकार प्रमुख हैं। इन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में मानव जीवन एवं समाज के यथार्थ को कहानी के द्वारा सबके समक्ष लाने की चेष्टा की है। इनमें से प्रायः सभी कहानीकारों ने समाज में व्याप्त समस्याओं जैसे भ्रष्टाचार, स्त्री समस्या, जातिभेद, मानवीय मूल्यों, साम्प्रदायिकता आदि पर खुलकर लिखे हैं।

(i) समकालीन हिंदी कहानीकार और उनकी कहानियाँ :

समकालीन हिंदी कहानी में कमलेश्वर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कहानियों में आर्थिक कमजोरी, मानव अंतर्द्वंद्व की पीड़ा, आधुनिक बदलते परिवेश, टूटते जीवन मूल्य आदि का वर्णन है। उनकी कहानी 'राजा निरम्बसिया' एक सशक्त कहानी है। इस कहानी में नायक की

व्यथा का वर्णन है। यहाँ अस्पताल के एक कम्पाउण्डर द्वारा चंदा नाम की एक औरत की मजबूरी का फायदा उठाते हुए उसके साथ कुकर्म करते दिखाया है। जिसे जानकर उसका पति जगपति आत्महत्या कर लेता है। कमलेश्वर की अन्य कहानियाँ है- 'अच्छा ठीक है', 'चप्पल', 'दालचीनी, 'मेरा भारत महान', 'इन्तजार', 'शोक समारोह', आदि।

निर्मल वर्मा समकालीन हिंदी कहानी के कहानीकारों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनकी कहानियों में अधिकतर पाश्चात्य परिवेश का ही चित्रण मिलता है। ऐसा नहीं कि उन्होंने भारतीय परिवेश की चर्चा नहीं की है, लेकिन पाश्चात्य परिवेश का आधिक्य है। 'आदमी और लड़की', 'एक दिन का मेहमान' आदि कहानियाँ विदेशी परिवेश का चित्रण करती है। इन कहानियों में स्त्री-पुरुष के संबंधों में आने वाली दूरियों का वर्णन है। स्त्री-पुरुष के बीच किसी अन्य लड़की के आ जाने से पति-पत्नी के बीच का संबंध टूटता दिखाया है। रिश्तों में इतनी नफरत, करवाहत, तनाव पैदा हो जाती है कि पति-पत्नी दोनों अलग हो जाना ही पसंद करते हैं। पत्नी दूसरी जगह चली जाती है, पति के मनाने पर भी नहीं मानती। यह सब 'एक दिन का मेहमान' कहानी में चित्रित किया गया है। यह सब पाश्चात्य संस्कृति का ही नतीजा है।

"'एक दिन का मेहमान' में भी पति-पत्नी के बीच एक लड़की के आ जाने से उनके संबंध टूट जाते हैं। पर इसे टूटना भी कैसे कहें। पत्नी अपनी बेटी के साथ लन्दन में रहती है और पति उससे मिलने लन्दन आता है। पत्नी उससे मिलना नहीं चाहती। बेटी दोनों के बीच सेतु बनती है। एक ऐसा क्षण भी आता है जब लड़की के बाहर जाने के बाद पति-पत्नी साथ बैठकर शराब पीते हैं- जो विदेशी परिवेश में एक साधारण बात है- पर पत्नी अपना अलग रहने का फैसला नहीं बदलती। पति-पत्नी का 'एक दिन का मेहमान' रहकर किसी होटल में रात बिताने चला जाता है।...ऐसी कहानियाँ संकेत देती हैं कि सभ्यता एक कैसे दर्दनाक मोड़ पर आ खड़ी हुई है। महानगरों में सम्बन्ध टूट रहे हैं या अर्थवादी होते जा रहे हैं।"[16] निर्मल वर्मा की कहानियों में स्त्री समस्या, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, अकेलापन, तनाव, रिश्तों का ठंडा पड़ना, अजनबीपन आदि प्रमुख रहा है। उनकी 'आदमी और लड़की', 'कव्वे और काला पानी', 'धुप का एक टुकड़ा',

'दूसरी दुनिया', 'आदमी और लड़की' आदि इन्हीं विषयों को उजागर करती हुई कहानियाँ है।

अमरकांत यथार्थवादी कहानीकार थे। उन्होंने कहानी, उपन्यास, संस्मरण, बाल साहित्य में अपनी लेखनी चलाई। अमरकांत ने अपनी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्र अंकित किया है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन को अपने विषय का केंद्रबिंदु बनाया। इसमें उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन के पारिवारिक संबंधों की समस्याएँ, मध्यवर्गीय स्त्री शोषण, उनका विद्रोह, निराशा, आर्थिक-सामाजिक समस्याएँ, उनकी मानसिक स्थितियाँ, उत्पीड़न आदि को विस्तार से दिखाया है। 'सप्ताहान्त', 'पक्षधरता', 'घर', 'उसका जाना और आना, 'दुर्घटना', 'तूफान' आदि कहानियों में इन्हीं विषय को विस्तार दिया गया है। 'सप्ताहान्त' कहानी एक ऐसे मध्यवर्गीय मानसिकता को दिखाती है जो मध्यवर्ग के लिए स्वाभाविक है। इस कहानी में दफ्तर में काम करने वाले एक व्यक्ति के बारे में है। उसके परिवार वाले लाटरी लगने की खबर से बहुत खुश होते हैं पर जब पता चलता है कि वह खबर झूठी है तब सब मायूस हो जाते हैं। ऐसा होना मध्यवर्गीय जीवन की स्वाभाविकता है। मध्यवर्ग वाले जरा सी बात को लेकर खुश हो जाते हैं और दुखी भी।

उदय प्रकाश समकालीन हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकारों में से है। उन्होंने अपनी कहानियों में बदलते सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कहानियों में मानव जीवन की संवेदनाएँ, मानवीय मूल्यबोध आदि का समावेश है। साथ ही मानव जीवन का संघर्ष, शोषण, विद्रोह के स्वर आदि पाए जाते हैं। उनकी कहानी 'हीरालाल के भूत' में निम्नवर्ग के लोगों का संघर्ष, विद्रोह एवं जिजीविषा आदि के बारे में है। हीरालाल इस कहानी का मूल पात्र है। उसे मलखान चौधरी और ठाकुर हरपाल सिंह जैसे जमींदारों के शोषण का शिकार होना पड़ता है। हीरालाल अपने पर हुए अत्याचार का विरोध करते-करते मर जाता है। पर मृत्यु के उपरांत भी उसकी जिजीविषा के कारण उसकी आत्मा अपने पर हुए शोषण के खिलाफ संघर्ष करती है। इस कहानी में भूत के जरिए यह दिखाया गया है कि शोषित वर्ग शोषितों पर इतना जुल्म करता है कि मृत्यु के पश्चात भी मनुष्य की आत्मा को शांति नहीं मिलती। 'तिरिछ', 'दयियाई घोड़ा', 'और अंत में प्रार्थना', 'पॉल गोमरा का स्कूटर' आदि इनकी अन्य कहानियाँ हैं।

गंगा प्रसाद विमल समकालीन कहानी के प्रवर्तक माने जाते हैं। 'काल क्रम से', 'अगले दिनों में', 'उपहरण', 'आत्महत्या', 'आमने सामने', 'इंतज़ार', 'इधर-उधर', 'चरित्र', 'छुट', 'जानवर', 'बच्चा', 'फूल कह रहे हैं', 'बदहवास', 'सुबह नहीं', 'इंतजार में घंटा' आदि विमल जी की कहानियाँ है। उनकी कहानियों में भ्रष्टाचार, शोषण, अमानवीयता, जातिभेद, रिश्वत खोरी आदि का चित्रण मिलता है। उनकी 'बच्चा' कहानी जातिभेद पर आधारित है। "बच्चा में एक हवेली में किसी बच्चे के ऊपर की मंजिल से नीचे गिरकर मर जाने का प्रसंग है। हवेली की सारी औरतें वहाँ इकट्ठी हो जाती हैं और औपचारिक किस्म की हमदर्दी जताने लगती हैं। पर यह उनके दोपहर के नित्य के कार्यक्रम के हिस्से के रूप में ही होता है। अंत में पता चलता है कि वह धोबी का लड़का है। यह जानते ही सबकी हमदर्दी काफूर हो जाती है और औरतें अपने-अपने घर चली जाती हैं। दलित के प्रति उच्च वर्ग की संवेदना पर कहानीकार की यह तीखी टिप्पणी है।"[17] उनकी कहानी 'आत्महत्या' में अन्याय, रिश्वत खोरी आदि के कारण ईमानदार व्यक्ति के पास आत्महत्या के अलावा दूसरा रास्ता नहीं रह जाता है।

नासिरा शर्मा की कहानियों में मुस्लिम समाज की स्त्रियों का यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने मुस्लिम स्त्रियों की समस्याओं को कहानियों के जरिए व्यक्त किया है। उनकी कहानियों में मुस्लिम स्त्री की संवेदना का करुण स्वर है। नासिरा शर्मा कहती है कि – "पुरुष समाज द्वारा नारी का शोषण हर समाज में होता रहा है और आज भी नारी चाहे वह किसी धर्म या सम्प्रदाय की क्यों न हो पुरुष समाज के शोषण की शिकार बनी हुई है।"[18] 'पत्थर गली', 'चार बहनें शीशमहल', 'दिलआरा', 'पुराना कानून', 'नयी हुकूमत', 'खुदा की वापसी', 'दूसरा कबूतर', 'बचाव' आदि कहानियों में नासिरा शर्मा ने मुस्लिम समाज की स्त्रियों की स्थितियों के बारे में लिखा है। मुस्लिम समाज में स्त्रियों को तो आवाज उठाने की आजादी नहीं है। विधवाओं की तो स्थिति और भी दयनीय है। विधवाओं को सम्मान की नजर से नहीं देखा जाता है। यदि वह अपने लिए कुछ करना भी चाहे तो मुस्लिम समाज उसके खिलाफ हो जाता है। उसका और अधिक शोषण करने लगता है। उनकी कहानी 'दिलआरा' इसका उदहारण है- "नासिरा शर्मा ने 'दिलआरा' में मुस्लिम समाज में विधवाओं के लिए सम्मानजनक स्थान न

होने का चित्रण किया है। यदि वे अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयास करती हैं तो मौलाना समाज उन्हें इसकी इजाजत नहीं देता और उन्हें हर तरह से परेशान करने की कोशिश करता है। इस कहानी में एक विधवा मुसलमान औरत कुरान और हदीस आदि का गहरा अध्ययन कर स्त्रियों को अपने अधिकारों के प्रति सजग बनाने का प्रयास करती है।"[19]

समकालीन कहानी के क्षेत्र में चित्रा मुद्गल का स्थान सर्वोपरि है। उन्होंने स्त्री को अपनी लेखनी का आधार बनाया। चित्रा मुद्गल ने शोषित स्त्री का वर्णन यथार्थ रूप में किया है। साथ ही उन्होंने स्त्रियों को रूढ़ि-परम्पराओं को तोड़कर आगे बढ़ता दिखाया है। औरत को स्वावलंबी होकर जीवन व्यतीत करता दिखाया है। 'लाक्षागृह' की सुनीता, 'भूख' की लक्ष्मी, आदि ऐसी ही स्त्रियाँ हैं। उनकी प्रुमख कहानियाँ है- भूख, लाक्षागृह, अपनी वापसी, जिनावर, जहर ठहरा हुआ, आदि। लेखिका ने अपनी कहानियों में स्त्रियों को नौकरी करता दिखाया है। चित्रा जी की ज्यादातर कहानियाँ स्त्री विमर्श से सम्बंधित है। चित्रा मुद्गल अपनी कहानियों में कहती है कि स्त्री को स्वावलंबी होना अति आवश्यक है। ताकि वह पति के अत्याचारों से स्वतंत्र हो सके। चित्रा मुद्गल की कहानियों की स्त्रियाँ साहसी है। उनके समक्ष चाहे जैसी भी परिस्थिति हो वह उनका डटकर सामना करती है। 'प्रेत योनि' कहानी इसी तरह की कहानी है। जिसमें एक लड़की बलात्कारियों से अपने को बचाकर पुलिस के पास जाती है। समाचारों में भी यह बात छपती है। परन्तु उस लड़की की माता-पिता को यह अच्छा नहीं लगता है। वे सोचते हैं कि उनकी बेटी की वजह से परिवार की इज्जत मिट्टी में मिल गई है। और वे लोग अपनी बेटी को कमरे में बंद कर देते है। और ऐसा दिखाते है मानो कुछ हुआ ही नहीं।

उनकी 'इस हमाम में' यह दिखाया गया है कि औरत चाहे किसी भी वर्ग की हो, उसे पति का अत्याचार सहना ही पड़ता है। "निम्नवर्ग की औरतें बिना किसी झिझक के पति को त्यागकर दूसरा विवाह कर लेती हैं, पर उच्च वर्ग की औरतें ऐसा नहीं कर पातीं, क्योंकि वे आर्थिक दृष्टि से पति पर निर्भर होती हैं। यदि कोई पत्नी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने के लिए नौकरी करने का प्रयास करती हैं तो पति को वह पसन्द नहीं आता। लेखिका का आग्रह है कि स्त्रियों को स्वतंत्र होने के लिए आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी होना जरूरी है।"[20]

ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदी के दलित साहित्य के प्रमुख रचनाकार थे। उनकी रचनाओं में दलित जीवन की पीड़ा का यथार्थ चित्रण मिलता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि खुद एक दलित थे, इसलिए उन्होंने दलितों के दुःख-दर्द, संवेदनाओं, उन पर हो रहे अत्याचार, शोषण, उनकी उत्पीड़न, आदि को गहराई से वर्णन किया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी रचनाओं में दलित के प्रति जो सामाजिक दृष्टिकोण है उसका यथार्थ वर्णन करता है। उनका कहानी साहित्य में प्रमुख योगदान रहा है। 'सलाम' कहानी ओमप्रकाश वाल्मीकि की प्रसिद्ध कहानी है। 'सलाम' कहानी में जाति व्यवस्था का चित्रण है। साथ ही दलितों पर हो रहे अत्याचार एवं शोषण का सजीव चित्रण मिलता है। इस कहानी में हरीश द्वारा 'सलाम' की प्रथा मना करना उसे एक विद्रोही बनाता है। जिससे कहानीकार ने दलित समाज में विद्रोह की भावना का चित्रण किया है। "सलाम में गाँवों में सामाजिक विषमता का गहरा अहसास कराया गया है। आज भी हिन्दू समाज में दलित समाज के प्रति सवर्ण जातियों का व्यवहार घोर घृणा और विरोध का है, जिसे यह कहानी बड़े प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। कहानी दलित समाज के प्रति सवर्णों कि घृणा की भावना को ही नहीं, दलित के आहत विद्रोह को भी गहराई के साथ प्रस्तुत करती है।"[21]

रवीन्द्र कालिया का समकालीन कहानी जगत में प्रमुख स्थान है। उन्होंने अपनी कहानियों में महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं का यथार्थ चित्र अंकित किया है। उनकी कहानी 'बड़े शहर का आदमी' में बेरोजगारी से जुझते युवकों की मानसिकता का चित्रण है। 'नौ साल छोटी पत्नी' में रवीन्द्र कालिया ने पति-पत्नी के सम्बन्ध को नए रूप में दिखाया है। इस कहानी में पति को पत्नी के पूर्व प्रेमी के बारे में ज्ञात होने के बाद भी पत्नी को कुछ नहीं कहता। बल्कि उससे अच्छा व्यवहार करता है। रवीन्द्र कालिया की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन शैली का चित्रण भी है। उनकी 'त्रास' कहानी में यह दिखाया गया है कि किस तरह मध्यवर्गीय लोग अमीर लोगों का नकल करता है। वे साधनों की कमी से दुखी होते हैं। यहाँ गाँवों से आए युवा पीढ़ी का भी चित्रण है। रवीन्द्र कालिया की कहानियों से समसामयिक परिस्थितियाँ सामने आती है।

समकालीन कहानी में महेंद्र भल्ला का उच्च स्थान रहा है। उन्होंने अपनी कहानियों में आधुनिक समाज की विडंबनाओं का यथार्थ चित्रण किया है। 'एक पति के नोट्स' उनकी पहली कहानी है। इस कहानी में महेंद्र भल्ला ने एक पति-पत्नी के सम्बन्ध को दिखाया है। पत्नी बहुत ही सुन्दर थी। दोनों का प्रेम-विवाह हुआ था। घर में कोई कमी नहीं थी। परन्तु पति पत्नी से खुश नहीं था। पति-पत्नी के बीच कोई बात-चीत नहीं थी। दोनों के सम्बन्ध टूट-बिखर रहे थे। पति पत्नी के साथ सिर्फ शारीरिक सम्बन्ध के लिए ही रहता था। वरना दोनों के बीच कोई बात नहीं बनती थी। दोनों के सम्बन्ध में घुटन, अकेलापन, तनाव आदि ने घर कर लिया था। दोनों साथ होते हुए भी अकेलापन से जुझ रहे थे। "एक पति के नोट्स को आप पारिवारिक कहानी कहें या प्रेम की अथवा फ्लर्टेशन की- इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। फर्क पड़ता है इस बात से कि इस कहानी का यथार्थ अधिक गहरा और अधिक नया ही नहीं, अधिक निजी भी है। इस कहानी का संसार ही बदल गया है। पत्नी है। सुंदर है। उससे प्रेम-विवाह किया है। विलासी गृहस्थी है। असंतोष का कोई कारण नहीं; पर पति पत्नी से ऊबा है, दोनों के मध्य का सम्प्रेषण कृत्रिम है। बल्कि यों कहें कि भावात्मक आदान प्रदान के तार ही टूट गये हैं। छोटे छोटे सहज प्रसंगों एवं टिप्पणियों में यह ऊब, यह अलगाव, यह अकेलापन व्यक्त होता है। अत्यन्त वैयक्तिक से लगने वाले सम्बन्धों में आधुनिक जीवन की इस ट्रेजेडी को पूरी तरह से पहचाना जा सकता है।"[22]

ममता कालिया हिंदी साहित्य की एक प्रसिद्ध लेखिका है। उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्र अंकित किया है। उनकी अधिकांश रचनाएँ स्त्री जीवन पर ही आधारित है। चूँकि वह स्वयं एक स्त्री है, अपने जीवन में अनेक समस्याओं को झेल चुकी है। इसलिए उन्होंने स्त्रियों की संवेदनाओं, संताप, संघर्ष आदि का समावेश अपनी रचनाओं में किया है। 'बिटिया' कहानी ममता कालिया की प्रसिद्ध कहानियों में से है। इस कहानी में एक लड़की के माता-पिता की मनोदशा का वर्णन किया गया है। इसमें दिखाया है कि लड़की की शादी के लिए माता-पिता दहेज एकत्रित करते हैं। लड़की के पिता लड़के वालों की हर मांग पूरी करते हैं। इस कहानी में दहेज के नाम पर स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार का यथार्थ चित्रण

किया है। लड़के वाले मांगते वक्त यह भी नहीं सोचते कि दे पाएंगे भी या नहीं। कहानी में लड़की वालों पर शोषण करता दिखाया है।

ममता कालिया की कहानियों में स्त्री अस्मिता का स्वर है। 'चिरकुमारी' कहानी में ममता कालिया ने स्वतंत्र विचारों वाली स्त्री का चित्रण किया है। वह शादी के खिलाफ है। उसका मानना है कि शादी के बाद स्त्रियों की आजादी चली जाती है। वह कोई भी कार्य अपने अनुसार नहीं कर पाती। 'जाँच अभी जारी है' कहानी में ममता कालिया ने एक कामकाजी लड़की का चित्रण किया है जो अपने ही दफ्तर के कर्मचारियों द्वारा शोषित होती है। और अनेक तरह की समस्याओं का उसे सामना करना पड़ता है।

ममता कालिया की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण भी अधिक मिलता है। साथ ही पति-पत्नी सम्बन्ध, प्रेम विवाह आदि भी व्याप्त है। उनकी 'बातचीत बेकार है' कहानी में विवाह के बाद पैदा हुए झगड़ो, तनाव, असंतोष जनक स्थिति का चित्रण मिलता है। यहाँ पति-पत्नी के बीच के संबंध को दिखाया है। यहाँ लेखिका ने दिखाया है कि स्त्रियाँ शादी से पहले अकेला महसूस करती है। पर शादी के बाद वह अपने को अकेला के साथ-साथ असहाय भी पाती है। विवाह के उपरांत उसे सिर्फ रसोई तक ही सीमित रखा जाता है। "शाम को जब वह लौटेगा, चाय के फौरन बाद दायीं बाँह से आँखें ढाँप लेट जाएगा, थकान उतारने या बिटटू को कुछ और गालियाँ सिखाने की कोशिश में लग जाएगा। फिर खाना बनाने का वक्त हो जाएगा। दिन का शायद ऐसा कोई भी हिस्सा नहीं था, जब वे संवाद की स्थिति में पाए जाएँ।...उसे लगा, शादी से पहले वह सिर्फ अकेली थी, अब वह अकेली के साथ-साथ असहाय भी है। शायद साहित्य में इसी विवाहोपरांत स्त्री को अबला कहा गया है। उसने पाया इन चार सालों में उसका कार्यक्षेत्र सिर्फ रसोई और प्रसूतिगृह रहे हैं। जैसे-तैसे वह उठी और मरियल चाल से घुड़साल को घर बनाने की कोशिश में लग गई।"[23]

ज्ञानरंजन की कहानियों में बदलते मध्यवर्गीय जीवन की यथार्थ चित्रण मिलता है। उनकी कहानी 'पिता' चर्चित कहानियों में से एक है। यह कहानी बहुत ही प्रचलित है। इस कहानी में नई और पुरानी पीढ़ी के बीच के द्वंद्व को दिखाया गया है। यहाँ पिता पुरानी पीढ़ी

और पुत्र नई पीढ़ी का प्रतीक है। दोनों एक दूसरे से बहुत अलग है। पुत्र पिता को हर तरह की सुविधाएं देना चाहता है परन्तु पिता उसे मना कर देता है। पुत्र अपनी तरफ से पिता को खुश रखने की कोशिश करता है पर पिता अपनी विचारधाराओं पर ही डटे रहता। दोनों की विचारधाराएँ एक दूसरे से अलग थी। पुत्र अपने पिता की जीवन शैली बदलना चाहता है पर ऐसा नहीं होता। पिता बदलना ही नहीं चाहते। पुत्र पिता को आधुनिकता के साथ चलना सिखाना चाहता है। पर पिता अपने में ही खुश है। वह बच्चों को सब करने की आजादी देता है। वह आधुनिकता का विरोध भी नहीं करता। पर खुद बदलना नहीं चाहता।

रत्नकुमार सांभरिया : समकालीन हिंदी कहानी में रत्नकुमार सांभरिया का महत्वपूर्ण स्थान है। रत्नकुमार सांभरिया एक श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में जाने जाते हैं। उनकी कहानियाँ सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार करती हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में जीवन के यथार्थ का चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन को आधार बनाया गया है। समाज में व्याप्त रीति-रिवाज, कुरीतियाँ, अंधविश्वास, जातिभेद, भ्रष्टाचार, शोषण, स्त्री शोषण, दलित शोषण, साम्प्रदायिकता आदि उनकी कहानियों में व्याप्त हैं। मानवीय मूल्यों के प्रश्न, अस्तित्त्व की तलाश आदि उनकी कहानियों का मूल विषय है। उनकी कहानियों की खासियत यह है कि उनकी कहानियों के पात्रों में साहस का स्वर है। कहानियों के शोषित अपने पर हुए अत्याचार के खिलाफ आवाज उठते हैं। वे शोषण के खिलाफ लड़ते हैं। वे बेबस होकर मरने के बारे में नहीं सोचते। बल्कि वे अत्याचार का सामना करते है और साहस से काम लेते हैं। रत्नकुमार सांभरिया एक ऐसे कहानीकार है, जिन्होनें अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ रूप दिखाया है साथ ही उसका मार्मिक चित्रण किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में निम्न वर्ग के लोगों की वेदना, संताप, उत्पीड़न आदि प्रस्तुत किया है।

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों के पात्रों के माध्यम से लोगों में चेतना जागृत करने की चेष्टा की है। कहानीकार ने स्त्रियों के दो रूप में शोषण होते दिखाया है। एक तो स्त्री रूप में शोषण, दूसरा दलित स्त्री के रूप में शोषण। कहानीकार ने पशु-पक्षियों की पीड़ा एवं दिव्यांगो की पीड़ा को भी अपनी कहानियों में अभिव्यक्ति दी है। उनकी कहानी नई पीढ़ी को

एक रास्ता दिखाती है। उन्होंने अपनी कहानी को एक नया रूप दिया है। उनकी कहानियाँ वर्तमान समाज का सच्चा आईना दिखाती है। उनकी कहानियों में आधुनिकता बोध प्रयाप्त मात्रा में व्याप्त है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ एक नई दिशा की और अग्रसर है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री जीवन के संघर्ष तथा पीड़ा का वर्णन मिलता है। 'फुलवा' कहानी में इसका जिक्र है। इस कहानी में समकालीन समाज से लुप्त हो रही जाति-भेद का भी चित्रण हुआ है। यह कहानी 'फुलवा' नामक एक दलित स्त्री पात्र के संघर्ष की कहानी है। फुलवा अपने जीवन में बहुत सी समस्याओं का सामना करती है। फिर भी वह अपने बेटे को पढ़ाना नहीं छोड़ती। वह उसे पढ़ाने के लिए काफी मेहनत करती है। पति के देहांत के बाद फुलवा ही जमींदार के यहाँ काम किया करती थी। उसकी मेहनत और लगन के कारण उसका बेटा राधामोहन को शहर में एस.पी. की नौकरी मिली। उसने शहर में ही घर बनाया और फुलवा भी वहीं चली गई। गाँव में फुलवा को जमींदारों के कुँए से पानी पीने की अनुमति तक नहीं थी। फुलवा कोसो दूर जाकर पानी लाती थी। एक दिन वहीं जमींदार का बेटा पंडित माताप्रसाद का घर ढूंढते-ढूंढते फुलवा का घर पहुँचता है। वहाँ फुलवा का घर देख वह आश्चर्य से भर जाता है। वह शर्म, ग्लानि से भर जाता है। इस कहानी में कहानीकार ने फुलवा के माध्यम से यह दिखाया है कि मनुष्य की पहचान जात से नहीं बल्कि पैसे और पद से होती है।

कहानी में पंडिताइन जमींदार रामेश्वर से कहती है- "तू तो कुँए का मेढक ही रहा रामेसरिया। अब तो पद और पैसे का जमाना है, जात-पात का नहीं। फुलवंती का राधामोहन कोई छोटा-मोटा अफसर नहीं है। एस.पी. है एस.पी.। एक बात बताऊँ तुझे। जाकर मेमसाब के पाँव पकर ले और तब तक मत छोड़, वह हाँ न कह दें।"[24] गाँव से शहर आकर ही रामेश्वर को पता चला कि जिस फुलवा को कोई गाँव में पूछता तक नहीं था शहर में उसे हर कोई जानता है। जबकि पंडित माताप्रसाद उच्च जाति के होते हुए भी उन्हें कोई नहीं पहचानता।

'बदन-दबना' कहानी में सांभरिया ने दलित विमर्श को रूप प्रदान किया है। यहाँ बदन-दबना का मतलब है पाँच साल के लिए किसी के यहाँ काम करना। जहाँ उस व्यक्ति को अपने घर जाने की अनुमति भी नहीं होती थी। जमींदार द्वारा गाँव के दलित बच्चों को पाँच साल के

लिए बंधुआ बनाने की प्रथा है। इस पाँच साल के दौरान जो चाहे, जैसे चाहे काम में लगा सकता है। जमींदार अपना बदन दबाने के काम से लेकर घर के सारे काम करवा सकता है। इसमें बच्चे की तकलीफ नहीं देखी जाती। इस बीच बच्चे के घर में चाहे जो भी हो जाय उसे घर जाने की इजाजत नहीं दिया जाता था। वह अपनी मर्जी से कहीं भी आ जा नहीं सकता। उसे अपने मालिक की हर बात सुनना पड़ता है। उसे उस चार दीवारों के अन्दर ही पाँच साल तक रहना पड़ता है।

'बदन-दबना' कहानी में भी एक ऐसी ही कहानी का वर्णन है। कहानी में पूछाराम नाम का एक तेरह वर्ष के बच्चे के बंधुआ होने के बारे में है। कहानी के अनुसार पूछाराम स्कूल में पढ़ रहा था और वह छात्रवास में रहता था। उसकी बहन की शादी के लिए पैसे की आवश्यकता के कारण उसका पिता उसे जमींदार के हवेली में पैसे लेकर छोड़ आता है। उसकी बहन की शादी के दिन वह कितनी बार घर जाने की आज्ञा माँगता है पर हलका सिंह उसे जाने नहीं देता। पूछाराम बहुत रोता है पर शादी में नहीं जा पाता। वह हलका सिंह से कहता है – "बहन के फेरों पर तो भाई को होना चाहिए न, बाबूजी। लोग सात समन्दर पार से चले आते हैं। कैदी को भी पेरोल पर छुट्टी मिल जाती है। में तो यहीं गाँव में ही हूँ बाबूजी।"[25] पूछाराम द्वारा इस तरह बोलने के बाद भी हलका सिंह नहीं मानता। पूछाराम सिर्फ दो घंटे का समय माँगता है। पर हलका सिंह जैसे निर्दयी व्यक्ति के लिए इसका कोई मूल्य नहीं है। इस कहानी के द्वारा रत्नकुमार सांभरिया ने दलित समाज की व्यथा के साथ-साथ बाल मन का भी चित्रण किया है। साथ ही अंत में पूछाराम द्वारा विद्रोह करता हुआ दिखाया है।

समकालीन कहानीकारों की तरह ही रत्नकुमार सांभरिया ने साम्प्रदायिकता पर भी कहानी लिखी है। 'लाठी' एक साम्प्रदायिकता पर आधारित कहानी है। हिन्दू-मुस्लिम हर गाँव में होते है। एक गाँव में सभी धर्म के लोग रहते हैं या रह सकते हैं। पर धर्म अलग-अलग होने के कारण लोगों में कभी-कभी गलत फहमियाँ हो जाती है। लोग जरा सी बात को गलत समझ बैठते हैं। आज दो धर्मों के बीच इतनी कटुता आ गई है कि लोग एक दूसरे से डरने लगे हैं। 'लाठी' कहानी में एक मुस्लिम दम्पति का जिक्र है। उनके पड़ोसी हरमन चाचा जो हिन्दू थे,

उनके द्वारा लाठी लाने से मुस्लिम दम्पति चाँद मोहम्मद और सलमा सोचते हैं कि हरमन चाचा उन्हें मरने के लिए लाए हैं। क्योंकि सुबह ही उनकी गाय ने हरमन चाचा के द्वार के सामने पेशाब कर दिया था और हरमन चाचा गुस्से हो गए थे। हरमन चाचा द्वारा लाठी खरीद लाने से उन्हें लगता है कि वह उन्हें मारने लाया है। इसलिए दोनों डर के मारे रात भर सोते ही नहीं। उनका कहना है कि दस-बीस गाँव में सिर्फ वह ही मुस्लिम है। चाँद मोहम्मद कहता है –"गाँठ है, सलमा। जबसे बावरी मस्जिद का मसला उठा है, दो मजहबों में दरार पैदा हो गई है। मुल्क के नेताओं का सवारथ दो कोमों में भाईचारे का गला रेत रहा है। फिरका परस्ती के पैर गाँव तक आ गए हैं। आस-पास के दस-बीस गाँवों में एक हमारा घर है, मुसलमान का। आज दो पैसे हाथ में हो गए हैं न, धर्म के गुण गाते हैं।"[26]

इस तरह के कई बाते मुस्लिम दम्पति रात भर करते रहे। दोनों की डर के मारे हालत ही खराब हो गई थी। सुबह पता चलता है कि हरमन चाचा उन्हें नहीं बल्कि बिल में रहने वाले एक जहरीला साँप को भागने के लिए लाठी पीट रहे थे। यह सब गलत फहमियाँ धर्म के कारण ही हुआ। इस कहानी में यह दिखाया गया है कि जब व्यक्ति को किसी चीज की गलत फहमी हो जाती है। जरा सी हलचल भी शक करने में मजबूर कर देती है। कोई व्यक्ति चाहे जो भी करे दूसरे व्यक्ति को लगता है कि वह उसी के लिए कर रहा है। इस कहानी में ही देख सकते हैं कि दो धर्मों में दरार पैदा होने के कारण चाँद मोहम्मद और सलमा हरमन चाचा को गलत समझते हैं।

'खेत' रत्नकुमार सांभरिया की बहुचर्चित कहानियों में से है। इस कहानी के जरिए कहानीकार ने एक बूढ़े के मन के अंतर्द्वंद्व का वर्णन किया है। बूढ़ा गाँव में अकेले रहता है। बूढ़ा के पास सौ बीघा जमीन थी, जिस में से बीस बीघा बेटे को पढ़ाने, उसकी शादी आदि के लिए बेच दिया। अब बची हुई जमीन वह बेचना नहीं चाहता। पर हर दिन कोई न कोई आ ही जाता है खरीददार। पर बूढ़ा मना कर देता। वैसे बूढ़ा की हाल-चाल पूछने वाला कोई नहीं था। पर जब एक दिन बूढ़ा बीमार पड़ता है बूढ़ा की खबर पूछने वाले बहुत आए। उनमें से कुछ ऐसे थे जो बूढ़ा से कभी मिले ही नहीं थे। यह सब उसकी जमीन के लिए हो रहा था। "हवा में रंगत

आ गई। बीमार बूढ़ा के पास आने वालों का ताँता लगा रहता, मरणासन्न कीट को कीरियां घेर लेती हैं। जिनका कोसों खोज नहीं था, वे तन के लत्ते से बूढ़ा के करीबी हो गए थे। खैरित जानना जरिया रहा, साध बूढ़ा का खेत था। बगुला इधर-उधर गर्दन घुमाए, टकटकी मछली पर होती है।"[27]

'खेत' कहानी में आधुनिकता का प्रभाव देखने को मिलता है। कहानी का पात्र बूढ़ा ने जो खेत बेचे थे, वहाँ आज स्कूल बन गया है। बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें प्लाट के तीनों ओर बनी थी। इस कहानी में रिश्तों में दूरी दिखाई गई है। बूढ़ा अपने बेटे को पढ़ाता है, उसकी शादी करवा देता है, पर फिर भी वह अकेला गाँव में रहता है। उसकी देखभाल के लिए कोई नहीं रहता। यहाँ जो बूढ़ा है वह वर्तमान में भी अतीत को ढूंढ़ता रहता है, अतीत में विचरण करता है। इसलिए बूढ़ा उन खेतों को तो कभी जंगलों को याद करता है। जहाँ कभी भेड़िया, लोमड़ी, सियार जैसे जानवर रहते थे। बूढ़ा (केरसिंह) के अकेले होने के कारण कई लोग उसकी जमीन लेना चाह रहे थे। पर केरसिंह अंत तक अपनी जुबान पर डटे रहता है और वह जमीन नहीं बेचता।

'धूल' कहानी में पारिवारिक विघटन तथा संबंधों का टूटन चित्रण किया गया है। इस कहानी में हुलसीराम और धूलसिंह नामक दो सगे भाईयों के बारे में है। हुलसीराम गाँव में रहता था और उसका भाई धूलसिंह नौकरी पाकर शादी करके शहर में ही रहने लगा था। हुलसिराम ने अपनी भाई की देखभाल के लिए स्कूल तक छोड़ दी थी। और भाई को पढ़ा लिखाकर नौकरी दिलाई। उनका गाँव में जो खेत था उसे धूलसिंह के कहने पर शादी के लिए गिरवी रख दी गई – "खेत गिरवी रख देते हैं। मेरी अच्छी नौकरी लग गई है। सबसे पहले खेत छुड़ाऊँगा।"[28]

लेकिन धूलसिंह की शादी के सात साल हो गए थे पर उसने एक रूपया भी नहीं दिया भाई को। जब एक दिन वह खुद धूलसिंह के घर गया तो वहाँ के नौकर उसके साथ बुरा बरताव करता है। धूलसिंह कहीं बाहर गया हुआ था। जब वह घर आया हुलसीराम ने अपने

भाई को देख बाहों में भरना चाहा पर धूलसिंह अजनवी सा वहाँ से चला गया। हुलसीराम ने धूलसिंह को खेत के बारे में बहुत कहा कि पूरा खेत अगर नहीं छुड़ा सकते तो उसी के हिस्से के खेत छुड़ा दे जमींदार से। पर धूलसिंह भाई हुलसीराम के साथ प्यार से बाते करने के बजाये वह अपनी बिल्ली को पुचकारता है। जो उसके पीछे-पीछे चल रही थी। जबकि पीछे-पीछे चलने वाले भाई की बातों पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था। अंत में वह जिला कलेक्टर के बोलने पर एम.एल.ए से मिलने के लिए जल्दी निकल जाता है। जबकि अपने भाई की बात पर ध्यान न देकर उसे घर लौटने को कहता है। गाड़ी का भाड़ा उसकी पत्नी माला से लेने को कहता है। इससे हुलसीराम को बड़ा दुःख होता है। जिस भाई के लिए उसने पूरी खेत गिरवी रख दी। खुद उस खेत में नौकर की तरह जमींदार के लिए काम कर रहा है। आज उसी भाई ने उससे उसका हाल-चाल भी नहीं पूछा। आज भाई-भाई के अजनवी बनता जा रहा है। एक-दूसरे के प्रति कोई प्रेम तथा लगाव नहीं है। धूलसिंह भाई से ज्यादा महत्व बिल्ली को देता है। वह भाई को अनदेखा करके बिल्ली के साथ खेलने लगता है।

रत्नकुमार सांभरिया की 'हथौड़ा' कहानी एक ईमानदार मजदूर की कहानी है। मजदूर का नाम छोटूराम है। छोटूराम मजदूरी कर रहा था। अचानक वह गायब हो जाता है और चार महीने बाद बाबू साब के पास आता है। बाबू साब उससे न आने की वजह पूछता है। तो छोटूराम कहता है- "बाबू साब, आपके इस हथौड़े को बेंस (हत्था) लगवा, में भाग कर सड़क पार कर रहा था। बीच सड़क चप्पल टूट गई मेरी में वहीँ गिर पड़ा। हाँ तेजी से दौड़ती एक जीप मेरा हाथ रौंदती निकल गई, बाबू साब। खूब खून बह गया। हाथ गंवाया, तब आराम पाया। कर्ज माथे हो गया है, बाबू साब।"[29] यह सब सूनकर बाबू साब हमदर्दी जताते हुए उसे छोटूराम द्वारा हथौड़ा के साथ लौटाए गए पैसे को जेब से निकाल कर छोटूराम को देता है। पर छोटूराम पैसा लेने से मना कर देता है। इस कहानी में छोटूराम के जरिए एक ईमानदार, स्वाभिमानी मजदूर का चित्रण किया गया है। वह बहुत ही गरीब है। परन्तु वह मुफ्त का पैसा या कोई भी मदद् लेना पसंद नहीं करता है। वह मेहनत से कमाना चाहता है। अपने बच्चों को अफसर बनाना चाहता है पर अपनी मेहनत की कमाई से।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'राइट टाइम' एक विधवा पर आधारित कहानी है। इस कहानी में एक अकेली बेवश विधवा की कथा है। एक स्त्री जब विधवा होती है, तब वह अकेली पड़ जाती है। लोगों की बातों से भी वह डरी-सहमी सी रहती है। इस कहानी में एक विधवा स्त्री का जिक्र है जो जयपुर जंक्शन से दिल्ली जा रही थी अपने बेटे से मिलने। वह जल्दी में थी इसलिए टिकेट नहीं ले पाई थी। वह जहाँ बैठी थी वहाँ दो दम्पति आते हैं। उसका पति उस विधवा स्त्री से बड़ी बत्तमीजी से बात करता है- "टिकेट क्यों लेकर बैठेगी यह? ऐसी वालियों को खूब जानता हूँ, मैं। टिकटी और जी.आर.पी. वालों से साँठ-गाँठ होती है, इनकी।"[30] इस तरह की अनेक बांतों से वह पुरुष उस विधवा स्त्री को परेशान करता है। अंत में वह स्त्री वहाँ से चली जाती है। वह फिर टिकट लेकर आती है और अपने सीट में पुनः बैठ जाती है। समाज में ऐसे अनेक लोग मिल जाते हैं जो इस तरह की बेहुदा कार्य करते नजर आते हैं। इस तरह के लोगों के कारण एक अकेली स्त्री का जीना मुश्किल हो जाता है। वह सब अत्याचार चूप-चाप सह लेती है। इस कहानी में भी वह विधवा स्त्री लोगों की सारी बाते सह लेती है। पर अंत में उसकी सहनशीलता खत्म हो जाती है और वह उस व्यक्ति से भीड़ जाती है। यह एक स्त्री का समाज के प्रति विद्रोह है। वह समाज की सोच पर प्रहार करना चाहती है। ताकि समाज में उनके लिए भी स्थान हो। स्त्री भले ही अकेली हो, पर वह वेवश नहीं है।

'द्वंद्व' कहानी एक दिव्यांग व्यक्ति की कहानी है, जो अपनी मानसिक द्वंद्व से घिरा रहता है। वह दिव्यांग होने के साथ ही नौकरी भी करता है। वह शादी करना चाहता है पर अपनी दशा के कारण परहेज करता है। उसे लड़की पसंद करेगी या नहीं, उसके घर वाले क्या कहेंगे आदि द्वंद्व से वह घिरा रहता है। वह सोचता है और अपने आप को आश्वासन देता है – "कंवलराम ने विश्वास भरी सांस लेकर मन-ही-मन कहा – 'कुड़ी के भी दिन बहुरते हैं, एक दिन। मुझ जैसे नेक इंसान को अपनी लड़की देने में किसी को क्या गुरेज, जिसे अपनी परमानेंट सर्विस का नेक गरुर नहीं है।' उसके मन में दीये जल रहे थे। चिंता के एक झोंके से लौएं हिलीं। ग्राहक और

बेटी के बाप का मन एक-सा होता है। फिरते बेर नहीं लगती। गाँव में कनफूसे हैं। किसी ने फूँक दी, बात बिगड़ जाएगी। धत् तेरे की, यह तो उसके भेजे की खलल है। ऊंट की चोरी और छुपे-छुपे। निगाह पड़ी, सब परगट।"[31] इस तरह की बाते सोचकर वह अपने आपको दिललासा देने लगता है।

कंवलराम गाँव में लड़की देखने जाता है। वह रास्ते मैं सोचता है और बड़बड़ाने लगता है कि उसे किस तरह की लड़की चाहिए। अगर उसके मतानुसार मिली तो वह शादी के लिए हाँ कहेगा वरना नहीं। उसे लड़की काली या मोती नहीं चाहिए। "लड़की मोटी ना हो। शादी के बाद की सुख-सुविधाएं उसे टुनटुन बना देगी। काली भी ना हो। सांवला सुहाता है। काग-सा काला रोज काटे। दिव्या मेडम तीस पार हो गई। अनुढ़ा(अविवाहित महिला) जींस पहन कर दफ्तर आती है। छोड़ने एक आता है, लेने कोई दूसरा। आबरू के भुंगड़े चाब गई। मेरी रांड़ की एसी ना हो। धनवंती मेडम सीता सावतरी सी है। महिलाओं की आदर्श। बिना आँधी धूल नहीं उड़ती। उनके बारे में एक नहीं सुनी आज तक।...औरत गहनों से खामखाह लदी-लदी रहती है। नारी का गहना तो लज्जा होती है। अगर देखने में लड़की ने आँख भर कर देख लिया, मानूँगा, उसके संस्कारों में खोट है। वहीं टका-सा जवाब दे दूंगा मैं।"[32] इस तरह की बातें उसके मन में चलती रहती है। कंवलराम दिव्यांग है परंतु पुरुषवादी मानसिकता उसमें कूट-कूट कर भरी हुई है। उसे लड़की में कोई खड़ाबी नहीं चाहिए। पर उसने खुद की अवस्था के बारे में सोचा ही नहीं कि उसे लड़की पसंद करेगी या नहीं। लड़की के घर वाले उसे पसंद करेंगे या नहीं। कहानीकार ने एक दिव्यांग व्यक्ति की मनोदशा का चित्रण किया है। साथ ही पुरुषवादी मानसिकता पर चोट किया है।

'झुनझुना' कहानी में सरकारी दफ्तरों में होने वाली भ्रष्टाचार और भ्रष्ट नेताओं का यथार्थ चित्रण किया है। एक काम को करवाने के लिए एक आम आदमी को कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कहानी एक दिव्यांग के बारे में है। नौकरी का तबादला करवाने के लिए आम आदमी को कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नौकरी का तबादला

करवाने के लिए वह बहुत मेहनत करता है। उसे कार्यालयों के कई चक्कर काटने पड़ते हैं। फिर भी उसे तबादले की इजाजत नहीं मिलती। कहानी में एक दिव्यांग व्यक्ति की व्यथा एवं विडम्बना का अंकन किया गया है। देशराज मंत्री के घर भी जाता है। वह अपने माता पिता को भी लाता है। माता-पिता को गोदी में लाता देख मंत्री के साथ सभी हंसने लगते हैं – "उसने माँ को अपनी बाई गोद में लिया। बापू को दाई गोद में लिया, मानो वह उसे माँ और बापू नहीं, जुड़वा टाबर हों। वह उन दोनों को लेकर हाँफता-काँपता-लंगड़ाता मंत्री जी के पास पहुँच गया था। स्वयं मंत्री जी और वहाँ मौजूद तमाम लोग देशराज को हंसी और उपहास भरी नजरों से देखने लगे थे, तमाशगीर हो। किसी ने कटाक्ष किया- आरे वाह, भाई वाह, श्रवन कुमार आ गया है, सच में।"[33]

कहानी में एक दिव्यांग व्यक्ति की मनोदशा का वर्णन है। साथ ही मजाक उड़ाने वाले मंत्री जैसे लोगों पर व्यंग्य है। कहानीकार ने यहाँ समाप्त होता मानवीय मूल्यबोध का चित्रण किया है। मानव समाज आज अमानवीय होता जा रहा है। उसे एक अपाहिज का दुख-दर्द भी दिखाई नहीं देता। एक अपाहिज को देख उसकी मदद करने के बजाये लोग हंसने लगते हैं। कहानी में झुनझुना खिलौना नहीं बल्कि शोषक और प्रजा के मध्य अंतर्संबंधों का प्रतीक है।

'शर्त' कहानी दलित जीवन पर आधारित है। इसमें स्त्री समस्या का चित्रण है। गाँव का मुखिया अपने बेटे की गलती को छिपाने की कोशिश करता है। जिस लड़की का शोषण हुआ उसी को दोषी ठहराता है। गाँव के मुखिया का बेटा पानाराम की लड़की को हवस का शिकार बनाता है। जिस वजह से लड़की की शादी टूट जाती है। पर मुखिया का लड़का बिना किसी हिजक के आजाद घूमता है। पानाराम मुखिया के पास जाता है और न्याय की भीख मांगता है। मुखिया (जसवीर) उसे बहलाने की कोशिश करता है। वह जो चाहे मांगने को कहता है। मुखिया बेटे द्वारा किए गए अपराध को मनहूस दिन कहकर दबाने की कोशिश करता है – "क्या बताऊँ? वह दिन ही मनहुस था, पानिया। रिश्तेदारी की शादी में हम सबका जाना हुआ और मेरे लड़के का तेरी लड़की के साथ...। अगर उसकी परीक्षा नहीं होती और तेरी लड़की उस

दिन झाड़ू बुहारी को नहीं आती, तो आज का दिन नहीं दिखता।..."[34] लड़की की शादी बिना गलती के टूट जाती है। यह समाज लड़की को ही दोषी मानता है।

कहानीकार कहना चाहता है कि मुखिया जैसे लोग पानाराम जैसे गरीबों को चुप कराने के लिए तरह-तरह की कोशिश करते हैं। न मानने पर धमकाते भी है। कहानी में पानाराम मुखिया की बात नहीं मानता। वह मुखिया के सामने शर्त रखता है। पानाराम की शर्त सुनकर मुखिया का दिल दहल जाता है – "मुखिया साब, इज्जत का सवाल है यह। आपकी इज्जत सो मेरी इज्जत। आपकी लड़की मेरे लड़के के साथ रात रहेगी।"[35] यह शर्त सुनकर मुखिया पागल हो जाता है। उसे दौरा पड़ता है। अंत में पानाराम पर गोली चला देता है और खुद भी मर जाता है। कहानी में दिखाया है कि बड़े लोग अपनी इज्जत की परवाह करते हैं पर छोटे लोगों की इज्जत का उन्हें कदर ही नहीं। गरीबों की बेटियों के साथ चाहे कितना ही बुरा हो पर अपनी बेटी सही सलामत होनी चाहिए। कहानी में मुखिया के बेटे द्वारा किया गया पाप उसे पाप नहीं लगता। वह उसे बचाने की कोशिश करता है। पानाराम की बेटी के बारे में नहीं सोचता। जैसे ही पानाराम शर्त रखता है मुखिया जसवीर के पैरों तले जमीन खिसक जाती है। उसकी हालत बिगर जाती है। मुखिया पहले सोचता है कि शायद वह बकरी चराने के लिए जमीन मांगेगा या खेत मांगेगा। इतनी बड़ी शर्त की कामना उसे नहीं थी। यह एक दलित का अपने पर हुए शोषण के खिलाफ आवाज है। कहानीकार कहना चाहते हैं कि गरीब हो या अमीर सब की इज्जत एक जैसी होती है।

'मेरा घर' कहानी में बेघर लोगों की स्थिति का चित्रण है। कहानी में एक छोटी सी बच्ची पुष्पा अपने घर के बारे में दोस्तों से छिपाती है। वह अपनी सहेली सरला से भी छिपाती है। स्कूल की छुट्टियों में पुष्पा और सरला घर आते हैं। सरला पुष्पा से उसके घर जाने की जिद करती है। पुष्पा न ले जाने की तरह-तरह के बहाने बनाती है। अंत में वह अपने घर तक पहुँच ही जाती है। पुष्पा अपने परिवार और घर को देख बहुत दुखी होती है। सरला को तो कुछ समझ में ही नहीं आता। पुष्पा सरला को दिखाती है – "ऊंची सी एक जगह वह रुक गई थी।

कलेजा, धक्-धक्। निकला। गिरा। एसे भीषण भयावह की कल्पना उसे भी न थी। चेतन-अवचेतन, दोनों समेकित। उसकी उंगली साक्षात को इंगित सीधी हो गई थी। दीवार पर चढ़ी छिपकली की पूंछ की नाई उंगली काँप छूटी थी- 'ओ देखो।' 'हूँ।' सामने नीची जमीन थी। गंदगी कचरा लिए वहाँ पानी आ भरा था और वह तलैया लगती थी। एक टेकड़ी थी, समुद्र के टापू सी। वहाँ जर्जर सी एक बैलगाड़ी खड़ी हुई थी, बूढ़ी फूंस। उसके पहियों पर रेत, कूड़ा-कचरा, पानी चढ़ा हुआ था। उसके पास ही एक बूढ़ा खड़ा था, बैलगाड़ी की उम्र से थोड़ा बड़ा। उसने अपने अच्छे दिनों में घर-परिवार पीढ़ी की अदब-आबरू के खातिर इस बैलगाड़ी को बनवाया था। वह आँखों पर चश्मा चढ़ाए बैसाखी बगल दबाए, इस प्रलय-प्रवाह को भीगे नयनों से देखे जा रहा था। सरला एसा दर्दनाक दृश्य पहली बार देख रही थी।"[36] कहानी में बेघर लोगों की मनोदशा का वर्णन है।

'सनक' कहानी एक ऐसे जमींदार की कहानी है, जो अपनी दोस्त की बातों में आकर गाँव की अपनी सारी जमीन बेचकर शहर चला जाता है और कंगाल को जाता है। साथ ही इस कहानी में स्त्री समस्या पर भी प्रकाश डाला गया है। जमींदार स्वरूप सिंह पत्नी को बिना बताये ही बीस लाख में अपना खेत बेच देता है और शहर के लिए एक कोठी का सौदा करने जाता है। चार दिन बाद जब वह घर लौटता है, तभी पत्नी को पता चलता है। वह बहुत दुखी होती है। वह गाँव से जाने को तैयार नहीं होती। अंत में पति के जोर करने पर वह साथ जाती है। शहर पहुँचकर कुछ दिन तक खुश रहती है। लेकिन फिर धीरे-धीरे उसे गाँव की यादें सताने लगती है।

कहानी में जातिभेद का चित्रण भी हुआ है। स्वरूप सिंह घर बनाने के लिए ठेकेदार से पैसा उधार लेता है। ठेकेदार के पैसे चुकाने के लिए उसके पास पैसा नहीं होता। वह पैसा इकट्ठा करने के लिए गाँव जाता है। उसके पास उधार लिए पैसे लौटाने के भी पैसे नहीं थे। उसका सब कुछ चला जाता है। लेकिन उसका जमींदार वाला अहंकार नहीं जाता। गाँव में पैसा न मिलने

के कारण वह खाली हाथ लौटता है। रास्ते में एक बुढ़िया मिलती है। वह तीन हजार रुपए देती है, जो उसने प्रभा से पोती की शादी में उधार लिए थे। स्वरूप सिंह को अच्छा लगा और वह उस बुढ़िया का चरण छूना चाहता था। पर वह आत्माभिमान के कारण अपना हाथ रोक लेता है। कहानी में इसका जिक्र है– "एक बुढ़िया आई। वह अपनी पोती के ब्याह में प्रभा से तीन हजार रुपए उधार ले गई थी। स्वरूप सिंह के आने की खबर उसके बूढ़े कानों ने सुन ली थी। उऋण होने की उतावली में उसने उन्हें गली-गली, घर-घर ढूंढा। उसकी नजर धुंधली थी। बुढ़िया ने निगाह बांधकर उन्हें देखा। बुढ़िया की कंपकँपाती बेजान-सी उँगलियाँ पल्लू की अंटी खोलने लग गई थी। रुपए स्वरूप सिंह की ओर बढ़ा कर वह बोली – बाबू साब, बहुजी से तीन हजार रुपए उधार ले गई थी मैं। उनको मेरा पिरनाम बोलना। स्वरूप सिंह को बुढ़िया अलौकिक लगी। उनका मन हुआ, बुढ़िया के चरण छूकर माथे से लगा लूँ। जात्याभिमानी जीव ने उनके हाथ खींच लिए, छोटी जात है बुढ़िया, हाथ सनेंगे।"[37]

कहानी में स्त्री शोषण का भी चित्रण है। स्वरूप सिंह का दोस्त मीर सिंह उसे कहता है कि कोठी में एक औरत की हत्या हो गई थी। जिस कारण वह कोठी कम दाम में बेची गई। दरअसल उस औरत को घर से रुपए लाने को कहा गया था। जब उसने ना कहा तो उसके पति ने उसे मार डाला। कहानी में इसका चित्रण है- "स्वरूप जी! आप मेरे रिश्तेदार हैं। पाप छुपाऊँ, विष्ठा खाऊँ। आपकी कोठी के एक कमरे में एक औरत कि हत्या हो गई थी।...कोठी का दूसरा पोरसन अधूरा था। उसके आदमी ने अपनी पत्नी को मैके से रुपए लाने को मजबूर किया। जब उसने कतई 'ना' कह दी तो बेचारी कि गार्डन साड़ी से बांध कर उसे पंखे से...। कोई खरीददार नहीं हुआ। तभी तो यह कोठी इतनी सस्ती आ गई।"[38] कहानीकार ने यहाँ दहेज प्रथा का चित्रण किया है। यह कहानी दहेज प्रथाओं पर सीधा चोट करती है। साथ ही यहाँ समाप्त होती मानवीयता का भी चित्रण किया है। अमानवीयता के कारण ही थोरे से पैसों के लिए पति अपनी पत्नी को मार देता है। वह यह भी नहीं सोचता कि पैसे से ज्यादा मनुष्य

कीमती है।

'बिल्लो का ब्याह' कहानी स्त्री समस्या पर आधारित है। कहानी में एक सत्रह साल की लड़की की शादी पैंतालीस साल के व्यक्ति से कराई जाती है। दरअसल वह व्यक्ति उस लड़की का जीजा था। लड़की (बिल्लो) की दीदी की मृत्यु हो जाती है। दामाद के जायदाद पर किसी अन्य लड़की का कब्जा न हो कहकर परिवार वाले ने बिल्लो की शादी करवाते हैं। पपेन्द्र पहले शादी से मना करता है। उसके सास के कारण शादी के लिए हाँ करनी पड़ती है। वह कहती है – "बेटा तुम्हारी उम्र कितनी-सी है। मैं नहीं चाहती कोई गैर सपना की माँ आए और उसे दुख दे। इतनी बड़ी कोठी और धन-दौलत की मालकिन पराई हो। अगर एक लड़का भी...। उन्होंने रुपया मेरी जेब में डाल दिया था- अब बिल्लो को शारदा मानो बेटा।"[39] कहानीकार कहना चाहता हैं कि यह समाज एक पैंतालीस साल के अधेड़ व्यक्ति को उम्र कम है कह रही है। लेकिन वही माँ अपनी सत्रह साल की बच्ची की शादी करवाना चाहती है। बिल्लो को शादी की उम्र हो गई कहते हैं- "बूढ़ा-बुढ़िया के मान को यूं मोड़ना ठीक कोनो ननदोई जी, हम भी आबरूदार हैं। अब तो किताब-कापी भी छूट गई है, बिल्लो के हाथ से। अठारा, उन्नीस कि सयानी हो गई है।"[40] तभी पपेन्द्र मन में सोचता है- "नहीं, नहीं, सपना सत्रह साल की हुई है। बिल्लो उससे चार दिन छोटी है।"[41] अर्थात बिल्लो पपेन्द्र की बेटी सपना से भी चार दिन की छोटी थी। फिर भी सभी को बिल्लो शादी के लायक लगती है। यहाँ बाल विवाह का चित्रण है।

घर वाले पपेन्द्र से कह रहे थे शादी के लिए। उन्होंने बिल्लो से एक बार भी नहीं पूछा। उसकी मर्जी तक जानने की जरूरत नहीं समझी। कहानी में दिखाया है कि लड़कियों को हमेशा बड़ी ही समझी जाती है। चाहे वह उम्र में छोटी ही क्यों न हो। घर वाले लड़कियों को पढ़ाने-लिखाने में कम उनकी शादी पर ज्यादा ध्यान देते हैं। जिस तरह कहानी में बिल्लो के साथ होता है। सत्रह साल होते ही उसे विवाह योग्य माना जाता है। साथ ही उसकी शादी पिता समान जीजा से कर दी जाती है।

कहानीकार ने पुरुष की बदलती मानसिकता की ओर भी संकेत किया है। पपेन्द्र शादी से

इंकार कर रहा था क्योंकि बिल्लो छोटी थी। लेकिन जैसे-जैसे शादी नजदीक आती गई पपेन्द्र का मन बदलने लगा। वह शादी से खुश होने लगा। कहानी में इसका वर्णन है- "मरद की प्रवृत्ति पशुत्व से मेल खाती है। दुखी-दुखी-सा रहने वाला मेरा मन-मयूर पंख फैला कर नाच उठा था। बिल्लो जैसी कली जीवन-संगिनी बनेगी, मेरा नैया की खेवैया। मैंने अपने-आपको कोसा। मेरी ना-नुकुर, अगर वे लोग रुपया वापस ले लेते, तो मेरी टूटी डोर का जुलाहा कौन होता?"[42] कहानीकार कहना चाहता है कि एक पुरुष का मन बदलते देर नहीं लगता। विवाह के प्रस्ताव से पहले तक पपेन्द्र अपनी पत्नी को ही याद करता रहता है। वह उसी के बारे में सोचता रहता है। जब उसकी शादी तय होती है तब भी उसका मन खुश नहीं था। जैसे ही शादी नजदीक आती है बिल्लो को लेकर उसके मन में भावनाएं पैदा होने लगती है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'मांडी' में जाति भेदभाव का चित्रण है। कहानी में मांडी का अर्थ है- "मांडी! ग्रामीण अमावस्या के दिन पहली सिंकी रोटी और उस पर खीर या चावल रख कर गाय को देते हैं। इसे पितरों का तर्पण और पुण्य माना जाता है।"[43] अर्थात यह एक मान्यता है कि गाय को मांडी देने से पुण्य होता है। इसलिए कहानी में गाँव के सभी मांडी देते हैं। कहानी का पात्र पंडित दानीदास पूरा गाँव घूमता है पर उसे कोई गाय नहीं मिलती। गाँव में सिर्फ एक ही गाय थी पर वह निम्न जाति के घर में था। जिस कारण दानीदास वहाँ नहीं जाता। पूरा दिन घूमने पर भी वह गाय को मावस नहीं दे पाता। वह सोचने लगता है कि घर में सभी बच्चे भूखे है। अंत में वह एक खेत चरती गाय को मावस देने लगता है। उस गाय को देखते ही उसे पता चल जाता है कि वह वही गाय है जिसे ठुकरा चुका था। वह सोचता है कि घर के बाहर चरती गाय की जात नहीं होती।

कहानी में इसका वर्णन है- "दानीदास ने मेड़ के पास चरती गाय को एक नजर निहारा। पहचान ली थी, गाय सूबेसिंह की है। कुमुद खुरपी से घास छीलती और गैर भर-भर पीठ पर बंधी झोली में खोंसती जाती थी। दानीदास के तन-बदन में जलन-सी हुई और पिच्च से थूक दिया था। अपनी समझ बढ़ाई, मेहतर के चौक-खूँटे बंधी गाय मेहतर थी। बहता पानी

और चरता पशु निरपेक्ष होते हैं। ना जात। ना धर्म। मांडी दे। धर्म निभा, दानी। जल्दी कर, तू। पोते-पोती भूख से बिलखते ऊधम मचा रहे हैं।"[44]

कहानी में दिखाया है कि व्यक्ति अपनी जरूरत के अनुसार अपनी सोच बदलता है। दानीदास पहले सूबेसिंह की गाय को मांडी नहीं देता है क्योंकि वह उसके घर थी। जब दानीदास को लगता है कि उसके घर में बच्चे भूखे हैं। मांडी नहीं देने पर घर में कोई भोजन नहीं कर सकता। तब अंत में सूबेसिंह की गाय जान कर भी वह मांडी देने लगता है। वह अपने मन को समझा लेता है अपने परिवार के खातिर।

'गाड़िया' कहानी एक घुमंतू जनजाति की कहानी है। कहानी में स्त्री शोषण का चित्रण किया गया है। कहानी में जमींदार का बेटा एक लोहार (लूणसिंह) की बेटी की इज्जत लूटने की कोशिश करता है। लड़की के चिल्लाने पर लोहार और उसकी पत्नी जग जाते हैं। लोहार को आता देख जमींदार का बेटा वहाँ से भाग जाता है। लोहार द्वारा शोर करने पर सरपंच आता है। लोहार की बात सुनकर सरपंच जमींदार के बेटे को बचाने की कोशिश करता है। सरपंच लोहार की बेटी को न्याय देने के बजाये लोहार को समझाने लगता है। सरपंच जमींदार के बारे में बोलता है। जबकि उसे लोहार की सगाई हो रही लड़की की कोई चिंता नहीं थी। कहानी में इसका जिक्र है- "सरपंच और फकीरचंद के परिजनों, बड़े-बूढ़ों ने लोहार को सौ समझाया। लाख बुझाया। प्रलोभन नजर की। इज्जत की तुला। सब तिच्छ। वह एक ही हठ पकड़े था- दुसट फकीर का लहू पी जाऊंगा। उसे जेल की चाकी पिसवाऊंगा। सत्तर के बुड़भस सरपंच ने आँखों पर चश्मा ठीक किया और लोहार की बाँह पकड़ कर अलग ले गया। तल्ख हुआ। नसीहत और हिदायत एक साथ दीं- चौधरी जी! यह तो जन्म का ऊत (बदमाश) है। माँ नहीं। बाप नहीं। बाल-बच्चों का ख्याल करो इसके। बीस बरस पहले गाँव के नुक्कड़ गाड़ी खड़ी की थी तुमने। रेत चढ़ गया पहियों। वह लड़की यही गाड़ी में पैदा हुई थी। गाँव के हो गए हो। गाँव की रख लो।"[45]

कहानी में घुमंतू जनजाति की स्थिति का यथार्थ चित्रण है। जमींदार का बेटा इतना बड़ा अपराध करने जा रहा था। सरपंच उसे सजा देने के बजाये उसकी गलती पर पर्दा डालने की

कोशिश करता है। कहानीकार कहना चाहता है कि तरफदारी उनकी होती है जो पैसे वाला है। जिसका समाज में बड़ा नाम है। आर्थिक रूप से कमजोर वालों की कोई परवाह ही नहीं करता। लोहार के ना मानने पर सरपंच उसे चैतावनी भी देता है। सरपंच कहता है- "सरपंच ने साफा ठीक करते हेकड़ी दिखाई- चौधरी जी, मान लो मेरी। भली इसी में है। घर जाओ अपने। लोहकूट गाड़िया हो। जमींदारों से मुंहजोरी ठीक नहीं।"[46] सरपंच न्याय करने के बाजाये लोहार को डराने की कोशिश करता है। वह जमींदार का खौफ दिखाता है। लोहार सरपंच की बात नहीं मानता। वह जमींदार के बेटे को सजा दिलाने की कोशिश करता है। अंत में लोहार की जीत होती है। जमींदार के बेटे को पुलिस पकड़ लेती है और उसे सजा होती है। कहानी में अपने हक के लिए लड़ते लोहार का चित्रण है।

रत्नकुमार सांभरिया की 'अनुष्ठान' कहानी भी स्त्री शोषण पर आधारित है। इसमें तांत्रिक अनुष्ठान के नाम पर स्त्रियों पर शोषण करता है। वह गाँव की भोली-भाली स्त्रियों को ठगता है और उनको अपना हवस का शिकार बनाता है। गाँव में जिन स्त्रियों के बच्चे नहीं होते। उन स्त्रियों को तांत्रिक कहता है कि उनके पति में खोट है जिससे बच्चा नहीं हो रहा। तांत्रिक स्त्रियों को किसी बच्चे की बली देने को कहता है। जो एक धोखा था। कहानी में सरस्वती के साथ भी ऐसा ही होता है। उसका बच्चा ना होने पर वह तांत्रिक के पास जाती है। फिर भी उसका बच्चा नहीं होता। सरस्वती को आता देख तांत्रिक उस पर बुरी नजर डालता है। तांत्रिक सरस्वती को एक उपाय देता है। वह कहता है- "सरस्वती, तुम्हें किसी बच्चे के लहू से कच्चे कलवों का तर्पण करने की खातिर अनुष्ठान करवाना होगा। जैसे स्वस्थ और सुंदर बालक तुम चाहती हो, वैसा ही...।"[47]

तांत्रिक की बात सुनकर सरस्वती डर जाती है। वह पहले तो मना कर देती है। फिर बच्चे की लालच में मान जाती है। वह बच्चा लाने का काम गाँव के वीरसिंह को देती है। वीरसिंह तांत्रिक का नाम सुनते ही उसे कहता है कि- "वह तो बदनाम सै, पाखंडी सै, दुसट सै। पहल्या तो औरतों का मरदा ने नामरद बता के अपनी बनावे सै। अर जब उसके बस कि बात ना रह तो

बालक के खून तो मनतर पढ़न का बहाना बना के दूर हट जा सै। गाँव की दो बीरबानी उसके चक्कर में आई सै। उनके तो चिड़ी का बच्चा भी हुआ ना, आज तक। आफ्नै आबरू माटी कर बैठी। दो घरों में घुप्प अंधेरा कर दिया। मैं अब खून ना करूँ। जी दुख पावै सै।"[48]

सरस्वती बच्चे की लालच में इतनी अंधी हो गई थी कि वीरसिंह की बातों का उस पर असर ही नहीं हुआ। वह वीरसिंह को कैसे भी करके लाने को कहती है। वीरसिंह मान जाता है। अनुष्ठान के लिए वह लहू लाकर देता है। तांत्रिक जब घर जाता है उसकी पत्नी कहती है कि उसका बच्चा स्कूल से आया ही नहीं। तब जाकर तांत्रिक को घबराहट होती है। उसके सिने में दर्द होता है और वियोग से उसकी मृत्यु हो जाती है। अंत में वीरसिंह तांत्रिक के बच्चे को उसकी पत्नी को सौंप देता है। दरअसल वीरसिंह तांत्रिक को सबक सिखाना चाहता था। उसे यह एहसास दिलाना चाहता था कि अपने बच्चे की मृत्यु होने पर कैसा होता है। लेकिन तांत्रिक खुद को संभाल ही नहीं पाया।

'खबर' कहानी में भ्रष्टाचार का चित्रण हुआ है। कहानी में अखबारखानों में होने वाली घोटालों का स्पष्ट वर्णन किया है। सरकारी दफ्तरों में होने वाली भ्रष्टाचारों के तरफ भी इशारा किया गया है। यहाँ दिखाया है एक बड़ी खबर भ्रष्टाचार के कारण छपने से रुक जाती है। चंद पैसों के लिए जरूरी समाचार दबा दिया जाता है। खबर सबके समक्ष लाने के लिए संवाददाता (प्रजीता) बहुत मेहनत करती है। अंत में वह सफल नहीं हो पाती और अपनी नौकरी छोड़ देती है।

प्रजीता कार्यालय के एक भ्रष्ट कर्मी का सच्चा पोल खोलना चाहती थी। उस कर्मी के खिलाफ प्रजीता ने सारे सबूत इकट्ठे कर लिए थे। वह उस सबूत को संपादक को देती है। सबूत देने के बाद ही एक आदमी आता है। दोनों में बातचीत होती है अगले दिन वह समाचार नहीं छपती। कहानी में प्रजीता यह घटना एक लायजन ऑफिसर को कहती है- "यू आर राइट, सर। त्रासद यही रहा। वह रात साढ़े दस बजे जब दफ्तर आया, न्यूज़ बॉस की टेबल पर थी। वह सीधा उनके चैम्बर में चला गया। बैठा। बतियाया। बॉस ने उसके लिए कॉफी मँगवाई। बॉस

का इंटरकाम आया- 'प्रजीता आप जाइए, खबर मैं देख लूँगा।' मैं घर पहुंचूँ, मेरे कलीग का फोन आया, तुम जिस न्यूज़ को मुख्य पृष्ठ पर चाह रही थी, नहीं छपेगी। बॉस और वह आदमी दोनों साथ-साथ दफ्तर से निकले हैं। न्यूज़ बॉस के हाथ में ही है।"[49]

कहानी में दिखाया है कि सच्ची खबर को किस तरह दबा दिया जाता है। बड़े ऑफसर सच्चाई को बाहर आने देते ही नहीं। भ्रष्ट अधिकारी खुद तो गलत करते ही है साथ ही ईमानदार व्यक्ति को भी भ्रष्ट बनने में मजबूर करता है। कहानी में लायजन ऑफिसर खुद सोचता है- "मेरे माथे की नसें तड़कने लगी थी। लायजन ऑफिसर का काम विभाग का भोंपू बना रहने तक है? मेरा यह कृत्य न सरकार के प्रति वाफादारी है, न जनता के प्रति सदाचारी। बड़ा घोटाला हुआ। लाखों का चूना लग गया। मैं मुँह सिए हूँ, विभाग से तनखा पाता हूँ। मेरा दायित्व नहीं, प्रेस नोट जारी करके आवाम को अवगत करा दूँ। असहाय का खून करके भागने वाला इतना बड़ा कायर नहीं होता, जितना वह, खून देख कर भी जिसका खून नहीं खौलता।"[50] कहानी में है कि लायजन ऑफिसर को सब कुछ पता होते हुए भी वह चुप रहता है। वह चाहे तो प्रजीता की मदद कर सकता था पर ऐसा नहीं करता। उसके मन में नौकरी छूट जाने का डर था। जिसके कारण वह सच्चाई का साथ नहीं दे पाता। उसके मन में अफसोस जरूर रहता है।

'मियांजान की मुर्गी' कहानी में मुस्लिम समाज की हलाल करने की प्रक्रिया का वर्णन है। साथ ही हलाल प्रक्रिया के खौफ से भागती एक मुर्गी का चित्रण है। मुर्गी उस प्रक्रिया को देखकर डर जाती है। वह अपने साथ रहे मुर्गो को हलाल होते देखती है। साथ ही अपनी माँ की हलाल होती भयवाह रूप भी देखती है। कहानी में इसका वर्णन है- "मुर्गी दड़बे के फाटक की झुर्री में से देखा करती थी। मियांजान के बूढ़े हाथों, भोथरी छुरी तले हलाल होते मुर्गे-मुर्गियाँ कैसे तड़प-तड़प ठंडे होते थे। तीन दिन पहले अपनी माँ की गर्दन पर छुरी देख वह दहल सी गई थी। कितनी चटपटाई थी माँ। छटपटाते-छटपटाते उसका गर्दन कटा धड़ मियांजान के हाथों छूट गया था। वह पंख फड़फड़ा कर उड़ गई थी और थोड़ी देर बाद ही धम्म से नीचे आ

पड़ी थी, जैसे उछली गेंद आ गिरती है।"[51] कहानी में मुर्गी के मन में अपनी माँ की मृत्यु का भयानक दृश्य देख खौफ बैठ जाता है। इसलिए मियांजान जब उसे पकड़ने आता है, तो वह भाग जाती है। यहाँ एक मुर्गी की मनःस्थिति का चित्रण है। कहानीकार ने कहानी के जरिए हिंसा का चित्रण किया है। साथ ही मुर्गी के जरिए इसका विरोध करता दिखाया है।

'बाढ़ में वोट' कहानी रत्नकुमार सांभरिया की राजनीति पर आधारित कहानी है। कहानी में बाढ़ का चित्रण है। पूरा गाँव बाढ़ से डूब जाता है। लोग शिविरों में रहने लगते हैं। आपदा प्रबंध प्रभारी आका बाढ़ एवं बाढ़ में फसे लोगों को देखने आता है। वह आकर उन्हें देखता है और गेस्ट हाउस चला जाता है। पानी के बीच एक पेड़ में फसे छह लोगों को वह बचाने की कोशिश भी नहीं करता। वह उन्हें गाली देने लगता है। उनका कसूर बस इतना था कि उन्होंने आका को वोट नहीं दिया था। आका वोट न देना अपनी व्यक्तिगत दुश्मनी मान लेता है। अंत में उन छह लोगों की मृत्यु हो जाती है। आका अगर कोशिश करता तो वे लोग बच सकते थे। वह ऐसा नहीं करता। कहानी में एक स्वार्थी राजनेता का यथार्थ रूप का वर्णन है। उसे केवल वोट न देने के कारण वह उन लोगों को मरने छोड़ देता है। जबकि समाज सेवक होने के कारण उन्हें बचाने का दायित्व उसका था। आका कहता है- "साले लाठी चला लेते हैं। बरछी चला लेते हैं। तलवार चला लेते हैं। बंदूक चला लेते हैं। झंडा उठाकर नारे लगा लेते हैं, गलाफाड़। बस, नहीं आता, तैरना नहीं आता।...यहाँ चौबारा था, उनका। इसी पर मेरे विपक्षी का झंडा लहराया था, उन्होंने, गाँव से ऊंचा। देखूँ, बने चौबारा।"[52] आका बाढ़ में फसे लोगों पर अपना गुस्सा निकालता है।

आका शिविरों से गेस्ट हाउस आता है। वहाँ आकर देशी मुर्गी और शराब खाने का प्रस्ताव रखता है। पूरा गाँव पानी से घिरा था पर आका को खाने की पड़ी थी। होटल का मैनेजर समझाता है पर वह नहीं मानता। खाना खाने के बाद आका लड़की की मांग करता है। कहानी में इसका वर्णन है- "सर, पानी पड़ रहा है। शिविर-शिविर जाग है। बदनामी होगी। गाँव की

बहू-बेटी, सबकी बहू-बेटी। सर, सर कलम कर दें, भड़ुवई की ना कहें।"[53] कहानी में एक गैर जिम्मेदार नेता का चित्रण है। गाँव के लोग पानी में फसे थे। पूरा गाँव पानी से घिरा था। आका को उनकी कोई चिंता न थी। उसे तो बस खाना और मौज करना था। गाँव की स्त्रियों का फायदा उठाना था। उसे बाढ़ में फसे लोगों का दर्द नहीं दिख रहा था। आका बाढ़ में फसे लोगों के लिए कुछ नहीं करता। वह शिविरों में बस दिखावा के लिए आता है।

'भैंस' कहानी में जमींदार शोषित लोगों की कथा का वर्णन है। इस कहानी का मूल पात्र है मंगला। मंगला एक दलित और गरीब लड़का है। उसके माँ-बाप का पहले ही देहांत हो चुका था। वह दूसरों के घर काम करके अपना गुजारा करता था। भाभी के कहने पर वह पाड़ी पालने को तैयार हो जाता है। पाड़ी के साथ-साथ वह आस-पड़ोस के भैंसों को भी चराता था जिससे उसे पैसा मिलता था। वह अपना घर खुद चला सकता था। एक दिन लंबरदार (जमींदार) अचानक उसके घर आता है और कहने लगता है- "छह साल पहले तेरा बाप बीमारी से मर रहा था। दस हजार लगे थे। अब जुड़कर बीस हजार हो गए हैं।"[54] मंगला कहता है- "मालिक साब, उसके एवज तो बापू ने साल काम किया था आपके घर। खुद मैंने भी उनका हाथ बंटाया था। उनकी मौत का कारण...। अब तो माँ और बापू दोनों नहीं हैं।"[55]

लंबरदार को सब पता था फिर भी वह मंगला को सताता है। मंगला के माँ-बाप ने पैसे के बदले उसके यहाँ साल भर काम किया था। लेकिन लंबरदार जानबूझ कर मंगला की भैंस को लेने के लिए यह सब खेल खेलता है। मंगला की बात सच है यह जानने के बावजूद भी वह अपनी कारिंदे से मंगला की भैंस को खोल लाने को कहता है। लंबरदार की नजर उस भैंस पर थी। मंगला के इतनी बार कहने के बाद भी वह नहीं मानता। भैंस को जबरदस्ती ले जाने की कोशिश करते हैं।

इस कहानी में दिखाया है कि जमींदार अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकता है। वह किसी भी हद तक जा सकता है। वह जानता था कि मंगला के पिता का कोई कर्ज नहीं है। फिर भी वह मंगला की भैंस को पाने की लालच में झूठ बोलता है। कहानी में जमींदारों के यथार्थ का चित्रण किया गया है। लंबरदार के आदमी जब भैंस को ले जाने की कोशिश करते है भैंस

नहीं जाती। उसके बच्चे को दूर कर दिया जाता है तब भी नहीं हिलती। जब मंगला को चोट पहुँचती है तब भैंस उन लोगों पर टूट पड़ती है। भैंस लंबरदार को दूर पटक देती है। "नित बियाई भैंस ने मंगला की और देखा। मंगला मसीह की तरह सूली पर लटका हुआ था, मानो। बिन मंगला उसका मोल। जैसे पानी खौलता है, भैंस के भीतर क्रोध खदबदाने लगा था। वह फड़फड़ी मारकर उठ खड़ी हुई थी। सों-सों की भयानक के साथ वह आगे बढ़ी। दीवार के साथ चिपका लंबरदार थर-थर हिल रहा था, सूत सा। भैंस को बेकाबू देख लंबरदार का रोम-रोम काँप उठा था, जैसे आंधी में पत्ते हिलते हैं। उसके कमजोर हाथों से बंदूक छूटकर नीचे गिर पड़ी थी। भैंस ने उसे सींगों भर डोली के दूसरी ओर फेंक दिया था। भय खाए कारिंदे भाग छूटे थे।"[56]

(ii) **समकालीन हिंदी कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ :**

(अ) समानताएँ : समकालीन हिंदी कहानी और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का विवेचन करने के बाद यह ज्ञात होता है कि रत्नकुमार सांभरिया की कहानी, समकालीन हिंदी कहानी में प्रमुख स्थान प्राप्त करती हैं। रत्नकुमार सांभरिया और समकालीन हिंदी कहानीकारों की कहानियों में समानता भी है। समकालीन हिंदी कहानी और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री जीवन की समस्या, दलित जीवन की समस्या, वृद्ध जीवन की समस्या, ग्रामीण जीवन आदि का यथार्थ चित्रण मिलता है। दोनों कहानियों में मानवीय मूल्यों का चित्रण मिलता है। समकालीन कहानी की तरह रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में भी जाति-भेद भावनाओं का चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में गाँव से शहर की ओर पलायन, नौकरी करती स्त्री पात्र, पारिवारिक विघटन, वस्तुवादी दृष्टिकोण आदि का चित्रण है। समकालीन कहानियों की तरह रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ भी दलित चेतना, स्त्री चेतना पर केंद्रित हैं। दोनों कहानियों में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध का चित्रण मिलता है। साथ ही यहाँ अपने अस्तित्व के लिए लड़ती हुई स्त्री पात्र का भी स्पष्ट चित्रण मिलता है।

(आ) असमानताएँ :

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ समकालीन हिंदी कहानी से भिन्न हैं। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में पात्रों को जीवन की कठिनाईयों से हारकर शोषित होते नहीं दिखाया है। उनके पात्र अपने पर हुए शोषण, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाते हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में उम्मीद दिखाई देती है। समकालीन हिंदी कहानियों में अधिकतर स्त्रियों, दलितों को शोषित होता ही दिखाया गया है। परन्तु रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में शोषित के साथ-साथ विद्रोह करते भी दिखाया गया है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ समकालीन हिंदी कहानियों से अलग इसलिए भी है क्योंकि उनकी अधिकतर कहानियाँ किसी न किसी महीने से शुरू होती हैं। जैसे- 'आखेट' कहानी में 'पौष की सर्दी हड्डियों से निकल रही है', 'लाठी' कहानी में 'भादो की सड़ी गर्मी पड़ रही थी', 'गाड़िया' कहानी में 'मध्यरात्रि वैशाख की गहराती रात' आदि। इन कहानियों का आरंभ महीने से ही किया गया है। जो दूसरों से बहुत अलग है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ ग्रामीण परिवेश पर ही आधारित है। उन्होंने अपनी कहानियों में ग्रामीण का चित्रण अंकित किया है।

समकालीन हिंदी कहानी में कहानीकारों ने ग्रामीण जीवन के अलावा शहरी जीवन का चित्रण भी किया है। परन्तु रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में ऐसा नहीं है। उनकी अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन को ही दर्शाती हैं। इनकी कहानियों के सभी पात्र गाँव के ही हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की एक खासियत यह भी है कि उनकी कहानियाँ ग्रामीण परिवेश पर आधारित होते हुए भी उनकी कहानियों में आधुनिकता बोध की प्राप्ति होती है। आधुनिकता बोध से तात्पर्य है नवीनता का बोध। उनकी कहानियों में आधुनिकता बोध की सभी विशेषताएं विद्यमान है। जैसे- मानवीयता, तनाव ग्रस्त जीवन, अकेलापन, भ्रष्टाचार, संबंधों का टूटन, स्त्री अस्मिता, स्त्री-दलित शोषण, नारी शिक्षा, बेरोजगारी आदि।

समकालीन हिंदी कहानी में कहानीकारों ने मध्यवर्गीय जीवन पर अधिक लिखा है। साथ ही दलित एवं स्त्री जीवन पर प्रकाश डाला है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री तथा दलित जीवन पर ही अधिक लिखा गया है। रत्नकुमार सांभरिया ने दलितों की पीड़ा, स्त्रियों की पीड़ा, आदि को लेखनी का मूल केंद्र बिंदु बनाया है। साथ ही उन्हें पीड़ित एवं

शोषित के साथ-साथ विद्रोह करते भी दिखाया है। रत्नकुमार सांभरिया ने केवल दलित और स्त्रियों का चित्रण ही नहीं बल्कि दिव्यांग लोगों का चित्रण भी किया है। दिव्यांग को दिव्यांग के रूप में ही नहीं बल्कि उन्हें अपने अधिकार के लिए लड़ते दिखाया है। अपने लिए आवाज उठाते दिखाया है। उन्हें हार मानते चित्रित नहीं किया है। उनकी कहानियों में दिव्यांगों को केवल असहाय या लाचार के रूप में चित्रित न करके उन्हें बहादुर के रूप में चित्रित किया है और ऐसा अन्यत्र दुर्लभ है।

संदर्भ :

1. समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष, पुष्पपाल सिंह, पृ. 120
2. स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, रेखा कस्तवार, पृ. 16
3. ही, पृ. 16
4. वही, पृ. 16
5. समकालीन हिंदी कहानी : दलित विमर्श, श्री मोहम्मद रफी एच हंचिलाल, पृ. 44
6. हिंदी कहानी का इतिहास 1976-2000, गोपाल राय, पृ. 27
7. वही, पृ. 408
8. वही, पृ. 31
9. वही, पृ. 25
10. जाँच अभी जारी है, ममता कालिया, पृ. 18
11. हिंदी कहानी का इतिहास 1976-2000, गोपाल राय, पृ. 19
12. वही, पृ. 18
13. वही, पृ. 267
14. वही, पृ. 307
15. वही,पृ. 308
16. वही, पृ. 52
17. वही, पृ. 334-335
18. हिंदी कहानी का इतिहास, भाग- 3, गोपाल राय, पृ. 125
19. वही, पृ. 276
20. वही, पृ. 123-124
21. हिंदी कहानी का इतिहास, भाग- 3, गोपाल राय, पृ. 300
22. हिंदी कहानी का इतिहास, भाग- 2, गोपाल राय, पृ. 462
23. ममता कालिया की कहानियाँ, बातचीत बेकार है, ममता कालिया, पृ. 160
24. दलित समाज की कहानियाँ, फुलवा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 27
25. वही, वदन-दबना, पृ. 265
26. वही, लाठी, पृ. 132
27. वही, खेत, पृ. 235
28. एयरगन का घोड़ा, धूल, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 152
29. दलित समाज की कहानियाँ, हथौड़ा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 273
30. एयरगन का घोड़ा, राइट टाइम, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 215

31. एयरगन का घोड़ा, द्वंद्व, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 102
32. वही, पृ. 105
33. एयरगन का घोड़ा, झुनझुना, पृ. 99
34. दलित समाज की कहानियाँ, शर्त, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 89
35. वही, पृ. 92
36. वही, मेरा घर, पृ. 280
37. एयरगन का घोड़ा, सनक, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 207
38. वही, पृ. 208
39. वही, बिल्लो का ब्याह, पृ. 132
40. वही- पृ. 132-133
41. वही, पृ. 133
42. वही, पृ. 134
43. एयरगन का घोड़ा, मांडी, पृ. 7
44. वही, पृ. 20
45. वही, गाड़िया, पृ. 22-23
46. वही, पृ. 23
47. वही, अनुष्ठान, पृ. 41
48. वही, पृ. 44
49. वही, खबर, पृ. 239
50. वही, पृ. 236
51. दलित समाज की कहानियाँ, मियांजान की मुर्गी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 94
52. वही, बाढ़ में वोट, पृ. 225
53. वही, पृ. 232
54. वही, भैंस, पृ. 109
55. वही, पृ. 109
56. वही, पृ. 110

तृतीय अध्याय

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ : सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ

क. सामाजिक संदर्भ :

"समाज शब्द संस्कृत के दो शब्द 'सम्' एवं 'अज' से बना है। 'सम्' का अर्थ है इकट्ठा व एक साथ। 'अज' का अर्थ है साथ रहना। इसका अभिप्राय है कि समाज शब्द का अर्थ हुआ एक साथ रहने वाला समूह।"[1] "शाब्दिक दृष्टि से समाज शब्द का पर्यायवाची शब्द अंग्रेजी में 'सोसाइटी' है। यह society लेटिन शब्द से बना है जिसका अर्थ है संगी, साथी या मित्र।"[2]

समाज लोगों के समुदाय को कहा जाता है। एक बहुत बड़ा समुदाय मिलकर ही एक समाज का निर्माण करता है। "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका ऊर्ध्व और विकास समाज में ही होता है, जन्म के साथ ही मनुष्य इस समाजरूपी संस्था से जुड़ जाता है, आदि से लेकर आज तक व्यक्ति को समाज प्रभावित करता रहा है और व्यक्ति इसमें रहकर ही जीवन की सार्थकता को तलाशता रहा है।"[3] समाज में अच्छा, बुरा, गरीब, अमीर कई तरह के लोग होते हैं। जो अपना जीवन यापन करते हैं। समाज में लोगों को बंधे रखने के लिए अनेक नियम होते हैं। जिसे लोगों को न चाहते हुए भी उसका पालन करना पड़ता है। मनुष्य समाज का हिस्सा होने के कारण वह नियम का पालन करने के लिए विवश होता है। इनमें कुछ नियम अच्छे होते हैं तो कुछ बुरे। फिर भी लोगों को इसका मान रखना ही पड़ता है। न मानने पर उसे समाज से निकाल देने का भय होता है। पुराने समय में कुछ अजीब नियम होते थे समाज के। जिसे आज सुनते ही जी काँप उठता है। सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा समस्या आदि इसी तरह के नियम हैं। इस तरह के नियम अमानवीय हैं।

(i) परिभाषा :

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने समाज की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी हैं-

भारतीय विद्वानों के अनुसार –

1. डॉ. सम्पूर्णानन्द के अनुसार, "समं अजन्ति जनाः अस्मिन इतिः अर्थात जिसमें लोग मिलकर

एक साथ एक गति से चलें वही समाज है।"[4]

2. डॉ. रत्नाकर पाण्डेय के अनुसार, "एक ही स्थान पर रहने वाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय करने वाले वे लोग जो मिलकर अपना एक समूह बनाते हैं। समुदाय जैसे –शिक्षित समाज, ब्राह्मण समाज।"[5]

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार-

1. अगस्ट काम्टे का मत – "काम्टे के अनुसार समाज एक मात्र सामाजिक संस्था है। उसके अनुसार समाज ही एक ऐसा विज्ञान है जो समस्त सामाजिक घटनाओं के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करता है। उसका मत है कि समाज ही एक एसी संस्था है जो समाज की समस्त घटनाओं का अध्ययन करता है।"[6]

2. हरवर्ट स्पेंसर का मत- "उसने उद्विकासकारी सिद्धांत का समर्थन किया। उसने उद्विकासी सिद्धांत की तुलना शारीर से की है। जिस प्रकार हाथ, पैर, आँख आदि का समन्वित रूप शारीर है, ठीक उसी प्रकार समाज में भी विभिन्न पहलू होते हैं – आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि। समाज इन्हीं समस्त पहलुओं का समन्वय है।"[7]

(ii) तत्व :

समाज में समाज के तत्वों का बड़ा महत्व होता है। समाज के निम्नलिखित तत्व हैं -

1. रीतियाँ : समाज के तत्व के आधार पर रीतियाँ हर समाज में विद्यमान होती है। यह समाज का मूल आधार है। रीतियाँ जिसे समाज के नियम भी कह सकते हैं। यह रीतियों की सहायता से पूरा समाज चलता है। मनुष्य शादी, त्योहार, पूजा-पाठ, जन्मदिन, भोजन आदि रीतियों के अनुसार ही करता है। यही रीतियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी निरंतर चलती रहती है।

2. अधिकार सत्ता : समाज में कुछ ही व्यक्तियों को समाज चलाने का अधिकार दिया जाता है। अधिकार सत्ता हर समाज में पाई जाती है। हर मनुष्य को इसका पालन करना होता है। अधिकार प्राप्त व्यक्ति समाज की व्यवस्था को कायम रखने का प्रयत्न करते हैं।

3. स्वतंत्रता : स्वतन्त्रता समाज का अन्य महत्वपूर्ण तत्व है। समाज में अगर कोई स्वतंत्रता नहीं होगी तो मानव विकास नहीं हो पाएगा। मानव विकास के लिए स्वतंत्रता का होना अति आवश्यक है। कोई भी समाज मनुष्य को जबर्दस्ती कार्य थोप कर कार्य नहीं करवा सकता। उसके लिए मनुष्य की स्वतंत्रता आवश्यक है।

4 . पारस्परिक सहयोग : पारस्परिक सहयोग समाज का महत्वपूर्ण तत्व है। इसके बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इसके द्वारा ही एक व्यवस्थित समाज बन सकता है। इसके अभाव में समाज का कोई अस्तित्व ही नहीं। समाज के गठन में पारस्परिक सहयोग का महत्वपूर्ण योगदान है।

5. कार्य पद्धति : प्रत्येक समाज की अपनी–अपनी कार्य पद्धति होती हैं। हर समाज अपने अनुसार कार्य करता है। उनका कार्य करने का तरीका सबसे भिन्न होता है। समाज के लोगों को इसी पद्धति के अनुसार कार्य करना होता है। साथ ही इसे मानना भी पड़ता है। विवाह, पूजा-पाठ, शिक्षा आदि समाज की कार्य पद्धति द्वारा ही किया जाता है। हर समाज अपने अनुसार कार्य पद्धतियों का पालन करता है।

6. समूह और विभाग : समूह से ही समाज का निर्माण होता है। इसलिए सब एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। समूह के बिना समाज अधूरा है। किसी भी समाज को आगे बढ़ाने के लिए समूह का बड़ा योगदान रहता है। समूह से ही समाज का निर्माण होता है। इसलिए समूह समाज के लिए और समाज समूह के लिए आवश्यक है। विभाग के अंतर्गत परिवार, गाँव, शहर आदि आती है और यही सामाजिक विभाग है। "समाज के अंतर्गत परिवार, पड़ोस, गाँव, नगर, प्रान्त, विविध संस्थाएँ और समितियाँ आदि सामाजिक विभाग सम्मिलित हैं जिनमें से प्रत्येक हमारे सम्बन्धों को किसी न किसी रूप में और किसी न किसी सीमा तक प्रभावित करता है। ये समूह और विभाग मानव-विकास का मूल स्रोत हैं।"[8]

7. मानव व्यवहार पर नियंत्रण : मानव व्यवहार पर नियंत्रण करने के लिए समाज के दो रूप होते हैं। एक औपचारिक और दूसरा अनौपचारिक। औपचारिक के अंतर्गत पुलिस, न्यायालय

आदि आते हैं। अनौपचारिक के अंतर्गत रीतियाँ, धर्म, प्रथाएँ आदि आते हैं।

8. व्यवस्था : समाज की व्यवस्था ऐसी हो जो समाज के हितों के लिए कार्य करे। जनमानस के हितों के लिए सोचे।

(iii) समस्याएँ :

बाल विवाह : पुराने समय में बाल विवाह एक बड़ी समस्या थी। बच्चों को छोटी उम्र में ही शादी करवा दी जाती थी। खेलने कूदने के उम्र में शादी करवाना बच्चों के साथ बड़ा अन्याय था। माता-पिता न चाहते हुए भी नियम का पालन करते थे। कम उम्र में शादी करवाना एक अपराध है। इससे लड़की को मानसिक एवं शारीरिक रूप से समस्याएँ होती है। इसलिए इस कुप्रथा को समाज से हटाया गया। बाल-विवाह के विरोध कानून भी बनाएं गए। आज यह प्रथा न के बराबर है।

दहेज प्रथा : दहेज प्रथा भी एक बड़ी समस्या के रूप में उत्पन्न हुई है। दहेज के लिए ससुराल वाले लड़की को जला देते हैं। कभी-कभी तो शादी भी टूट जाती है। समाज में स्त्री शोषण बड़ी समस्या है। यह बरसों से चलती आ रही है। इसके खिलाफ आवाज भी उठाए गए हैं। परन्तु कोई फाईदा नहीं। यह कम होने के बजाये बढ़ती ही जा रही है। दहेज के कारण माँ-पिता लड़कियों की शादी कराने को डरते हैं। लड़की सुन्दर न होने पर भी दहेज की भारी मांग होती है। ऐसे में लड़की के घर वालों को बहुत समस्या होती है। इस प्रथा को रोकना अतिआवश्यक है। दहेज के कारण कभी-कभार घर तक को गिरवी रखना पड़ता है। लड़की वालों की स्थिति बहुत बुरी हो जाती है।

स्त्री शिक्षा : पुराने समय में स्त्री शिक्षा बड़ी बात थी। स्त्रियों को शिक्षा की अनुमति न थी। सिर्फ लड़कों को ही पढ़ाया जाता था। लड़कियों को घर के काम में लगाया जाता था। आज समाज में स्त्री शिक्षा को भी महत्त्व दिया जा रहा है। स्त्री पढ़-लिख कर नौकरी पाने लगी है। वह अपने पैरों पर खड़ी हो रही है। लेकिन वहाँ भी कार्यालयों में उनके साथ शोषण होता है। स्त्री हर जगह शोषित एवं पीड़ित होती है। स्त्री शिक्षा बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। नौकरी ही नहीं बल्कि घर चलाने के लिए भी शिक्षित होना आवश्यक है। बच्चों को पढ़ाने के लिए माँ का

शिक्षित होना जरुरी है।

भ्रष्टाचार : भ्रष्टाचार वर्तमान में बहुत बड़ी समस्या के रूप में आ रही है। यह बढ़ती ही जा रही है। भ्रष्टाचार नौकरी के मामले में तो होता ही है। अब तो यह शिक्षा के क्षेत्र में भी हो रही है। नौकरी छोटी हो या बड़ी पहचान वाले की जरुरत होती है। आज शिक्षा के क्षेत्र में भी ऐसा हो रहा है। अच्छे कॉलेज, विश्वविद्यालयों आदि में दाखिला के लिए पैसे की जरुरत होती है। साथ ही पहचान वाले का होना बहुत ही जरुरी हो गया है। पैसे के अभाव के कारण पढ़ाई में तेज बच्चों को दाखिला नहीं मिलती। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। डॉक्टर, इंजिनियर आदि की पढ़ाई के लिए भी पैसे और चापलूसी की जरुरत होती है। आर्थिक रूप से असमर्थ बच्चे इससे वंचित रह जाते हैं। कार्यालयों में भी भ्रष्टाचार दिखाई देता है। कुछ काम करवाना हो तो बिना रिश्वत के काम नहीं होता।

संबंधों का टूटन : आधुनिकता के चलते हर परिवार में संबंधों का टूटन देख सकते हैं। यह एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आती है। पति-पत्नी, भाई-बहन, माँ-पिता आदि इसी के अंतर्गत आते हैं। कभी-कभी व्यस्तता के कारण घर में किसी से बात नहीं हो पाती। इसी के कारण लोग एक दूसरे से दूर होने लगते हैं। सब अकेलापन, तनाव, में जीने लगते हैं। एक दूसरे के हाल चाल पूछने का भी समय नहीं होता। कभी-कभी स्वार्थ के कारण भी संबंध टूटने लगते हैं। जब कोई स्वार्थ भाव लेकर बात करता है तब वह संबंध नहीं टिकता। जैसे बेटे का माँ-पिता की संपत्ति के लिए साथ रहना। बेटे का विदेश पढ़ाई के लिए जाना। वहाँ जाकर वही की लड़की से शादी कर रह जाना। घर कभी कभार आना आदि। यह संबंधों के टूटन की ओर ही इशारा करते हैं।

संयुक्त परिवार : संयुक्त परिवार दो या दो से अधिक परिवार से बनता है। साथ रहकर भोजन करना, त्यौहार मनाना आदि संयुक्य परिवार में ही होता है। सबसे बुजुर्ग व्यक्ति को इस परिवार का मुखिया बनाया जाता है। परिवार के सभी सदस्यों को मुखिया की बात सुननी पड़ती है। संयुक्त परिवार में अकेलापन महसूस नहीं होता। यह इसकी बहुत बड़ी विशेषता है। संयुक्त परिवार में कोई भी काम साथ मिलकर किया जाता है। संयुक्त परिवार की कुछ हानियाँ भी होती है। जैसे- सभी सदस्यों को मुखिया की बात सुननी पड़ती है। जिस कारण कोई भी

अपने अनुसार कार्य नहीं कर सकता। संयुक्त परिवार में सभी दूसरों पर निर्भर रहते हैं। घर में अगर किसी का झगड़ा हो जाय। तो पूरे परिवार में अशांति होती है। संयुक्त परिवार में इर्ष्या का भाव अधिक होता है। संयुक्त परिवार में व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं होती।

जातिभेद : समाज में जातिभेद एक बड़ी समस्या है। उच्च-नीच की भावना हर समाज में देखने को मिलती है। यह एक सामाजिक असमानता है। इससे लोगों में एकता की कमी देखने को मिलती है। हर समाज में मनुष्य की पहचान उसकी जाति से ही होती है। जाति मनुष्य की पहचान है। जातिभेद अधिकतर गरीब लोगों पर ही लाघु होती है।

(iv) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सामाजिक जीवन :

कहानीकार रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों की कथा में समाज को ही रूप दिया है। उनकी अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन पर आधारित हैं। उनकी कहानियों के पात्र भोले-भाले साधारण लोग हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में चित्रित पात्रों में जीने की इच्छा हैं। विरोध का स्वर है। उनके कहानियों के पात्र चाहे जितने ही कष्ट में क्यों न हो। वे मरने के बारे में नहीं सोचते हैं। वे अपने पर हो रहे शोषण के खिलाफ आवाज उठाना चाहते हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री शोषण, दलित, वृद्ध जीवन, सांप्रदायिकता जैसी अनेक समस्याएँ चित्रित की गई हैं। साथ ही संबंधों का टूटन भी दिखाया गया है।

आज आधुनिकता के दौर में रिश्तों में दरार आ गई है। बेटा अपने ही पिता के बारे में नहीं सोचता। सोचता है तो केवल पिता की संपत्ति के बारे में। रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'हुकम की दुग्गी' इसी तरह की कहानी है। कहानी में वृद्ध जीवन का चित्रण हुआ है। इसमें माँ-पिता के प्रति बच्चों की लापरवाही का चित्रण हुआ है। बीमार के कारण पिता बिस्तर पर ही पड़ा रहता है। पर बेटे उसकी देखभाल नहीं करते हैं। पिता के तीये के दिन दोनों बेटे घर बार का बटवारा कर रहे थे। उन्हें अपने पिता के मरने का जरा भी गम नहीं था। कहानी में इसका चित्रण है -"भूत, वर्तमान और भविष्य का पैगाम देने वाले जतन लाल ने यहीं स्वर्ग देख लिया था। आज यहीं नरक भोग रहे थे। पत्नी के मरते ही खुद को तीन साल हो गए थे, खाट पकड़े। खाट में ही गू-मूत सब। उनके आँखे थीं। दिखता नहीं था। अपने इन दोनों बेटों की लतों को वे

अंधे असहाय धृतराष्ट्र की तरह महसूस करते भीतर ही भीतर घुलते रहते थे। हराम हरेक को नहीं पचता। चोरी का माल मोरी में जाता है। साँस-साँस उन्हें भास होता। जब तक जतन लाल रहे, घर एक था, आँगन एक था। उनके चोला छोड़ते ही घर, जमीन-जायदाद बँट गए थे। बीच आँगन दीवार खड़ी हो गई थी, सिर सावनी। जतन लाल की तीये की बैठक के दिन, जब लोग बैठने के लिए आ रहे थे, शेरू-मेरु में घर-बार का बँटवारा हुआ था। बँटवारे के समय की किसी बात को लेकर उनमें अबोला व्याप्त था।"[9]

इस कहानी में रत्नकुमार सांभरिया ने समाज से लुप्त होती मानवीय चेतना का चित्रण किया है। शेरू में मानवीय चेतना पूरी तरह लुप्त हो चुकी थी। वह ताश खेल में इस प्रकार मग्न हो जाता है कि अपने बेटे की मृत शरीर को ढेले की तरह रखकर पुनः खेलने लगता है। उसके मन में अपने बच्चे और बीबी के प्रति कोई प्रेम भाव नहीं रह गया था। इसलिए बेटे के मरने पर भी उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। कहानी में इसका जिक्र है – "शेरू के समूचे चौक में औरतें जुड़ी बैठी थीं। उनकी आँखों में आँसू थे। बाहर तक पुरुष खड़े थे। शोक संतप्त। बदहवास कविता ने अपने मृत बच्चे को गोदी में उठाया। यह जैसे रणचंडी बन गई थी। वह सबके बीच बच्चे को लेकर भाग छूती थी। बाहर आकर उसने बच्चे को शेरू की गोद में डाल दिया था। उसकी आँखों के आँसू सुख हाय थे.....खरगोश की आँखों जैसी मृत बच्चे की निरीह आँखें शेरू को देख रही थीं, कहती हो- उठो बापू, मिट्टी दे आओ मुझे। शेरू ने बच्चे को ढेले की तरह नीचे रखकर हुकम की दुक्की चल दी थी।"[10]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'लाठी' में सांप्रदायिकता का भाव दिखाया गया है। आज सांप्रदायिकता के कारण मनुष्य के मन में कितनी डर भरी हुई है। उसका मार्मिक चित्रण किया गया है। सांप्रदायिकता से होने वाली समस्याओं को कहानीकार ने एक मुस्लिम दंपत्ति की कथा से स्पष्ट किया है। डर के मारे दोनों रात भर सो नहीं पाते। जरा सी हलचल से दोनों थर-थर काँप रहे थे। वह दोनों पड़ोसी को गलत समझ कर उसके प्रति बुरा सोच रहे थे। अंत में सच्चाई का पता चलते ही सब ठीक हो जाता है।

कहानी में सांप्रदायिकता के खौफ का वर्णन है। सांप्रदायिकता में लोग कितने हद तक जा

सकते हैं उसका अंदाजा उन दो दंपत्ति से लगाया जा सकता है। हरमन चचा हिन्दू और वह दंपत्ति मुस्लिम थे। दोनों पड़ोसी थे। दोनों दंपत्ति में सांप्रदायिकता का इतना खौफ भरा था जो एक गलतफहमी से बाहर आ जाती है। हरमन चचा द्वारा लाठी लाने से ही दोनों में डर बैठ जाता है। उन्हें लगता है कि वह लाठी उन दोनों को मारने के लिए लाया गया है। रात भर वह दोनों नहीं सोते। रात भर दोनों तरह-तरह की बातें सोचने लगते हैं। तरह-तरह के ख्याल उनके मन में आते हैं। वह बात करते है – "जुल्म की यह रात निकल जाए। हथियार से हाथ नहीं बचा सकते। कल एक लाठी तो खरीदकर लाऊंगा ही, एक बांस में फरसा भी ठुकवा लूँगा। हथियार की हथियार से ही हिफाज़त होती है।"[11] सांप्रदायिकता के कारण साथ में मिलजुलकर रहने वाले पड़ोशी के बीच भी बड़ा झगड़ा हो सकता है। वह भी एक दूसरे के दुश्मन बन सकते हैं। एक दूसरे को मार काट सकते हैं। जैसा कहानी में देखने को मिलता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'मांडी' जातिभेद पर आधारित कहानी है। दानीदास मावस की मांडी देने के लिए पूरे गाँव भर में गाय ढूंढता है। परन्तु उसे गाय कही नहीं मिलती। पूरे गाँव में एक ही गाय थी और वह सुबेसिंह का था। सुबेसिंह निम्न जाति का होने के कारण वह वहाँ नहीं जाता। पूरा दिन घुमने पर भी कोई गाय नहीं मिलती। अंत में उसी गाय को मांडी देने लगता है। क्योंकि वह गाय सुबेसिंह के घर पर नहीं था। दानीदास के मन में था कि यदि वह मांडी नहीं देगा तो उसके घर वाले भूखे रहेंगे। बच्चे भूखे रहेंगे। उसका मानना था कि चरने वाली गाय को मांडी दे सकते है। चरने वाली गाय का कोई जात नहीं होता। "अपनी समझ बढ़ाई, मेहतर के चौक-खूंटे बंधी गाय मेहतर थी। बहता पानी और चरता पशु निरपेक्ष होते हैं।"[12] मांडी एक रीति है। अमावस्या के दिन गाय को मांडी दी जाती है। गाय को खिलाने के बाद ही घर वाले भोजन ग्रहण कर सकते हैं।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ सामाजिक चेतना पर आधारित हैं। इनकी कहानियों में विद्रोह का स्वर हैं। इनकी कहानियों में पात्र शोषित होने के बावजूद अन्याय के खिलाफ लड़ता है। वह कमजोर बनकर शोषण नहीं सहता। वह आवाज उठाता है। अपनी लड़ाई खुद लड़ता है। वह स्वयं विद्रोह करता है। साथ ही दूसरों को भी प्रेरित एवं जागरूक करने की चेष्टा

करता है। इनकी कहानियों के पात्रों में साहस है। वे अपने हक के लिए शोषणों का विरोध करते हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानी सामाजिक अस्मिताओं की चर्चा करती हैं। उनकी कहानी सामाजिक संकटों से रूबरू कराती है। साथ ही उसके निवारण का मार्ग दर्शन करती है। उनकी कहानियाँ समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं पर चर्चा करती है। रत्नकुमार की कहानियाँ दमित एवं शोषित लोगों का सच्चा आईना दिखाती है। उनकी कहानियों में शोषक वर्ग के प्रति घृणा और आक्रोश है।

उनकी कहानियों में दिव्यांग लोगों को भी स्थान मिला है। वैसे कहानियों में दिव्यांगों को ज्यादातर असहाय, संवेदानाग्रस्त दिखाया जाता है। परंतु रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में पात्र दिव्यांग तो है, पर वे आत्मनिर्भर, साहसी हैं। उनके पास अपने लिए लड़ने का सामर्थ है। 'सवांखें' कहानी का विषय इसी पर केन्द्रित है। इस कहानी में 'वीमा' को उसके घर वाले जबरदस्ती जमन के घर से उसके अनुपस्थिति में ले जातें हैं। तब जमन सहायता की मांग कर कईयों के पास जाता है। पर उसकी मदद कोई नहीं करता। कहानी में ही देख सकते हैं। जब जमन अपनी पत्नी के बारे में बताने के लिए श्यामा के पास जाता है, तो श्यामा उसके बातों पर ध्यान नहीं देता। उन दोनों की बातें इस प्रकार हैं -

"सर, वीमा नहीं लौटी है कल से। मेरी मदद करो।

तुम्हारी नौकरी बनी रहेगी।

सर, में बहुत चिंता में हूँ। थाने चलो।

तुम्हारा सामान अन्दर रखवा दूंगा। श्यामा जी ने उसे इशारों में बुझा।

सर, मैं नौकरी छोड़ सकता हूँ। वीमा मेरी पत्नी है।

फालतू की बात है।

सर मैंने वीमा से कोर्ट मैरिज की है। कागज मेरे पास है।

छिछोरेपन की हरकत थी। एक घिनौना काम था।"[13]

यहाँ तक कि पुलिस भी उसकी मदद करने से मना कर देती है। जमन ने जबरदस्ती शादी की है कहकर समाचार पत्र में छपवा देते हैं। तभी जमन का दिव्यांग मित्र उसकी मदद करता

है। वह जमन को साहस से काम लेने को कहता है। अंत में देखते हैं कि सारे दिव्यांग धरने पर बैठ जाते हैं। रत्नकुमार ने दिव्यांगों को अपने लिए लड़ते और आवाज उठाते दिखाया है। जमन दिव्यांग के साथ-साथ निम्न जाति का होने के कारण वह शोषण का शिकार बनता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में समाज में व्याप्त विभिन्न रूपों का चित्रण मिलता है। जातिभेद, धर्म, अंधविश्वास आदि सामाजिक के अंतर्गत ही आते हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में इनकी प्रधानता है। सामाजिक संदर्भ रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में मूल रूप से विद्यमान है। किसी भी कहानीकार के कहानियों में सामाजिक का होना नितांत आवश्यक है। यह किसी भी कहानी का महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य अंग है।

रत्नकुमार सांभरिया ने 'खेत' कहानी में एक बूढ़ा का चित्रण किया है। यहाँ यह दिखाया है कि किस तरह एक अकेले बूढ़ा से उसकी जमीन हड़पने की कोशिश की जाती है। बूढ़ा जब अकेला होता है तब लोग उसे पूछने तक नहीं आते हैं। वह अकेला ही रहता है। एक दिन वह बीमार पड़ता है। तब लोग उसके पास बिना बुलाये ही आ जाते हैं। बूढ़ा की देखभाल के लिए नहीं बल्कि बूढ़ा की संपत्ति की लालच में। "हवा में रंगत आ गई। बीमार बूढ़ा के पास आने वालों का तांता लगा रहता; मरणासन्न किट को कीरियां घेर लेती हैं। जिनका कोसों खोज नहीं था, वे तन के लत्ते से बूढ़ा के करीब हो गए थे। खैरियत जानना जरिया रहा, साध बूढ़ा का खेत थी।"[14] बूढ़ा को इसका आभास हो जाता है और वह चोकन्ना हो जाता है। बूढ़ा की जमीन चालाकी से बैचने की कोशिश भी की जाती है। परन्तु बूढ़ा चालाकी से काम लेता है। अंत में उसकी जमीन बिकने से बच जाती है। समाज के लोग कितने हद तक गिर सकते हैं इसका यथार्थ चित्रण है। एक अकेला बूढ़ा को लोग किस तरह ठगने के लिए सोचते हैं। यहाँ मानवीय मूल्य के अभाव को दिखाया गया है। कहानी में बूढ़ा के जरिए वृद्ध जीवन का चित्रण किया गया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में समाज का चित्रण भली-भांति मुखरित हुआ है। उनकी कहानियों में सामाजिक कार्यकलापों का चित्रण मूल रूप में चित्रित होता है। उनकी कहानियाँ वर्तमान समाज को सच्चा आईना दिखाती है। साथ ही अपनी समस्याओं से जूझने सिखाती है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी समाज व्यवस्था पर सीधा चोट करती है। उन्होंने ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण अंकित किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में साधारण जीवन का विस्तार किया है। साधारण जन-जीवन की पूरी कहानी व्यक्त करती है इनकी कहानियाँ। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में सामाजिक व्यवस्था का चित्रण किया है। साथ ही जन जीवन को साधारण तरीके से अपना जीवन व्यतीत करता दिखाया है। उनका रहन-सहन, पहनावा, भाषा आदि साधारण रूप में चित्रित किया है। कभी दलित, कभी स्त्री, कभी गरीब आदि कारणों से पात्रों को जूझता दिखाया है। चूँकि उनकी अधिकतर कहानियों का विषय ग्रामीण जीवन हैं। इस कारण इनमें समाज का असल रूप का चित्रण मिलता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री का यथार्थ चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में स्त्री की समस्याओं का सजीव वर्णन मिलता है। साथ ही स्त्रियों की पीड़ा, विवशता आदि का चित्रण किया है। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ लाचार एवं बेवस नहीं हैं। वह अपने पर हो रहे शोषण के खिलाफ डटकर सामना करती है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'फुलवा' एक प्रसिद्ध कहानी है। फुलवा अपने जीवन में बहुत से समस्याओं का सामना करती है। फिर भी वह अपने बेटे को पढ़ाना नहीं छोड़ती। वह उसे पढ़ाने के लिए काफी मेहनत करती है। उसकी मेहनत के कारण बेटा राधामोहन को शहर में एस.पी. की नौकरी मिली। नौकरी मिलने के बाद फुलवा भी बेटे के साथ रहने चली जाती है। बेटे को नौकरी मिलने के बाद वह सुख से जी पाती है। इसका जिक्र कहानी में मिलता है। रामेश्वर फुलवा के घर आता है। वह फुलवा को सुख में जीवन जीता देख सोचने लगता है – "फुलवा चालाक निकली। इसने सौ पापड़ बेल लिए, लेकिन राधा मोहन के हाथ से किताब नहीं छुटने दी, वरना उसकी हथेली तले हमारा हल होता आज।"[15]

'चपड़ासन' कहानी एक विधवा स्त्री की कहानी है। वह चपड़ासन की काम करती है। उसका पति जब तहसीलदार था तब सब उसके पति के साथ-साथ उसे भी सम्मान की नजर से देखते थे। जबसे उसकी पति की मृत्यु हुई लोंगों का उसके साथ बरताव ही बदल गया। लोग उसके साथ अच्छा बरताव नहीं करते। धनपाल जो कभी मीता के पति के नीचे काम करता

था। उसके पति की हर बात मानता था। आज वह तहसीलदार बन गया है। मीता कम पढ़ी-लिखी होने के कारण पति की मृत्यु के बाद उसे चापड़ासी की नौकरी मिलती है। धनपाल जो कभी मीता का सम्मान करता था आज वह बदल गया है। वह मीता के साथ बुरा बरताव करता है और उस पर बुरी नजर रखता है। "मैंने साड़ी पहनी और पंखे के नीचे बाल सुखा लिए थे। चाय-नाश्ता लेकर मैं ड्राइंग रूम में आई। नमस्कार करते हुए चाय, नाश्ता की ट्रे टेबल पर रख मैं शर्म और संकोच से दीवार के साथ खड़ी हो गई थी, लता सी। पंखे कि हवा में साड़ी का पल्लू सिर से कंधे पर आ गिरा था और खुले केश मेरे चेहरे पर बिखर गए थे। तहसीलदार चाय-नाश्ता छोड़ मुझे ही निहार रहे थे, अपलक। मानो उनके लिए चाय-नाश्ता से ज्यादा महत्वपूर्ण मैं हूँ। उनकी बदली रंगत देखकर मैंने अचकचाहट और अचरज से होठों तले उंगली दबा ली थी। कल उनके शूकर से झुर्र और बगुले से बग-बग सफेद बाल थे। मुंछे खरगोश की पूंछ सी धोली थीं। आज खिजाब पुते बाल और मूंछे नित हुए रोगन से आभ रहे थे।"[16]

धनपाल के इरादे नेक नहीं थे। पहले जब मीता का पति था तब वह जब आता था तब गेट खोलने तक अन्दर नहीं आता था। उसके पति के मृत्यु के बाद वह किसी को बुलाये बिना सीधा घर के अन्दर चला आता है। वह किसी की इजाजत लेने की जरुरत नहीं समझता है। कहानीकार ने यहाँ मनुष्य के स्त्रियों के प्रति बदलते दृष्टिकोण का चित्रण किया है। कहानी में धानपाल मीता को अपने घर रोटी बनाने तक का प्रस्ताव रखता है। कहानीकार कहना चाहते हैं कि अकेली स्त्री का हर कोई फायदा उठाने की कोशिश करता है। अकेली स्त्री का नौकरी करना भी मुश्किल हो गया है। कार्यालयों में भी वह सुरक्षित नहीं है।

मीता पति की मृत्यु के बाद एकदम अकेली पड़ गई थी। धनपाल के करतूतों से दुखी होकर वह सोचने लगती है – "जब औरत सम्पन्न होती है, सुन्दरता रानी कहाती है। विपन्नता के दिनों में औरत की वही सुन्दरता कयामत का काला साया बन जाती है। मेरी सुन्दर काया ही आज मेरे उत्पीड़न का हेतु थी।"[17] मीता बहुत ही परेशान हो जाती है। वह सोचती है कि पहले उसे पति के साथ देख धनपाल उसे देवी कहता था। आज वही उसे पाने की चाह रखता है। पति

के न होने पर समाज में स्त्री की जो स्थिति होती है उसका यथार्थ चित्रण यहाँ है। एक अकेली स्त्री के प्रति समाज का नजरिया ही बदल जाता है। स्त्री नौकरी करना भी चाहे तो धनपाल जैसे लोग उसे ठीक से करने नहीं देते। धनपाल जैसे लोगों के कारण ही स्त्रियों को डर-डर के जीना पड़ता है। धनपाल पहले मीता को आप कहता था। तहसीलदार बनने के बाद वह उसे 'तुम' कहकर बुलाता है। यहाँ कहानीकार ने पुरुषों का स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण का चित्रण किया है। समाज स्त्रियों को क्या समझते हैं यहाँ देख सकते हैं।

'बात' कहानी एक स्त्री की समस्या पर आधारित कहानी है। कहानी में एक अकेली स्त्री की समस्याओं का चित्रण अंकित किया गया है। सुरती अपने बेटे के साथ रहती थी। वह अपने बेटे को पढ़ा लिखा कर काबिल बनाना चाहती थी। उसके मृत पति की भी यही इच्छा थी। सुरती अपनी पति की इच्छा को पूर्ण करना चाहती थी। वह अपने बेटे को स्कूल भेजती है। वह गरीब थी जिस कारण समय पर स्कूल की फीज नहीं भर पाती है। स्कूल में फीज न भर पाने के कारण शिक्षक बेटे को सजा देता है। सुरती बेटे को सजा देते हुए देख लेती है। उसे बहुत बुरा लगता है। वह पैसे देने का वादा कर बेटे को लेकर चली आती है। गाँव में धींग नाम का एक अमीर व्यक्ति था। उसकी नजर सुरती पर थी। सुरती उसकी इरादों को जानती थी। पर उसके पास पैसे के लिए धींग के पास जाने के अलावा और कोई रास्ता न था। वह गाँव में सबके घर गई। किसी ने उसकी मदद नहीं की। अंत में मजबूर होकर उसे धींग के घर जाना पड़ा। कहानी में स्पष्ट है - "सुरती उसके सपनों की मलिका। साँस। सिसकी सुरती का आदमी मरते ही धींग का मन उस पर आने लगा था। वह उस पर अपना हक जताने लगा था। यह बात दीगर थी, सुरती उसकी छाया थूकती थी। दुर्लभ चीज एकाएक लभ्य हो जाए, अविश्वास से थरथरी छुट जाती है। सुरती को सामने खड़ी देख, अकूत आनंद से धींग की साँसें उखड़ने लगी थीं।"[18]

सुरती अपने मृत पति का कहा मानकर अपने बेटे के लिए पैसे न चाहते हुए भी धींग से मांग लाती है। पर हर दिन चिंतित रहने लगती है। अगर पैसों का इन्तजाम न हुआ तो क्या होगा। इसलिए वह दिन में कर्जा के लिए काम करती थी। रात में ऊन की फैक्ट्री में काम करने लगी थी। वह चाहती थी कि बस किसी तरह पैसे जुट जाय। वह पैसे धींग को दे देगी और

अपना इज्जत बचा लेगी। अंत में उसे पैसे मिलते हैं और धींग को देने के लिए रख देती है। दिन में जब वह काम से आकर देखती है तो पैसे वहाँ से गायब थे। वह ढूंढने लगती है तब उसे जूते के निशान दिखाई देते हैं। उसे पता चल जाता है कि यह काम धींग का ही है। पैसे अगर वह नहीं दे पाई तो वह धींग के हवस का शिकार बनेगी। वह जैसे चाहेगा उसे रख सकता है। इसलिए वह पैसे ही गायब कर देता है। जैसे ही सुरती को पता चलता है वह धींग के घर चली जाती है।

कहानी में एक अकेली स्त्री की समाज में होने वाली दशा का चित्रण है। उसे कितने ही समस्याओं का सामना करना पड़ता है। धींग जैसे लोगों से अपनी इज्जत बचाने के लिए डरे-डरे रहना पड़ता है। अपने भाई तक उससे भागने एवं पीछा छुड़वाने लगते हैं। ताकि उसे कुछ देना न पड़े। इतनी मुसिबतों के बावजूद भी सुरती अपनी मृत पति का कहा सोचती है। वह बेटे की फीज भरने के लिए पैसे जुटा लाती है और धींग से सौदा कर लेती है। वह अपनी बात पर कायम रहती है। सुरती का पैसा जुड़ पाना धींग को सहन नहीं होता। वह कैसे भी करके सुरती को अपना बनाना चाहता था। इसके लिए वह किसी भी हद तक जा सकता था। इसलिए वह सुरती द्वारा रखे पैसे को चुपके से ले जाता है। जिससे सुरती मजबूर होकर उसका कहा माने। कहानीकार ने दिखाया है कि समाज में धींग जैसे लोग होते हैं जो अपना करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। ऐसे लोग औरतों का फाईदा उठाना चाहते हैं। उन्हें यह दिखाई नहीं देता कि वह अपना गुजारा चलाने के लिए कितना मेहनत करती है। धींग जैसे लोग बस उनकी मज़बूरी का फायदा उठाना चाहता है।

रत्नकुमार सांभरिया की 'बकरी के दो बच्चे' कहानी में भ्रष्ट पुलिसों का चित्रण है। यहाँ पुलिस द्वारा रिश्वत लेकर निर्दोश लोगों पर अत्याचार करते दिखाया है। दलपत जमींदार के बेटे के खिलाफ एफ.आई.आर लिखवाने जाता है। पर पुलिस लिखने से मना कर देती है। यहाँ पैसों के लिए बिकने वाले पुलिस एवं गरीब होकर भी हार न मानने वाले दलपत जैसे लोगों का चित्रण किया है। इस तरह के पुलिस और जमींदार का होना समाज के लिए शर्मनाक है। समाज में गरीब लोगों का कोई स्थान नहीं है। उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है। उसका सुनने वाला कोई नहीं होता। अमीर व्यक्ति द्वारा पैसे देकर मामले को दबा दिया जाता

है। जैसा कि इस कहानी में देख सकते हैं। पुलिस दलपत की एफ.आई.आर. तक लिखने से मना कर देती है।

कहानी में दिखाया है कि समाज में गरीब लोगों का कोई स्थान नहीं है। वैसे गरीब लोग मुँह नहीं खोलते। जब कुछ बोलना भी चाहे तो उसे समाज बोलने नहीं देता। उदाहरण कहानी में ही देख सकते हैं। जब दलपत मरे हुए बकरी के बच्चों के बारे में जमींदार को कहता है। तब जमींदार अपने बेटे को सजा देने के बजाये दलपत को ही सुना देता है। जब वह पुलिस के पास जाता है तो पुलिस भी उसे ही डांट कर भगा देती है। जिससे दलपत अन्दर से कांपने लगता है। कहानी में इसका जिक्र है – "बकरी के बच्चों की मोत का दुःख। दानसिंह की बात का घाव। सर्दी की मार। थानेदार का रुतबा। दलपत पत्ते की तरह हिल रहा था।"[19] इससे पता चलता है कि दलपत की क्या दशा हो रही थी। लेकिन उसका सुनने वाला कोई नहीं था। उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था। वह बस इधर से उधर भटक रहा था।

'बूढ़ी' कहानी में रत्नकुमार सांभरिया ने एक बूढ़ी की मानसिकता का चित्रण किया है। यहाँ एक माँ की अपने ब्याहता बेटी की घर आ रही खुशी का चित्रण है। बेटी की आने की खुशी में बूढ़ी हरबराती रहती है। उसके पास पैसे नहीं थे। वह चिंता में पड़ जाती है कि बेटी को क्या खिलाएगी। वह जब घर आएगी तो क्या सोचेगी। कहानी में इसका स्पष्ट वर्णन है- "मास्टर जी कि देहली पर बैठकर बूढ़ी एक अन्य चिंता में डूब गई थी। वह भूल गई थी, उसके नीचे धरती तवे सी ताप रही है। देह भून देने वाली गर्मी है। धूप क्या है, आग बरस रही है। उसके मन में तो बार-बार एक ही बात उभर रही थी, उसको पेंशन चार दिन बाद मिलेगी। घर में चार पैसे नहीं है। सरिता बेटी जरूर उसकी है, लेकिन ब्याही बड़े घर में है। रहती है बनिया-बामनों से भी बेहतर। पहनती है एक से एक कीमती कपड़े। सोना में पीली हो रही है। नहाती भी ऐसे चिकने साबुन से है। मानो काँच कि परत हो। माना उसके पास अपार धन-दौलत है। लेकिन उसी से मांग कर उसी को तो नहीं खिलाया जा सकता है न।"[20]

बूढ़ी को यह चिंता भी सताने लगती है कि बस स्टैंड से बेटी घर कैसे आएगी। बूढ़ी उसे लाने के लिए एक तांगे का इंतजाम करती है। वह तांगे में बैठकर बस स्टैंड पहुँचती है। दिन-भर खड़े रहने के बाद भी बेटी के न आने पर बूढ़ी दुखी होती है। घर पहुँचने के बाद देखती है कि बेटी और उसके बच्चे पहुँच चुके थे। "बूढ़ी को उतारने के लिए तांगा जब बूढ़ी के घर की ओर मुड़ा तो नौकरानी गोदी में बच्चा लिए खड़ी थी और बूढ़ी की बेटी सरिता अपनी कार से नीचे उतर रही थी।"[21] कहानी में एक माँ की ममता का चित्रण है। साथ ही एक ब्याहता बेटी से मिलने की उत्सुकता का भी वर्णन है। कहानीकार ने एक अकेली बेबस बूढ़ी का चित्रण किया है।

कहानी में बाल विवाह जैसे गैर कानूनी अपराध का भी चित्रण है। बूढ़ी की शादी कम उम्र में ही हो गई थी। जिस उम्र में खेलना-कूदना था उसी उम्र में उसकी शादी हुई। शादी हुई पर बूढ़ी और उसके पति को कुछ पता ही नहीं था। शादी के दिन भी दोनों खेल ही रहे थे। "साठ साल पहले की बात याद कर बूढ़ी के मनसपटल पर अपने अबोध पति का भोला सलोना चेहरा उभर आया था। उनकी शादी के बाद की रात थी। सुहागरात की रस्मोरिवाज थी। औरतों ने पति-पत्नी दोनों को छप्पर में बंद कर दिया था। चुन्नी दस साल की थी। उसका पति नानक ग्यारह का था। दोनों ने इसी थाली में देशी घी में डूबा चूरमा होड़-होड़ छक कर खाया था और फिर मुंह पर हाथ फेरकर देर रात तक पकड़ा-पकड़ी का खेल खेलते रहे थे। जब थककर चूर-चूर हो गए, ब्याह में मिली जूट की जेवर की खाट पर पति-पत्नी दोनों करवट बदलकर सो गए थे, जैसे भाई-बहन सोते हैं।"[22] कहानी में बच्चों के बालमन का चित्रण हुआ है। यहाँ दिखाया है कि बच्चों का बाल विवाह करते हैं। साथ ही जबरदस्ती उन्हें बंधनों में बांधकर रीति रिवाजों से अवगत कराते हैं। जिसे न चाहते हुए भी उन बच्चों को मानसिक रूप से शोषण करना होता है।

बूढ़ी कहानी में जाति-भेद का भी चित्रण मिलता है। बूढ़ी निम्न जाति से होने के कारण गाँव में उसे कोई अपने घर बुलाता तक नहीं था। उसकी बेटी की अमीर घराने में शादी होने के बाद से बेटी के साथ-साथ बूढ़ी को भी सम्मान मिलने लगता है। जिसे देख बूढ़ी को अच्छा लगने लगता है। कहानीकार ने दिखाया है कि गरीब व्यक्ति को समाज में कोई नहीं पूछता।

जब वही गरीब अमीर बनता है, तो हर कोई उससे रिश्ता जोड़ना चाहता है। उसका सम्मान करने लगता है। यहाँ मनुष्य की बदलती मानसिकता का चित्रण हुआ है। मनुष्य परिस्थिति के अनुसार बदल जाता है। यही समाज की नियति है।

'कील' कहानी वृद्ध जीवन पर आधारित है। कहानी में एक अकेली माँ उसके बेटे और बहू द्वारा ठगी जाती है। बेटा शादी करके शहर में बस जाता है। उसे जब पैसों की जरूरत होती है तो माँ को बीमारी का बहाना देकर बुलाते है। वह माँ को गाँव का घर भी बेच आने को कहता है। साथ ही सारा सामान ले आने को कहता है। यहाँ समाप्त होती मानवीय मूल्यबोध का चित्रण है। बेटा माँ से कहता है – "माँ अब तुम्हारी उम्र अकेले रहने की नहीं है। गाँव सोच रहा होगा, बेटा बड़ा बाबू है। उसकी माँ गाँव में है। निराश्रित, बेसहारा। मुझे ब्लड प्रेशर की शिकायत हो गई। तुम्हारी याद आती है माँ, अपना सब सामान भी ले आना। अब वहाँ रहना नहीं है। किसी की नीयत बिगड़े, अपने मकान का भी सौदा-पट्टी कर आना। मैं परसों पाँच बजे वाली गाड़ी पर तुम्हारी राह देखूंगा।"[23] बेटे को माँ की सारी संपत्ति चाहिए। पैसे चाहिए। लेकिन उसके पास माँ को लाने जाने तक का समय नहीं। व्यस्तता के कारण लोग आजकल अपने ही परिवार को समय नहीं दे पाते हैं। यह एक बहुत बड़ी बिडम्बना है।

अंत में, माँ को बेटे के षडयंत्र का पता चल जाता है। तब तक बहुत देर हो चुकी थी। माँ के पास कुछ नहीं बचा था। माँ के बीमार हालत में ही सब गहने भी ले लेते हैं। माँ सोचने लगती है – "इतना बड़ा धोखा। इतनी बड़ी ठगी। पेट जाया ने अहाते में बुलाकर माँ का शिकार किया।"[24] माँ बहू को बुरा समझ रही थी। जब बेटे को ही लूटता पाया तो वह दिल से टूट जाती है। वह किसी को बिना बताए ही घर से चली जाती है। बेटा और बहू को माँ को ढूंढने तक की फुर्सत नहीं थी। दस-बारह दिन बाद बेटा गाँव फोन करता है। तब उसे पता चलता है कि माँ गाँव गई ही नहीं। वह पुलिस में रिपोर्ट लिखवाने जाता है तब देखता है कि चौराहे पर उसकी माँ बैठकर काम में लगी है – "चौराहे पर लालबत्ती थी। गाड़ी रुकी। रामशरण और

धनदेवी की नजरें एक साथ दाहिनी और की पगडंडी पर गई। चैत की भभकती धूप थी। पगडंडी पर मोचिन बैठी थी। सोनवती उसकी बगल में बैठी सामने खड़े ग्राहक के जूते में कील ठोक रही थी।"[25] कहानीकार ने यहाँ आधुनिकता का प्रभाव दिखाया है। लोग इतने व्यस्त हो गए हैं कि दूसरे के लिए समय ही नहीं होता। अपने माँ तक की खबर लेने का समय नहीं। अपने काम के लिए बुलाते है। काम खतम होने के बाद कोई माँ को पूछता तक नहीं। माँ अकेली और बेसहारा हो जाती है और काम करने लगती है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सामाजिक पक्ष का यथार्थ चित्रण हुआ है। कहानीकार ने समाज के यथार्थ का सजीव रूप का वर्णन किया है। रत्नकुमार की कहानियों में समाज में व्याप्त शोषण आदि का आधिक्य है। इनकी कहानियाँ ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित होने के कारण अपना विराट रूप पैदा करती हैं।

(अ) स्त्री पक्ष :

स्त्री और पुरुष दोनों समाज के दो अंग हैं। समाज में दोनों का होना अनिवार्य है। दोनों से ही समाज चलता है। इसके बावजूद पुरुष को अधिक महत्त्व दिया जाता है। उसे अधिक बलवान कहा जाता है। पुरुष द्वारा स्त्री को शोषित होना पड़ता है। स्त्रियों पर पहले से ही दोहरा शोषण होता आया है। एक, स्त्री के रूप में। दूसरा, दलित स्त्री के रूप में। पहले स्त्रियों को इतनी आजादी न थी जितनी आज है। स्त्रियों को घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। उनका कार्य सिर्फ घर का काम करना और बच्चे पैदा करना था। धीरे-धीरे स्त्रियाँ जागरुक होने लगी। वह अपने पर हो रहे शोषण के खिलाफ आवाज उठाने लगी। स्त्रियाँ घर संभालने के साथ-साथ अब बाहर जाकर नौकरी भी करने लगी। इसी के फलस्वरूप स्त्री विमर्श की उत्पत्ति हुई।

साहित्य में स्त्री पर खूब लिखा गया है। महिला लेखिकाओं ने स्वयं लिखना आरम्भ किया। लिखने का मोका मिलते ही लेखिकाओं ने सदियों से दबी आवाज को बुलंद किया। मन्नू भंडारी, उषा प्रियंदा, ममता कालिया, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा आदि प्रमुख हैं।

समाज में स्त्री और पुरुष दोनों को अलग-अलग देखा जाता है। यह सब समाज के लोगों का

ही किया धरा है। यह समाज है "पितृसत्तात्मक समाज"[26]। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के फैसलों का कोई महत्त्व नहीं है। स्त्रियों की पहचान पिता, पति आदि के नाम से होती है। उनका कोई अपना अस्तित्व नहीं। स्त्रियों को बचपन से ही समाज में रहने के तोर-तरीके सिखाये जाते हैं। अगर वही लड़कों को भी सीखाया जाता तो शायद स्त्रियाँ शोषित नहीं होती। 'पितृसत्तात्मक समाज' में पुरुष नहीं बल्कि पुरुषवादी मानसिकता पर चोट किया गया है।

स्त्रियों की आज सबसे बड़ी समस्या है दहेज प्रथा। शादी के समय ही दुल्हे के घर वाले दहेज की मांग करते हैं। अपनी मांगेनुसार दहेज के बाद भी उन्हें और चाहिए होती है। जिसकी पूर्ति न कर पाने के कारण स्त्री पर शोषण किया जाता है। स्त्री शोषित होते हुए भी कुछ नहीं करती। वह चुप-चाप सहती रहती है। उसे घर से ही सीख मिलती है कि ससुराल ही उसका घर है। जीवन भर उसे वही रहना है। यही सोच शोषण को बढ़ावा देती है। स्त्री विमर्श पुरुष के खिलाफ नहीं बल्कि पुरुषवादी चिन्ताधारा के खिलाफ आवाज उठाती है। पुरुषवादी चिन्ताधारा ने सदियों से स्त्री को उनके अधिकार से वंचित रखा है। घर में अगर सिर्फ लड़कियाँ है तो यह समाज उसकी बात बनाती है। समाज विधवा विवाह का विरोध करती है। पत्नी की मृत्यु के बाद पुरुष को शादी की इजाजत मिलती है। देखा जाया तो यह एक तरह का असमानता ही है। समाज के नियम दोनों पर समान रूप से लाघु होने चाहिए। पितृसत्तात्मक समाज में ऐसा नहीं होता। समाज के नियम कानून ज्यादातर स्त्रियों पर ही थोपे जाते हैं। पुरुषवादी मानसिकता पुरुषों पर ही नहीं बल्कि स्त्रियों पर भी हावी हो चुकी है।

स्त्रियों को आज स्वतंत्र रूप में दिखाया जाता है। नौकरी करना, विज्ञापनों में भागीदारी बनना आदि। यहाँ भी देखें तो कहीं न कहीं उनका शोषण ही हो रहा है। विज्ञापन में स्त्रियों को सुन्दर बनाकर दिखाया जाता है। जिससे लोग उस विज्ञापन को देखे और कम्पनियों का मुनाफा हो। देखा जाय तो सामान बैचने के लिए लड़कियों का इस्तमाल हो रहा है- "मृदुला गर्ग कहती है कि बाजारवादी संस्कृति देह के प्रदर्शन को विज्ञापन का माध्यम बनाती है, देह से मुक्त नहीं करती, उसे खरीदती है।"[27]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री पक्ष का यथार्थ चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों

में स्त्रियों को विभिन्न रूपों में दिखाया गया है। कभी माँ, कभी बेटी, तो कभी पत्नी के रूप में चित्रित किया है। रत्नकुमार की कहानियों में स्त्री की समस्याओं का सजीव वर्णन मिलता है। उनकी कहानियाँ एक स्त्री की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्र बयान करती है। स्त्री हर जगह बिना किसी कारण के सजा पाती है, शोषित होती है। यह पितृसत्तात्मक समाज उसका शोषण करती है। उसे नियंत्रण में रखने का प्रयास करती है। यह सारी चीजें रत्नकुमार की कहानियों में व्याप्त है। उन्होंने स्त्रियों की पीड़ा, विवशता आदि का चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में चित्रित स्त्रियाँ परनिर्भर नहीं बल्कि आत्मनिर्भर है। वह अपने शोषण के खिलाफ खुद आवाज उठाती है। साथ ही निडर होकर विद्रोह करती है। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ लाचार एवं बेवस नहीं है। वह अपने पर हुए शोषण के खिलाफ डटकर सामना करती है। वह अपने लिए खुद लड़ती है। वह शोषण को सहन करने वालों में से भी नहीं है। स्त्रियाँ बस धीरज एवं साहस से काम लेती है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने की चेष्टा की है। उनकी 'बेस', 'आखेट', 'इत्तफाक', 'फुलवा', 'राइट टाइम', 'सवांखें' आदि कहानियों में इसकी झलक मिलती है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'बेस' में स्त्री समस्या को दिखाया गया है। बेस को अत्यधिक महत्त्वा दिया गया है क्योंकि इसे राजपूत महिलाएँ ही पहनती हैं। आदिवासी स्त्रियों को इसे पहनने की अनुमति नहीं है। कहानी में दिखाया गया है कि आदिवासी स्त्रियों का शोषण आदिवासी पुरुष द्वारा ही किया जाता है। रत्नकुमार ने 'बेस' में आदिवासी स्त्रियों पर हो रहे शोषण का चित्रण किया है। यहाँ अगनी नाम की एक नौकरी करने वाली लड़की का वर्णन है, जो शोषण का शिकार होते-होते बचती है। उसका बचना उस बेस के कारण संभव हो पाता है। वह बेस अपनी मंगनी पर पहनने के लिए लाई थी। दरअसल बेस एक प्रकार का लिवास है। इसे केवल राजपूत महिलाएँ ही पहना करती थी। बस एक कपड़े के लिए अगनी शोषित होने से बाच जाती है। कहानी में देख सकते हैं - "यह आदिवासी नहीं। किसी राजपूत की बिनणी है। बेस देख। लहँगा काचली, कुरती, लुगड़ी, चुडा। तू खुद तो मरेगा ही, मुझे भी मरवाएगा।"[28]

लोगों को उस कपड़े से डर है। किसी औरत का शोषण करने में न ही डर है न लज्जा। उन

लोगों को डर है केवल उच्च वर्ग से। उस डरी हुई 'अगनी' से किसी को हमदर्दी नहीं है। 'अगनी' जैसे लोगों को बेस पहनने की अनुमति नहीं थी। अगनी इस व्यवस्था का विरोध करती है। वह अपने लिए भी बेस सिलवाती है। यहाँ अगनी के माध्यम से अपने अधिकार के लिए आवाज उठाती एक विद्रोही स्त्री का चित्रण किया है। वह अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिए समाज से भी लड़ जाने की हिम्मत रखती है। आदिवासी महिलाओं को बेस पहनने का अधिकार नहीं था। 'अगनी' पहली बार इस व्यवस्था के विरोध आवाज उठाती है। वह अपनी इसी विद्रोहात्मक आवाज के कारण बलात्कार होने से बच जाती है।

बेस कहानी में राजपूत महिलाओं के जीवन पर भी प्रकाश डाला गाया है। वह राजपूत थी पर घर के चारदीवारी के भीतर ही कैद थी। गैर मर्दों के सामने घूँघट नहीं उठाती थी। खुलकर बात तक नहीं कर सकती थी। आदिवासी औरतें शहर में नौकरी करती थी। राजपूत औरतों की सीमा घर की चारदीवारी ही थी। उन्हें कुछ भी करने की आजादी नहीं थी। स्त्रियाँ चाहे किसी भी वर्ग से हो उसे शोषित होना ही पड़ता है। रत्नकुमार ने 'बेस' कहानी में स्त्रियों के जीवन यथार्थ का सटीक वर्णन किया है।

'बिल्लो का ब्याह' कहानी बाल विवाह पर आधारित है। साथ ही एक पुरुष की मानसिकता की कहानी है। जिसकी पत्नी का देहांत हो गया और उसकी दूसरी शादी हुई है। कहानी में पपेंद्र नाम का पात्र है। उसकी पत्नी शारदा का देहांत हो जाता है। शारदा के घर वाले उसकी छोटी बहन से पपेंद्र की शादी कर देते हैं। बिल्लो पपेंद्र की बेटी सपना से चार दिन की छोटी थी। पपेंद्र बिल्लो से शादी करना नहीं चाहता था क्योंकि वह नाबालिक थी। बिल्लो के माता-पिता जबरदस्ती शादी करवा देते हैं। बिल्लो की माँ कहती है – "बेटा तुम्हारा उम्र कितनी-सी है। मैं नहीं चाहती कोई गैर सपना की माँ आए और उसे दुःख दे। इतनी बड़ी कोठी और धन-दौलत की मालकिन पराई हो। अगर एक लड़का भी.....।"[29]

बिल्लो के घर वालों की बातों में लालच थी । पपेंद्र ने कई बार मना किया मगर वह नहीं माने। अंत में उसे ब्याह के लिए हाँ करना पड़ा। पहले तो उसे अच्छा नहीं लग रहा था। जैसे-जैसे शादी नजदीक आती गई उसका मन बदलने लगा। पपेंद्र शादी से खुश था। अंत में वह भी

तनावग्रस्त होता है। उसे पछतावा होने लगती है।

इस कहानी में दिखाया गया है कि पुरुष दूसरी शादी कर सकता है। लेकिन एक विधवा दूसरी शादी नहीं कर सकती। कहानी में इसका भी जिक्र मिलता है। कहानी में बिल्लो के माध्यम से एक स्त्री की विवशता का चित्रण किया गया है। उसकी मर्जी न होते हुए भी उसे अपने जीजाजी से शादी करनी पड़ी। बचपन में जिसे पापा कहती थी अब वह पति के रूप में था। पुरुष को बेटी समान लड़की से शादी करने का योग्य समझा जाता है। लड़की को छोटी उम्र में ही कहते हैं उम्र निकला जा रहा है। यह समाज का लड़कियों के प्रति दृष्टिकोण है। रत्नकुमार सांभरिया ने इसे यहाँ प्रस्तुत किया है।

'आखेट' रत्नकुमार सांभरिया की स्त्री जीवन पर आधारित कहानी है। इस कहानी में जमींदार की क्रूरता एवं विलासी भावना का चित्रण किया है। जमींदार खेत में रेवती को अपने हवास का शिकार बनाना चाहता है। रेवती उसे अपनी खुरपी से नाक में वार कर भाग जाती है। रेवती से पहले इस तरह का साहस किसी ने नहीं किया था। इसलिए जमींदार गाँव की स्त्रियों को अपनी हवस का शिकार बनाता रहा।

कहानीकार रेवती की तुलना द्रोपदी से और जमींदार की दुर्योधन से करता है। कहानीकार कहते हैं कि महाभारत में द्रोपदी की रक्षा कृष्ण ने की थी। अब द्रोपदी रूपी रेवती की रक्षा भला कोन करेगा- "वासना से वशीभूत नानक सिंह की एक नजर रेवती पर थी, दूसरी दुरी बनाती बुढ़िया पर। बुढ़िया दो तिन खेत चलकर ढलान में चली गई तो नानक सिंह पशुता पर उतर आया था। वह दो कदम आगे बढ़ा। उसने रेवती का हाथ पकड़ लिया था। रेवती चीखी। चिल्लाई। छुड़ाने के लिए छटपटाई। नानक सिंह उसे अपनी क्रूर बाँहों में भींचता चला गया था। निरीह और असहाय रेवती, जैसे छिपकली के मुँह में फँसी तितली। नानक सिंह के आगोश में छटपटाती रेवती को देखकर पेड पर बैठी चिड़िया जोर-जोर से चीं-चीं करने लगी थी। साँप को देखकर भी वे एसी नहीं चहचहाती होंगी। द्रोपदी सबल थी। रक्षक श्री कृष्ण थे। गरीब रेवती का यहाँ कौन, दुर्योधन से उसकी आबरू बचाए। रेवती लजा गई। रेवती ने आव देखा न ताव, जिस खुरपी से वह घास छील रही थी, उसी को नानक सिंह के नाक में भोंक दिया।"[30]

कहानी में साठ-पैंसठ वर्ष का लाला सुख प्रसाद के बारे में बताया गया है। उसकी गन्दी नजर रेवती पर थी। रेवती के भाव न देने से वह गुस्सा हो जाता है। गुस्से में वह पिस्तौल लेकर आता है। नशे में होने के कारण वह गिर जाता है। उसके हाथ से पिस्तौल जमीन पर गिर जाती है। रेवती उसे खिलौना समझकर बच्चे के लिए रख लेती है।

इस कहानी के जरिए रत्नकुमार सांभरिया यह बताना चाहते हैं कि स्त्री चाहे गाँव में हो या शहर में वह कहीं भी सुरक्षित नहीं है। उसे पुरुष द्वारा शोषित होना ही पड़ता है। रेवती के माध्यम से एक साहसी स्त्री का चित्रण किया गया है। साहस के कारण ही वह नानक सिंह जैसे दरिन्दे से बच पाई। यहाँ रत्नकुमार सांभरिया ने स्त्री जीवन का यथार्थ चित्रण अंकित किया है।

'अनुष्ठान' कहानी में रत्नकुमार सांभरिया ने एक पाखंडी तांत्रिक का चित्रण किया है। वह अनुष्ठान के नाम पर स्त्रियों को अपने हवस का शिकार बनाता है। स्त्रियों को बच्चे की लालच देकर अपने पास बुलाता है। गाँव की भोली-भाली स्त्रियाँ उसके जाल में फस जाती है। इस कहानी का मूल पात्र सरस्वती भी इसी तांत्रिक की शिकार होती है। सरस्वती बहुत दिनों बाद जब तांत्रिक के पास आती है तो तांत्रिक के मन में काम की भावना जागृत होती है। कहानी में दिया है - "सवा महीने बाद आई सरस्वती की उपस्थिति पाकर तांत्रिक का पौरुष जाग उठा था। उत्तेजना उमंगित-तरंगित होने लगी थी। आँखों में कामुकता दिपदिपा रही थी और उसका मन इस गाँव सुंदरी का सामीप्य पाने के लिए तड़प उठा था।"[31]

दरअसल गाँव के अन्य स्त्रियों के साथ भी तांत्रिक दुष्टकर्म कर चूका था। वह औरतों को उनके पति में कमी है कहकर अपने पास बुलाता था। सरस्वती बच्चे के लिए तरस रही थी। इसलिए वह तांत्रिक के पास जाती है। तांत्रिक मरदों को नामर्द बताकर औरतों को ठगता है। यह बात सरस्वती को गाँव का एक आदमी (वीर सिंह) बताता है- "वह तो बदनाम सै, पाखंडी सै, दुसट सै । पहल्याँ तो औरतों का मरदां ने नामरद बता के अपणी बनावै सै।"[32]

कहानी में तंत्र-मंत्र के नाम पर हो रहे यौन शोषण का चित्रण है। स्त्रियों को अनुष्ठान के नाम पर तांत्रिक द्वारा ठगता दिखाया गया है। कहानी के द्वारा रत्नकुमार सांभरिया ने स्त्रियों को सजग किया है। साथ ही कहानी में स्त्री को बच्चे की चाह में अँधा होते दिखाया है। इसलिए

तांत्रिक के कहने पर सरस्वती दूसरे के बच्चे की बलि देने को तैयार हो जाती है। वह यह भी भूल जाती है कि जिस बच्चे को बलि दिया जाएगा वह किसी और का बच्चा है। उसे बच्चे की जितनी जरूरत है किसी और को भी बच्चे की उतनी ही जरूरत है। बच्चे के लिए उसका दिल जितना तरसता है। किसी और माँ का दिल भी उतना ही तरसेगा।

कहानी में स्त्री शोषण का गहरा रूप प्रस्तुत किया गया है। पितृसत्तामक समाज स्त्रियों को केवल बच्चे जन्म देने का मशीन मानता है। जिस कारण से कहानी में एक स्त्री को बच्चे जन्म न दे पाने पर घर से निकाल दिया जाता है। सरस्वती का बच्चा न होने के कारण वह पहले की एक बात सोचती है। जिसमें एक औरत का बच्चा न होने के कारण उसे घर से निकालकर पति दूसरी शादी करता है- "वर्षों पहले की एक बात सरस्वती के स्मृति पटल पर स्क्रीन की तरह उभरने लगी थी। उसके होंठ काँपे। आँखों में नमी उतर आई थी। वह सुबक-सुबक रो पड़ी थी। उसके पीहर में एक औरत को बच्चे नहीं होते थे। परिवार वालों ने उसे डाक्टरों को दिखाया। सयाना, भोपाओं को बताया। उसकी कोख हरी नहीं हुई। आखिर सास, देवरानी, जेठानी और स्वयं पति ने चुटिया पकड़ कर उसे घर से खदेड़ दिया था और दूसरी ले आए थे।"[33] कहानी में एक घरेलू स्त्री की स्थिति का चित्रण हुआ है। साथ ही स्त्री द्वारा ही एक स्त्री का शोषण होते दिखाया है।

'गूंज' कहानी में स्त्री समस्या का चित्रण है। इस कहानी में विधवा रुपाली के बारे में है। वह पति के देहांत के बाद मजदूरी करके बच्चों को पालना चाहती थी। पर उसके जेठ की नजर उस पर थी। वह अपने जेठ से शादी करने में मजबूर हो जाती है। रुपाली मजबूर तो थी पर वह एक जागरूक स्त्री थी। उसका छोटा बेटा जब हुआ तब उसने नसबंदी करा ली थी – "रुपाली अंतर्मुखी थी। उसने कालू से लकीर ले ली, अपनी अंतस का अहम रहस्य उससे छुपाया। उसका सबसे छोटा लड़का अस्पताल में हुआ था। उसमें समय की समझ थी। नसबंदी करने के लिए उसने अपना अंगूठा दे दिया था।"[34]

कहानी में सावन में झूला झूलते स्त्रियों का वर्णन किया है। सावन में वह झूला झूलना

चाहती है। पर अपनी घूँघट हटा नहीं सकते थे। वह घूँघट हटाकर अपनी मर्यादा नहीं लांघ सकती थी। वह समाज के नियमों से बंधी थी। वह किसी पुरुष के सामने अपना घूँघट हटा नहीं सकती थी।

इस कहानी में पार्वती नामक एक बाभनी का भी वर्णन मिलता है। वह एक बाल विधवा थी। छोटी उम्र में ही उसकी शादी हो गई थी और विधवा भी। यहाँ दिखाया गया है कि स्त्री को कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। उसे सारी मुसीबतें जीवन भर अकेले ही झेलनी पड़ती है।

कहानी में कहानीकार ने स्त्रियों के विभिन्न पक्षों को दिखाया है। रुपाली, पार्वती आदि स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्रियों की पीड़ा, विवशता आदि का चित्रण किया है। कहानियों में स्त्रियों के घूँघट के आरे उनकी आकांक्षाओं को प्रकट किया है। यहाँ स्त्रियों की स्वतंत्र होने की मनोवृत्ति को उजागर किया गया है। स्त्रियाँ अपने बंधनों से स्वतंत्र होना चाहती है।

'इत्तफाक' कहानी एक बूढ़ा-बूढ़ी की है। यह दोनों शादी के बाद ही अलग होते हैं। पैंतालीस साल बाद इत्तफाक से एक बस में मिलते हैं। साँवली(बूढ़ी) काली थी जिस कारण उसे घर से निकाल देते हैं। बूढ़ी बस में बूढ़े को पहचान लेती है। बूढ़ी उसके घर परिवार के बारे में पूछती है। बूढ़ा पश्चाताप से रोने लगता है और कहता है – "वह नई-नवेली ब्याह के भेस में थी। गाय की तरह डकरा रही थी बेचारी। मैंने उसकी एक न सुनी। उसे देहरी से बाहर धकिया कर लात मारी, 'कालाटुरी कहीं की'। घर में घुसी गर्दन कलम कर दूंगा।"[35] बूढ़ा को पश्चाताप की आग में जलता देख बूढ़ी का मन पीघल गया था। वह अपनी पोती की शादी है कहकर उसे अपने घर ले जाती है।

यहाँ बताया गया है कि पुरुष चाहे कितना ही अत्याचार करे पत्नी अपना पत्नीधर्म निभाती है। वह पति से कोई बैर नहीं रखती। बूढ़ी ने भी इस कहानी में ऐसा ही किया। उसके पति ने उसे काली कहकर घर से निकल दिया था। वहीं दूसरी ओर बूढ़ी की मुलाकात जब बूढ़े से होती है। वह उसे सम्मानपूर्वक अपने घर ले जाती है। बेटे और बहू के मना करने के बावजूद वह बूढ़े को कन्यादान के लिए ले जाती है। यहाँ बूढ़ी के माध्यम से एक कोमल हृदयी स्त्री का वर्णन

किया है। बूढ़ी को घर से निकाल दिया गया। उसे कितने ही मुसिबतों का सामना करना पड़ा होगा। जब वह बूढ़े से मिलती है अपने पर हुए अत्याचार को भुला देती है। वह पति को अपना लेती है। जिस समय बूढ़ी को घर से निकाल दिया था तब वह गर्भवती थी। बूढ़ा ने एक बार भी उसके हालत के बारे में नहीं सोचा। जब बूढ़ी ने बूढ़ा को बुरे हालत में देखा तो वह सहन नहीं कर पाई। कहानी में स्त्री और पुरुष के सोच को दिखाया गया है। उनके सोच के अंतर को दिखाया गया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'राइट टाइम' एक विधवा पर आधारित कहानी है। यहाँ एक अकेली बेवस विधवा का वर्णन है। लोग किस तरह उसका फायदा उठाना चाहते हैं, उसके बारे में बात करते हैं उसका चित्रण है। कहानी में एक विधवा जयपुर जंक्शन से दिल्ली जा रही थी। वह जल्दी में थी इसलिए टिकट नहीं ले पाई थी। वह जहाँ बैठी थी वहाँ दो दंपत्ति आते हैं। उसका पति उस विधवा से बड़ी बत्तमीजी से बात करता है- " टिकट क्यों लेकर बैठेगी यह? ऐसी वालियों को खूब जानता हूँ, मैं। टिकटी और जी.पी. वालों से सांठ-गाँठ होती है, इनकी।"[36] कहानी में दिखाया है कि एक अकेली स्त्री को लोग कुछ भी बोल देते हैं। अकेली स्त्री को कुछ बोलने से पहले सोचते तक नहीं। वह अकेली कही भी आ जा सकती है। इसका मतलब यह नहीं कि वह कुछ बुरा करने के लिए जा या आ रही है। लोगों को अपनी संकीर्ण मानसिकता से बाहर आना जरूरी है।

अंत में वह वहाँ से चली जाती है। टिकट लेकर आती है और अपने सीट में पुनः बैठ जाती है। ऐसे लोगों के कारण एक अकेली स्त्री का जीना मुश्किल हो जाता है। वह सब अत्याचार चूप-चाप सह लेती है। कहानी में भी वह विधवा स्त्री लोगों की सारी बाते सह लेती है। अंत में उसकी सहनशीलता खत्म हो जाती है। वह उस व्यक्ति से भीड़ जाती है। पुरुषवादी समाज स्त्रियों को बिना जाने-समझे ही बुरा-भला कहने लगते हैं। जैसे इस कहानी में विधवा स्त्री के साथ हुआ। लोग अकेली स्त्री को देखकर तरह-तरह की बाते करने लगते हैं। वह यह नहीं सोचते कि वह स्त्री किन परिस्थितियों से गुजर रही है। वह किन समस्याओं का सामना कर रही है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'फुलवा' एक प्रसिद्ध कहानी है। यह कहानी फुलवा नमक

एक दलित स्त्री पात्र के संघर्ष की कहानी है। फुलवा अपने जीवन में बहुत से समस्याओं का सामना करती है। फिर भी वह अपने बेटे को पढ़ाना नहीं छोड़ती। वह उसे पढ़ाने के लिए काफी मेहनत करती है। पति के देहांत के बाद फुलवा जमींदार के यहाँ काम करती है। उसकी मेहनत के कारण बेटा राधामोहन को शहर में एस.पी. की नौकरी मिली। बेटे ने शहर में ही घर बनाया और फुलवा भी वहीँ चली गई। फुलवा के माध्यम से दिखाया गया है कि स्त्री अकेले सब कुछ कर सकती है। उसे सहारे के लिए किसी पुरुष की आवश्यकता नहीं।

फुलवा के अलावा यहाँ कुंवर नाम की एक स्त्री का भी वर्णन है। वह फुलवा के घर नौकरानी थी। उसकी शादी हो गई थी। उसका एक बेटा भी था। उसका पति पढ़ा लिखा था। पति को नौकरी मिलते ही कुंवर को छोड़ दिया। उसने दूसरी लड़की से शादी कर ली थी। फुलवा जमींदार के बेटे रामेश्वर को कुंवर के बारे में बताती है- "आदमी कितने बेदर्द होते हैं, रामेश्वर जी। कुंवर अनपढ़ है। उसका पढ़ा-लिखा आदमी आफसर बना कि कुंवर उसके मन से उतर गई। उसने पढ़ी-लिखी लड़की से शादी कर ली है। बेचारी कुंवर, न कोर्ट जानती है, न कचहरी जानती है।"[37] कुंवर के माध्यम से कहानी में एक बेबस स्त्री का वर्णन किया गया है। कुंवर एक स्वाभिमानी स्त्री थी। उसने फुलवा से कहा भीख नहीं काम पर रख लो। कुंवर गरीब है पर वह मेहनत करके जीना चाहती है। वह दूसरों के सामने हाथ फैलाकर खाना पसंद नहीं करती।

कहानी में 'फुलवा' और 'कुंवर' के माध्यम से स्त्रियों की समस्याओं को दिखाया है। साथ ही दोनों में साहस, कर्त्तव्यनिष्ठा, सहृदय पूर्ण रूप से विद्यमान है। कुंवर जिसका पति उसे छोड़ किसी अन्य से शादी करता है। फिर भी वह पति के नाम का सिंदूर लगाती है। जिससे उसका पति के प्रति कर्तव्य दिखाई देता है। फुलवा जिसे गाँव में जमींदार द्वारा सताया जाता है। जब उसी जमींदार का बेटा उसके घर आता है तो वह उसका आदर सतकार करती है। चाहती तो फुलवा उसे भगा भी सकती थी। पर वह ऐसा नहीं करती। वह अपना मानवीय धर्म निभाती है।

'पुरस्कार' कहानी नीना नाम की एक स्वाभिमानी स्त्री की कहानी है। यह कहानी ऊँचे-ऊँचे

पद पर रहने वाले व्यक्तियों की स्त्री के प्रति मानसिकता का चित्रण करती है। ऊँचे संस्थाओं में रहने वाले लोग स्त्रियों का शोषण किस तरह करते हैं यहाँ दिखाया गया है। इस कहानी की प्रमुख पात्र नीना के साथ भी यही होता है। उसके पति देव को लकवा होने के कारण वह बिस्तर पर ही रहता है। जिस कारण नीना को ही घर संभालना होता है। वह कहानी लिखती थी। वह अपनी एक कहानी अकादमी अध्यक्ष धौज को देने जाती है। पर धौज का कहानी पर कम नीना पर अधिक नजर था। धौज नीना को बोलते हैं– "नीना जी आईये अन्दर रूम में बैठते हैं। बच्ची को चपड़ासन खेला लेगी।"[38] इस बात से नीना को धौज की इरादों का अंदाजा होने लगा था। पर वह शांत थी। उसे बस अपनी घर की चिंता थी। वह अपना काम करके जाना चाहती थी। वह सोच रही थी किसी तरह अपनी कहानी दे और चली जाए।

धौज नीना की ससुर का दोस्त था। फिर भी उसके इरादे ठीक नहीं थे। पहले वह नीना के घर आता तो दरवाजे की घंटी बजाकर ही आता था। पर आज नीना के ससुर के देहांत के बाद, उसका पति बीमार रहने के बाद वह निडर हो गया। वह बिना घंटी बजाय ही अन्दर आता। धौज जब कथा पुरस्कार के घोटालों के बारे में बताता है तब नीना को बड़ा धक्का लगता है। वह अपनी कहानी छपवाने से मना कर देती है। वह धौज को पत्र देती है कि – "धौज जी कथा पुरस्कार के लिए प्रेषित में अपनी प्रविष्टि वापस लेती हूँ। आप मेरी कहानी को भी अकादमी की पत्रिका में प्रकाशित न करें। नीना।"[39] धौज सोच रहा था कि नीना अपनी कहानी प्रकाशित के लिए कुछ भी करेगी। वह जैसा चाहता है वैसे ही होगा। वह कहानी छपवाने के बहाने नीना का फाईदा उठा सकता है। पर नीना ने ऐसा नहीं किया। वह अपनी कहानी के लिए खुद की इज्जत दाव पर लगाना नहीं चाहती थी। कहानी में दिखाया गया है कि औरत जब कुछ करना चाहती है तब धौज जैसे लोग रास्ते में बाधा बन जाते हैं। वह स्त्रियों को कामियाबी की सीढ़ी चढ़ने ही नहीं देते।

'बात' कहानी एक विधवा स्त्री की कहानी है। पति के मृत्यु के बाद सुरती और बेटा राधू अकेले पड़ जाते हैं। पति के बीमारी के कारण दो घरों का कर्जा था जो पूरा नहीं हुआ था। गाँव में एक अमीर व्यक्ति था धींग। उसकी बुरी नजर सुरती पर थी। जिससे सुरती बहुत परेशान

थी। सुरती बहुत गरीब थी जिस कारण वह अपने बेटे के स्कूल फीज तीन महीने से नहीं दे पा रही थी। एक दिन जब वह रास्ते से गुजर रही थी तब देखती है कि स्कूल में सब पढ़ रहे हैं। सिर्फ उसका बेटा राधू को बरामदे में हाथ ऊपर करके खड़ा किया गया था। पूछने पर पता चलता है कि स्कूल फीज न दे पाने के कारण राधू को सजा मिली थी। रोज सजा मिलने पर भी बेटे ने माँ को बताया ही नहीं था।

सुरती को यह देखकर बहुत दुःख हुआ। वह न चाहते हुए भी उसे धींग के पास पैसे के लिए जाना पड़ता है। धींग सुरती को घर आता देख खुश हो जाता है। वह जब पैसे मांगती है तब धींग उसे कहता है – "मैं तो रकम धरे रकम देता हूँ, सुरती।"[40] धींग को पता था कि सुरती के पास देने को कुछ नहीं था। वह उसे जानबूझ कर ऐसा कहता है। ताकि वह मजबूर हो जाय धींग की बात मानने को। सुरती रोते हुए उसे कहती है – "इज्जत से बड़ी रकम नहीं होती। "बात" गिरवी रख रही हूँ। एक महीने में पैसे नहीं लौताऊं.....।"[41] बिचारी सुरती कितनी मजबूरी में यह सब कहती है। धींग उसकी बात सुनकर पैसा दे देता है। पर वह हर रोज उसके नजदीक आने की कोशिश करता है। सुरती को कुछ न कुछ बोलता रहता है। धींग जैसे लोगों के कारण सुरती जैसी स्त्रियाँ समाज में ठीक से रह नहीं पाती। हर वक्त उनके मन में डर सा बना रहता है। सुरती साहसी एवं मेहनती थी। वह दिन-रात मेहनत करके पैसे इकट्ठा कर लेती है।

'विद्रोहिणी' एक विधवा स्त्री की कहानी है। पति के मृत्यु के बाद एक विधवा स्त्री के बारे में लोगों की क्या सोच होती है। समाज एक विधवा स्त्री को सांत्वना देने के बजाये उसके बारे में किस तरह की बाते करते हैं। उसके साथ किस तरह का बरताव करते हैं। अपने सगे-संबंधी तक उसे बुरा-भला कहने लगते हैं। इस तरह की तमाम चीजों का चित्रण इस कहानी में किया गया है। कहानीकार लिखते हैं कि अकेली स्त्री को समाज हेय की दृष्टि से देखता है। वह भी तब जब वह दुख भुलाकर जीना चाहती है। सबके साथ मिलकर अपना गम भुलाना चाहती है। घर वाले भी उसका साथ देने के बजाये उसका साथ छोड़ देते हैं। उसे अपने पर बोझ समझने लगते हैं।

कहानी में भी सुंदरी का यही हाल होता है। कहानी में सुंदरी का पति मरने से पहले सुंदरी

को वह जैसी है वैसे ही रहने को कहता है। सुंदरी पति के मृत्यु के बाद सज-धज कर रहती है। यही बात समाज को खलती है। समाज का मानना है कि एक विधवा को सफेद कपड़े में रहना चाहिए। सुंदरी का ऐसे न रहने से वह लोगों के नजरों में गिर जाती है। पति सुंदरी से कहता है- "मयालाल कहने लगा-सुंदरी बच्चे की सौगन्ध खाकर वचन दो। मेरे मर जाने के बाद भी तुम्हारी खुशियाँ नहीं मरेंगी। इसी तरह दबंग और उत्साही रहोगी। पति कि बात। वक्त की कात। सोलह सिंगार कर, बनी-ठनी अपने पति को कंधा देती शमशान तक गई थी सुंदरी। अपने तीन साल के बच्चे को बांस छुआ कर मुखाग्नि दिलाई थी उसने। खुद अंतिम संस्कार करवाया था। उस दिन चिता की लपटों से भी ऊंची उठी थी जात-बिरादरी के क्रोध की चिनगारिया। शोक-संतप्त के समय शमसीरें नहीं चलती।"[42] पति के कहने के कारण ही सुंदरी सजती हुई रहती है। पति की अंतिम बात वह मान लेती है। जिसके कारण उसे समाज में बहुत कुछ सहना पड़ता है। कहानी में दिखाया है कि अकेली स्त्री को कितनी समस्याओं से गुजरना पड़ता है। उसके बारे में लोग तरह-तरह के बात करते हैं।

कहानी में यह भी दिखाया है स्त्रियों को अस्थियाँ बहाने ले जाने की अनुमति नहीं थी। जब सुंदरी हठ करके ले जाती है तो गाँव वाले तरह-तरह की बाते करते हैं। उसके ससुराल वाले पहले ही पीछे हट गए थे जिस कारण उसे जाना पड़ा। सुंदरी जब त्रिवेणीधाम-प्रयागराज पहुँचती है वहाँ के पंडा भी उसे छेड़ते हैं। उस पर बुरी नजर रखते हैं। जब उन्हें पता चलता है कि वह अपने पति की अस्थियाँ लाई है। तब वह भी उसे बुरा-भला कहने लगता है। जैसे वह कोई अपराध करके आई हो- "पंडा और मल्लाह एक-दूसरे की ओर देखकर काँप गए थे। औरत! नहीं पापिन। डायन। भूतनी। प्रेतनी। हत्यारिन। पति मार उसकी बोटियाँ लाई है। सुंदरी की वह गोराई, कशिश, रंग-रूप, खूबसूरत सब धोखा लगने लगे थे उनको। मल्लाह इधर-उधर बदहवास-सा देखने लगा था। उसका हाथ बार-बार चप्पू से फिसल जाता था। माथे पर पसीना आता था। पंडा मानो अपने पोथा-पतरे में ही सिमटा जाता था। त्रिवेणीधाम-प्रयागराज आ गया था। सुंदरी वहाँ नहाना चाहती थी। तर्पण कराना चाहती थी। मल्लाह ने एक घिनौना-सा संकेत कर नाव मोड़ ली थी। सुंदरी उसके भाव भाँप गई थी। उसने दाँत गड़ा थैली फाड़ी और

अस्थियाँ पानी में विसर्जित कर दी थीं।"[43] जब पति मरता है समाज पत्नी को ही दोषी ठहराता है। वह कहते हैं कि उसी के वजह से पति मरा है। जबकि ऐसा नहीं है। पत्नी के मरने पर तो पति को ऐसा नहीं कहा जाता। उसे समझा बुझा कर दूसरी शादी करा दी जाती है। कहानीकार ने एक स्त्री के प्रति समाज की दृष्टिकोण पर चोट किया है।

'बंजारन' कहानी एक बंजारन स्त्री रुना बाई के विद्रोह की कहानी है। अपनी बेटी के लिए वह अपनी पति से झगड़ा करती है। उसके दोनों पति अपनी बेटी की शादी एक धनी घराने के लड़के से कराना चाहते थे। यह जानते हुए भी कि वह पहले से ही शादीशुदा था। उसी की वजह से उसकी पत्नी की मृत्यु हुई थी। उन दोनों को बस अपनी लड़की की शादी ऐसी जगह करानी थी जो अमीर हो। जिसका रहने का घर हो। ताकि बाद में बेटी बंजारन की तरह इधर-उधर भटकती न फिरे। उन्होंने यह सोचा ही नहीं था कि वहाँ बेटी को कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। रुना बाई से पति कहता है – "यों तो खाली पीली की बकवास है कि लड़कों दो टाबराँ को बाप है। यों भी ध्यान दो, ऊकी सिरकारी नौकरी है। घर को पक्को ठीयो है। दो बीघा क्यार है। एसा खाता-पीता घर लड़की दे रहा हाँ, तो जुरम न कर रहा। कहावत है ना, अकल बड़ी के भैंस।"[44] कहानीकार ने यहाँ बिना सोचे समझे अमीर देखकर बेटी की शादी करवाने वालों पर चोट किया है। कहानी में बेटी स्कूल पढ़ रही है। बेटी को स्कूल पढ़ाने का सोचने के बजाये उसकी शादी के बारे में सोचते है। उसकी शादी करवाना चाहते भी हैं तो उससे जिसके दो बच्चे हैं। वह उससे शादी इसलिए करवाना चाहते है क्योंकि वह अमीर है। उसकी सरकारी नौकरी है। कहानीकार ने यहाँ समाज के यथार्थ का चित्रण किया है।

इसी बात का विरोध रुना बाई करती है। वह अपनी बेटी को उस नरक से बचाने के लिए वह अपने पति तक को छोड़ देती है। रुना बाई भी चाहती थी कि उसकी बेटी की शादी अच्छे घर में हो। पर वह यह कटई नहीं चाहती थी कि शादी के बाद उसे कोई तकलीफ हो। वह अपने पति का विरोध करते हुए कहती है – "जिंदा मक्खी ना निगली जाए। वो लड़का ने अपनी अनपढ़ बीरवानी मार दी। अगर ऊनै ऐसी ही पढ़ी-लिखी लड़की की भूख थी तो अपनी

घरवाली ने खुद पढ़ातों। सिम्मान पातो। दो बालकाँ की माँ पीट-पीट घर से निकाल दी। तंग आई ने जोहड़ में जिनगानी होम दी अपनी। ना-ना-ना, मैं तो अपनी फूल-सी लाड़ो ना ब्याहूं एसा पापी के। थम दोनों तो बाप हो के गैर हो गया। मैं माँ हो के अपनी बेटी को चेतूँ कीड़ा की कुंड में पड़ी सड़ूँ।"[45] कहानी में दिखाया है किस तरह एक स्त्री को पति से तंग होकर मरना पड़ा। दो बच्चे होने के बावजूद पति पत्नी को मार-मार कर घर से निकाल देता है। कहानीकार ने यहाँ घरेलू हिंसा का चित्रण किया है।

कहानी में रुना बाई द्वारा बाल विवाह का विरोध करते भी दिखाया है। इसलिए वह अपनी बेटी को लेकर चली जाती है। कहानीकार ने स्त्री शिक्षा पर भी जोर दिया है। रुना बाई कहती है वह अपनी बेटी को मजूरी करके भी पढ़ाएगी। कहानी में इसका जिक्र है – "अगर एसो अड़ंगो अड़ावोगा, कुछ ना पाओगा। भले अलग रहो दोनों। मेरी बेटी पढ़ेगी। मैं मजूरी करके ऊनै पढ़ाऊंगी।"[46]

'सनक' कहानी में गाँव से शहर की ओर पलायन का चित्रण हुआ है। इसमें स्त्री समस्या का चित्रण भी हुआ है। कहानी में पात्र स्वरूप सिंह अपना घर जमीन बेचकर पत्नी के साथ शहर चला जाता है। शहर में कम दाम के एक मकान में वह रहते हैं। कुछ दिन बाद उस बड़े मकान का कम दाम में बेचने का कारण पता चलता है। कारण ये था कि उस मकान में एक स्त्री की मृत्यु हुई थी। जिस कारण से वह मकान यू ही पड़ा था। यह बात स्वरूप सिंह का दोस्त मीर सिंह बताता है। वह कहता है कि दहेज न लाने के कारण पति ही पत्नी को मार देता है। कहानी में दिया गया है – "स्वरूप जी! आप मेरे रिश्तेदार हैं। पाप छुपाऊँ, विष्ठा खाऊँ। आपकी कोठी के एक कमरे में एक औरत की हत्या हो गई थी।...कोठी का दूसरा पोरसन अधूरा था। उसके आदमी ने अपनी पत्नी को मैके से रूपए लाने को मजबूर किया। जब उसने कतई 'ना' कह दी तो बेचारी की गर्दन साड़ी से बाँध कर उसे पंखे से...। कोई खरीददार नहीं हुआ। तभी तो यह कोठी इतनी सस्ती आ गई।"[47] कहानी में घरेलू हिंसा के साथ-साथ दहेज प्रथा का चित्रण हुआ

है। कहानीकार ने दिखाया है कि दहेज मानव जीवन से भी बड़ी हो गई है। इसलिए दहेज के कारण पति पत्नी को ही मार देता है। आज मनुष्य में मानवता रही ही नहीं। जिस कारण से इस हद तक गिर सकता है। मनुष्य कुछ ही पैसों के लिए किसी की भी हत्या कर सकता है।

कहानी में स्त्री समस्या की भयावह स्थिति का चित्रण हुआ है। दहेज के कारण हत्या की गई स्त्री की बात सुनकर स्वरूप सिंह अपनी पत्नी को न बताने का सोचता है। लेकिन उसकी पत्नी को पहले से ही पता चल जाती है। बात पता चलने के बाद पत्नी (प्रभा) की बहुत बुरी हालत हो जाती है। उसकी मानसिक स्थिति खराब हो जाती है। अंत में उसकी मृत्यु हो जाती है। कहानी में दिया गया है – "प्रभा उनके पाँवों में गिर पड़ी – 'नहीं-नहीं, आप मुझे फाँसी नहीं लगा सकते। मैंने अपनी सब साड़ियाँ जला दी हैं। आप कहेंगे उतने रूपए मैं अपने मैके से ला दूँगी। मुझे फाँसी...।' प्रभा की दयनीयता देख स्वरूप सिंह हतवाक थे। दम उठ खड़ा हुआ था। उनकी आँखों से टप-टप आँसू टपकने लगे थे, जैसे अंतस के सब स्रोत फूट पड़े हों। प्रभा को शिशु की तरह अपने अंकपाश में आबद्ध कर, वे जमीन पर बैठ गए- गाँव के साथ-साथ, गाँव-सी प्रभा भी उनके हाथ से...।"[48] कहानी में एक स्त्री की मानसिक स्थिति का चित्रण हुआ है। प्रभा इतना डर जाती है कि उसकी मृत्यु हो जाती है। उसे बहुत बड़ा सदमा लगता है। उसे लगता है कि उसका पति भी उसे पैसों के लिए मार देगा। वह इतनी डर गई थी कि अपने पति पर से भी विश्वास उठ जाता है।

'गाड़िया' कहानी स्त्री समस्या का चित्रण करती है। कहानी में जमींदार के बेटे द्वारा किया गया कुकर्म का चित्रण हुआ है। जमींदार का बेटा लोहार की बेटी को हवस का शिकार बनाने की कोशिश करता है। लोहार जब सरपंच को कहता है तो वह उस पर पर्दा डालता है। सरपंच जमींदार के बेटे को बचाने की कोशिश करता है। रात को सोते हुए अवस्था में लोहार की बेटी के पास जमींदार का बेटा जाता है। लड़का उसे बुरी नजर से देख ही रहा था कि लड़की जाग जाती है और चिल्लाने लगती है। लड़की चिल्लाते हुए उसे गालियाँ भी देने लगती है – "मलाई

की गन्ध, बिलाई की लपलपाती जीभ त्वरा हो जाती है। गाँव के जमींदार का बेटा था, फकीरचंद। अधेड़ावस्था की ओर कदम थे उसके। वह बिलाव की नाई दबे कदमों गाड़ी में चढ़ गया था। बैठ गया था लड़की के पास।...वह भड़क कर उठ बैठी थी। तारों की छाँव जान गई थी, फकीरचंद है। लोहा कूटते बापू से नजदीकियाँ तारने का यह सिला? दुसट। गोदी में बैठ कर आँख में घूँस? लड़की ने चुभती गालियाँ बकीं और मुक्कियाँ-मुक्कियाँ पीटने लगी थी, कामी फकीर को।"[49] तभी लोहार की भी आवाज सुन फकीरचंद वहाँ से भाग जाता है।

लोहार इस बात को सरपंच से कहता है। सरपंच लोहार की बेटी को न्याय देने के बजाये लोहार को ही समझाने लगता है। वह फकीरचंद को माफ करने को कहता है। सरपंच समझाने लगता है कि फकीरचंद के बच्चों का ख्याल कर उसे छोड़ दे। उसे सजा न दे। वह पहले से ही बदमाश है- "सरपंच और फकीरचंद के परिजनों, बड़े-बूढ़ों ने लोहार को सौ समझाया। लाख बुझाया। प्रलोभन नजर की। इज्जत की तुला। सब तुच्छ। वह एक ही हठ पकड़े था – 'दुसट फकीर का लहू पी जाऊँगा। उसे जेल की चाकी पिसवाऊँगा।' सत्तर के बुड़भस सरपंच ने आँखों पर चश्मा ठीक किया और लोहार की बाँह पकड़ कर अलग ले गया। तल्ख हुआ। नसीहत और हिदायत एक साथ दीं- चौधरी जी! यह तो जन्म का ऊत (बदमाश) है। माँ नहीं। बाप नहीं। बाल-बच्चों का ख्याल करो इसके। बीस बरस पहले गाँव के नुक्कड़ गाड़ी खड़ी की थी तुमने। रेत चढ़ गया पहियों। वह लड़की यही गाड़ी में ही पैदा हुई थी। गाँव के हो गए हो। गाँव की रख लो।"[50] सरपंच और अन्य लोगों को लड़की की शादी होने वाली है उसकी कोई फिकर नहीं। उन्हें फिकर है तो बस फकीरचंद के इज्जत की। उसके बाल-बच्चों की। कहानी में लोगों के सामने लड़की की इज्जत की कोई मायने नहीं। लेकिन उन्हें जमींदार की इज्जत की बड़ी फिकर थी। वह लड़की की इज्जत से ज्यादा जमींदार को अधिक महत्व दे रहे थे। कहानी में दिखाया है कि गरीब लड़कियों की इज्जत से बढ़कर अमीर की इज्जत होती है।

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में स्त्री पक्ष का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने

स्त्री के विभिन्न समस्याओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ निडर एवं साहसी है। वह अपने हक के लिए किसी से भी लड़ने को तत्पर रहती है।

(आ) दलित चेतना :

"दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है – दबा हुआ, आत्मसम्मान और आत्मविश्वास का जिसमें अभाव हो मनोबल की कमी हो अपमान-शोषण और प्रताड़ना को जिसने अपनी नियति मान लिया हो वही दलित है।"[51] समाज के पिछड़े हुए वर्ग को दलित कहा जाता है। समाज में दलितों को उनके हक से हमेशा वंचित रखा गया है। दलित लेखकों ने स्वयं हिम्मत से आगे बढ़कर साहित्य के जरिए अपनी बात रखी है। उन्होंने स्वयं अपने पर अपने समाज के लोगों पर हुए शोषण का वर्णन किया है। साथ ही शोषितों के खिलाफ विद्रोह का स्वर उभारा है। प्रेमचंद, ओमप्रकाश वाल्मीकि, सुशीला टाकभौरे, भवानी सिंह आदि दलित लेखकों ने दलितों पर कहानियाँ लिखी हैं। साथ ही रामेश्वर उपाध्याय, चन्द्रमोहन प्रधान, अखिलेश आदि गैर-दलितों द्वारा लिखी गई दलित कहानियाँ भी प्राप्त होती है। दलित की परिभाषा देते हुए अर्जुन डांगले कहते हैं – "दलित एक जाति नहीं बल्कि एक अनुभूति है जिसमें समाज के निचले स्तर के लोगों के अनुभव, उनकी खुशियाँ और संघर्ष शामिल हैं। यह सामाजिक दृष्टिकोण से परिपक्व होती है। जिसका संबंध नकार, विद्रोह और विज्ञान के प्रति प्रतिबद्धता से है और जिसकी अंतिम परिणति क्रांति में जाकर होती है।"[52]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। उन्होंने अपनी कहानियों में दलितों की पीड़ा, संवेदना आदि का चित्रण किया है। रत्नकुमार सांभरिया स्वयं कहते हैं– "दलित चरित्र की पहचान के दो आयाम हैं। पहला जाति, दूसरा पैसा। जाति से दलित। पैसे से दलित। जो जाति से दलित हैं, लेकिन धन-दौलत से सम्पन्न हैं और शोहरत पा गए हैं, वे दलित कहानी के पात्र नहीं होंगे। जो जाति से दलित हैं, जिनका न जातीय सम्मान है

और न ही समाज-परिवेश में उन्हें बराबरी का हक है, अर्थात अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के गरीब किसान, श्रमिक, बंधुआ मजदूर, पैतृक पेशा करने वाले सफाई कर्मी, चर्मशोधन करने वाले परिवार तथा घुमंतू और खानाबदोश लोग, जिनका धरती बिछावन है और आकाश ओढ़न, दलित कहानी के पात्र होने का अधिकार पाते हैं। दलित कहानी का मुख्य धयेय इन्हीं उपेक्षित वर्ग को दलित्व से उबारकर उन्हें शिक्षा और पुनर्वास की ओर उन्मुख करना है।"[53]

रत्नकुमार सांभरिया की 'मांडी' कहानी समाज में व्याप्त जाति-पांति के भेदभाव पर आधारित है। यह कहानी 'मांडी' नामक एक परंपरागत पर्व से संबंधित है। यहाँ 'मांडी' का अर्थ है – "मांडी! ग्रामीण अमावस्या के दिन पहली सिंकी रोटी और उस पर खीर या चावल रख कर गाय को देते हैं। इसे पितारों का तर्पण और पुण्य माना जाता है।"[54] कहानी में पंडित दानीदास मांडी देने गाय ढूँढने निकलता है। वह दिन भर ढूँढता है पर एक भी गाय नहीं मिलती। गाँव के सभी लोग सूबेसिंह के घर जाते हैं। दानीदास को उसके धर्म ने रोक रखा था। पंडित दानीदास, जातिभेद की भावना से घिरा हुआ व्यक्ति है। अंत में हार कर वह सूबेसिंह की गाय को मांडी देता है। सूबेसिंह की गाय बाहर चर रही थी। पंडित दानीदास सोचता है- "अपनी समझ बढ़ाई, मेहतर के चौक-खूंटे बंधी गाय मेहतर थी। बहता पानी और चरता पशु निरपेक्ष होते हैं। ना जात। ना धर्म। मांडी दे। धर्म निभा, दानी। जल्दी कर तू। पोते-पोती भूख से बिलखते ऊधम मचा रहे हैं।"[55]

इस कहानी में यह दिखाया गया है कि जाति भेदभाव इतनी बढ़ गई है कि दलित के घर जाना तो दूर दलितों के घर रहने वाले पशु तक को ऊँच वर्ग अछूत मानते हैं। ऊँच वर्ग की इसी सोच पर कहानीकार ने गहरा चोट किया है।

रत्नकुमार सांभरिया की 'शर्त' कहानी एक दलित की कहानी है। गाँव के मुखिया का बेटा

पानाराम की लड़की का इज्जत लूट लेता है। जिस वजह से लड़की की शादी टूट जाती है। पर मुखिया का लड़का बिना किसी डर के आजाद घूमता है। पानाराम मुखिया के पास आकर न्याय की भीख मांगता है। मुखिया पानाराम को तरह-तरह की बाते कह कर बहलाने लगता है। जो चाहे मांगने को कहता है। इतनी बड़ी बात को मुखिया मनहूस दिन कह कर टालना चाहता है। वह पानाराम की लड़की को ही दोष देता है। कहता है अगर वह नहीं आती तो ऐसा नहीं होता- "क्या बताऊँ? वह दिन ही मनहूस था, पानिया। रिश्तेदारी की शादी में हम सबका जाना हुआ और मेरी लड़के का तेरी लड़की के साथ....। अगर उसकी परीक्षा नहीं होती और तेरी लड़की उस दिन झाड़ू बुहारी को नहीं आती, तो आज का दिन नहीं दिखता।"[56] अंत में हार कर मुखिया किसी शर्त पर मानने को कहता है। पानाराम की शर्त सुनकर मुखिया का दिल दहल जाता है। पानाराम कहता है- "मुखिया साब, इज्जत का सवाल है यह। आपकी इज्जत सो मेरी इज्जत। आपकी लड़की मेरे लड़के के साथ रात रहेगी।"[57] यह शर्त सुनकर मुखिया पागल हो जाता है। उसे दौरा पड़ने लगता है। अंत में पानाराम पर गोली चला देता है और खुद भी मर जाता है।

कहानी में दिखाया है कि बड़े लोग अपनी इज्जत की परवाह करते हैं। लेकिन छोटे लोगों के इज्जत की उन्हें कदर ही नहीं। दलित के बेटियों के साथ चाहे कितना ही बुरा हो। अपनी बेटी सही सलामत होनी चाहिए। मुखिया अपने बेटे द्वारा किए गए पाप को छुपाने की कोशिश करता है। पानाराम बेटे को कुछ न कहे इसलिए उसे पैसे भी देने को तैयार होता है। जब बात अपनी बेटी की इज्जत की होती है तो वह पागल सा हो जाता है। पानाराम का शर्त एक दलित का अपने पर हुए शोषण के खिलाफ आवाज है।

'बदन दबना' कहानी भी दलित समाज पर आधारित है। यहाँ बदन दबना का मतलब है पाँच साल के लिए किसी के घर काम करना। जहाँ अपने घर जाने की अनुमति भी नहीं होती। अमीर द्वारा गाँव के दलित बच्चों को पाँच साल के लिए बंधुआ बनाने की प्रथा है। 'बदन दबना' कहानी में भी ऐसी ही कहानी का वर्णन है। कहानी में पूछाराम नाम का एक तेरह वर्ष के बच्चे

के बंधुआ होने के बारे में है। कहानी के अनुसार पूछाराम स्कूल में पढ़ रहा था। उसकी बहन की शादी के लिए पैसे की आवश्यकता होती है। उसका पिता उसे जमींदार के हवेली में पैसे लेकर छोड़ आता है। उसकी बहन की शादी के दिन वह कितनी बार घर जाने की आज्ञा मांगता है। पर उसे जाने नहीं दिया जाता। वह कहता है- "बहन के फेरों पर तो भाई को होना चाहिए न बाबूजी। लोग सात समंदर पार से चले आते हैं। कैदी को भी पेरोल पर छुट्टी मिल जाती है। मैं तो यहीं गाँव में ही हूँ बाबूजी।"[58] कहानीकार ने दलित समाज की व्यथा के साथ-साथ बाल मन का भी चित्रण किया है। साथ ही अंत में पूछाराम द्वारा विद्रोह भी दिखाया गया है।

'फुलवा' एक प्रसिद्ध कहानी है। यह कहानी फुलवा नामक एक दलित स्त्री पात्र के संघर्ष की कहानी है। फुलवा अपने जीवन में बहुत से समस्याओं का सामना करती है। फिर भी वह अपने बेटे को पढ़ाना नहीं छोड़ती। वह उसे पढ़ाने के लिए काफी मेहनत करती है। पति के देहांत के बाद फुलवा ही जमींदार के घर काम करती थी। उसकी मेहनत और लगन के कारण उसका बेटा राधा मोहन को शहर में एस.पी. की नौकरी मिली। उसने शहर में ही घर बनाया और फुलवा भी वही चली गई। गाँव में फुलवा को जमींदारों के कुएँ से पानी पीने की अनुमति नहीं थी। फुलवा कोसो दूर जाकर पानी लाती थी। एक दिन जमींदार का बेटा रामेश्वर पंडित माताप्रसाद का घर ढूंढते शहर फुलवा के घर आता है। वहाँ फुलवा का घर देख वह आश्चर्य से भर जाता है। इस कहानी में दिखाया है कि मनुष्य की पहचान जात से नहीं पैसे और पद से होती है। कहानी में पंडिताइन जमींदार रामेश्वर से कहती है- "तू तो कुंए का मेढक ही रहा रामेसरिया। अब तो पद और पैसे का जमाना है, जात-पांत का नहीं। फुलवंती का राधा मोहन कोई छोटा-मोटा अफसर नहीं। एस.पी. है, एस.पी.। एक बात बताऊँ तुझे। जाकर मेम साब के पाँव पकड़ ले और तब तक मत छोड़, वह हाँ न कह दें।"[59] गाँव से शहर आकर ही रामेश्वर को पता चलता है कि जिस फुलवा को गाँव में कोई पूछता तक नहीं था। शहर में उसे हर कोई जानता है। जबकि पंडित माताप्रसाद को कोई नहीं पहचानता।

'बकरी के दो बच्चे' कहानी दलितों के शोषण पर आधारित है। दलितों पर जमींदार द्वारा

शोषण करते दिखाया है। कहानी का पात्र दलपत एक गाभिन बकरी खरीद लाता है। उस बकरी के दो बच्चे होते हैं। जमींदार का बेटा उन दो बच्चों को मार डालता है। पूछने पर कहता है कि वह उसके हवेली जाते थे। इस बात से दुखी होकर दलपत जमींदार को कहता है। जमींदार दलपत को ही डांट कर भेज देता है। वह कहता है- "धमका दूं, धर्मपाल को? भैंसे मार दी हों जैसे तेरी। ढेड़ और भेड़ को हम जीव नहीं मानते। समझे।...ज्यादा मुंहजोरी की न, तो तुझे भी...।"[60] दलपत अपने मित्र के कहने पर पुलिस के पास जाता है। पुलिस भी एफ.आई.आर लिखने से मना कर देती है। कहानीकार ने जमींदारों द्वारा दलित व्यक्ति पर किए गए शोषण का चित्रण किया है। साथ ही गरीब होकर भी हार न मानने वाले दलपत जैसे लोगों का चित्रण किया है। जमींदार को पता था कि उसके बेटे की गलती है। फिर भी वह बेटे की गलती को छुपाने की कोशिश करता है। वह दलपत को डाटने लगता है। पुलिस भी दलपत की बात नहीं मानती। पुलिस चाहती तो दलपत की मदद कर सकती थी। लेकिन वह जमींदार का नाम सुनकर कोई कार्यवाही नहीं करती।

'बिपर सूदर एक कीने' कहानी जातिभेद पर आधारित है। कहानी एक गाँव के साथ-साथ दो भाईयों के बीच की हैं। कहानी में पंचायत के कहने पर एक भाई (जीवण) गंगाजली लेकर सूत्रकार बनता है। दूसरा भाई (श्यामू लाल) पंचायत की बात न मानकर रांपावत (निम्न जाति का) रह जाता है। इसी से दो भाईयों के बीच जातिभेद का भाव पैदा हो जाता है। जात के साथ-साथ दोनों में घर का बंटवारा भी होता है। जीवण अपने ही भाई श्यामू को नीच की दृष्टि से देखने लगता है। कहानी में इसका जिक्र है – "जात की साख पर पांत की कुल्हाड़ी बैठ गई थी। घनी गहरी। एक जात, दो पांत। दो भाई। दो पांत। श्यामू रांपावत। जीवण सूत्रकार। श्यामू छोटी जात। जीवण की बड़ी जात। श्यामू अछूत। जीवण सछूत। श्यामू को दिन में तारे दिख रहे थे। जीवण को नया सूरज उगता नजर आ रहा था। धागे सिमट गए थे।"[61]

श्यामू लाल से गाँव वाले बात करना तक बंद कर दिए थे। साथ ही उसका भाई भी बात नहीं करता था। उनका घर आना-जाना तक बंद हो जाता है। यह सब केवल जातिभेद के

कारण ही हो रहा था। जातिभेद मनुष्य को अंदर से खोखला कर देती है। जिस कारण उसे अपना परिवार, सगे संबंधी तक दिखाई नहीं देते। जातिभेद का भाव श्यामू लाल को तब तक सहना पड़ता है जब तक उसके बेटे को नौकरी नहीं मिल जाती। बेटे के नौकरी मिलते ही श्यामू लाल को गाँव के सभी बुलाने लगते हैं। उसे सम्मान देने लगते हैं। यहाँ तक कि पंडित भी श्यामू को मंदिर बुलाता है। पंडित कहता है कि नौकरी मिलते ही जात बड़ी हो जाती है – "श्यामू मंदिर के सामने से गुजर रहे थे। उनके एक हाथ में मोबाइल था, दूसरे हाथ में बेंत थी। फोन धोती कुरता पहने थी। मंदिर में बैठे पुजारी ने संकेत किया। मंदिर चार सीढ़ी ऊपर था। श्यामू पहले मंदिर की सीढ़ियों तक नहीं जाते थे, आज सीधी डग भरी और पहली सीढ़ी पर पुजारी से रू-ब-रू थे। दूसरे दिन जब वे मंदिर के सामने से गुजर रहे थे तो पुजारी ने उन्हें फिर बुलाया। आज वे दूसरी सीढ़ी पर खड़े पुजारी से बतिया रहे थे। तीसरे दिन वे तीसरी सीढ़ी पर थे। चौथे दिन उन्होंने एक के बाद एक चार चार डगें भरी और मंदिर की चौथी सीढ़ी पर थे। पुजारी ने हाथ का संकेत कर उन्हें अपने पास चटाई पर बैठा लिया था। कहने लगा – "श्यामू धंधा छोड़ दिया, जात मिट गई। लड़का बड़ा अफसर बन गया, जात बड़ी बन गई।"[62] कहानीकार ने दिखाया है कि नौकरी जातिभेद दूर कर देती है। श्यामू लाल जिसे कोई पूछता तक नहीं था, उसे पंडित स्वयं मंदिर बुलाता है। कहानीकार ने यहाँ शिक्षा को महत्व दिया है। शिक्षा के कारण ही श्यामू के बेटे को नौकरी मिलती है। जिस कारण उसे सारा गाँव सम्मान की नजर से देखने लगता है। कहानी में ऊँच पद पाने से जातिभेद को नष्ट होता दिखाया है। जातिभेद का पतन होता दिखाया है।

कहानी 'मदारिन' में स्त्री समस्या के साथ-साथ जातिभेद का चित्रण भी मिलता है। कहानी में एक मदारिन (सरकीबाई) को पुलिस द्वारा शोषण किया जाता है। थानेदार और कांस्टेबल मदारिन के पास आते हैं। वह मदारिन को उसके पति और घर के बारे में पूछने लगते हैं। मदारिन बताती है कि उन्हें उस स्थान से जाना होगा। उस जगह जमींदार हल चलाने वाला

है। मदारिन की बात सुनकर थानेदार को उसकी मदद करनी चाहिए थी। लेकिन वह नहीं करता। मदद करने के बजाय थानेदार मदारिन पर बुरी नजर डालता है। उसका मन मदारिन को पाना चाहता है – "थानेदार के मगज में सामीप्य की सलें सरकने लगीं।"[63] मदारिन कुछ देर बाद थानेदार और कांस्टेबल को पानी देती है। लेकिन दोनों पानी नहीं पीते। दोनों को पानी पीने के समय ही जातिभेद की याद आती है। पानी पीने के समय ही उन्हें उच्च-नीच का भाव आता है – "थानेदार ने कांस्टेबल की ओर देखा। कांस्टेबल ने थानेदार की ओर निहारा। नीची जात की मदारिन के हाथ का पानी पीकर ईमान-धर्म गटक जाएँ? "ना।" दो नाड़ (गर्दन) एक साथ हिलीं।"[64] कहानी में थानेदार मदारिन को पाना चाहता है। वह उसे बुरी नजर से देखता है। लेकिन जब मदारिन के हाथ से पानी पीने की बात आती है तो वह मना कर देता है। अंत में थानेदार मदारिन को अपने हवस का शिकार बनाने की कोशिश भी करता है। पर वह किसी तरह बच जाती है। कहानी में थानेदार के गलत इरादों का चित्रण हुआ है। साथ ही यहाँ स्त्री का दोहोरा शोषण होता दिखाया है। एक तो मदारिन का दलित के रूप में शोषण है। दूसरा एक स्त्री के रूप में शोषण हुआ है।

अतः रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित चेतना का यथार्थ रूप देखने को मिलता है। उनकी कहानियाँ दलित समाज की अभिव्यक्ति करती है। उन्होंने दलितों को हारता नहीं दिखाया है। उनके दलित पात्र शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं। वह अपने हक के लिए लड़ते हैं। वह निराश होकर समस्याओं से भागते नहीं।

ख. सांस्कृतिक संदर्भ :

"संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति सम् + कृ + क्तिन से हुई जिसका तात्पर्य है परिष्कार, तैयार, पूर्णतया एवं मनोविकास आदि।"[65] "संस्कृति को अंग्रेजी में 'कल्चर' कहते हैं। 'कल्चर' शब्द लैटिन के 'कलचुरा' तथा 'कोलियर' शब्द से उद्‌भूत हुआ है। इन लैटिन शब्दों का अर्थ क्रमशः 'उत्पादन' और 'परिष्कार' है। अर्थात उत्पादन के फलस्वरूप 'परिष्कार' है। इस प्रकार शाब्दिक व्युत्पत्ति के आधार पर 'संस्कृति' का अर्थ मानव के एक परिष्कृत व्यवहार से है। यद्यपि जिसका

वह समाज में यह कर प्रयोग करता है।"[66]

संस्कृति किसी भी समाज की अनमोल धरोहर है। संस्कृति ही एक समाज को बांधकर संजोकर रखती है। एक समाज की पहचान है संस्कृति। संस्कृति के जरिए ही हम किसी भी समाज के धाचें को भली-भांति समझ सकते हैं। समाज परंपरागत रूप से अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाता आ रहा है। संस्कृति से ही उसकी पहचान होती है। किसी भी समाज की संस्कृति यानि उस समाज की मान्यताएँ, रीति-रिवाज, जीवन पद्धति, खाद्य, आभूषण, भाषा, धर्म, परंपरा आदि है। संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। अतः यह हर पीढ़ी में बदलती रहती है।

संस्कृति मनुष्य को संस्कारित होने में सहायता करती है। किसी भी समाज को जानने से पहले उसकी संस्कृति का ज्ञान आवश्यक है। संस्कृति को जानने से ही उस समाज से परिचित हो पाएंगे। संस्कृति समाज के विकास एवं उन्नति का कारण बनती है।

(i) परिभाषा :

भारतीय विद्वानों के अनुसार :

1. वाचस्पति गैरोला के शब्दों में, "संस्कृति का अलौकिक पक्ष धर्म है और लौकिक पक्ष कर्म। संस्कृति में जो आचार समन्वित है उनमें धर्म और कर्म दोनों का योगदान है। वेदमूलक स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा प्रतिपादित सदाचार ही धर्म है। सदाचार अर्थात कर्तव्य। इन कर्तव्यों का समुच्चय ही संस्कृति है।"[67]

2. "आचार्य डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'संस्कृति' को मानव की विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति कहा है।"[68]

3. डॉ. देवराज का मत है – "संस्कृति का अर्थ है सृजनात्मक अनुचिंतन, संस्कृति मानव जीवन के सर्व ग्राह्य आत्मिकजीवन रूपों की सृष्टि और उपयोग है।"[69]

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार :

1. टी.एस.इलियट का मत है- "यदि संस्कृति को फलना-फूलना है तो, यह आवश्यक है कि

लोगों में न तो बहुत ही एकता हो और न ही बहुत पार्थक्य।"[70]

2. मैलिनोव्स्की के अनुसार – "वंशानुगत शिल्प तथ्यों, वस्तुओं, तकनीकी प्रक्रियाओं, धारणाओं, अभ्यासों एवं मूल्यों को समाविष्ट करते हैं।"[71]

3. हाबल का मत है – "संस्कृति सीखे हुए व्यवहार व प्रतिमानों का कुल योग है।"[72]

इस तरह अनेक विद्वानों ने संस्कृति की अपने अनुसार परिभाषाएं दी है। संस्कृति परंपरागत रूप से हमें मिली है। संस्कृति जितनी आगे बढ़ती जाएगी वह उतनी नवीन एवं परिष्कार होती जाएगी। संस्कृति सीधे एक समाज का प्रतिनिधित्व करती है। संस्कृति सीखने की वस्तु है। एक समाज अपनी पुरानी पीढ़ी से सीखती है। यह मानवीय मूल्यों को विकसित करती है। मनुष्य को एकता प्रदान करने के लिए संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। संस्कृति को साधारण अर्थ में नियम या मान्यताएँ भी कही जा सकती है।

किसी भी संस्कृति को जानने से पहले उसकी भाषा का ज्ञान अनिवार्य होता है। भाषा के माध्यम से ही उसकी तह तक पहुँच सकते हैं। भारतीय संस्कृति को ही देख सकते है। भारत में बहु संस्कृति होने के कारण भारत को बहु संस्कृति का देश भी कहा जाता है। संस्कृति के लिए भारत पूरे विश्वभर में प्रसिद्ध है। भारत जैसी सांस्कृतिक एकता अन्यत्र दुर्लभ है। संस्कृति मानव समाज की नीव है। यह इसी पर टीकी है। संस्कृति समाज को सीख प्रदान करती है जो समयानुसार बदलती रहती है। उसका बदलाव समाज को नवीनता की ओर ले जाती है।

(ii) तत्व :

समाज में संस्कृति के अनेक तत्व पाए जाते हैं। जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं–

1. ज्ञानात्मक तत्व : यह संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व है। प्राचीन काल से ही मानव संस्कृति ज्ञान सम्पन्न रही है। यह हर समाज को कोई न कोई ज्ञान आवश्य प्रदान करती है। हर संस्कृति में हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञान के बिना मनुष्य का कोई महत्त्व नहीं।

2. विश्वास: हर समाज के मनुष्यों में कोई न कोई विश्वास पाई जाती है। मूर्ति पूजा, चाँद को देवता मानना, व्रत रखना आदि विश्वास ही है। समाज में ऐसे अनेक विश्वास व्याप्त है। कौन

सा सही है, कौन सा गलत यह कोई नहीं कह सकता। यह तो बस मनुष्य की अपनी-अपनी विश्वास है।

3. मूल्य : प्रत्येक समाज का अपना मूल्य होता है। समाज अपने मूल्यों को कभी टूटने नहीं देता। समाज के सदस्यों को अपने मूल्यों का पालन करना होता है। धर्म, विवाह, आचरण आदि इसी के उदाहरण है। समाज के नियमों को मूल्य माना जाता है। मूल्य समाज में एकरूपता लाती हैं।

4. मानदंड : प्रत्येक समाज का अपना मानदंड होता है। समाज का मानदंड यानि समाज के नियम। मनुष्य को समाज द्वारा बनाए गए मानदंड का पालन करना होता है। बिना मानदंड के समाज का निर्माण संभव नहीं है। मनुष्य द्वारा मानदंडों को न मानने पर दंडित भी किया जाता है।

5. संकेत : संकेत संस्कृति का अन्य एक तत्व है। मनुष्य अनेक प्रकार के संकेतों द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करता है। वह संकेतों के द्वारा ही अन्य व्यक्ति से बात-चीत करता है। इससे भावों के आदान-प्रदान में कोई बाधा नहीं होती। मनुष्य सिर्फ व्यक्ति ही नहीं जानवरों से भी संकेत द्वारा भावों की अभिव्यक्ति कर सकता है।

6. भाषा : भाषा संस्कृति का एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व है। भाषा के द्वारा ही मनुष्य एक संस्कृती को जान पाता है। भाषा मनुष्य द्वारा अपने भावों को व्यक्त करने में सहायक होती है। भाषा से कुछ भी कहा और सुना जा सकता है। भाषा अपने भावों को व्यक्त करने का एक माध्यम है। किसी भी समाज की संस्कृति को जानने के लिए उसकी भाषा को जानना जरुरी है।

7. साहित्य: साहित्य अन्य एक महत्वपूर्ण तत्व है। "साहित्य समाज का दर्पण है।"[73] समाज में जो भी घटित होती है, वह साहित्य द्वारा प्रस्तुत की जाती है। किसी भी अनजान समाज की संस्कृति के बारे में साहित्य से ही पता चलता है। साहित्य मनुष्य को वह दिखाती है जो समाज में व्याप्त है। किसी भी संस्कृति को जानने के लिए साहित्य माध्यम का काम करती है।

(iii) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सांस्कृतिक जीवन :

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सांस्कृतिक जीवन का चित्रण मिलता है। उनकी

कहानियाँ ग्रामीण जीवन का चित्रण करती है। उनकी कहानियों में सांस्कृतिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। अन्धविश्वास, पूजा-पाठ, व्रत, विवाह, तंत्र-मंत्र, आभूषण आदि इनकी कहानियों में व्याप्त है। उन्होंने सांस्कृतिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

(अ) परंपरा : रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'मांडी' में सांस्कृतिक जीवन का चित्रण हुआ है। इस कहानी में मांडी नाम की एक रीति का जिक्र किया गया है। यह गाय को दी जाती है। गाय को मांडी देने के बाद ही घर वाले खाना खा सकते हैं। कहानी में मांडी का चित्रण इस प्रकार है - "मांडी! ग्रामीण अमावस्या के दिन पहली सिंकी रोटी और उस पर खीर या चावल रख कर गाय को देते हैं। इसे पितारों का तर्पण और पुण्य माना जाता है। उनके दूसरे हाथ में पानी का गिलास था। मांडी खिलाने से पहले और मांडी खिलाने के बाद गाय के मुँह पर पानी डालना रीति है।"[74] यहाँ गाँव की एक रीति का वर्णन कहानीकार ने किया है।

कहानी में यह भी बताया गया है कि बिना मांडी दिए भोजन नहीं कर सकते। कहानी का पात्र दानीदास जब मांडी देने निकलता है तो उसे गाय नहीं मिलती। जिस कारण वह चिंतित होने लगता है। वह सोचता है कि अगर मांडी नहीं दी तो घर में सब भूखे रहेंगे। यह एक रीति है इसलिए मांडी देना आवश्यक है। इसी कारण से वह मांडी देने के लिए दिनभर भटकता रहता है।

रत्नकुमार सांभरिया की 'बेस' कहानी में सांस्कृतिक झलक देख सकते हैं। यहाँ बेस का अर्थ है पहनावा। कहानी में बेस के बारे में बताया गया है। बेस एक पहनावा है जिसे राजपूत महिलाएँ पहना करती है। बेस संस्कृति का प्रतीक है। यहाँ बेस को देखकर राजपूत महिलाओं की संस्कृति का चित्रण किया है। राजपूत महिलाओं के अलावा अन्य कोई बेस नहीं पहनता। बेस राजपूत महिलाओं की पहचान है। जिसे देख अगनी को छेड़ रहे पुरुष भी धोखा खा जाते हैं। अगनी के हाथ में बेस देख वह कहने लगते हैं - "यह आदिवासी नहीं, किसी राजपूत की बीनणी है। बेस देख। लहँगा काचली, कुरती, लुगड़ी, चुडा। खुद तो मरेगा ही, मुझे भी मरवाएगा।"[75] इस तरह यहाँ बेस के बारे में बताया गया है। यह कहानी बेस पर ही आधारित है। बेस के जरिए एक समाज की संस्कृति का चित्रण किया गया है। बेस कोन पहन सकता है

कोन नहीं यह भी निर्धारित किया गया है। इसी बेस के कारण अगनी के साथ बुरा होते-होते वह बच जाती है।

'इत्तफाक' कहानी में एक पति-पत्नी के बारे में है। वह दोनों पैंतालीस साल बाद इत्तफाक से एक बस में मिलते हैं। बूढ़ी, बूढ़ा को देखकर पहचान लेती है। बूढ़ा की हालत देखकर उसे तरस आता है और अपने घर ले जाती है। कहती है कि उसकी पोती की शादी है। कहानी में शादी के रीति-रिवाजों का जिक्र किया गया है। जैसे –"हल्दी लगे उबटन से उसका रंग सुनहरा हो रहा था। कपड़े चिकने। उसके हाथ में कांगन डोरा बंधा था।"[76] यहाँ शादी में हल्दी की रश्म का चित्रण किया गया है। दिखाया गया है कि शादी में दुल्हन या दूल्हा को हल्दी लगाना एक परंपरा है। यह सदियों से चलती आ रही है। यह एक भारतीय संस्कृति ही है।

इसके अलावा यहाँ शादी के समय कन्यादान का वर्णन है। भारतीय समाज में शादी में कन्यादान एक बड़ी रीति है। यह हर लड़की के माता-पिता को करना पड़ता है। यह एक परंपरा है। कहानी में दिया है - "रात चौक में फेरे पड़ रहे थे। कन्या और वर पाटे पर बैठे थे। पंडित जी ने चादर का पर्दा कर कन्या का हाथ वर के हाथ में सौंप कन्यादान की आवाज लगा दी थी।"[77] कहानी में संस्कृति की झलक देख सकते हैं।

'विद्रोहिणी' एक विधवा स्त्री की कहानी है। यहाँ विधवा स्त्री (सुंदरी) द्वारा पति की अस्थियों को प्रयागराज ले जाने का चित्रण है। हिन्दू समाज की यह एक संस्कृति है। वह मृतक के अस्थियों को प्रयागराज ले जाते हैं बहाने। उनका मानना है कि ऐसा करने से मृतक की आत्मा को शान्ति मिलती है। इसे एक मान्यता कह सकते हैं। यह लोगों का विश्वास है। कहानी में सुंदरी अपने पति की अस्थियाँ प्रयागराज ले जाती है। "त्रिवेणीधाम –प्रयागराज आ गया था। यहाँ गंगा-यमुना-सरस्वती तीनों बहनें गलबहियाँ लेती हैं। यहीं पर मृतक की अस्थियों का विसर्जन कर परिजन स्नान करते हैं। पांडा तर्पण कराते हैं। पैसा पाते हैं।"[78]

कहानी में शिवबाबू नाम का एक व्यक्ति का चित्रण है। वह सुंदरी की दफ्तर में काम करता

था। उसकी नजर सुंदरी पर थी। इसलिए वह तांत्रिक के पास जाकर ठीकरी पहनता है। वह तांत्रिक को पैसा भी देता है। वह चाहता है कि किसी तरह सुंदरी उसे मिल जाए - "सुंदरी प्राप्त हो जाए, वह ठीकरी पहनने लगा था, गले में। लाल कपड़े बंधी। मंत्र बुझी। सम्मोहिनी। इच्छाधारी। उसने ठीकरी मस्तक से लगाई। धोक दी। पाँच हजार रूपए यूँ ही नहीं दिए तांत्रिक को।"[79] यहाँ तांत्रिक के पास जाना अंधविश्वास का चित्रण किया गया है। पढ़ लिख कर नौकरी करने वाला व्यक्ति भी तंत्र-मंत्र पर विश्वास करते है। अंधविश्वास लोगों के मन में कितनी हावी हो गई है उसका यथार्थ चित्रण है।

'कील' कहानी एक बूढ़ी की कहानी है। इसमें संस्कृति की झलक देख सकते हैं। कहानी में एक जगह सोनवती (बूढ़ी) द्वारा पूर्णमासी की व्रत रखने के बारे में है। कहानी में बताया है- "पूर्णमासी आई। सोनवती का व्रत था। इस दिन दोपहर को वह कथा करती और अपने पति की मूर्ति सामने रख घंटी बजाया करती थी। उसके बाद चरणामृत बाँट कर भोजन ग्रहण किया करती थी।"[80] यहाँ पूर्णमासी व्रत का जिक्र है। यह लोगों के बीच एक विश्वास है। लोग ऐसे पिवित्र दिन में व्रत रखकर अपनी मन की इच्छा पूरी करते हैं। लोगों का मानना है कि इस दिन व्रत रखने से मन की इच्छा पूरी होती है। जीवन मंगलमय रहता है।

कहानी 'बिल्लो का ब्याह' में भी संस्कृति की झलक मिलती है। कहानी का पात्र पपेंद्र की पत्नी शारदा का देहांत हो गया था। बारहवाँ के दिन घर वाले मृत्युभोज की बात कर रहे थे। पपेंद्र बहुत दुखी था। वह कुछ करने की हालत में नहीं था। उसे बिना बताए ही घर वालों ने सब तय कर लिया था। कहानी में इसका चित्रण है - "हवन कुंड में मेरे हाथों हवन सामग्री डलवाकर घड़े-सी दबी-दबी गर्दन, बैठी नाक और चपर-चपर बोलने वाले उस अपढ़ छोकरे से पंडित जी ने हवन आहूत दिया था। कन्याएँ बैठा दी गई थीं। आगंतुकों की पाँतें जीमने लगी थीं।"[81] यहाँ मृत्यु के बाद के रीति-रिवाज का जिक्र किया गया है। मृत्यु के बाद जो रीति-रिवाज होते हैं उसका चित्रण यहाँ है। इसमें पगड़ी की रस्म भी की जाती है। यहाँ इसका बस जिक्र है।

शारदा की मृत्यु के बाद शारदा के घर वाले पपेंद्र की शादी शारदा की बहन बिल्लो से

करवा देते हैं। पहले पपेंद्र शादी का विरोध करता है। बिल्लो बहुत ही छोटी थी। लेकिन शारदा के घर वाले जबरदस्ती शादी करवा देते हैं। कहानी में शादी का वर्णन है – "फेरे पड़ रहे थे। मैं और बिल्लो दोनों दो पट्टों पर बैठे थे, एक-दूसरे से जुड़े। पर्दा पड़ा था। बिल्लो का हाथ मेरे हाथ में था। कन्यादान की होड़ मची थी।"[82] यहाँ शादी की रस्म का वर्णन है। हिन्दू समाज में शादी किस तरह होती है उसका चित्रण किया गया है।

कहानी में शादी के बाद दुल्हन का दो दिन ससुराल रहकर पीहर जाने की रिवाज का जिक्र किया गया है। शादी के बाद लड़की ससुराल में दो दिन रूक कर फिर वह पीहर जाती है। बिल्लो भी शादी के बाद ससुराल में दो दिन रहती है। फिर वह पीहर जाती है। कहानी में दिया गया है - "रिवाज है। दुल्हन दो दिन ससुराल रुक कर पीहर जाएगी।"[83] यहाँ शादी के बाद की रीति-रिवाज का चित्रण किया गया है।

'गूंज' कहानी में भी संस्कृति की झलक देख सकते हैं। कहानी में एक जगह स्त्रियों के घूँघट में रहने का वर्णन मिलता है। सावन में स्त्रियाँ झूला झूलना चाहती थी। वह सावन का आनंद लेना चाहती थी। पर गाँव के नियमों के कारण वह अपना घूँघट उठाना नहीं चाहती थी। गाँव का रिवाज होता है कि शादी करने के बाद औरतें पराए मर्द के सामने घूँघट में रहती है। उन्हें घूँघट उठाने की इजाजत नहीं है। कहानी में भी ऐसा ही होता है। सावन में औरतें झुला झूलना चाहती है पर पात्र मालू के सामने घूँघट नहीं हटा सकती। कहानी में दिया गया है – "कुछ नवोढ़ाए गाँव में पहला सावन झूल रही थीं। उन्होंने घूँघट में सलाह की, "अगर मालू आँख मींचकर झोटे दे, तो हम भी सावन कर लें।"[84] यहाँ घूँघट करना सदियों से चली आ रही एक परंपरा है। हिन्दू समाज की हर संस्कृति में घूँघट देखने को मिलता है। गाँव में घूंघट अनिवार्य होता है।

कहानी में सावन तीज का वर्णन भी मिलता है। सावन के आते ही रमणिया एक जुट होकर झुला झूलने लगती है – "सावनी तीज के दो दिन थे। कुँए से सौ-सवा सौ कदम दूर पीपल का एक भारी पेड़ था। उस पर हिंडोला पड़ा था। हिंडोले पर रमणिया झूल रही थीं। नई

नवेली।"[85] वह वहाँ नाच रही थी। गा रही थी – "एक-एक कर रमणियाँ झूल रही थीं। मालू की आँखे मिंची थीं। कोकिल-कंठी सुहागिनें सावन गा रही थीं। मालू की आँखे मिंची थीं। औरतें घेरा बनाकर नृत्य करने लगी थीं। मालू की आँखे मिंची थीं। नृत्यांगानाओं की चूड़ियाँ खनक रही थीं, पायलें झलक रही थीं। मालू की आँखें मिंची थीं। दृश्य रमणीय था। मालू की आँखे मिंची थीं। मालू से आँखे खोलने के लिए कहाँ गया। उसकी आँखे सीधी गई। बाजरे का खेत था। उसमें छोटी सी टिबरी थी। उस पर एक मौर नाच रहा था। उसकी पीठ पर पंखों का मुकुट सा धरा था।"[86] यहाँ सावन में झूला झूलने की परंपरा को दिखाया गया है।

(आ) अंधविश्वास :

'अनुष्ठान' कहानी में कहानीकार ने एक पाखंडी तांत्रिक का चित्रण किया है। वह अपने तंत्र-मंत्र से गाँव के स्त्रियों को ठगता था। यह कहानी अंधविश्वास पर आधारित है। सरस्वती इस कहानी की प्रमुख पात्र है। उसका बच्चा न हो पाने के कारण वह एक तांत्रिक के पास जाती है। तांत्रिक उसे जो कहता है वह सब करती है। सब कुछ करने के बाद भी बच्चा न होने के कारण वह परेशान होती है। एक दिन तांत्रिक सरस्वती को कहता है कि उसे किसी बच्चे की बलि देनी होगी - "सरस्वती, तुम्हें किसी बच्चे के लहू से कच्चे कलवों का तर्पण करने की खातिर अनुष्ठान करवाना होगा। जैसा स्वस्थ और सुन्दर बालक तुम चाहती हो, वैसा ही...।"[87]

सरस्वती पहले नहीं मानती है। बाद में वह तैयार हो जाती है। उसे बच्चे के लालच ने ऐसा करने पर मजबूर कर दिया था। यहाँ कहानीकार ने तंत्र-मंत्र जैसे अंधविश्वासों का यथार्थ चित्रण किया है। किस तरह अंधविश्वासों के कारण लोग गलत कदम उठाते हैं उसका वर्णन है। कहानी में गाँव के अन्य दो औरतों की अंधविश्वास के कारण दो बच्चों की जान गई थी। बच्चा पाने की लालच में औरतें यह भी भूल गई कि जिस बच्चे की बलि चढ़ाकर वह बच्चा पाना चाहती है वह भी किसी अन्य माँ के बच्चें हैं। अगर वह तांत्रिक के पास न जाकर यदि डॉक्टर के पास जाती तो शायद ठीक हो सकता था। अंधविश्वास के कारण वह ऐसा नहीं करती। कहानी में ग्रामीण जीवन में व्याप्त अंधविश्वास का चित्रण है। ग्रामीण लोग किस तरह अंधविश्वास के शिकार होते हैं यह कहानी इसका उदाहरण है।

'बूढ़ी' कहानी में संस्कृति की झलक देख सकते हैं। कहानी में बूढ़ी को अपने नाती के बारे में सोचता दिखाया है। उसके नाती को बुखार आता है। बूढ़ी सोचने लगती है – "बूढ़ी के नाती को उस रात बुखार आ गया था। बूढ़ी का मानना था, बालक को गाँव में किसी की नजर लगी है। वह उस पर नून-राई का टोटका कर उसके ठीक होने की दुआएं मांगती रही थी। अब वह अपने नाती को गाँव में ले जाएगी, तो उसके माथे पर काला टीका जरूर लगाएगी। उस दिन उसकी मत मारी गई थी।"[88] कहानी में बूढ़ी द्वारा अंधविश्वास का चित्रण किया है। गाँव में लोगों का मानना है कि बच्चा अगर बीमार हुआ तो जरूर उसे बुरी नजर लगी है। बुरी नजर के कारण ही बच्चे की ऐसी हालत हुई। इसलिए उसकी नजर उतारनी चाहिए। कहानी में बूढ़ी का भी यही मानना था। उसके नाती का बुखार का कारण नजर को मानती है। इसलिए वह काला टीका लगाने का सोचती है। एक तरह से देखा जाय तो यह लोगों का विश्वास है। यह विश्वास सदियों से चली आ रही है। गाँव में इस तरह का विश्वास हर जगह व्याप्त है।

कहानी में और एक जगह अंधविश्वास का चित्रण हुआ है। बूढ़ी के पास पैसा न होने के कारण वह अपनी कांसा की थाली मास्टर के पास गिरवी रखती है। मास्टर उस थाली को देख सोचता है– "मास्टर जी के मन में खुशी की एक फुरफुरी सी उठी। बूढ़ी के ब्याह की थाली है। शुभ है। बूढ़ी सालों जी रही है। अपनी बड़ी बिटिया के दान में दे दूंगा इसे।"[89] जिसकी उम्र लंबी होती है उनकी चीजे लेने से शुभ मानी जाती है। लोगों में इस तरह की मान्यताएँ प्रचलित है। मास्टर भी बूढ़ी की थाली को शुभ मानकर अपनी बेटी को देने का सोचता है।

'लाठी' कहानी में भी अंधविश्वास का स्पष्ट चित्रण मिलता है। सलमा और चाँद के घर एक उल्लू आती है। उसकी आवाज सुनकर सलमा डर जाती है। वह रोते हुए अपने पति से कहती है- "उनकी छत की मुंडेर पर उल्लू आ बैठा था। वह हू-हू-हू की डरावनी आवाजें करने लगा था। सलमा का दिल बैठने की हद तक आ पहुंचा था। रुआंसी बोली- आधी रात जिसकी मुंडेर पर उल्लू आ बैठता है, उसके घर मौत आती है।"[90] उल्लू को लेकर लोगों में यह मान्यता पुराने

समय से ही है। यह मान्यता लोगों में आज भी देखी जाती है। यह एक अंधविश्वास ही है। कहानी में हरमन चचा के लाठी लाने से सलमा और चाँद को लगता है कि वह उन्हें मारने लाया है। रात भर दोनों डर-डर कर रहते हैं। तभी उस उल्लू को देखते हैं। डर के मारे सलमा को लगता है कि उनकी मृत्यु होने वाली है। वह वैसे ही डरी हुई थी उस उल्लू को देखकर और भी डर जाती है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सांस्कृतिक जीवन का चित्रण मिलता है। उन्होंने अपनी कहानियों में विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक रूप का चित्रण किया है। उनकी कहानियाँ संस्कृति से ओत-प्रोत है। उन्होंने शादी, पूजा, त्यौहार जैसे विभिन्न सांस्कृतिक रूपों को अपनी कहानी में स्थान दिया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। समाज में जो कुछ घटित होता है वह साहित्य के जरिए व्यक्त किया जाता है। साहित्य को समाज का आईना कह सकते हैं। समाज में घटित क्रियाकलापों का चित्रण साहित्य में होता है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में समाज और संस्कृति का यथार्थ रूप मिलता है। उन्होंने समाज और संस्कृति के विविध रूपों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। विवाह से लेकर के सावन तीज जैसे त्यौहारों का मनोरम चित्र अंकित किया है। उनकी कहानियों में समाज और संस्कृति का जीवंत रूप साकार हुआ है।

संदर्भ:

1. https://www.scotbuzz.org/2017/04/samaaj-k-arth-evam-paribhasha.html?m=1
2. https://www.scotbuzz.org/2019/05/samaj-kya-hai.html
3. साहित्य, समाज और हिंदी सिनेमा, डॉ.सुनील बापू बनसोडे, पृ. 59
4. समाजवाद, डॉ.संपूर्णानंद, पृ.19
5. हिंदी साहित्य: सामाजिक चेतना, डॉ.रत्नाकर पाण्डेय, पृ. 154
6. निराला के कथा साहित्य में व्यक्ति एवं समाज का स्वरुप, डॉ.श्यामधारी नरेश यादव, पृ. 158
7. वही, पृ. 158
8. https://digicgvision.in/samaj-ka-arth-paribhasha-visheshata/
9. एयरगन का घोड़ा, हुकम की दुक्की, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 27
10. वही, पृ. 37-38
11. दलित समाज की कहानियाँ, लाठी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 133
12. एयरगन का घोड़ा, मांडी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 20
13. दलित समाज की कहानियाँ, सवांखें, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 191-192
14. वही, खेत, पृ. 235
15. वही, फुलवा, पृ. 23
16. वही, चपड़ासन, पृ. 178-179
17. वही, पृ. 181
18. वही, बात, पृ. 151
19. वही, बकरी के दो बच्चे, पृ. 35
20. वही, बूढ़ी, पृ. 54
21. वही, पृ. 60
22. दलित समाज की कहानियाँ, बूढ़ी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 56
23. एयरगन का घोड़ा, कील, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 162
24. वही, पृ. 172
25. एयरगन का घोड़ा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 173
26. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ.नगेंद्र, डॉ.हरदयाल, पृ. 434
27. स्त्री विमर्श और नेपथ्य राग, कमलेश कुमारी, पृ. 15

28. एयरगन का घोड़ा,बेस, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 81
29. वही, बिल्लो का ब्याह, पृ. 132
30. दलित समाज की कहानियाँ, आखेट, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 44-45
31. एयरगन का घोड़ा, अनुष्ठान, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 39
32. वही, पृ. 44
33. एयरगन का घोड़ा, रत्नकुमार सांभरिया, अनुष्ठान, पृ. 45
34. दलित समाज कि कहानियाँ, गूंज, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 64
35. वही, इत्तफाक, पृ. 78
36. एयरगन का घोड़ा, राइट टाइम, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 215
37. दलित समाज की कहानियाँ,फुलवा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 23
38. एयरगन का घोड़ा, पुरस्कार, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 115
39. वही, पृ. 120
40. वही, धूल, पृ. 152
41. वही, पृ. 153
42. वही, विद्रोहिणी, पृ. 125
43. वही, पृ. 127
44. वही, बंजारन, पृ. 220
45. एयरगन का घोड़ा, बंजारन , रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 221
46. वही, पृ. 224
47. वही, सनक, पृ. 208
48. वही, पृ. 209
49. वही, गाड़िया, पृ. 21
50. वही, पृ. 22-23
51. प्रतिरोध और सिनेमा, महेंद्र प्रजापति, पृ. 91
52. दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ. 72
53. दलित समाज की कहानियाँ, मेरी बात, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 10-11
54. एयरगन का घोड़ा, मांडी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 7
55. वही, पृ. 20
56. दलित समाज की कहानियाँ, शर्त, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 89

57. दलित समाज की कहानियाँ, शर्त, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 92
58. वही, बदन दबना, पृ. 265
59. वही, फुलवा, पृ. 27
60. वही, बकरी के दो बच्चे, पृ. 32
61. खेत तथा अन्य कहानियाँ, बिपर सूदर एक कीने, पृ. 94
62. वही, पृ. 100
63. स्त्री विमर्श : रत्नकुमार सांभरिया की चयनित कहानियाँ, संपादक- डॉ. अनामिका, पृ. 162
64. वही, पृ. 162-163
65. भारतीय संस्कृति के विविध आयाम, डॉ.राजदेव दूबे, कुँवर पंकज सिंह, पृ. 18
66. वही, पृ. 18
67. भारतीय संस्कृति और कला, वाचस्पति गैरोला, पृ. 68
68. भारतीय संस्कृति के विविध आयाम, डॉ.राजदेव दूबे, कुँवर पंकज सिंह, पृ. 18
69. वही, पृ. 18
70. वही, पृ. 19
71. वही, पृ. 19-20
72. https://www.kailasheducation.com/2020/06/sanskriti-arth-paribhasha-visheshtaye
73. https://quizsansar.com/sahitya-samaj-ka-darpan-hai-eassay-in-hindi-nibandh
74. एयरगन का घोड़ा, मांडी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 7
75. वही, बेस, पृ. 81
76. दलित समाज की कहानियाँ, बेस, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 84
77. वही, झुनझुना, पृ. 87
78. एयरगन का घोड़ा, विद्रोहिणी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 127
79. एयरगन का घोड़ा, विद्रोहिणी, पृ. 124
80. वही, कील, पृ. 168
81. वही, बिल्लो का ब्याह, पृ. 131
82. वही, पृ. 137

83. एयरगन का घोड़ा, बिल्लो का ब्याह, पृ. 138

84. दलित समाज की कहानियाँ, गूंज, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 66

85. वही, पृ. 66

86. वही, पृ. 67

87. एयरगन का घोड़ा,, अनुष्ठान, पृ. 41

88. दलित समाज की कहानियाँ, बूढ़ी, पृ. 57

89. वही, पृ. 55

90. वही, लाठी, पृ. 135

चतुर्थ अध्याय

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ: राजनीतिक और आर्थिक संदर्भ

क. राजनीतिक संदर्भ:

राजनीति' शब्द 'राज' और 'नीति' दो शब्द के योग से बना है। प्रायः 'राज' से राज्य व शासन तथा 'नीति' से नियम का अर्थ लगाया जाता है अर्थात किसी भी राज्य को चलाने के लिए जो नीतियाँ बनाई जाती है वे सब राजनीति के अंतर्गत आती है। अंग्रेजी में राजनीति 'पॉलिटिक्स' का पर्याय है जो यूनानी शब्द पोलिस से बना है जिसका अर्थ नगर या राज्य होता है। नीतिपूर्वक ढंग से राज्य चलाने के तरीका को राजनीति कहा जाता है। "राजनीति शब्द का अंग्रेजी पर्याय शब्द 'पॉलिटिक्स' है। शब्द राजधर्म तथा समाजशास्त्र का ही पर्यायवाची है। 'पॉलिटिक्स' यूनानी भाषा के 'पॉलिस' शब्द से बना है, जिसका अर्थ नगर राज्य से है। इसका विशेषण है – नागरिक शास्त्र। रूढ़ होते-होते यही शब्द आम बोलचाल की भाषा में पॉलिटिक्स या राजनीति के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है।"[1] राजनीति राज्य चलाने की नीति को कहा जाता है।

राजनीति का अर्थ है शासन व्यवस्था। जनता के भले के बारे में सोचना। जनता को जागरूक करना। देश की सुरक्षा का ध्यान रखना। देश के लिए लाभ-नुकसान देखना। ये सारी बातें राजनीति के अंतर्गत ही आती हैं। राजनीति एक व्यवस्था है, जो देश को सामाजिक-आर्थिक रूप में विकसित करने का प्रयास करता है। राजनीति सत्ता का मूलाधार है। राजनीति के लिए सत्ता का होना अनिवार्य है। देश चलाने के लिए शासन के अपने सिद्धांत एवं प्रणालियाँ होती हैं। यह अपने सिद्धांत एवं प्रणालियों के अनुसार ही कार्य करते हैं। इनके सिद्धांत सभी जनसाधारण पर लागु होते हैं।

राजनीति देश के नीति नियम को कहा जाता है। मानव संघ, सरकार, राज्य राजनीति के अंतर्गत आते हैं। राजनीति की अनेक समस्याएँ जैसे- जातिवाद, प्रशासनिक, पुलिस व्यवस्था,

भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता आदि। वर्तमान समय में इन सारी समस्याओं से जनता को जूझना पड़ रहा है। जनता राजनीति की समस्याओं से परेशान हैं। यह एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में जनता के समक्ष उभर कर आई है। हम सोचते हैं कि आज केवल नेता ही राजनीति कर रहे हैं। पर ऐसा नहीं है। राजनीति नेता के अलावा भी हर व्यक्ति को राजनीति करते देखा जाता है। किसी भी कार्य को करने से पहले सोच-विचार कर लेना राजनीति ही है। कहा कितना पैसा खर्च करना है, कैसे खर्च करना है, बच्चों को कोन से स्कूल में देना है, किस विषय में पढ़ना है, पिता की संपत्ति में कितना हिस्सा मिलेगा, परिवार को कैसे चलाया जाय आदि राजनीति के अंतर्गत ही आते हैं।

अपना काम करवाने के लिए सामने वाले व्यक्ति को मस्का मारना भी राजनीति ही है। शिक्षा, कार्यालय, व्यापार आदि के क्षेत्र में सबसे अधिक होती है। नौकरी के क्षेत्र में भी देख सकते हैं। जिसका पहचान और पैसा होता है, नौकरी उसे ही मिलती है। अब शिक्षा के क्षेत्र में ही देख सकते हैं कि अच्छे-अच्छे पद पर दाखिला पाने के लिए भी पहचान की आवश्यकता होती है। अन्यथा समर्थ व्यक्ति का भी कुछ नहीं हो सकता। उसे हर जगह न ही सुननी पड़ती है। एक तरह से देखा जाय तो समाज में हर जगह राजनीति ही विद्यमान है। आज कोई भी स्थान राजनीति से अछुत नहीं है।

(i) परिभाषा :

विद्वानों के अनुसार राजनीति की परिभाषा निम्नलिखित हैं:

डेविड. जी. स्मिथ के अनुसार, "राजनीति किसी भी समाज में उन सभी व्यक्तियों, संस्थाओं तथा संगठनात्मक ढाँचे से सम्बंधित होता है जिन्हें उस समाज में सुव्यवस्था की स्थापना, अपने सदस्यों के अन्य सामूहिक कार्यों के सम्पादन तथा उनके मतभेदों के समाधान करने के लिए सर्वाधिक अन्तभार्वी और अंतिम माना जाता है।"[2]

गार्नर के अनुसार, "राजनीति धर्मशास्त्र की शुरुआत और अंत राज्य के साथ होता है।"[3]

(ii) तत्व :

1. सरकार : सरकार राजनीति का एक आवश्यक तत्व है। बिना सरकार के राजनीति नहीं हो

सकती। राजनीति का अर्थ है देश को चलाने के लिए बनाए गए नियम। सरकार ही नहीं होगी तो देश कैसे चलेगा। देश चलाने के लिए नेता की जरुरत होती है। इन्हीं नेताओं के द्वारा राजनीति की जाती है। सरकार जनता को नियंत्रण करने के लिए नीतियाँ बनाती है।

2. प्रशासन : प्रशासन राजनीति का अन्य एक महत्वपूर्ण तत्व है। सरकार की तरह प्रशासन भी राजनीति के लिए आवश्यक है। प्रशासन के आभाव में सब कुछ नष्ट हो सकता है। कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका, नेता आदि इसी के अंतर्गत आते हैं।

3. कानून : राजनीति में कानून भी महत्वपूर्ण तत्व है। बुराई को रोकने के लिए कानून व्यवस्था का होना आवश्यक है। लोगों को नियंत्रण करने के लिए कानून व्यवस्था जरुरी है। सरकार देश तथा शासन व्यवस्था को बनाये रखने के लिए नियम बनाता है। कानून तोड़ने पर सजा दी जाती है।

4. न्याय : न्याय राजनीति का एक महत्वपूर्ण तत्व है। नागरिकों के लिए न्याय व्यवस्था उचित होना चाहिए। तभी नागरिकों का भला होगा। न्याय व्यवस्था उचित न होने से नागरिकों को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। राजनीति में न्याय को ध्यान में रखना जरुरी है।

(iii) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में राजनीतिक जीवन :

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में राजनीतिक संदर्भ का सजीव वर्णन हुआ है। उनकी कहानियों में राजनीति की बहुलता है। उन्होंने अपनी कहानियों में भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरूपयोग जैसे आदि मुद्दों को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। उनकी 'बाढ़ में वोट', 'झुनझुना', 'आखेट', 'भभूल्या', 'पुरस्कार' आदि कहानियों में राजनीतिक रूप का स्पष्ट चित्रण मिलता है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में भ्रष्ट एवं राजनीति करते पात्रों का वर्णन किया है। उन्होंने भ्रष्ट पुलिस एवं उनके द्वारा किए गए अत्याचारों का यथार्थ चित्रण भी अपनी कहानियों में किया है। रत्नकुमार सांभरिया ने 'बदन दबना' कहानी में राजनीति का सजीव वर्णन किया है- "राजनीति की माया भी खूब है। वह आदमी को बार-बार हराकर भी मृगमरीचिका में उलझाए रहती है। साँस-साँस जीत की उम्मीदें उठती हैं। राजनीति में प्रायः पाँच साल की रात और पाँच साल का दिन होता है, लेकिन हलका का दिन कभी उगा नहीं।

जुनून जड़ी के ताप सा बना रहता है। वह सफेद सफ्फाफ धोती पर सफेद रेशम का कुरता पहनता। कंधे पर खादी की सदरी(जाकेट) पड़ी रहती। राजनीति के दोहे गुनगुनाता।"[4] उन्होंने यहाँ राजनीति के बारे में बताया है। चुनाव में नेता बार-बार हारने पर भी चुनाव लड़ने की ताकत रखता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सत्ता का दुरुपयोग का भी चित्रण मिलता है। बड़े-बड़े पदों पर रहने वाले कर्मियों द्वारा अपने सत्ता का गलत प्रयोग करते दिखाया गया है। सत्ता के दम पर घोटाला करते हैं। रत्नकुमार सांभरिया ने कहानियों के माध्यम से राजनीति का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कहानियों में सत्ता का गलत प्रयोग देखने को मिलता है। जमींदारों, पुलिस, मास्टर, अधिकारी आदि सत्ता का गलत प्रयोग करते हैं। सत्ता का प्रयोग समाज के हित के लिए की जानी चाहिए। पर यथार्थ जीवन में ऐसा नहीं है। वे सिर्फ अपना फायदा देखते हैं। अपने लिए सत्ता के दम पर जनता के साथ कुछ भी कर सकते हैं। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में इसका यथार्थ चित्रण किया है। इससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं को हमारे समक्ष प्रकट किया है। समाज की सच्चाईयों को रूप प्रदान किया है। सत्ता के बल पर कमजोर लोगों पर अत्याचार करता है।

रत्नकुमार सांभरिया ने आर्थिक स्थिति का भी चित्रण अपनी कहानियों में किया है। उनकी कहानियाँ समाज में व्याप्त गरीबी का सजीव रूप प्रस्तुत करती है। उनकी कहानियों के पात्र गरीब होते हुए भी सहनशील है। वह अपना पेट मेहनत से भरते हैं। रत्नकुमार सांभरिया ने अधिकतर गरीबों के बच्चों को पढ़ते दिखाया है। साथ ही पढ़-लिखकर नौकरी पाते दिखाया है। गरीब माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए खूब मेहनत करते हैं। वे अपने बच्चों को बड़ा अफसर बनाने का सपने देखते हैं। वह अपने बच्चों से स्कूल छुटने नहीं देता। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति आर्थिक स्थिति सुधार सकता है। इसलिए उन्होंने शिक्षा को महत्त्व दिया है। रत्नकुमार सांभरिया ने आर्थिक शोषण का भी चित्रण किया है। जमींदार अपने फायदे के लिए जनता का आर्थिक शोषण करता है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में आर्थिक शोषण का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

(अ) भ्रष्टाचार :

"भ्रष्टाचार का अर्थ भ्रष्ट आचरण से लिया जाता है। भ्रष्टाचार 'भ्रष्ट और आचरण' दो पदों के योग से बना है। भ्रष्टाचार शब्द का अर्थ है- निकृष्ट आचरण अथवा बिगड़ा हुआ आचरण। भ्रष्टाचार संस्कृत भाषा के दो शब्द 'भ्रष्ट' और 'आचार' से मिलकर बना है। 'भ्रष्ट' का अर्थ होता है – निम्न, गिरा हुआ, पतित, जिसमें अपने कर्तव्य को छोड़ दिया है तथा 'आचार' शब्द का अर्थ होता है आचरण, चरित्र, चाल, चलन, व्यवहार आदि। अतः भ्रष्टाचार का अर्थ है – गिरा आचरण अथवा चरित्र और भ्रष्टाचारी का अर्थ होता है- ऐसा व्यक्ति जिसने अपने कर्तव्य की अवहेलना करके निजी स्वार्थ के लिए कुछ ऐसे कार्य किए हैं, जिनकी उससे अपेक्षा नहीं थी।"[5]

लालच में आकर लोग गलत से भी गलत कार्य कर देते हैं। आज-कल भ्रष्टाचार अनेक जगहों पर देख सकते हैं। जैसे- कार्यालय, न्यायालय, अस्पताल, शिक्षा संस्थाओं आदि। एसी कोई भी जगह नहीं, जो भ्रष्टाचार से अछुता हो। भ्रष्टाचार हर जगह व्याप्त है। इससे आम जनता को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। डेविड एच. बेली के अनुसार, "भ्रष्टाचार एक सामान्य शब्दावली है जिसमें अपने व्यक्तिगत लाभ के विचार के परिणाम स्वरुप सत्ता का दुरुपयोग भी आता है, जो जरुरी नहीं धन-सम्बन्धी हो।"[6]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में भ्रष्टाचार का यथार्थ रूप दिखाया गया है। वर्तमान समय में हो रहे भ्रष्टाचार का चित्रण इनकी कहानियों में मिलती है। इनकी कहानियों में भ्रष्ट पुलिस, नेता, अधिकारी आदि का पर्दा फास किया गया है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में ऐसे भ्रष्ट सम्पादक का भी चित्रण किया है जो पैसा लेकर सच्चा केस को भी नहीं छापता है। वे हर वक्त अपने फायदा देखते हैं।

रत्नकुमार सांभरिया की 'बकरी के दो बच्चे' कहानी में भ्रष्ट पुलिसों का चित्रण है। यहाँ पुलिस द्वारा रिश्वत लेकर निर्दोष लोगों पर अत्याचार करते दिखाया है। कहानी का पात्र

दलपत बकरी के दो बच्चे खरीद लाता है। उन दो बच्चों को जमींदार का बेटा मार देता है। जमींदार से कहने पर जब कुछ नहीं होता। वह अपने मित्र शर्मचंद के साथ पुलिस के पास जाता है। पुलिस भी उनका कहा नहीं मानती। वह एफ.आई.आर लिखने से मना कर देता है। दलपत और शर्मचंद को गाली देकर भेज देता है। "दारोगा साब, हम गरीबों की धन-दौलत और जमीन-जायदाद भेड़-बकरियाँ ही होती हैं। और इनकी हिफाजत करना सरकार का फर्ज है। हमारी एफ.आई.आर. दर्ज कर लीजिए आप।"[7] दलपत के कथनों का उत्तर देते हुए पुलिस कहता है – "अच्छा। फर्ज का पाठ तू मुझे पढ़ा रहा है। थाने के गेट से बाहर भाग जाने के लिए मैं तुम दोनों को दो मिनट का समय देता हूँ, वरना अन्दर से चमड़ा मंगवाकर सालों की चमड़ी उधेड़ दूंगा। आ जाते हैं यहाँ, जैसे थाना-कचहरी मनोरंजन के साधन हों।"[8]

इस तरह पुलिस दलपत की बात सुनने से मना कर देता है। पुलिस दलपत को ही बुरा भला कहकर भगा देता है। जबकि उसे दलपत की मदद करनी चाहिए थी। पुलिस का काम ही होता है साधारण जनता की रक्षा करना। कहानी में पैसें के लिए बिकने वाले पुलिस का चित्रण किया है।

'हुकम की दुग्गी' कहानी की कथा भ्रष्टाचार पर आधारित है। नशाबंदी पुरे प्रदेश में लागू थी। सब दुकान बंद थे। पर ठेकेदार के यहाँ दारु बैच रहे थे। पुलिस आती पर पैसे लेकर चली जाती थी। इस तरह हर जगह बंद होने के बावजूद ठेकेदार दारु बैचता है। यह सब देखते हुए भी पुलिस अनदेखा करते हुए चली जाती है। "पुलिस आती। नाक की सीध लिए ठेकेदार के घर जाती। घर के बाहर निकलती। जीव प्रसन्न। आँखें खुमारी । गाँव में तशेड़ियों-नशेड़ियों के जगह-जगह टोले बैठे होते। इधर दाम बढ़ने से चमार, मेहतर और धानकों के मोहल्लों में दारु की इतनी मांग नहीं रह गई थी, जितनी बनियों, बाभनों, अहीरों और जातों के मोहल्लों में थी। लोग सीप खेलते। धर्मराज युधिष्ठिर को अपना आदर्श मान कर जुआ खेलते। दारु पी रहे होते। जिन हाथों में किताबें होनी चाहिए, उनमें ताश के पत्ते और दारु के पाउच होते। पुलिसिए आते, गालियों में डंडा ठठकारते, आगे बढ़ते चले जाते, जैसे रात में चौकीदार पहरा देने की औपचारिकता किया करता है।"[9]

इस कहानी में पुलिस अधिकारियों के भ्रष्टाचार से युक्त कर्तुतों का पर्दाफास किया गया है। शराब की नशाबंदी पुरे प्रदेश में थी। पुलिस वाले अपने स्वार्थ के खातिर ठोरी सी पैसों के लिए ठेकेदार को अपना कारोबार चलाने दे रहे थे। जब सरकारी कर्मचारी ही सरकार के फैसले को नहीं मानेंगे, तब जनता भी अपनी मनमानी करने लगेगी। पुलिस का कर्तव्य है सही राह पर चलना। अगर वही भ्रष्टाचार जैसे गलत राह चुन ले तो देश का पतन होना निश्चित है।

'झुनझुना' कहानी एक दिव्यांग के बारे में हैं। वह गाँव के मिडिल स्कूल में चपड़ासी की नौकरी करता है। नौकरी के तबादला करवाने के लिए वह बहुत मेहनत करता है। उसे कार्यालयों के कई चक्कर काटने पड़ते है। फिर भी उसे तबादला करने की इजाजत नहीं मिलती। इस कहानी में एक दिव्यांग व्यक्ति की व्यथा एवं विडम्बना का चित्रण किया गया है।

कहानी में देशराज नाम का एक दिव्यांग व्यक्ति था। वह नौकरी का तबादला करने के लिए चाहता है। उसके माँ-पिता शहर में रहते थे। दोनों बीमार होने के कारण देशराज उसके साथ रहना चाहता था। उसे बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वह आवेदन पत्र लिखकर स्कूल ले जाता है। स्कूल का टाइपिस्ट देर से आता है। देशराज जब उसे टाइप करने के लिए देता है वह अनसुना कर देता है। देशराज घर जाकर चाय बना लाता है। वह टाइपिस्ट को देता है। तब जाकर वह टाइप करता है। "बाबू जी को मानो चाय की ही चाहत थी। उसने चाय पीकर माथे पर रखा चश्मा आँखों पर चढ़ाया। वह टाइप करने जुट गया था।"[10]

यहाँ यह दिखाया है कि स्कूल के कर्मचारी भी आज भ्रष्टाचार के गिरफ्त में आ गए है। टाइपिस्ट कुछ नहीं कर रहा था। वह चाहता तो देशराज के देते ही टाइप कर सकता था। पर उसने ऐसा नहीं किया। यहाँ यह भी दिखाया है कि आज लोगों में मानवीयता समाप्त होती जा रही है। लालच का भाव अधिक पनपने लगा है। कहानी भ्रष्ट राजनेताओं का पर्दाफास किया गया है। एक आम आदमी को अपना काम करवाने के लिए बहुत समस्याएँ झेलनी पड़ती है। उसे दूसरों के सामने गिड़गिड़ाना पड़ता है। तत्पश्चात भी रिश्वत के बिना काम नहीं होता है। देशराज स्कूल के हेडमास्टर से लेकर मंत्री के पास भी जाता है। फिर उसका तबादला नहीं होता है।

देशराज तबादले की बात करने के लिए मंत्री के पास अपने माता-पिता को भी ले जाता है। वह स्वयं अपाहिज होते हुए भी अपने अंधे माता-पिता को साथ ले जाता है। जिसे देखकर लोग उसका उपहास उड़ाते हैं- "उसने माँ को अपनी बाई गोद में में लिया। बापू को दाई गोद में लिया, मानो वह उसके माँ और बापू नहीं, जुड़वा टाबर हो। वह उन दोनों को लेकर हाँफता–काँपता-लंगड़ाता मंत्री जी पहुँच गया था। स्वयं मंत्री जी और वहाँ मौजूद तमाम लोग देशराज को हँसी और उपहास भरी नजरों से देखने लगे थे, तमाशगीर हो। किसी ने कटाक्ष किया – ' अरे वाह, भाई वाह, श्रवण कुमार आ गया है, सच में।"[11] देशराज मंत्री को आवेदन देने के लिए अपने विकलांग माता-पिता को भी साथ ले जाता है। परंतु उसकी बेबशी को देखकर भी मंत्री उसे समझना नहीं चाहता है। भ्रष्टाचार के कारण ही उसका काम नहीं होता है, क्योंकि देशराज की पहचान किसी नेता से नहीं है। राजनीति तथा भ्रष्टाचार के कारण ही देशराज का आवेदन पत्र को मंत्री जी ने लेकर भी पढ़ने की जरूरत नहीं समझता है।

'सवांखें' कहानी एक दिव्यांग की कहानी है। कहानी का मूल पात्र जमन वर्मा है। वह एक दिव्यांग है। उसकी शादी वीमा नाम की एक दिव्यांग लड़की से होती है। वीमा के घर वालों को पता चलते ही वह जमन की अनुपस्थिति में वीमा को जबरदस्ती ले जाते हैं। जमन सहायता के लिए श्यामा जी, पुलिस, संवाददाता आदि के पास जाता है। उसकी सहायता कोई नहीं करता। सब उसके दिव्यांग होने का मजाक उड़ाते हैं।

जमन अपने दोस्त देवत के साथ थाना जाता है। थानेदार उसकी मदद करने के बजाये उसे भेज देता है। दो दिन के बाद भी थानेदार एफ.आई.आर. दर्ज नहीं करता। "थानेदार ने देवत सिंह से अर्जी ली। देखि। पढ़ी। जमन के वीभत्व चेहरे को निहारा। अर्जी रजिस्टर में रखकर कहा-जाओ कारवाई हो जाएगी। दोनों दो दिन तक कारवाई का इंतजार करते रहे। कहीं हवा तक नहीं आई, पुलिस कारवाई की।"[12] यहाँ भ्रष्ट पुलिस के यथार्थ का चित्रण किया गया है। पुलिस द्वारा दिव्यांग लोगों की मदद न करने का वर्णन है। जमन को दिव्यांग एवं कमजोर समझकर पुलिस कोई कारवाई नहीं करता। पुलिस हमेशा ताकतवर लोगों का ही साथ देता है।

आज के समय में कमजोर लोगों का कोई नहीं सुनता।

जमन अपना दोस्त देवत के साथ एक संवाददाता के पास जाता है। वह भी पैसों के आगे झुक जाता है। उसकी ईमान पैसों के तले दब जाती है। वह जमन पर हुए अत्याचार के बारे में समाचार पत्र में छपवाने वाला था। वह ऐसा नहीं करता। उलटा वह जमन को ही फसा देता है। छपवा देता है कि जमन ने वीमा से झूठ कहकर जबरदस्ती शादी की है। इसलिए वीमा के घरवाले उसे ले गए। "अखबार के नवें पृष्ठ पर खबर थी। खबर का शीर्षक था – नैत्रहीन ने जात छुपाकर ब्याह रचाया, पत्नी मैके गई।"[13]

दरअसल संवाददाता जमन के घर से सीधा श्यामा जी के घर जाता है। वह श्यामा जी से बात करता है। श्यामा जी उसे पैसे देकर चूप कराता है और जमन के खिलाफ समाचार पत्र में छपवाता है। "श्यामा जी उठे। अलमारी खोली। बैग निकाला। चैन खींची। हाथ डाला। उन्होंने बंद मुट्ठी झा की जेब में छोड़ दी थी, बेटे आप तशरीफ लाए, नाचीज की ओर से नजराना। उनके इस वाक्य में आग्रह, हिदायत और विश्वास सुहागन की वेणी से गुंथे थे। झा की चोर नजर जेब में गई। वह श्यामा जी का वरशन लेकर लौट आया था।"[14]

'काल' कहानी में भी भ्रष्टाचार की झलक देख सकते हैं। यहाँ अकाल से होने वाली समस्याओं के बारे में बताया गया है। अकाल के कारण मनुष्य और पशुओं की जो दशा होती है उसका वर्णन किया गया है। मिनखू कहानी का प्रमुख पात्र है। अकाल पड़ने से मिनखू और उसकी पत्नी साथ ही उसके बैल की हालत खराब हो जाती है। उसके सामने खाने पीने की समस्या उत्पन्न हो जाती है। गाँव में सरकार द्वारा काल राहत के काम देते हैं। पर काम गरीबों को देने के बजाय अमीरों को मिलता है। कहानी में इसका वर्णन है - "दूसरे दिन अपनी कस्सी(फावड़ा) कंधे पर धरे, मुंडासा बांधे, मिनखू कार्य स्थल गया। वहाँ का नजारा देख मिनखू को ताज्जुब हुआ। रात-रात में इतने नाम मंड गए। उसे बड़ा अचम्भा यह हुआ कि चढ़ते सूरज ऊँचे तबके की वे औरतें भी नाम में काम पर थीं सूरज जिनकी उँगलियाँ भी नहीं देख पाता था।"[15]

इस तरह के घोटाले के कारण मिनखू को काम नहीं मिलता। उसके बार-बार कहने पर भी कोई नहीं सुनता। रत्नकुमार सांभरिया ने गाँवों में होने वाले घोटालों का यथार्थ चित्रण किया है। भ्रष्टाचार के कारण गरीबों को मिलने वाले काम उन्हें नहीं मिलता। सरकार द्वारा दिए गए सहायता का लाभ कोई और उठाता है।

'खबर' कहानी में अखबार के दफ्तरों में होने वाले भ्रष्टाचारों का यथार्थ चित्रण है। यहाँ दिखाया गया है कि एक बड़ी एवं आवश्यक खबर भी भ्रष्टाचार के कारण छपने से रुक जाती है। चंद पैसों के लिए संपादक भ्रष्ट हो गया। वह पैसों के लिए जरुरी समाचार को भी दबा देता है। यहाँ कार्यालयों में होने वाले भ्रष्टाचारों के तरफ इशारा किया गया है। एक लड़की सबके समक्ष लाने के लिए प्रयास करती है। वह एक मीडियाकर्मी है। पर वह सफल नहीं हो पाती।

प्रजीता ने कार्यालय में काम करने वाले एक व्यक्ति का सच्चा पोल खोलना चाहा। वह उसके खिलाफ सारे सबूत इकट्ठा कर लेती है। वह उस सबूत को लेकर अखबार के दफ्तर में जाकर संपादक को देती है। एक आदमी आकर उस समाचार को न छपाने को कहता है। दोनों में बातचीत होती है। अगले दिन वह समाचार नहीं छपती। प्रजीता एक लायजन ऑफिसर को यह सब बताती है। वह कहती है कि उसके बॉस ने उसे घर जाने को कहा था उस रात- "वह रात साढ़े दस बजे जब दफ्तर आया, न्यूज बॉस की टेबल पर थी। वह सीधा उनके चैम्बर में चला गया। बैठा। बतियाया। बॉस ने उसके लिए कॉफी मँगवाई। बॉस का इंटरकाम आया- प्रजीता आप जाईए, खबर मैं देख लूँगा।"[16] वह चली जाती है और कुछ देर बाद प्रजीता के कलीग का फोन आता है। वह कहता है कि दोनों साथ चले गए। वह समाचार नहीं छपेगी।

लायजन ऑफिसर प्रजीता को जानबूझ कर उपसम्पादक दीपन के बारे में कहता है। वह बहुत ही ईमानदार और अच्छे इंसान है। तभी प्रजीता कहती है- "दौलत और खिदमत के सामने कर्तव्य की आँखों का पानी मर गया है। सवेदनाएं सूखती जा रही हैं। पत्रकारिता भी धन, दगा और दबाव की चपेट में आती जा रही है, सर।"[17] प्रजीता स्पष्ट रूप में कहना चाहती है कि आज पैसों के लिए लोग अपना कर्त्तव्य तक भूल रहे हैं। उनका काम के प्रति जो कर्तव्य है उसे पैसों के खातिर नहीं निभा रहे। प्रजीता अपना कार्य ईमानदारी से करती है। वह निराश

हो जाती है और अपनी नौकरी छोड़ देती है।

कहानी में यह बताया गया है कि बड़े-बड़े पोस्ट पर रहने वाले भ्रष्ट हो रहे हैं। साथ ही ईमानदार कर्मियों को भी कार्य करने से रोकते हैं। रत्नकुमार सांभरिया ने यहाँ अखबार के दफ्तरों में होने वाले घोटालों का पर्दाफास किया है। प्रस्तुत कहानी में अखबार खानों में होनेवाले भ्रष्टाचार का चित्रण है।

'बाढ़ में वोट' कहानी में राजनीतिज्ञों की क्रूरता एवं सरकारी कर्मचारियों की कर्तुत का वर्णन किया गया है। यहाँ दिखाया गया है कि राजनेता चुनाव के समय वोट के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। अपना काम होने के बाद वह कर्तव्य से अपना मुह मोड़ लेता है। सिर्फ अपने बारे में ही सोचता है, जनता की परवाह ही नहीं करता।

कहानी में दिया गया है कि एक गाँव में बाढ़ आती है। जिससे लोगों के घर डूब जाते हैं। गाँव के छह पुरुष एक पीपल के पेड़ के ऊपर चढ़ जाते हैं। वह सहायता की राह देखते हैं। आपदा प्रबंधक प्रभारी आका आता है, देखता है और चला जाता है। वह गेस्ट हाउस में ठहरता है। मुर्गी के साथ दारु पीता है और आराम से सोता है। पानी के बीच उस पीपल पेड़ में फसे लोगों को बचाने की कोशिश नहीं करता। वह उन्हें देख गाली देने लगता है- "साले लाठी चला लेते हैं। बरछी चला लेते हैं। तलवार चला लेते हैं। बंदूक चला लेते हैं। झंडा उठाकर नारे लगा लेते हैं, गलाफाड़। बस, नहीं आता, तैरना नहीं आता।"[18] आका उन्हें बचाने के बजाय उन पर गुस्सा थे। इसका कारण था आका को वोट न देना। जिसका बदला वह उन्हें न बचाकर ले रहा था।

कहानी में आका को एक भ्रष्ट अधिकारी के रूप में दिखाया है। उसने पीलाराम को भी वोट के लिए कहा था। पीलाराम ने मना कर दिया। आका ने पीलाराम की बात को मन पर ले लिया। इसलिए बाढ़ में फसने पर भी उनको नहीं बचाया। आका ने वोट के लिए पूरी बस्ती को पैसे दिए थे। इसका जिक्र कहानी में मिलता है- "वह तो उसकी बस्ती पैसे में आ गई, उस रात, वरना...। बीस वोटों की जीत, जीत हुई। नाक बची, कटते।"[19] यहाँ भ्रष्ट राजनीतिज्ञों की सच्चाई व्यक्त की गई है।

गाँव में बाढ़ का आतंक था। सबका घर पानी डूब हुआ था। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच रही थी। लेकिन आका गेस्ट हाउस में रहता है। वह बाढ़ में फसे लोगों को देखने आता है। उसके मन में न चिंता थी न गम। वह बस दिखावा के लिए आया था। चारों ओर देख गेस्ट हाउस में रहने चला जाता है। वहाँ जाकर मुर्गा, मदिरा खाने की मांग करता है। बाढ़ के कारण सभी दुखी थे, लेकिन आका को खाने की पड़ी थी। वह मंत्री था इसलिए सभी को उसकी बात सुननी पड़ रही थी। आका तेजू के कानों में कुछ कहता है सुनकर तेजू को बहुत गुस्सा आता है। वह धैर्य बनाकर कहता है – "सर पानी पड़ रहा है। शिविर-शिविर जाग है। बदनामी होगी। गाँव की बहू-बेटी, सबकी बहू-बेटी। सर, सर कलम कर दें, भदुवई की ना कहें।"[20] इससे पता चलता है कि आका लड़की की मांग कर रहा था। जिस गाँव में बाढ़ के कारण सभी दुखी थे। वहाँ आका जनता की मदद करने के बजाये वहाँ की बहू-बेटी को अपना हवस का शिकार बनाना चाहता था।

'पुरस्कार' कहानी नीना नाम की एक स्वाभिमानी स्त्री की कहानी है। यहाँ ऊँचे पद पर रहने वाले भ्रष्ट अधिकारियों का यथार्थ चित्रण किया गया है। कहानी की प्रमुख पात्र नीना है। वह कहानी लिखती है। वह अपनी एक कहानी अकादमी अध्यक्ष धौज को देने जाती है। धौज जब नीना को बताता है कि पुरस्कार के लिए सृजनात्मकता नहीं देखी जाती। जिस कारण रिजल्ट शीट भी बदली जा सकती है। इससे नीना को बड़ा धक्का लगता है।

धौज जी सुन्दर जी रिजे से नीना को मिलाते हैं। नीना बहुत गुस्सा होती है और सोचती है- "पिछले दिनों इन्हीं रिजे जी का नाम अखबारों में था न कि पैसे लेकर पी.एच.डी कराने के आरोप में यूनिवर्सिटी से इन्हें ब्लैक लिस्टेड कर दिया है।"[21] रिजे के माध्यम से यूनिवर्सिटियों में होने वाले घोटालों का यथार्थ चित्रण किया गया है। यूनिवर्सिटियों में यह अकसर देखने को मिलता है। जिससे सक्षम विद्यार्थियों की डाखिला नहीं हो पाती। कहानी में रत्नकुमार सांभरिया ने धौज, सुन्दर जी रिजे, कोनेराम जैसे लोगों के माध्यम से भ्रष्टाचार का यथार्थ रूप का चित्रण किया है। बड़े-बड़े पदों पर रहने वाले भ्रष्ट लोगों का पर्दाफास करना चाहा है। उन्हें बेनकाब करना चाहा है।

'भैंस' कहानी में भ्रष्टाचार का चित्रण मिलता है। कहानीकार ने भ्रष्टाचार का यथार्थ रूप

दिखाया है। कहानी में एक डॉक्टर के जरिए भ्रष्टाचार का सजीव वर्णन किया है। मंगला की भैंस का बच्चा होने वाला था। मंगला डॉक्टर के पास जाता है। पर डॉक्टर आने से मना कर देता है। मंगला बहुत हाथ जोड़ता है। फिर भी वह डॉक्टर नहीं आता। मंगला कहता है – "मंगला ने डॉक्टर को हाथ जोड़े। नीचे बैठ गया। आजीज। गिडगिडाया- साब, मेरी भैंस बिया नहीं रही है, सुलझा दो उसे। भैंस को कुछ हो गया, मैं मर जाऊँगा।"[22] इतना सब कहने के बाद भी डॉक्टर अनसुना कर देता है। मंगला समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या करे। वह दो सौ रूपए निकाल देता है। पैसा देखने के बाद ही डॉक्टर मंगला के साथ जाता है। "डॉक्टर ने उसकी और एक उड़ती सी नजर डाली। वह अपने मिजाज फिर अखबार पढ़ने लग गया था। दुसरे के हीत(ह्रदय) में, अपने भीत(दीवार) में। मंगला ने दो सौ रूपए निकालकर टेबल पर रख दिए थे। अखबार पटक, डॉक्टर मेडिसिन बैग उठाकर चल दिया था, मंगला के साथ।"[23]

कहानी में भ्रष्ट डॉक्टर का चित्रण किया गया है। डॉक्टर का काम होता है मरीजों का इलाज करना। पशु चिकत्सालय के डॉक्टर का काम होता है पशु का इलाज करना। यदि वह बुलाने पर भी जाने को तैयार नहीं तो वह डाक्टर किस काम का। कहानी में मंगला द्वारा इतना कहने के बावजूद वह नहीं सुनता। जब मंगला पैसा देता है तब जाता है। पशु चिकित्सालय में काम करने के बावजूद वह मंगला से रिश्वत लेता है। तब जाके वह मंगला के साथ जाता है। लेखक समाज में की सच्ची छवि से पाठक को रूबरू करवाना चाहता है। डॉक्टरों का कर्म होता है मरीज का इलाज करना। तनखवा मिलने के बावजूद रिश्वत लेना अपराध है। डॉक्टर द्वारा इस तरह के कार्य असहनीय तथा अमानवीय है।

कहानी में मंगला डॉक्टर को बुलाने जाती है। वह जब पशु चिकत्सालय पहुँचता है तो देखता है कि डॉक्टर टेबल के ऊपर पैर रखे बैठा था। मंगला को थोड़ा अजीब लगता है। "दस ग्यारह बजे का वक्त था। वह जेब में दो सौ रूपए डाल भागा-भागा पशु चिकत्सालय गया। डॉक्टर था। वह मेज पर पाँव रख, बड़े इत्मीनान से अखबार पढ़ रहा था, मानो अस्पताल नहीं सराय हो।"[24] यहाँ एक डॉक्टर के हीन स्वभाव का पता चलता है। साथ ही डॉक्टर द्वारा अपने फर्ज का पालन न करने का भी चित्रण है। जानवरों का कुछ होने पर पशु डॉक्टर का फर्ज है

चिकित्सा करना। कहानी में डॉक्टर ऐसा नहीं करता। वह टेबल पर पैर उठा कर ही बैठा रहता है। वह मंगला की बातों पर कोई ध्यान नहीं देता। इसमें भ्रष्ट एवं हीन स्वभाव वाले डॉक्टर का चित्रण किया गया है। ऐसे डॉक्टर अपने फर्ज को नहीं बल्कि पैसों को ज्यादा महत्त्व देता है। लेखक ने ऐसे डॉक्टरों को अपने कहानी के जरिए बेनकाब करना चाहा है।

'झंझा' कहानी में भी भ्रष्टाचार का वर्णन मिलता है। कहानी में एक भ्रष्ट पुलिस का जिक्र मिलता है। वह किसी के भी घर जाकर मांस आदि खाने को बैठ जाता है। न देने पर उससे बुरा बरताव करता है। गाँव के सभी लोग उससे डरकर वह जो कहता चुप-चाप करते हैं। "पुत्तर, मरने वाला मर गया। जिन्दे बन्दे नुं क्यों मारदे हो। जिस पुलिस दा मुँह लहू से भरा हो, पेट मांस के लिए भुक्खा रहंदा है। उस गैलड़ करणफूल दी बहू डा रिश्तेदार एम.एल.ए. है। पुलिस बख्तावर के पिच्छो हथकड़ी लिए घूमदी है। पुत्तर तुसी चलो। खिला-पिला के दुसट नूं टाल दो, अज्ज।"[25] यहाँ पुलिस के चरित्र के बारे में बताया गया है। कहानी में दारोगा द्वारा जमींदार से असल अपराधी को छोड़ निर्दष को पकड़ने का पैसा भी लेते दिखाया है। जमींदार के बेटे बख्तावर द्वारा अपने ही भाई का खून किया जाता है। जमींदार दारोगा को पैसे देता है। यह सब पात्र दरयाव देख रहा था – "वह खुली आँखों देख रहा था। परमेश ने बैग बख्तावर को पकड़ा दिया था। बख्तावर ने बैग खोलकर सौ-सौ रुपये की गड्डियाँ थानेदार के सामने पलंग पर बिछा दी थीं। दो गड्डियाँ उसने अलग रख दी थीं। उसने थानेदार की मनुहार की-आपकी जुबान पुरे दो लाख हैं।"[26]

पैसे लेकर दारोगा मान जाता है। यहाँ रिश्वत लेते पुलिस का चित्रण हुआ है। वह रिश्वत तो लेता है साथ ही असली अपराधी को छोड़ भोला-भाला दरयाव को फसा कर पकड़ने की योजना बनाता है। पुलिस का फर्ज होता है जनता की रक्षा करना। समाज में पुलिस जनता की रक्षा के लिए ही तैनात रहते है। कहानी में एक ऐसे पुलिस का चित्रण है जो रक्षक नाम का है। वह जनता की रक्षा करना तो दूर वह मासूम को फसाने का सोचता है। अपराधी के साथ हाथ मिला लेता है। लेखक ने यहाँ पुलिस के रक्षक से भक्षक बनते दिखाया है। उन्होंने दिखाया है कि पुलिस साधारण जनता को बैवकुफ बनाती है। वह असली मुजरिम को न पकड़कर मासूमों

के साथ गलत व्यवहार करती है। उन्हें सजा देने की योजना बनाती है।

'बात' कहानी में भी भ्रष्टाचार का पूत देखने को मिलता है। यहाँ गाँव के एक स्कूल का वर्णन है। उस स्कूल में अध्यापक किस तरह से अपना काम करते हैं वह दिखाया है। स्कूल के लिए अध्यापक की लापरवाही दिखाता है। कहानी की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं– "स्कूल में आस-पड़ोस के गांवों के अध्यापकों की धाक थी। स्कूल मायने आँगन में बिछी खटिया। आधा स्टाफ दिन भर अपने खेत-खलियानों, निजी कामों और ठोर-डंगरों में खटता। स्टाफ रूम में ताशें बजती। गप्पे-उठती। ठहाके पटाखें से फूटते। राजनीति की चौसर बिछी रहती। चार बजते। मास्टर अपनी-अपनी क्लास आ संभालती, जैसे सैनिक मोर्चे पर आ डटता है। यहाँ गुरुतुल्य व्यवहार नहीं, पैसों का व्यापार था। फी छात्र सौ रुपए ट्यूशन बंधी थी। एक-एक मास्टर के पास चार-चार हजार रुपए आ जाते थे, तनखा से इतर। गाँव को ध्यान था, पर चुप था। जब सारी दुनिया बदनीयत है। बेचारे मास्टर का मोल। पैसा हाथ का मैल है। बालकों का भविष्य संवर रहा है।"[27]

यहाँ दिखाया है कि अध्यापक किस तरह पढ़ाने के बजाय अपना काम निकाल रहे थे। अध्यापक का काम होता है बच्चों को पढ़ाना। नए-नए ज्ञान देना। यहाँ तो ज्ञान देने के बजाय सभी अपने घरेलू कामों में व्यस्त थे। सब बात-चीत करने में लगे थे। वह बस पैसों के लिए स्कूल आते थे। इसके अलावा और कुछ नहीं करते। वह बस पैसों का व्यापार कर रहे थे। कहानी के जरिए लेखक ने गांवों के स्कूलों का यथार्थ चित्रण किया है। अधिकतर गाँव के स्कूलों में इस तरह ही होता है। गाँव के लोग भी कुछ नहीं कहते। उन्हें कोई बोलने वाला नहीं होता। इसी कारण से स्कूल के अध्यापक भी मस्तमौला रहते हैं। वह अपने अनुसार कार्य करते हैं। यहाँ गाँव के स्कूलों की शिक्षा पद्धति का चित्रण है।

'बिपर सुदर एक कीने' कहानी एक पारिवारिक जीवन पर आधारित कहानी है। कहानी में गाँव के स्कूल के भ्रष्ट अध्यापकों का चित्रण मिलता है। पात्र श्यामू लाल अपने बेटे को शहर में पढ़ाता है। वह उसे पढ़ाने के लिए खूब मेहनत करता है। उसका बेटा पढ़-लिखकर अफसर बनता है। एक दिन गाँव की एक औरत उसकी पत्नी संकी को कहती है- "सयानी है तू। तेरो

छोरो शहर में जार पढ़ लिख गयो। गाँव का मस्तैंड मास्टर तो दिन-दिन ताश पीटे या अपना खेत कमावे। तनखा पूरी पावे। मजाल टाबरां ने दो आखर सिखा दे। म्हारा तो दोनों छोरो खेत-क्यार का ही रह गया।"[28]

कहानी में ऐसे स्कूल का वर्णन है जहाँ पढ़ाई को छोड़ मास्टर ताश खेलते थे। बच्चों को कुछ नहीं सिखाते थे। बस अपनी तनखा लेते थे। उस औरत के दो बच्चे गाँव के स्कूल में पढ़ते थे। जिस कारण वह पढ़ाई नहीं कर पाए। यहाँ एक माँ के दुःख को पेश किया गया है। साथ ही खराब होते बच्चों के भविष्य का चित्रण है। कहानी में गाँव और शहर के स्कूलों का अंतर दिखाया है। एक बच्चा शहर में पढ़कर अफसर बनता है। दूसरे बच्चे गाँव में पढ़कर खेत-क्यार देखते हैं। मास्टरों की लापरवाही के कारण पढ़ाई में आगे नहीं बढ़ पाते। मास्टर का फर्ज होता है बच्चों को पढ़ाना, ज्ञान देना। पर यहाँ तो कुछ और ही हो रहा था। कहानी में ऐसे मास्टरों का चित्रण है जो केवल पैसों के लिए स्कूल आते थे।

'धूल' कहानी पारिवारिक विघटन की कहानी है। यहाँ दो भाईयों का चित्रण है। बड़ा भाई(हुलसीराम) अपने छोटे भाई(धूल सिंह) को पढ़ा लिखा कर अफसर बनाता है। छोटा भाई नौकरी पाकर शहर में शादी करके बस जाता है। कहानी में एक जगह भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण हुआ है। धूल सिंह को जिला कलेक्टर का फोन आता है वह दोनों किसी केस को लेकर बात करते हैं। किसी केस को दबाने की बात चलती है। धूल सिंह नहीं मानता पर जिला कलेक्टर करने को कहता है। उन दोनों की बातें इस प्रकार हैं- "जिस केस की तुमने फैक्स रिपोर्ट भेजी है। वह एम.एल.ए. साहब की मंशा के विपरीत है।' 'धूल सिंह ने कहा- 'वह तो सच्चा केस है, सर। सीधा-सीधा दलित अत्याचार का प्रकरण है।' 'अरे भाई! एम.एल.ए साहब ने मंत्री जी को शिकायत की है। वह केस एटरोसिटी का नहीं है। आपकी रंजिश का है।' 'नहीं सर, चौपाल पर चढ़ने के कारण दलितों को मारा गया। दो जनों को फ्रैक्चर है। उस केस पर तो अनुसूचित जाती, जनजाति अत्याचार निवारण कानून की धारा तीन(तीन) लागू होती है, सर।'"[29]

यहाँ किसी सच्चा केस को दबाने की बात चल रही थी। जिला कलेक्टर खुद कह रहा

था। यहाँ भ्रष्ट सरकारी अधिकारी का चित्रण हुआ है। वह एम.एल.ए के कहने पर सच्चा केस भी बंद करने को कह रहा था। उसे केस की नहीं अपनी नौकरी की चिंता थी। इसलिए वह धूल सिंह को भी कहता है- "धूल सिंह अतिरिक्त जिला कलेक्टर हो तुम पाँच-सात साल बाद कलेक्टर भी बनोगे ही।"[30] इसका मतलब है कि यदि नौकरी करनी है तो बात माननी होगी। धूल सिंह के मना करने पर भी जिला कलेक्टर जबरदस्ती करता है। अंत में धूल सिंह टाल नहीं पाता। उसे भी माननी ही पड़ती है। भ्रष्ट अधिकारी स्वयं गलत करता है। ईमानदार व्यक्ति को भी गलत राह पर चलने को मजबूर कर देता है। लेखक ने फर्ज के नाम पर हो रहे भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण किया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने समाज में फैले भ्रष्टाचार को सबके समक्ष लाना चाहा है। साधारण जनता में जागरूकता पैदा की है। उन्होंने कहानी के अंत में पात्रों में विद्रोह उत्पन्न किया है। उनकी कहानियाँ समाज में फैले भ्रष्टाचार से पाठक वर्ग को रूबरू करवाती है। उन्होंने कहानियों में पुलिस, नेता, अधिकारियों, संवाददाता आदि द्वारा किए गए भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। रत्नकुमार सांभरिया ने समाज में फैली भ्रष्टाचार का सजीव रूप दिखाने का प्रयास किया है।

(आ) सत्ता का दुरुपयोग:

सत्ता का दुरुपयोग के बारे में जानने से पहले सत्ता और दुरूपयोग के बारे में जानना आवश्यक है। 'सत्ता' यानि शक्ति और 'दुरूपयोग' यानि गलत प्रयोग। अर्थात शक्ति का गलत प्रयोग करना ही सत्ता का दुरुपयोग होता है। उच्च पद में रहने वाले किसी भी व्यक्ति द्वारा अपनी सत्ता का गलत उपयोग करना सत्ता का दुरुपयोग है। जब सत्ता अपने हाथ में होती है तो जितना हो सके लोगों की भलाई करनी चाहिए।

सत्ता का उपयोग सही तरीके से होना अनिवार्य है। अन्यथा यह समस्याएँ खड़ी कर सकती है। सत्ता सामाजिक हो या राजनितिक सभी क्षत्रों में देख सकते हैं। राजनेता, पुलिस, प्राचार्य आदि सत्ता का उपयोग कर सकते हैं। सत्ता नियम एवं कानून से जुड़ा होता है। सत्ताधिकारी कानून के अनुसार अपनी सत्ता का उपयोग करते हैं। उन्हें अपने मतानुसार आदेश देने की

अनुमति होती है। वह अपनी सत्ता के बल पर कुछ भी कर सकते हैं।

सत्ता के बल पर कभी-कभी पुलिस अधिकारी अपनी मनमानी करते हैं। वह अपने फायदे के लिए भ्रष्टाचार का रास्ता अपनाता है। भ्रष्ट होने के कारण वह क्रूरता से कार्य करता है। पुलिस के अलावा नेता भी सत्ता का दुरुप्रयोग करते हैं। चुनाव के समय वह आम जनता को पैसे देकर वोट खरीदता है। जिससे वह जीत भी जाता है। इसके अलावा साहित्यिक एवं शिक्षा संस्थाओं में रहने वाले उच्च अधिकारी भी यही करते हैं। वह अपनी सत्ता का इस्तमाल कभी-कभी गलत कार्यों के लिए भी करता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सत्ता का दुरूपयोग देखा जाता है। उनकी कहानियाँ सत्ता दुरूप्रयोग का यथार्थ चित्रण करती है। इनकी कहानियाँ सत्ता का गलत उपयोग करने वाले राजनेता, पुलिस, संस्था अधिकारी, जमींदार आदि लोगों पर प्रहार करती है। समाज को इन कुकर्मों का सच्चा आईना दिखाती है। रत्नकुमार सांभरिया की पुरस्कार, सवांखें, बाढ़ में वोट आदि कहानियाँ इसका उदाहरण है।

रत्नकुमार सांभरिया की 'पुरस्कार' कहानी नीना नाम की एक स्त्री की कहानी है। यहाँ उच्च पद पर रहने वाले अधिकारियों द्वारा सत्ता का दुरुपयोग करते दिखाया है। नीना कहानी लिखकर अकादमी अध्यक्ष धौज को देती है। धौज नीना को बताता है कि पुरस्कार के लिए सृजनात्मकता नहीं देखी जाती। जिस कारण रिजल्ट शीट भी बदली जा सकती है। नीना को बड़ा धक्का लगता है। "एक बात कहूँ, नीना जी, आपको। पुरस्कार का सृजन से कोई सरोकार नहीं होता है। यह तो समीकरणों और आपसी सहमति की सरणी भर है। मैं पिछले दो साल से अकादमी का अध्यक्ष हूँ। संयोग से दोनों ही बार रिजल्ट शीट बदली है। श्री और शोहरत के ऐसे समीकरण बन जाते हैं कि...!"[31] यहाँ सत्ता का दुरूपयोग दिखाया गया है।

कहानी में दिखाया गया है कि अकादमी के अध्यक्ष होने के बावजूद धौज अपनी सत्ता का गलत उपयोग कर रहा था। जबकि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। कहानी में उच्च संस्थाओं में होने वाले घोटालों पर प्रकाश डाला गया है। इस कारण नीना अपनी सृजनात्मकता को वहाँ जाया करना सही नहीं समझती है। धौज के अलावा सुन्दर जी रिजे और कोनेराम जैसे भ्रष्ट

लोगों का भी यहाँ जिक्र है।

'बाढ़ में वोट' कहानी में सरकारी कर्मचारियों के कर्तुत का वर्णन है। चुनाव जीतने के बाद राजनेता किस तरह कार्य करता है उसका यथार्थ चित्रण है। चुनाव जीतने के बाद जिन्होनें वोट नहीं दिया उनकी दशा का वर्णन है। यहाँ दिखाया है कि वोट न देने से राजनेता उनसे कैसे वर्ताव करता है। यहाँ तक कि मरने को भी छोड़ देता है। उनकी मृत्यु का मन ही मन आनंद उठाता है।

आका आपदा प्रबंध प्रभारी के रूप में चित्रित है। गाँव में जब बाढ़ आई तो आका देखने जाते हैं। वहाँ देखते हैं कि छह लोग पानी के बीच एक पेड़ में अटके हुए हैं। आका उन्हें बचाने की कोशिश नहीं करता। देखते ही देखते वह लोग डूब जाते हैं। सी.एम. आका को फोन करके उन्हें बचाने को कहता है। लेकिन आका ऐसा नहीं करता। वह बाढ़ में फँसे लोगों को बचाने के बजाय डी.एम. को कहता है- "पर्याप्त राहत कार्य खोलकर हमने यहाँ की स्थिथि को काबू कर लिया है। उत्तर की और दो आबाद गाँव हैं। भलिया और हलिया नाम हैं। वे कमेटिड हैं।"[32] जिलाधीश के कहने पर भी आका नहीं मानते। वह कहता है- "आप, ए.डी.एम, एस.डी.एम. और चार-पाँच तहसीलदार अपने लोगों के साथ वहाँ पहुँच जाएँ। वहाँ रेत के दो धोरों के बीच एक घाटी है, उसे पटवा दो।"[33]

कहानी में राजनेताओं के बदलते रूप का वर्णन मिलता है। साथ ही साधारण जनता के प्रति उनकी सोच पता चलता है। आका जिसने बाढ़ में फसे उन छह लोगों को नहीं बचाया। कारण यह था कि उन्होंने आका के कहने पर भी उसे वोट नहीं दिया। आका चाहता तो उन्हें बचा सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। आका ने वोट न देना अपनी व्यक्तिगत दुश्मनी मान ली। किसी भी नेता को ऐसा नहीं करना चाहिए।

'हुकुम की दुग्गी' में भी सत्ता का दुरूपयोग देख सकते हैं। यहाँ पुलिस द्वारा सत्ता का दुरूपयोग करता दिखाया गया है। शहर में शराब में पावंदी लगा दी गई थी। हर जगह शराब की दुकाने बंद थी। एक ठेकेदार के यहाँ शराब बीक रहा था। हर कोई वही से शराब अधिक दामो में खरीद रहे थे। पुलिस वहाँ आते है, और पैसे लेकर चले जाते थे। वे वहाँ कोई रोक-टोक

नहीं करते थे। वे यहाँ सत्ता का गलत इस्तमाल कर रहे थे। "पुलिसिए आते, गालियों में डंडा ठठकारते, आगे बढ़ते चले जाते, जैसे रात में चौकीदार पहरा देने की औपचारिकता किया करता है।"[34]

यहाँ ठेकेदार और पुलिस द्वारा सत्ता का गलत प्रयोग दिखाया है। शहर में सभी जगह नशाबंदी का आदेश था। लेकिन ठेकेदार होने के कारण पुलिस उन्हें कुछ नहीं करती है। दोनों अपने-अपने काम में लगे रहते हैं। समाज सेवक होने के बावजूद दोनों गैरकानूनी कार्य कर रहे थे।

'मदारिन' कहानी में भी सत्ता का दुरूपयोग देखा जा सकता है। यहाँ एक मदारिन को पुलिस द्वारा सताया जाता है। थानेदार उस मदारिन को अपने हवस का शिकार बनाने की कोशिश करता है। पर वह सफल नहीं होता है। इससे मदारिन के प्रति उसके मन में बदला का भाव उभरता है। थानेदार मदारिन और उसके परिवार के साथ-साथ उसके कुत्ते को भी मारना चाहता है।

थानेदार मदारिन के घर आता है। मदारिन अकेली होती है। वह एक कांस्टेबल के साथ आता है। मदारिन के घर(डेरा) आकर पूछने लगता है कब से उस जगह रह रहे है। कब तक है। उसका पति कहा है आदि। थानेदार उसे धमकाने की तरह पूछता है। वह डरी, सहमी हुई कहती है कि- "जमींदार अपना इन खेतां में हल चलावेगो। डेरा उठावन की बोल गयो। बाप-बेटा दोनों आज तावला आ गया था, काम के। डेरा ने चप्पो चाहवे। दूसरी ठौर देखन गया। तड़के(कल) सकारे(सुबह) आ जावेगा।"[35] बैचारी मदारिन थानेदार के पूछने पर अपने दुःख की बात कह देती है। इस आश में कि थानेदार उसकी मदद कर दे। पर ऐसा नहीं होता। थानेदार उसकी मदद करने के बजाय वह अपने मन में मदारिन के प्रति गन्दी भाव पाल लेता है। वह उसे ऊपर से नीचे तक देखने लगता है।

थानेदार उसकी बातें सुनता है। वह उसकी मदद करने के बजाय उसको अपना रोब दिखाता है। वह कहने लगता है – "उसने टोपी पहन कर जूते पहने। डंडा हाथ में लिया। होंठ पर होंठ घिसा। उठ खड़ा हुआ और हाथ ऊपर करके मदारिन की ओर घूरते इस तरह अंगराई

ली, कामदेव हो, साक्षात। खलनायक हो, फिल्म का। कद-पद का अहम् व्यपा। 'एरिया का हाकिम हूँ। चप्पे-चप्पे का मालिक हूँ। बड़े-बड़े उसके तलवे चाटते हैं। कीड़े-मकोड़े की तरह इधर-उधर हांडते, मांगते, तांगते घुमंतू-घुमक्कड़ों की औकात। पांव की धूल। रात रहूंगा। भेड़ की लात गोड़ो तक। ज्यादा चूं चपड़ा की, वेश्यावृत्ति का केस बना कर अंदर पदक दूंगा, स्साली को। जेल में सड़ेगी।"[36] थानेदार मदारिन को अपने पद का रोब दिखाता है। वह यह दिखाना चाहता है कि वह अपने पद में रहकर कुछ भी कर सकता है। जबकि उसे मदारिन की मदद करनी चाहिए थी। थानेदार मदारिन की मदद करने के बजाय उसे डराने की कोशिश करता है।

पुलिस को जनता की मदद करनी चाहिए। यहाँ वह अकेली स्त्री के साथ बुरा करना चाहता है। साथ ही उसे अकेली देखकर डराने की कोशिश करती है। जबकि उस मदारिन की उसे मदद करनी चाहिए थी। एक दिन थानेदार रात को चुपके से मदारिन के घर घुस जाता है। मदारिन के चिल्लाने और उसके कुत्ता द्वारा हमला करने से वह भाग जाता है। इसके बाद अगले दिन वह अपने साथ कुछ कांस्टेबल को लाता है। मदारी को बलात्कार करने में असमर्थ होने के कारण दारोगा मदारी से प्रतिशोध लेना चाहता है। इस प्रसंग से भी कहानीकार ने दारोगा द्वारा किया गया सत्ता के दुरप्रयोग का चित्रण किया है। प्रतिशोध की भावना से दारोगा सोचता है कि – "कुत्ते को मारकर पटकना है। मदारी और उसके लड़के को मार-मार भगाना है। सती सावित्री की बच्ची मदारिन को खींच-घसीट थाने लाना है। खौफ के साया में जैसी उसकी रात बीती। उससे ज्यादा रात बीतेगी, उस पर। देह व्यापार के केस में जेल में पड़ी सड़ेगी अलग।"[37] इसमें दारोगा अपने स्वार्थ की पूर्ति में असमर्थ होने के कारण मदारी को देह व्यापार की झूठी केस में फँसाकर जेल में डालना चाहता है। जो दारोगा द्वारा किया गया सत्ता का दुर्प्रयोग है।

थानेदार अपनी सत्ता का गलत उपयोग करता है। वह अपने पद के दम पर मदारिन को सजा देना चाहता है। सत्ताधिकारी सत्ता के दम पर कमजोर लोगों पर अपना हुकम चलाना चाहते हैं। मदारिन कहानी में इसका चित्रण हुआ है। थानेदार अपनी गलती छुपाकर मदारिन को दोषी बताता है। जबकि उसकी अपनी ही गलती माफी लायक नहीं थी।

'सवांखें' कहानी दिव्यांगों के संघर्ष की कहानी है। यहाँ भी सत्ता का दुरूपयोग की झलक मिलती है। कहानी का मूल पात्र जमन और उसकी पत्नी वीमा दोनों दिव्यांग है। दोनों शादी कर लेते हैं। शादी के बाद वीमा के घर वाले उसे ले जाते हैं। जमन अपनी पत्नी को ढूंढने की कोशिश करता है। वह विफल रहता है। वह बड़े पदों में रहने वाले लोगों से बात करता है। पर कोई उसकी मदद नहीं करता। एक संवाददाता को पूरी कहानी बताकर उसे अखबार में छपाने को कहता है। पर संवाददाता रिश्वत लेकर जमन के खिलाफ ही लिख देता है – "अखबार के नवें पृष्ठ पर खबर थी। खबर का शीर्षक था – नेत्रहीन ने जात छुपाकर ब्याह रचाया, पत्नी मैके गई।"[38]

यहाँ संवाददाता अपने पद का गलत उपयोग करता है। वह चाहता तो सब सच छाप सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। सवाददाता ने असहाय को ओर भी असहाय बना दिया था। संवाददाता ने जमन की मदद करने के बजाय उसे फसा दिया था। यहाँ पुलिसों के करतूतों के बारे में भी बताया गया है। जमन एफ.आई.आर लिखवाने के लिए थाने जाता है। पुलिस लिखने से मना कर देती है। उसी को बुरा-भला सुनाकर भगा देती है। जमन को दिव्यांग देख उसकी मदद करने के बजाये उसे धमकी देकर भगाते हैं। यहाँ पुलिस अपनी सत्ता का इस्तेमाल गलत काम के लिए करती है।

'काल' कहानी अकाल से मर रहे लोगों के बारे में है। अकाल में फसे लोगों की हालत का चित्रण है। इस कहानी में भी सत्ता का गलत उपयोग मिलता है। यहाँ अकाल राहत कार्य स्थलों में हो रहे घोटालों का वर्णन है। यहाँ दिखाया है कि गरीबों के लिए दी गई नौकरी उन्हें न देकर दूसरों को दी जाती है। अकाल राहत कार्य जिसे मिलना चाहिए उसे नहीं मिल पाती।

मिनखू और उसकी पत्नी अकाल से जुझ रहे हैं। उनका एक एक करके सारा सामन बिक जाता है। उनके पास खाने को कुछ नहीं बचता। बस एक बैल उनके पास होता है। उनके गाँव में अकाल राहत कार्य सरकार देती है। मिनखू सुबह जब जाता है तब उसे कहा जाता है कि भरपाई हो गई है। मिनखू कहता है कि कैसे भी करके उसे एक काम दे। पर मेट साब नहीं मानता। मिनखू देखता है कि अच्छे घरों के लोगों को काम मिल गया है। मिनखू घर जाकर

पत्नी से कहता – "राज के आदमी राज को उल्लू बना रहें हैं, मल्ली। गरीब के लिए भेजी इमदाद और हमदरदी गरीब तक पहुँच ही नहीं रही है। रोटी उन्हें खिलाई जा रही है, जिन्हें अपच है। दस्त हैं।"[39]

यहाँ मिनखू के जरिए सत्ता के दम पर अपने अनुसार कार्य कर रहे कर्मचारियों पर प्रहार किया गया है। मेट, पटवारी, गिरदावर, तहसीलदार आदि द्वारा मिनखू को किए गए नजर अंदाज का चित्रण है। इन लोगों ने अपने पद का गलत उपयोग किया है। नौकरी मिनखू जैसे लोगों को देने के बजाये दूसरों को दे रहे थे। वह उन लोगों को नौकरी दे रहे थे जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी। इस तरह यहाँ सत्ता का दुरूपयोग दिखाया गया है।

'आखेट' कहानी में स्त्री समस्या का चित्रण है। जमींदार द्वारा गाँव के स्त्रियों पर कुकर्म करने का वर्णन है। पात्र सोमा की पत्नी रेवती के साथ भी ऐसा ही होता है। लेकिन वह साहस से काम लेती है और जमींदार को मार कर भाग जाती है। जिससे उसकी इज्जत बच जाती है। सोमा और रेवती गाँव छोड़ चले जाते हैं। उनके जाने के बाद जमींदार(नानक सिंह) गुस्से में रहता है। वह सोमा के घर आता है। सोमा की बूढ़ी माँ को जबरदस्ती घर से निकाल देता है। बेचारी सोम की माँ वही मर जाती है। गाँव वाले यह सब देखते हैं पर वह जमींदार के आगे कुछ नहीं कर पाते। "उसके कारिंदों की सौ जबरदस्ती के बाद भी तेरी माँ अपनी देहली से चिपकी थी, जड़ों सी। दीन धर्म के मारे उन लोगों ने उसे घसीट कर बाहर पटक दिया। साठ साल की विधवा बुढ़िया वहीँ पांव पीट-पीटकर मर गई, जैसे कोई असहाय गाय मर जाती है। सारे गाँव में उबाल था, मुँह एक नहीं खुल रहा था।"[40]

सत्ता के आगे सब बेवस होते हैं। वह चाहकर भी कुछ नहीं कर सकते। कहानी में नानक सिंह सत्ता का दुरुपयोग करता है। उसे अपनी सत्ता का प्रयोग गाँव के लोगों के लिए करनी चाहिए थी। लेकिन ऐसा नहीं होता। वह रेवती के साथ कुकर्म करने की कोशिश करता है। रेवती जब उसे पलटकर वार करती है तो वह गुस्सा हो जाता है। वह सहन नहीं कर पाता और अपनी ताकत दिखा देता है। सोमा और रेवती को घर से चले जाने को मजबूर कर देता है। उसी के कारण सोमा की माँ मर जाती है। वह सोमा की जमीन ले लेता है। यहाँ लेखक ने एक

नीच मानसिकता वाले जमींदार का चित्रण किया है। वह स्वयं गलती करता है पर सोमा और रेवती को भुगतनी पड़ती है। उनका जीवन बरबाद हो जाता है।

'शर्त' कहानी में गाँव के मुखिया जसवीर के बेटे द्वारा पानाराम की बेटी के साथ कुकर्म करने का वर्णन है। इस हादसे के बाद पानाराम जसवीर को शिकायत करता है। जसवीर अपने बेटे को कुछ नहीं कहता। वो पानाराम की बेटी को ही दोष देता है। जब जसवीर कुछ नहीं कहता तो पानाराम खुद मुखिया के घर जाता है। मुखिया पानाराम को समझाने लगता है। जब पानाराम नहीं मानता तब मुखिया के इशारे पर उसका कारिन्दा पानाराम को धमकाने की तरह चैतावनी देता है- "जसवीर ने बिरजू की ओर गर्दन घुमाई। वह उसका अँखियाँ आदेश पाकर चल दिया था। थोड़ा आगे बढ़कर बिरजू ने लाठी की मूठ जमीन पर ठोकी। यह गंदे और गलीज पानिया को जमींदोज करने की चुनौती थी और अन्नदाता जसवीर के प्रति कारिन्दाना वफादारी।"[41] यहाँ देख सकते हैं कि मुखिया अपनी सत्ता का गलत प्रयोग करता है। उसके खिलाफ बोलने वालों को वह चुप करना चाहता है। गाँव वालों को बोलने की अनुमति नहीं देता है।

पानाराम मुखिया के सामने एक शर्त रखता है कि मुखिया की बेटी भी पानाराम के बेटे के साथ एक रात रहे। यह बात सुनकर मुखिया गुस्से से बेकाबू हो जाता है। वह अंत में पानाराम को गोली मार देता है। "बिजली टूट पड़ी थी। आसमान फट गया था। चट्टाने चटक गई थी। पतंगे से पानिया की यह मजाल। जसवीर दिल का मरीज था। उसने पानाराम की शर्त सुनी कि जैसे फटा, अब फटा। उसने अपने कलेजे को थाम लिया था और खांसते-खांसते वह बेहाल हो गया था। बदहवासी की हालत में वह कुर्सी से उठा। चार कदम दीवार की ओर बढ़ा। उसने खूंटी से टंगी बंदूक उतार ली थी। पानाराम के सूखे पत्ते सरीखे सीने पर बंदूक रखकर उसने घोड़ा दबा दिया था- उल्लू का...।' खून! जसवीर को जबरदस्ती दौरा पड़ा। उसके हाथ से बंदूक छुट गई थी। जैसे कटा हुआ पेड़ गिरता है न, जसवीर जमीन पर गिर पड़ा था। पानाराम के शारीर में जुंबिश हुई। उसके ठंडे होते पांव मृत जसवीर की छाती पर गिर पड़े थे।"[42]

मुखिया अपनी सत्ता का गलत प्रयोग करता है। गलती उसके अपने बेटे की थी। इसके

बावजूद वह पानाराम के साथ न्याय नहीं करता। वह पानाराम की बेटी को दोषी सिद्ध करता है। जब अपनी बेटी के बारे में सुनता है तो वह गुस्सा हो जाता है। तब उसे अपनी इज्जत दिखाई देती है। लेखक ने कहानी में दिखाया है कि बड़े लोग अपनी सत्ता का प्रयोग करते हैं। वह जनता को धमकाने के लिए सत्ता का प्रयोग करते हैं।

'झंझा' कहानी में सत्ता का दुरुपयोग दिखाया गया है। जमींदार के बेटे द्वारा अपने ही भाई का खून किया जाता है। पुलिस उसे पकड़ने को ढूंढती रहती है। जमींदार पुलिस को पैसा देकर दरयाव को पकड़ने को कहता है। पुलिस भी मान जाता है। वह पैसे लेकर छोड़ देता है और दरयाव को फसाने की कोशिश करता है। पुलिस जमींदार से वह पिस्तौल भी लेती है जिससे खून हुआ था। पुलिस पिस्तौल से फिंगर प्रिंट हटा कर दरयाव को पकड़ने को कहती है। दरयाव को पता चलता है और वह पुलिस को ही गोली मार देता है। "पुराने फिंगर प्रिंट साफ करने के लिए दरोगा ने पिस्तौल को रुमाल से पोंछा। पिस्तौल रुमाल में फिर लपेटा। उसने पिस्तौल रुमाल सहित दरयाव की ओर बढ़ाकर कहा- 'इसे ठीक से पकड़ ले। यह रुमाल हटा कर मुझे पकड़ा दे। खिड़की से देख, जो कीकर नजर आ रही है न, उसकी जड़ में गोली दाग दे। ध्यान रखना, कभी छिटककर तुझे ही मार दे।' थानेदार खुश था। गोली दागने से दरयाव की पूरी हथेली पिस्तौल पर पड़ेगा और फिंगर प्रिंट सीधे उभरेंगे।"[43]

पुलिस समाज की सुरक्षा के लिए होता है। लेखक ने एक ऐसे पुलिस का चित्रण किया है जो सत्ता का गलत प्रयोग कर रहा था। वह पैसा लेकर किसी निर्दोष को फसाने को सोचता है।

'गाड़िया' कहानी स्त्री शोषण पर आधारित कहानी है। कहानी में एक लोहार की बेटी के साथ जमींदार का बेटा कुकर्म करने की कोशिश करता है। लड़की के चिल्लाते ही वह भाग जाता है। लोहार उसे पकड़ने उसके पीछे दौड़ता है। गाँव में सभी को पता चल जाता है। लोहार जमींदार के बेटे को पुलिस के पास ले जाना चाहता है। लेकिन सरपंच ऐसा करने से मना करता है। लोहार के न मानने पर उसे कहता है- "चौधरी जी, मान लो मेरी। भली इसी में है। घर जाओ अपने। लोहकूट गाड़िया हो। जमींदारों से मुँहजोरी ठीक नहीं।"[44] सरपंच जमींदार के बेटे को बोलने के बजाय लोहार को कहता है। लोहार जब नहीं मानता तो वह कुछ

गबरुओं को इशारा करता है उसे मार-मार कर ले जाने को- "सरपंच ने इशारा किया। दो-तीन गबरुओं ने लोहार से कुल्हाड़ी छीन लिया था। उन्होंने उसे पकड़-जकड़ हाथों पर उठाया और उसकी गाड़ी तक छोड़ आए थे। दुत्कारते। फटकारते। घूँसे मारते। मुँह तक नहीं खोलने की धमकी देते।"[45] यहाँ सरपंच अपने पद का गलत इस्तमाल करता है। वह चाहता तो जमींदार के बेटे पकड़वा सकता था। लेकिन वह लोहार को ही मार-पीट कर चुप रहने को कहता है। वह उसे ही दोषी ठहराता है।

'धूल' कहानी एक पारिवारिक विघटन की कहानी है। यह दो भाईयों की कहानी है। छोटा भाई(धूल सिंह) नौकरी पाकर शहर में ही रहता है। बड़ा भाई(हुलसीराम) गाँव में ही रह जाता है। कहानी में धूल अतिरिक्त जिला कलेक्टर है। वह एक दलित केस की तहकीकात कर रहा था। तभी उसे जिला कलेक्टर का फोन आता है। वह उस केस को बंद करने को कहता है। धूल के मना करने पर वह कहता है- "तुम इसी वक्त लौट जाओ। एम.एल.ए. साहब घटना स्थल पर ही हैं। उन्होंने एक रिपोर्ट तैयार की है। उस रिपोर्ट को बेस बना कर मुझे फैक्स कर दो। मैं उसे मंत्री जी औरे सी.एम. साहब दोनों को भिजवा दूंगा। तिन दिन बाद एसेंबली शुरू हो रही है। बात गले पड़ जाएगी अपने।"[46] यहाँ लेखक ने अधिकारी द्वारा सत्ता का गलत प्रयोग दिखाया है। यहाँ एम.एल.ए, जिला कलेक्टर आदि द्वारा नकली रिपोर्ट बनाते दिखाया गया है। वह रिपोर्ट मंत्री और सी.एम को भेजने वाले थे। यहाँ सत्ता का राजनीतिक रूप से गलत प्रयोग दिखाया है।

'मेरा घर' कहानी में सत्ता का गलत प्रयोग दिखाया है। कहानी में बेघर लोगों की दशा का यथार्थ चित्रण है। कहानीकार ने बेघर लोगों की मनोदशा का सजीव वर्णन किया है। कहानी में एक बेघर बच्ची की मनोदशा का वर्णन है। वह बेघर है पर अपनी सहेली से सच्चाई छिपाती है। कहानी में नगरपालिका जैसे कर्मचारियों पर चोट किया है। उस बच्ची (पुष्पा) का परिवार पहले गाड़ी के पास बिस्तर लगाता था। नगरपालिका के बड़े बाबूजी को नमस्कार न कहने के कारण वहाँ से हटा दिया।

कहानी में इसका जिक्र है – "एक अधेड़, उसकी पत्नी और पंद्रह साल का उनका लड़का

तीनों लूँगी चढ़ाए, खड़े पानी से अपने गूदड़ गाबा(बिस्तर) खींच, किनारे ला रहे थे। कुछेक दिन पहले ये बिस्तर गाड़ी के पास बिछते थे। परिवार के मुखिया बुढ़ाऊ से एक बड़ी गलती हो गई। वह वहाँ से गुजर रहे नगरपालिका के बड़े बाबूजी को नमस्कार करना भूल गया, उस दिन। बाबूजी ने बुड़भस के अहम को लिंगड़ी मारी और उनके बिस्तरॉ के नजदीक कचरा-पात्र रखवा दिया था। ये लोग चाहे धरती बिछाते थे। आसमान औढ़कर सोते थे, लेकिन नाक इनको भी थी। कचरा पात्र। बदबू की गुहा। बदहाली की बिसात। किसे रोएं। किसे धोएँ। तीन-चार दिन जूतियाँ घिसीं। अपने बिस्तर नीचे सरका लिए थे।"[47] कहानीकार ने यहाँ सरकारी कर्मचारियों पर सीधा प्रहार किया है। गरीबों के साथ सहानुभूति जताने के बजाये उसकी जगह भी छिन लेता है। कहानी में सरकारी कर्मचारियों द्वारा अपने सत्ता का गलत प्रयोग दिखाया है।

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में सत्ता के दुरुपयोग का यथार्थ वर्णन किया है। उन्होंने अधिकारियों द्वारा किए गए सत्ता के गलत प्रयोग का चित्रण किया है। ऊँचे पद पर रहने वाले अपनी सत्ता के दम पर बड़े-बड़े घोटाले करते हैं।

ख. आर्थिक संदर्भ :

समाज में आर्थिक स्थिति भी बहुत मायने रखती है। अर्थ के बिना मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। मनुष्य को अपने जीवन-यापन के लिए आर्थिक रूप से सम्पन्न होना अति आवश्यक है। तभी वह समाज में कदम से कदम मिलाकर चलने की स्थिति में होता है। अन्यथा आज कल आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति को कोई पूछता तक नहीं। उसका समाज में रहना मुश्किल हो जाता है। उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है समाज में ऊँच-नीच की भावना रहती है। लेकिन अमीर व्यक्ति को उसकी जात कोई पूछता तक नहीं।

मनुष्य को हर कदम पर अर्थ की आवश्यकता होती है। जीने के लिए, शिक्षा लेने के लिए, परिवार चलाने के लिए, खाने के लिए मनुष्य को आर्थिक रूप से सम्पन्न होने की जरुरत है। आर्थिक रूप से सम्पन्न होने की आपाधापी में लोग जीवन मूल्यों को भूलते जा रहें हैं। वह इतने व्यस्त होते जा रहे हैं कि अपने ही परिवार के साथ बात-चीत करने के लिए भी उनके पास

समय नहीं है। आज के समय में जीवन-जीने के लिए 'अर्थ' की आवश्यकता होती है। इसका यह मतलब कदापि नहीं कि वह बाकी सबकुछ भूला दे। आर्थिक रूप से दुर्बल होना मनुष्य की मानसिकता को भी बदल देती है। यानि मनुष्य के सोच-विचार का तरीका बदल देता है।

(i) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में आर्थिक जीवन :

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में समाज की आर्थिक स्थिति का सजीव वर्णन हुआ है। उन्होंने अपनी कहानियों में गरीबी जैसे मुद्दों को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। उनकी फूलवा, काल, आखेट, बात आदि कहानियों में आर्थिक रूप का स्पष्ट चित्रण मिलता है। रत्नकुमार सांभरिया ने गरीबों को लोगों के सामने झूकते या भीख मांगते हुए नहीं दिखाया है। बल्कि उन्होंने अपनी गरीबी को दूर करने के लिए मेहनत करते दिखाया है। उनको अपने हक के लिए लड़ते दिखाया है। उनकी कहानियों में पात्र गरीब होकर भी गलत कदम नहीं उठाता। वह मेहनत करता है। वह इमानदारी से कार्य करता है। वह आर्थिक रूप से कमजोर होने पर भी मानसिक रूप से कमजोर नहीं है। उनकी यही मानसिकता विद्रोह करने को प्रोत्साहित करती है।

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति आर्थिक स्थिति को सुधार सकता है। शिक्षा व्यक्ति को नई राह दिखाती है। इसलिए रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में शिक्षा को महत्त्व दिया है। उनकी फूलवा, हथौड़ा, बात, धूल, आखेट आदि कहानियाँ इसका उदाहरण है। इन कहानियों के पात्रों ने शिक्षा को अपने गरीबी के आड़े कभी आने नहीं दिया। वह खूब मेहनत करते और अपने बच्चों को पढ़ाते हैं। बच्चों के पढ़ाई में कभी बाधा आने नहीं दिया।

'आखेट' रत्नकुमार की स्त्री जीवन पर आधारित कहानी है। साथ ही इसमें गरीबी का चित्रण भी मिलता है। यहाँ सोमा और उसके परिवार के बारे में है। वह बहुत ही गरीब है। लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। कहानी में सोमा और उसकी पत्नी का वर्णन इस प्रकार है – "सोमा ने थैला खूंटी से टांग दिया। उसने अपनी इकलांघी धोती संगवाई। वह चूल्हे के पास बैठ गया और हथेलियाँ तापने लगा था। रेवती फटी-उधड़ी दो लुगड़ियों में लिपटी-सिमटी बैठी थी। वह आग के सामने बैठी भी जाड़े से धूज रही थी।"[48] इस वाक्य से पता चलता है कि सोमा

गरीब था। उनके पास इतने ठण्ड में पहनने के लिए भी कपड़े नहीं थे। जिस कारण से वह फटे कपड़े पहने हुए थे।

सोमा की पत्नी रेवती के साथ जमींदार कुकर्म करना चाहता था। रेवती जमींदार के नाक में खुरपी मारकर वहाँ से भाग गई। इस घटना के बाद सोमा और रेवती दोनों गाँव से भाग गए। जमींदार गुस्से में आकर सोमा की जमीन हड़प लेता है। घर में भूसा भर देता है। सोमा के माँ को भी घर से बाहर निकाल देता है। "बहुत खूब, उसकी दो बीघा जमीन की मेड मिटा दो। उसके घर में भूसा भर दो। बुढ़ियाँ से कह दो, वह भी गाँव छोड़ दे।"[49] इससे पता चलता है कि सोमा की पत्नी के साथ शारीरिक शोषण किया गया। साथ ही उन पर आर्थिक शोषण भी किया गया। सोमा और उसकी पत्नी को दूसरी जगह जाकर रहना पड़ा। रत्नकुमार सांभरिया ने सोमा जैसे गरीबों का यथार्थ चित्रण किया है। गाँव से आने के बाद सोमा और रेवती बहुत गरीब जिंदगी जी रहे थे। उनके पास पहनने को अच्छे कपड़े नहीं थे। खाने को अच्छा खाना नहीं था। उनका हालत बहुत बुरा था। कहानी में एक जगह सोमा के तबीयत खराब होने का जिक्र मिलता है। जहाँ वह सोने के लिए फटी-पुरानी गुदड़ी बिछाते हैं- "बुखार से सोमा की तबीयत और नरम होती गई। रेवती ने फटी-पुरानी दो गुदड़ियां जमीन पर बिछा दी। उन पर लुगड़ी डाली और बच्चे को सुलाकर रजाई ओढ़ा दी थी।"[50] इससे उनकी गरीबी का पता चलता है। उनके पास जमीन पर बिछाने के लिए भी अच्छे कपड़े नहीं थे। इसलिए वह फटी हुई कपड़े से काम चलाते हैं। यहाँ लेखक ने गरीब लोगों की यथार्थ स्थिति का चित्रण किया है।

'फूलवा' कहानी एक प्रसिद्ध कहानी है। इसमें भी गरीबी का चित्रण मिलता है। फूलवा कहानी में फूलवा नाम की एक गरीब स्त्री के बारे में है। फूलवा की पति की मृत्यु के बाद वह खुद जमींदार के यहाँ काम करती है। वह अपनी मेहनत से बेटे को पुलिस अफ्सर बनाती है। शहर में जब फूलवा के घर रामेश्वर आता है तो वह फूलवा का घर देख अतीत में खो जाता है। वह सोचने लगता है - "फूलवा के कच्चे घर की छान पर फूंस नहीं होती थी। सूरज सारे दिन उसके घर में रहता था। बरसात बाहर भी होती थी और घर में भी होती थी। पानी निकालते उसके हाथ टूटने लगते थे। बेदर्द जाड़ा दिन-रात घर में घुसा रहता था।"[51] इससे पता चलता है

कि फूलवा ने पहले के दिन कितनी गरीबी में गुजारे हैं। उसके घर की हालत बहुत ही खराब थी। फिर भी वह हार नहीं मानी। मेहनत कर बेटे को पढ़ाया लिखाया।

'काल' कहानी अकाल पड़ने की कहानी है। अकाल के समय मनुष्य की जो स्थिति होती है उसका वर्णन है। मिनखू अकाल के कारण एक-एक करके सब बैच देता है। घर में कुछ नहीं बचता। वह बहुत ही गरीब हो जाता है। पहले वह अमीर था। अब इतनी ताकत नहीं कि खाने को चावल खरीद सके। "मल्ली घर लौटी। उसकी झोली में सेर भर गेहूं थे। एक समय वे बैलगाड़ी भरकर गेहूं उधार लाई थी किसी से, सौ जी-हुजूरी, करके।"[52] इससे पता चलता है कि अकाल के कारण मिनखू बहुत ही गरीब हो गया था। पहले वह गेहूं बेचते थे। आज उधार में लाना पड़ रहा है। उनके पास कुछ नहीं बचा था। न पैसे, न अनाज, न काम। पति-पत्नी दोनों एक निवाला खाने तक को सोच रहे थे। यहाँ गरीबों की स्थिति का यथार्थ वर्णन है। अकाल के कारण लोगों की जो दुर्दशा होती है उसका चित्रण है।

काल कहानी में स्वयं मिनखू के मुँह से गरीब का चित्रण होता है। वह स्वयं कहता है कि वह बहुत गरीब है। "मेट साब, मिनखू। गरीब हूँ मैं। घर में दाने नहीं हैं। खूंटे अँधा बैल खड़ा है, बिना न्यार। काम दे दो। खेत हैं। बादल आ जाएंगे। अपने खेत कर लूँगा।"[53] मिनखू इस तरह अपनी गरीबी के बारे में बताता है। वह बहुत गरीब है पर उसे काम नहीं मिलता। जिन लोगों को काम की जरुरत नहीं उन्हें काम मिल रहा था। मिनखू बहुत परेशान था।

'काल' कहानी में गरीबी का चित्रण मिलता है। काल के समय लोगों की क्या दशा होती है उसका वर्णन है। वह अपने घर की सारी चीजें बैचने को मजबूर है। "मल्ली का हल्का सा पक्का रंग था। उमर बाईसेक थी। चेहरे पर चेचक के मीह-मीह कण थे, बाजरे के दाने सरीखे। बाई आँख में तिल भर फूला था। एक समय वह अंगूर की बेल की तरह गहनों से लदी रहती थी। विश्वामित्र ने राजा हरिश्चंद्र का राजपाट तक छीन, उन्हें खाख छानने छोड़ दिया था। नाक के एक कांटे को छोड़, मल्ली के बदन पर गहने का एक काँटा भी नहीं छोड़ा था दुष्ट काल ने। मुन्नी के पावों के पाजेब खोलकर उसने मिनखू को पकड़ा दिए थे और नीचे देखती सुबक-सुबक

रोने लगी थी। बैल की यादें। मन का द्वंद्व। उदास स्मृतियाँ। आज गाँव छोड़े, कल गाँव छोड़े, इसी ऊहापोह में उनके तीन दिन निकल गए थे, आधे पेट।"[54]

कहानीकार ने यहाँ काल से जुझ रहे लोगों की स्थिति का वर्णन किया है। कहानी में काल के कारण लोगों की बुरी आर्थिक स्थिति दिखाई है। मिनखू का परिवार भी काल का शिकार बना। जिससे उनके पास खाने-पीने को कुछ नहीं बचा था। न कुछ बैचने को ही रह गया था।

'डंक' कहानी में भी गरीबी का चित्रण मिलता है। कहानी में खेरा नाम का पात्र था। वह बहुत बीमार था। उसकी पत्नी मांगी उसकी देखभाल कर रही थी। एक साल हो गए थे। खेरा का बीमार ठीक नहीं हो रहा था। कितना दवाई-पानी किया पर खेरा ठीक नहीं हुआ। घर में पैसे भी खत्म हो गए थे। दवाई के लिए एक-एक करके सब बेचना पड़ता है। फिर भी कोई लाभ नहीं हुआ। उनके पास और पैसे नहीं बचे थे दवाई के लिए। "खांसते-खंखारते खेरा बेहाल था। साँसों के ये तार टूटे, अब टूटे। घर में कुछ न था। पैसा होता। दावा आती। दावा संजीवनी। दावा खेरा की जिंदगी की लौ। गाँठ गई। गहने गए। भेड़-बकरियाँ गई। और तो और दो दिन पहले खेरा का अजीज मुर्गा भी बिक गया था, टूटते दाम।"[55] कहानी में गरीबी का इस तरह से वर्णन है। बीमारी के कारण घर का सारा सामान बेचना पड़ता है। यहाँ तक कि पाले हुए भेड़-बकरियाँ भी बैचे गए। अंत में कुछ नहीं बचता। उनकी घर की स्थिति बहुत बुरी होती है। लेखक ने गरीबी के यथार्थ का चित्रण किया है।

'बात' एक स्त्री जीवन से सम्बंधित कहानी है। इस कहानी में भी गरीबी का चित्रण मिलता है। सुरती अपने बेटे के साथ रहती है। वह गरीब थी पर अपने बेटे को स्कूल पढ़ा रही थी। वह अपनी गरीबी के कारण बेटे के स्कूल की फीज नहीं दे पा रही थी। फीज न दे पाने के कारण बेटे को सजा दी जा रही थी। पर बेटा माँ को नहीं बताता। वह मास्टर को अगले दिन पैसा देने का वादा कर चली जाती है। उसे तीन सौ रुपये देने थे। उसके पास एक रूपया नहीं था। वह गांवों में सभी से पूछती है। उसे एक रूपया तक कोई नहीं देता। सुरती सोचने लगती है – "उधार साख और शोहरत पर मिलती है। गरीब का कौन? उसे याद है, पंद्रह दिन पहले राधू बीमार था। उसे पचास रुपये उधार नहीं मिले थे, पुरे गाँव में। चांदी की दोनों चूड़ियाँ बेचकर वह उसे

डॉक्टर के ले गई थी।"[56]

सुरती इतनी गरीब थी कि बीमार बेटे तक को दिखाने के पैसे नहीं थे उसके पास। वह गाँव के धींग नाम के व्यक्ति के पास जाती है। वह पैसा तो देता है पर उसकी नजर सुरती पर थी। सुरती को कहता है कि पैसे न लौटा पाई तो उसकी बात सुरती को सुननी पड़ेगी। सुरती हाँ कहकर चली आती है। सुरती पैसे जमा करने के लिए खूब मेहनत करती है। धींग चुपके से आकर वह पैसे गायब कर देता है ताकि सुरती उसके पास जाने को मजबूर हो जाय। साथ ही अमीर गरीब की मज़बूरी का फायदा उठाकर उसका शोषण करते हैं। गरीब होने के कारण स्कूल में भी बच्चों को झेलनी पड़ती है। उनकी मदद करने के बजाय उसे सजा दी जाती है।

'बात' कहानी में सुरती के द्वारा ही गरीबी को प्रकट किया गया है। अपने बेटे को सजा पाने के बाद वह दुखी होती है। वह मन ही मन सोचने लगी है- "सुरती ने मन मारा। राधू भी बाप सी चुप्पा है। उसने आज तक नहीं बताया, पैसे के मारे, सजा दी जा रही है उसे। वह अपने सवाल का उत्तर खुद बन गई थी। बताकर क्या होता? तंग हाथ। न पाई, न पावली। दो घर काम करके उतने ही दाने आते हैं, हम दोनों माँ-बेटे पेट भर लेते हैं। दो-दो दिन में चूल्हे पर देगची चढ़ती है, सब्जी की।"[57] सुरती अपने ही मुँह से अपनी गरीबी का वर्णन करती है। वह खुद को ही दोषी मानने लगती है। गरीबी के कारण उसके बेटे को सजा मिल रही थी। उसे पता तक नहीं था। सुरती काम करके जितना लाती थी वह बस माँ-बेटे का पेट भरने के लिए ही होता था। और बचता नहीं था। सब्जी भी रोज नहीं बनता है क्योंकि पैसे ही नहीं थे। कहानी में बहुत गरीब परिवार का चित्रण हुआ है।

'बदन दबना' कहानी दलित पर आधारित कहानी है। इसमें गरीबी का चित्रण भी मिलता है। कहानी में एक पिता अपने बेटे को गिरवी रखकर पैसा लेता है। वह बहुत ही गरीब था। उसकी बेटी की शादी थी। पर उसके पास पैसे नहीं थे। इसलिए वह अपने बेटे का सौदा कर पैसे लेकर चला जाता है। वह यह भी नहीं सोचता कि इससे बेटे पर क्या असर होगा। उसके साथ क्या हो सकता है। "सौदा तय था। नोटों की गद्दी हाथ में आते ही रेमा के चेहरे से चिंता के बादल छंट गए थे। चैतन्य की रोशनी चमकने लगी थी। ब्याह की रौनक दिखने लगी थी।

ख़ुशी की गफलत, उसे इतना भी होश नहीं, जिस बेटे को वह पाँच साल के लिए रखे जा रहा है, उसके सिर पर जुदाई का हाथ फेर दे।"[58]

कहानी में दिखाया है कि गरीबी मनुष्य के सोच-विचार की क्षमता नष्ट कर देती है। गरीबी सीधा मनुष्य के मानसिकता पर प्रहार करती है। रेमा बेटी की शादी के लिए छोटे बेटे को स्कूल छुड़वाकर पाँच साल के लिए हवेली छोड़ जाता है। सरपंच गरीबों की मजबूरी का फायदा उठा रहा था। वह चाहता तो पैसा उधार दे सकता था। वह ऐसा नहीं करता। वह पैसे के बदले बच्चा लेता था पाँच साल के लिए। और उससे जैसे चाहे काम करवाता था। पैसा घर वाले ले जाते थे। सजा छोटे बच्चे को भुगतना पड़ता है। इस तरह गरीबी का फायदा उठाकर गाँव के सरपंच गरीब लोगों का शोषण करते थे। गरीब बैचारे चाह कर भी कुछ नहीं कर पाता था। गरीबों के शोषण के यथार्थ का चित्रण मिलता है। साथ ही यहाँ एक गरीब बच्चे की मनोदशा का चित्रण है। वह इतना छोटा होते हुए भी अपने परिवार के लिए खुद का बलिदान देता है। पिता के कहे अनुसार पाँच साल के लिए बंधुआ बन जाता है। उसे अपनी बहन की शादी में जाने तक की अनुमति नहीं मिलती।

'भैंस' कहानी भैंस पर आधारित है। इसमें गरीब के साथ-साथ आर्थिक शोषण का चित्रण है। मंगला कहानी का पात्र है। पहले वह अमीर था। माँ-पिता के देहांत के बाद वह बहुत गरीब हो गया। खाने-पीने को उसके पास कुछ नहीं था। उसकी स्थिति बहुत ही दयनीय थी। कभी-कभी वह भाभी समझी के घर चला जाता था खाने के लिए। भाभी उसे एक भैंस देती है पालन-पोषण करने। भैंस के आने के बाद से मंगला खुश रहने लगा। वह अपने भैंस के साथ-साथ गाँव के अन्य लोगों के भैंस भी चराता था। जिससे उसे पैसे मिलने लगा। मंगला की गरीबी का वर्णन इस प्रकार है – "पाँच साल पहले उसके माँ-बाप एक महीने के बीच दिवांगत हो गए थे। जब तक वे जिए, थान पर धन बंधा रहा। सुना थान। खड़ा खूंटा। अँधेरे में मंगला को खूंटे की ठोकरें लगती। एक दिन उसने खीझकर खूंटा फाड़ा और उसे छप्पर में खोंस दिया था। कब बंधी भैंसे।"[59]

कहानी में आर्थिक शोषण का वर्णन है। मंगला के पिता जब जीवित थे उनकी बीमारी के

लिए दस हजार लगे थे। ठीक होने के बाद ही काम करके सारा पैसा चूका दिया था। लेकिन जब मंगला की भैंस का बच्चा हुआ तो लंबरदार आया और कहने लगा – "छह साल पहले तेरा बाप बीमार से मर रहा था। दस हजार लगे थे। अब जुड़कर बीस हजार हो गए हैं।"[60] लंबरदार जानता था कि मंगला के पिता ने काम करके कर्जा चुका दिया था। फिर भी वह मंगला को परेशान करने चला आया था। मंगला के पिता को काम पर तो लगाया ही साथ ही अब उसे भी लूटना चाहता था। पर ऐसा नहीं हो पाया। वह भैंस को नहीं ले जा पाया। कहानी में गरीबी के साथ-साथ आर्थिक शोषण का भी चित्रण मिलता है।

'बकरी के दो बच्चे' कहानी में गरीबी का चित्रण भली-भांति हुआ है। कहानी में दलपत के परिवार को बहुत ही गरीब दिखाया है। दलपत और उसकी पत्नी के खाना खाने का वर्णन इस प्रकार है – "चूल्हे में उपले जल रहे थे। नीचे आग थी। ऊपर धुआँ था। चूल्हे के सामने बैठा दलपत आग ताप रहा था। दलपत के पेट में भूख की एक भभूकी सी उठी। वह उठा। छींके पर बाजरे की बीसी रोटियाँ राखी हुई थीं। उसने दो रोटियाँ निकाल ली। एक खुद के लिए, दूसरी धर्मकली के लिए। दलपत ने चिमटा लेकर उपले का एक अंगारा खींचा और उस पर एक रोटी सिंकने के लिए रख दी। जब रोटी संवालकर कुरकुरी हो गई, तो वह उसे कुटुर-कुटुर चबाने लगा, जैसे बकरी दाना चबाती है। आह! बाजरे की बासी रोटी सिकने पर कितनी स्वादु हो जाती है। न साग-सब्जी की जरूरत, न चटनी-अचार की। उसने दूसरी रोटी सेंककर धर्मकली को पकड़ा दी थी।"[61] कहानीकार ने एक एसे परिवार का चित्रण किया है जिनके पास खाने को ढंग का खाना भी नहीं है। वह बैचारे एक ही रोटी खाकर खुश है। संतुष्ट है। उन्हें किसी से कोई शिकायत नहीं।

'धूल' कहानी में आर्थिक स्थिति का चित्रण हुआ है। साथ ही इसमें जमींदार द्वारा गरीबी एवं मजबूरी का फायदा उठाकर आर्थिक शोषण करते भी दिखाया है। हुलसीराम अपने भाई की शादी के समय खेत गिरवी रखता है। जमींदार उसकी मजबूरी का फायदा उठाता है। वह

हुलसीराम को उसके गिरवी रखे खेत में काम करने को शर्त रखता है। वह जमींदार का शर्त मान लेता है – "हुलसीराम की पत्नी और उसके दोनों बालकों के मना करने के बावजूद खेत एक लाख रूपए में जमींदार के यहाँ गिरवी रख दिए थे। शर्त थी। जमींदार ब्याज के बदले खेत दुहेगा। हुलसीराम उन्हीं खेतों में काम करेगा। हुलसीराम की आँखें रात में उघड़ जातीं। उसे अपने गिरवी खेत खलते। उसमें बेचैनी भरने लगती। वह बदहवास हो जाता। वह कई बार तो रात को ही उठ कर खेतों में जा पहुँचता, बेबात। अपने खेत की मेड़ पर स्यापा लिए बैठ जाता। रेत की मुट्ठी भरता और चाँद के चाँदने में हवा के रूप धीरे-धीरे उड़ाने लगता, मानो कोई अर्द्धविक्षिप्त वृद्धा अपने कमाऊ बेटे की ठंडी चिंता से राख की मुट्ठी भर कर विलाप करती हो।"[62] कहानी में गरीबों का शोषण करते दिखाया है। जमींदार चाहता तो किसी और को काम पर रख सकता था। वह ऐसा नहीं करता। वह हुलसीराम की मजबूरी का फायदा उठाता है।

'एयरगन का घोड़ा' कहानी में भी गरीबी का चित्रण मिलता है। कहानी में जमींदार द्वारा गरीबों का शोषण करते दिखाया है। कहानी में भूरजी राम मानू के काका जमींदार के यहाँ काम करते थे। जिस कारण भूरजी को जमींदार के बेटे (कीरचंद) की हर बात माननी पड़ती थी। वह गरीब था इसलिए मना भी नहीं कर सकता था। "भूरजी राम मानू और कीरचंद सिंह दोनों छठी में थे। जमींदार का बेटा जमींदार। गरीब का बेटा गरीब। होश संभालते कीरचंद में जमींदाराना भाव बड़े होते गए थे। भूरजी के काका उनकी हवेली में टहल बजाते थे स्कूल या रास्ते आते-जाते भूरजी कीरचंद की चाकरी में लगा रहता था। कीर अपनी धौंस जमाने के लिए गाँव के गरीब बालकों को उससे पिटवाता था। ...भूरजी 'हूँ' कह ताबेदारी करता। इसी तरह की सेवा कीर का बाप, भूरजी के काका से करवाता। बाप की आदतें बेटे में उतरती जा रही थी। भूरजी में गुस्सा उठता बबूले-सा। कीर को पीट-पीट लाल कर दे। छोटी जात। गरीबी साथ। दुबली और दो आसाढ़।"[63]

कहानी में गरीबों का शोषण होते दिखाया है। यहाँ दिखाया है कि बड़ो के साथ-साथ बच्चों

पर भी इसका असर होता है। कहानी में भूरजी का काका जमींदार के घर पर काम करता था। लेकिन जमींदार का बेटा कीरचंद का काम भूरजी को भी करना पड़ता है। इस बात से भूरजी को बहुत ग़ुस्सा आता पर वह कुछ नहीं कर सकता था।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'बूढ़ी' में भी गरीबी का चित्रण मिलता है। उन्होंने यहाँ गरीबी का बहुत मार्मिक चित्रण किया है। कहानी में बूढ़ी बहुत ही गरीब थी। उसकी बेटी की शादी अमीर घराने में हुई थी। जिस कारण बेटी की आने की खबर सुनते ही बूढ़ी, कुछ भी करके पैसे जुटाने की कोशिश करती है। एक बार बेटी की आने की तार आती है। बूढ़ी बहुत खुश होती है। लेकिन बूढ़ी के पास पैसे नहीं होते। वह गाँव के मास्टर के पास अपने ब्याह के काँस की थाली गिरवी रखती है। मास्टर उस थाल के बदले सौ रुपए देता है। थाल को देते वक्त बूढ़ी को बहुत दुख होता है। लेकिन पैसे के अभाव के कारण उसे देना पड़ता है।

"बूढ़ी ने अपने पल्लू से कांसा की थाली निकालकर मास्टर जी की और बढ़ा दी थी- मास्साब, मेरे ब्याह का दान है यह। इसे रख लो। मेरी बेटी आएगी आज।...बूढ़ी का मन रो रहा था। बूढ़ी की आंखे रो रही थीं। बूढ़ी का कलेजा रो रहा था। उसके रूआंसे हो गए होंठों की थरथराहट रोके रुक नहीं पा रही थी। उसके चेहरे की झुर्रियों में जैसे भूचाल सा आ गया था, मानो वह बहुत बड़ा गुनाह कर रही है। वह अपनी आँखों को जितना पोंछती थी, निगोड़ी आँखें फुट-फुटकर रोने लगती थीं। साठ साल पहले उसकी माँ ने खरीदी थी, यह थाली। बेटी चुन्नी के ब्याह में देने के लिए। बीस साल पहले तक बूढ़ी और उसका आदमी इसी थाली में खाते थे। उसके आदमी के चल बसने के बाद उसने इसे उठाकर रख दिया था। मन ही नहीं हुआ, थाली लेकर बैठे। उसकी माँ की, उसके पति की, यही एक टुकड़ा भर याद रह गई थी, जिसे संजोकर रखा हुआ था, उसने।"[64]

कहानी में गरीबी की बहुत बुरी स्थिति दिखाई गई है। बेटी को खिलाने, देने के लिए बूढ़ी के पास पैसे तक नहीं थे। लेकिन वह अपनी स्थिति बेटी को नहीं दिखाना चाहती थी। बूढ़ी

अपनी माँ और पति की याद दिलाने वाली थाली गिरवी रखती है। वह इतनी धूप में भी मास्टर के पास पैसे मांगने जाती है। उसे गर्मी की अहसास तक नहीं होती। कहानीकार कहना चाहते हैं कि गरीबी एक व्यक्ति को अंदर से कमजोर कर देती है। गरीबी में व्यक्ति को न चाहते हुए भी अपनी पसंदीदा चीज गवानी पड़ती है। कहानी में जिस तरह बूढ़ी को अपना थाली देना पड़ा था। बूढ़ी बहुत दुखी थी लेकिन अपनी हालत के सामने वह विवश थी।

'हथौड़ा' कहानी में गरीबी का चित्रण हुआ है। कहानी में मजदूर छोटूराम के पहनावा का वर्णन किया गया है। जिसके वर्णन से स्पष्ट पता चलता है कि वह गरीब है। उसके कपड़े बहुत ही पुराने और फटे थे। "छोटूराम सामने बैठा है और उस दिन का वह वाकया जैसे अभी घटा है। प्लाट पर काम करते छोटूराम पीछे से उधड़ी, मैली-कुचैली सी काली पेंट पहने था। हाथ लगी जैसी पाती (पैबंद) लगाए था, मोटे-मोटे धागे सीं कर, खेत की रोक के लिए किसान बड़ी-बड़ी हलाई भर लिया करता है।"[65] कहानीकार ने यहाँ मजदूरों की आर्थिक स्थिति का वर्णन किया है।

छोटूराम गरीब के साथ-साथ ईमानदार भी था। एक बार छोटूराम का हाथ एक दुर्घटना में चला जाता है। उसे ठीक होने में चार महीने लगता है। उसके सर पर कर्ज बढ़ गया था। फिर भी उसने बाबू साब से हथौड़ा ठीक करने के लिए लिया गया पैसा लौटाने आता है। "ओह इसने चार महीने खात काट ली। दवादारु होती रही। परिवार अभावों में जीता रहा। कर्जदार हो गया। लेकिन मेरे नब्बे रुपए नहीं तोड़े। जीवट, खुद्दारी और ईमानदारी का पर्याय है, छोटूराम। हाथ तंग, मन मलंग।"[66] कहानी में दिखाया है कि गरीब गरीबी में जी लेंगे पर हमेशा ईमानदार रहते हैं। वह अपना आत्मसम्मान बनाए रखते हैं। जैसे कहानी में छोटूराम करता है। उसका हाथ टूट जाने के कारण वह कर्ज से डूब जाता है।

'हिरणी' कहानी में कहानीकार ने गरीबी का चित्रण किया है। कहानी में घुमंतू जनजातियों की दशा का स्पष्ट वर्णन किया गया है। यहाँ उनका रहन-सहन, खान-पान एवं घर का चित्रण

है। यहाँ गरीबी के कारण उनकी स्थिति का वर्णन है। "गाँव की सीमा संधि से बाहर एक सरकारी चक पड़ा हुआ था, जंगल जैसा। वहाँ घुमंतू जनजातियों के कुछ डेरे आबाद थे। जमीन में मोटी-मोटी लड़कियां गाड़, उन पर बांस बांध कर प्लास्टिक की पन्नियाँ या फटे-पुराने तिरपाल तान कर ओट बनाई हुई थी। बिना बांही-बारनों और किवाड़ों के गेटों पर उतरे-सुतरे, फटे-पुराने धोती-तहमद डाल कर आड़ की हुई थी। डेरे अपने काम धंधों की तलाश में दिन-भर गली-कूँचों खटते थे। साँझ ढलते अपने बसेरे लौटे आते थे। आधा-अधूरा खा लेते थे। रात होते निःशंक सो जाते थे। मोटे तौर पर डेरे धरती बिछाते थे और आकाश ओढ़ कर सोते थे।"[67] इनके जीवन बहुत ही दुखदायक था। कहानीकार ने यहाँ घुमंतू जनजाति का यथार्थ रूप प्रदर्शित किया है। यहाँ उनकी आर्थिक स्थिति का स्पष्ट वर्णन है।

'गाड़िया' कहानी में भी आर्थिक स्थिति का स्पष्ट चित्रण मिलता है। कहानी में लोहार की बेटी को जमींदार का बेटा हवस का शिकार बनाने की कोशिश करता है। लड़की के चिल्लाने से वह भाग जाता है। लोहार जमींदार के बेटे को सजा देने को सोचता है। सरपंच जमींदार के बेटे को कहने के बजाय लोहार को कहता- "चौधरी जी, मान लो मेरी। भली इसी में है। घर जाओ अपने। लोहकूट गाड़िया हो। जमींदारों से मुँहजोरी ठीक नहीं।"[68] सरपंच जमींदार के बेटे को कुछ नहीं कहता। जबकि उसे लोहार के साथ न्याय करना चाहिए था। लोहार जब उसका विरोध करता है तो सरपंच उसे मरने को कहता है- "सरपंच ने इशारा किया। दो-तीन गबरूओं ने लोहार से कुल्हाड़ा छीन लिया था। उन्होंने उसे पकड़-जकड़ हाथों पर उठाया और उसकी गाड़ी तक छोड़ आए थे। दुत्कारते। फटकारते। घूँसे मारते। मुँह तक नहीं खोलने की धमकी देते।"[69] इस समाज में गरीबों के लिए कोई सुरक्षित स्थान नहीं है। गरीबों को समाज में अच्छा स्थान नहीं दिया जाता। लोहार के साथ भी ऐसा ही होता है। अंत में लोहार की जीत से गरीबों की जीत दिखाई गई है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में आर्थिक शोषण का चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों

के पात्रों में धैर्य, साहस भरा है। वे गरीब होते हुए भी ईमानदारी को पहले रखते हैं। वे अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए खूब मेहनत करते हैं। अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ाते हैं। अपने बच्चों को बड़ा अफसर बनाने का सपना देखते हैं। कुछ कहानियों में उनके बच्चों को नौकरी मिलते भी दिखाया है। रत्नकुमार सांभरिया ने आर्थिक स्थिति के साथ-साथ आर्थिक शोषण का भी चित्रण किया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में राजनीतिक और आर्थिक संदर्भों के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरुपयोग जैसी समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कहानियाँ समाज में फैली दुषित राजनीति से पाठक वर्ग को रूबरू कराती है। उन्होंने अपनी कहानियों में गरीबों का सजीव चित्रण किया है, साथ ही गरीबों को आर्थिक शोषण से जूझते दिखाया है। जमींदार, सरपंच, पुलिस आदि द्वारा जनता का आर्थिक शोषण करते हुए कहानियों में चित्रित हुए हैं। समाज में आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की बहुत ही बुरी स्थिति होती है। आर्थिक रूप से सम्पन्न लोग गरीबों का फायदा उठाते हैं।

संदर्भ:

1. http://www.scotbuzz.org/2021/02/rajneeti-ka-arth.html?m=1
2. राजनितिक सिद्धांत और भारतीय राजनितिक चिंतन, प्रो.दिलीप सिंह, पृ.13
3. https://politicalinhindi.blogspot.com/2019/02/what-is-The-Meaning-of-politics.html?m=1
4. दलित समाज की कहानियाँ, बदन दबना, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 263
5. https://www.scotbuzz.org/2019/05/bhrashtachar-kya-hai.html?m=1
6. https://www.scotbuzz.org/2019/05/bhrashtachar-kya-hai.html?m=1
7. दलित समाज की कहानियाँ, बकरी के दो बच्चे, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 36
8. दलित समाज की कहानियाँ, बकरी के दो बच्चे, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 36
9. एयरगन का घोड़ा, हुकम की दुक्की, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 30
10. एयरगन का घोड़ा, झुनझुना, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 90
11. वही, पृ. 99
12. दलित समाज की कहानियाँ, सवांखें, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 205
13. वही, पृ. 207
14. वही, पृ. 209
15. वही, काल, पृ. 113
16. एयरगन का घोड़ा, खबर, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 239
17. वही, पृ. 238
18. दलित समाज की कहानियाँ, बाढ़ में वोट, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 225
19. वही, पृ. 230
20. वही, पृ. 232
21. एयरगन का घोड़ा, पुरस्कार, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 118
22. दलित समाज की कहानियाँ, भैंस, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 108
23. वही, पृ. 108
24. वही, पृ. 108
25. वही, झंझा, पृ. 121
26. वही, पृ. 126

27. दलित समाज की कहानियाँ, बात, पृ. 149
28. वही, बिपर सूदर एक कीने, पृ. 251
29. एयरगन का घोड़ा, धूल, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 159
30. वही, पृ. 158
31. वही, पुरस्कार, पृ. 119
32. दलित समाज की कहानियाँ, बाढ़ में वोट, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 225
33. दलित समाज की कहानियाँ, बाढ़ में वोट, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 225
34. एयरगन का घोड़ा, हुकम की दुक्की, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 30
35. स्त्री विमर्श:रत्नकुमार सांभरिया की चयनित कहानियाँ, संपादक-डॉ. अनामिका, पृ. 162
36. वही, पृ. 164
37. वही, पृ. 170
38. दलित समाज की कहानियाँ, सवांखें, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 207
39. वही, काल, पृ. 114-115
40. वही, आखेट, पृ. 47
41. वही, शर्त, पृ. 90
42. वही, पृ. 92-93
43. वही, झंझा, पृ. 128
44. एयरगन का घोड़ा, गाड़िया, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 23
45. वही, पृ. 23
46. वही,धूल, पृ. 159
47. दलित समाज की कहानियाँ, मेरा घर, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 281
48. वही, आखेट, पृ.-41
49. वही, पृ. 46-47
50. वही, पृ. 48
51. वही, फुलवा, पृ. 22
52. वही, काल, पृ. 113
53. वही, पृ. 113
54. वही, पृ. 117

55. दलित समाज की कहानियाँ, डंक, पृ.141
56. वही, बात, पृ. 150
57. वही, पृ. 149
58. वही, बदन दबना, पृ. 263
59. वही, भैंस, पृ. 103
60. वही, पृ. 109
61. वही, बकरी के दो बच्चे, पृ. 30
62. एयरगन का घोड़ा, धूल, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 152-153
63. एयरगन का घोड़ा, एयरगन का घोड़ा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 66
64. दलित समाज की कहानियाँ, बूढ़ी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 53-54
65. वही, हथौड़ा, पृ. 271
66. दलित समाज की कहानियाँ, हथौड़ा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 273
67. एयरगन का घोड़ा, हिरणी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 174
68. वही, गाड़ियाँ, पृ. 23
69. वही, गाड़ियाँ, पृ. 23

पंचम अध्याय

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का शिल्प

क. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की भाषा :

"'भाषा' शब्द संस्कृत के भाष् धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है - व्यक्त वाणी। एक प्रकार से इस धातु के अर्थ में ही भाषा का लक्षण विद्यमान है। व्यक्त वाणी का अर्थ है - स्पष्ट और पूर्ण अभिव्यंजना; और वह उच्चरित या वाचिक भाषा से ही संभव है जिसमें सूक्ष्म अर्थों के बोधक अनंत ध्वनि-संकेत हैं।"[1]

भाषा शब्द का प्रयोग भिन्न अर्थों में किया जाता है। सामान्य रूप से भाषा का प्रयोग बोलचाल के लिए किया जाता है। भाषा दो या अधिक व्यक्तियों के बीच अभिव्यक्ति का माध्यम है। मनुष्य अपने भावों, विचारों को दूसरे के समक्ष व्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा एक अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं है। भाषा वह माध्यम है जिसकी सहायता से मनुष्य अपने विचारों को एक दूसरे के समक्ष प्रकट करता है। भाषा धन्यात्मक शब्दों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति है। भाषा की सहायता से हम अपने विचारों को दूसरों सामने प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं।

पशु-पक्षियों की बोली के लिए भी भाषा का प्रयोग किया जाता है। पशु भी आपस में बातचीत करते हैं। उनकी भी अपनी अलग भाषा है। पर उनकी भाषा को भाषा नहीं कहा जा सकता। मनुष्य कभी-कभी आँख, हाथ आदि के द्वारा भी इशारा कर अपनी बातों को कहता है। पर यह सही अर्थ में भाषा नहीं है। भाषा के लिए ध्वनियों का होना आवश्यक है। मनुष्य भाषा के द्वारा अपने भावों, विचारों की अभिव्यक्ति कर सकता है।

भाषा मनुष्य का एक अभिन्न अंग है। भाषा के द्वारा ही किसी भी समाज, संस्कृति को जाना जा सकता है। भाषा के माध्यम से किसी भी साहित्य को पढ़ा जा सकता है। भाषा के अध्ययन के बिना किसी भी रचनाकार तथा साहित्यकार का अध्ययन अधुरा ही रहता है। क्योंकि भाषा के द्वारा ही साहित्यकार अपने विचारों, कल्पनाओं तथा भावनाओं को साहित्य के माध्यम से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। भाषा वह साधन है जिसकी सहायता से

मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। अपने विचारों को प्रकट करने के लिए मनुष्य भाषा की सहायता लेता है। भाषा मनुष्य को सम्पन्न बनाती है। मनुष्य को एक सूत्र में बाँधने की ताकत है भाषा। किसी भी भाषा का अध्ययन एवं अध्यापन सरल नहीं होता। भाषा सीखने के लिए उस भाषा की लिपि, व्याकरण की जानकारी आवश्यक है।

भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है। भाषा परिवर्तनशील होती है। इसलिए इसका एक रूप नहीं होता। यह बदलती रहती है। भाषा को परंपरा की देन कहा जा सकता है। यह अचानक से नहीं बल्कि परंपरागत रूप में हमें मिलती है। भाषा को सामाजिक भी कहा जा सकता है। जब एक बच्चा बड़ा होता है तब वह घर के अलावा समाज से भी सीखता है।

(i) परिभाषा :

भारतीय एवं पाश्चात्यों विद्वानों द्वारा निम्नलिखित परिभाषाएँ हैं :

भारतीय विद्वानों के अनुसार-

1. पी.डी.गुणे के अनुसार, "ध्वन्यात्मक-शब्दों द्वारा हृदयगत भावों तथा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।"[2]

2. बाबूराम सक्सेना के अनुसार, "जिन ध्वनि-चिन्हों द्वारा मानुष परस्पर विचार विनिमय करता है, उसे भाषा कहते हैं।"[3]

3. सुकुमार सेन के अनुसार, "अर्थवान, कंठोदगीर्ण ध्वनि-समष्टि ही भाषा है।"[4]

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार –

1. हेनरी स्वीट के अनुसार, "ध्वन्यात्मक-शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।"[5]

2. ओत्तो येस्पर्सन के अनुसार, "मनुष्य ध्वन्यात्मक-शब्दों द्वारा अपना विचार प्रकट करता है। मानव मस्तिष्क वस्तुतः विचार प्रकट करने के लिए ऐसे शब्दों का निरंतर उपयोग करता है। इस प्रकार के कार्य-कलाप को ही भाषा की संज्ञा दी जाती है।"[6]

3. ब्लाख तथा ट्रेगर के अनुसार, "भाषा यादृच्छिक ध्वनि-संकेतों की वह प्रणाली है जिसके

माध्यम से सामाजिक समूह परस्पर सहयोग करते हैं।"[7]

साहित्य में अनेक प्रकार की भाषाएँ प्रयोग की जाती है। यह भाषाएँ मानक रूप से स्वीकृत है। काव्यात्मक भाषा, चित्रात्मक भाषा, प्रतीकात्मक भाषा, मुहावरे और लोकोक्तियाँ आदि साहित्य में प्राप्त होती है। साहित्यकार अपनी भाषाओं से साहित्य को एक नया रूप प्रदान करता है। वह साहित्य को औजपूर्ण बनाता है। भाषा के माध्यम से एक साहित्यकार अपने विचारों को पाठक के समक्ष रखता है। पाठक भाषा के द्वारा ही उसे पढ़ता और समझता है। भाषा ही एक साहित्यकार और पाठक को जोड़ने का काम करती है। भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है। साहित्यकार भाषा द्वारा अपनी सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है। साहित्य की भाषा सहज एवं सरल होनी चाहिए। अन्यथा पाठक को पढ़ने में दिक्कत आ सकती है। इसलिए साहित्यकार प्रयास करता है कि उसकी भाषा सहज हो। उसकी भाषा भाव-स्पष्ट हो। भाषा में गहराई हो।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया गया है। उनकी भाषाओं में पकड़ अधिक देखा जाता है। उनकी भाषाओं में ग्रामीण शब्दों का प्रयोग होने के कारण कठिनाई उत्पन्न होती है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में ग्रामीण वाक्यों का अधिक प्रयोग मिलता है। उनकी कहानियों में अंग्रेजी, उर्दू, राजस्थानी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग मिलता है। साथ ही उनकी कहानियों में मुहावरे और लोकोक्तियों, गालियों, कहावते आदि भी प्राप्त होती है। रत्नकुमार सांभरिया की भाषा काव्यात्मक, प्रतीकात्मक, बिम्बात्मक आदि के रूप में चित्रित है। उन्होंने अपनी कहानी में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा पात्र के अनुकूल है। अपनी कहानियों के पात्र के अनुकूल रत्नकुमार सांभरिया ने भाषा का सटीक प्रयोग किया है। ग्रामीण पात्र की भाषा में आँचलिकता का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

1. काव्यात्मक भाषा : रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में काव्यात्मक भाषा की प्राप्ति होती है। उनकी भाषा काव्यात्मक है। काव्यात्मक से तात्पर्य है वह भाषा जिसमें काव्यात्मकता की झलक हो। जिसमें एक लय हो। काव्यात्मक यानि काव्य की भाषा। यह कहने को तो गद्य विधा

का ही एक रूप है। पर इसमें काव्यात्मकता की अनुभूति होती है। किसी काव्य को पढ़कर जो आनंद प्राप्त होता है। ठीक वैसा ही गद्य के वाक्यांशों को पढ़कर होता है। रत्नकुमार सांभरिया में भी यह प्रतिभा है। उनकी कहानियों में कुछ वाक्यांश ऐसे हैं, जिसे पढ़कर काव्य की अनुभूति होती है। उनकी भाषा काव्यात्मक है। उनकी कहानियों में प्राप्त काव्यात्मक भाषा का प्रयोग इस प्रकार मिलता है –

"एक हरजी था, दूसरा मर्जी था। दोनों दारु के काबू थे। गुस्से से बेकाबू थे। दोनों की बांछे खिल गई थीं। बदल में छोरा, गाँव में ढिंढोरा। हाथ से फिसला, जेब से निकला, मानो फिर पा गया हो।"[8]

"जाग हो गई थी, चारों फेर। लोग-बाग इकट्ठा होने लगे थे। उनके मगज माजरा बूझ रहे थे। आँख-कान समय सूझ रहे थे।"[9]

"जंगल की नींद उड़ गई थी। रात्रि की तंद्र टूट गई थी। सन्नाटा चिर गया था। अगनी के पैरों तले धरती धूज रही थी।"[10]

2. चित्रात्मक भाषा : चित्रात्मक भाषा वह है, जो शब्दों के माध्यम से चित्र की अनुभूति कराती है। किसी भी पुस्तक को पढ़ते समय जब कोई चित्र हमारे सामने आता है उसे चित्रात्मक भाषा कहते है। चित्रात्मक भाषा में चित्र की प्रधानता होती है। यह चित्र यथार्थ नहीं होता। जैसे जब किसी जगह का वर्णन मिलता है तब हमारे मन में उसका एक चित्र उभरता है। ऐसा लगता है सब हमारी आँखों के सामने हो रहा है। यही चित्रात्मक भाषा है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में चित्रात्मक भाषा की प्रधानता है। उनकी कहानियों में चित्रात्मक भाषा का उदाहरण इस प्रकार है –

"पौने छह फीट लम्बा कद। पतला-सा सुता हुआ शारीर। गेहुंआ रंग। लम्बी गर्दन। गले में काले डोरों की रुद्राक्ष गुँथी माला। दोनों कान फुडे हुए। कान के इन छिद्रों से हवा आए-जाए।"[11]

"बिना बाँही-बारनों और किवाड़ों के गेटों पर उतरे-सुतरे, फटे-पुराने धोती-तहमद डाल कर आड़ की हुई थी। डेरे अपने काम धंधों की तलाश में दिन-भर गली-कूँचों खटते थे। साँझ ढलते अपने बसेरे लौटे आते थे। आधा-अधूरा खा लेते थे। रात होते निःशंक सो जाते थे। मोटे तौर पर डेरे धरती बिछाते थे और आकाश ओढ़ कर सोते थे।"[12]

"पौने छह फीट लंबा कद। पतला-सा सुता हुआ शरीर। गेहूँआ रंग। लंबा गर्दन। गले में काले डेरों की रुद्राक्ष गूँथी माला। दोनों कान फुड़े हुए। कान के इन छिद्रों से हवा आए-जाए। सिर पर बंधे तौलिया के फेंटा तले कंधों गिरती सुनहरी बालों की रूखी-सूखी लटें।"[13]

3. प्रतीकात्मक भाषा : प्रतीकात्मक भाषा में प्रतीकों की बहुलता होती है। साहित्यकार अपनी भाषा में प्रतीकों के माध्यम से कहता है। साहित्यकार प्रतीकों के माध्यम से सन्देश छोड़ता है। पाठक उसी प्रतीक के द्वारा यथार्थ तक पहुँचता है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। उनकी कहानियों में प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग इस प्रकार है –

"गाँव है, बहुत तड़के ही उठ खड़ा होता है न, साँझ पड़े सो जाता है, गहरा।"[14]

यह 'लाठी' कहानी से लिया गया है। इस वाक्यांश से अभिप्राय ले सकते हैं कि आवश्यकता न पड़ने पर सब आते हैं। जब सहायता की आवश्यकता होती है तब कोई नहीं आता। अर्थात मुसिबत के समय कोई नहीं आता।

"वे लाठी नहीं ला सकते सलमा।"[15]

यह वाक्यांश 'लाठी' कहानी से लिया गया है। कहानी में लाठी को साम्प्रदायिकता का प्रतीक माना गया है।

"काल"[16] कहानी शीर्षक स्वयं एक प्रतीक है। यह अकाल का प्रतीक है।

4. सांकेतिक भाषा : सांकेतिक भाषा में संकेतों की बहुलता होती है। इसमें संकेत को महत्त्व दिया जाता है। लेखक अपने लेखन के जरिए संकेत उत्पन्न करता है। पाठक उस संकेत को पढ़कर उसके यथार्थ तक पहुँचता है। सांकेतिक भाषा में लेखक सीधा कहने के बजाय अपनी

बातों को संकेतों के माध्यम से कहता है। रत्नकुमार सांभरिया ने भी कहानियों में सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया है। उनकी कहानियों में प्रयोग होने वाली सांकेतिक भाषा इस प्रकार है–

"'बाढ़ में वोट' कहानी में स्वयं शीर्षक ही सांकेतिक है। इसमें राजनेता के चरित्र की ओर संकेत किया गया है।"[17]

"झुनझुना"[18] कहानी में स्वयं शीर्षक ही सांकेतिक है। इसमें झुनझुना जनता की आवाज की ओर संकेत करता है।

"कील"[19] कहानी स्वयं सांकेतिक है। इसमें एक माँ के दर्द का चित्रण है।

5. बोलचाल की भाषा : बोलचाल की भाषा से तात्पर्य है बोलचाल के दोरान प्रयोग की जाने वाली भाषा। बोलचाल की भाषा के अंतर्गत स्थानीय भाषा का प्रयोग किया जा सकता है। स्थानीय भाषा यानि एक जगह के लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा। रत्नकुमार जी की कहानियों में बोलचाल की भाषा का प्रयोग मिलता है। उनकी कहानियों में बोलचाल की भाषा का प्रयोग इस प्रकार है – 'खेत' कहानी में एक बूढ़ा और एक वकील के बीच बात होती है -

"दूसरों या तीसरों?"[20]

"जको आगो अबार बनो छे, अर बुच लाग्योड़ी छे?"[21]

"छेती करो तुसी। दुसट दी खातिर तवज्जो कर एक-दो घंटे विच आ जाणा।"[22]

6. बिम्बात्मक भाषा : बिम्बात्मक भाषा यानि बिम्ब युक्त भाषा। बिम्ब अंग्रेजी के image का हिंदी पर्याय है। जब पाठक किसी पाठ को पढ़ता है तब उसके मन में एक छवि बनती है। यही छवि बिम्ब कहलाती है। पाठ को पढ़ते समय पाठकों के मन में छवि बन सकती हैं। वह किसी व्यक्ति, प्रकृति, जगह, वस्तु आदि हो सकती है। यह हमारे सोचने की शक्ति पर आधारित है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में बिम्ब की झलक देख सकते हैं। उन्होंने बिम्ब का सुन्दर

चित्रण अंकित किया है। उनकी कहानियों में बिम्बात्मक भाषा अधिक प्रयोग हुआ है। उन्होंने अपनी कहानियों में सभी प्रकार के बिंबों का प्रयोग किया है। उनकी कहानियों में प्राप्त बिम्बात्मक भाषा का प्रयोग इस प्रकार है –

"मंगसर था। रीछ की मुख-मुद्रा-सा मौसम था, खोया-खोया। सुबह थी। हवा में जाड़े की खनक थी। बयार चल पड़ी थीं। मावठ की बदलियाँ हवा में तिरने लगी थीं। बदली आती, जाड़ा ले आती। सूरज आता, जाड़ा हट जाता। लोगों ने गरम कपड़े निकाल लिए थे। जिनके पास नहीं थे, वे यूँ ही डोल रहे थे।"[23]

उपयुक्त वाक्यांश में दृश्य बिम्ब का प्रयोग किया गया है। यहाँ सुबह के समय के माध्यम से कहानीकार ने दृश्य बिम्ब का निर्माण किया है।

"शहर और गाँव की संधि पर मैं वैसे ही पड़ी थी, जैसे कुदरत ने दी थी। मेरे बदन पर खून सना झीना-सा एक लत्ता लिपटा था। निगोड़ी हवा का झोंका आपा। झोंके ने उसे फड़फड़ा लिया था।"[24]

उपयुक्त वाक्यांश में स्पर्श बिम्ब का प्रयोग हुआ है। यहाँ हवा के झोंकों के माध्यम से कहानीकार ने स्पर्श बिम्ब का निर्माण किया है।

"दीवार के साथ चिपका लंबरदार थर-थर हिल रहा था, सूत सा। भैंस को बेकाबू देख लंबरदार का रोम-रोम काँप उठा था, जैसे आंधी में पत्ते हिलते हैं। उसके कमजोर हाथों से बंदूक छूटकर नीचे गिर पड़ी थी। भैंस ने उसे सींगों भर डोली के दूसरी ओर फेंक दिया था। भय खाए कारिंदे भाग छूटे थे।"[25]

उपायुक्त वाक्यांश में दृश्य बिम्ब का चित्रण हुआ है। यहाँ लंबरदार के डर के दृश्य से दृश्य बिम्ब का निर्माण हुआ है।

7. अलंकारिक भाषा : अलंकारिक भाषा का प्रयोग साहित्य में चारुता उत्पन्न करती है। अपनी भाषा में जान डालने के लिए साहित्यकार अलंकारिक भाषा का प्रयोग करता है। अलंकारिक भाषा के प्रयोग से पाठकवर्ग की भी रूचि बढ़ती है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में

अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है। जिस कारण उनकी कहानियाँ जीवंत हो उठी है। उनकी कहानियों में प्राप्त अलंकारिक भाषा के उदाहरण इस प्रकार है –

1) "खून पीने वाला जीव है। कभी नहीं मरता।"[26]

2)"वह पंखी झलती। उसके हाथ की चाम झूमती, हाथी के कान हिलते हों, जैसे। पंखी रूकती। उसकी देह से आग का भभूका सा निकलता।"[27]

8. पात्रानुकूल भाषा : पात्रानुकूल भाषा यानि पात्रों के अनुसार लिखी गई भाषा। वह भाषा जो पात्रों के अनुकूल लिखी जाती है। पात्रानुकूल भाषा में पात्रों पर ध्यान दिया जाता है। रत्नकुमार सांभरिया` ने भी अपनी कहानियों में भाषा पात्रानुकूल लिखी है। उदाहरणार्थ – 'खेत' कहानी में बूढ़ा के मुँह से बूढ़ा व्यक्ति के अनुकूल वाक्य कहलाए गए हैं –

"बूढ़ा और बालक की चाम नाजुक हौवे छे । हवा, पानी जल्दी लाग जावै। कभी साज, कभी नासाज। किसट तो माकी काया भोगेली।"[28]

9. मुहावरे और लोकोक्तियाँ : ऐसा वाक्य जिससे सामान्य अर्थ से भिन्न अर्थ प्रतीत हो उसे मुहावरा कहा जाता है। मुहावरे में बहुत बड़ा अर्थ छिपा रहता है। यह होता है छोटा पर अर्थ बड़ा होता है। साहित्य में मुहावरा का प्रयोग वाक्य में रोचकता पैदा करती है। मुहावरे के प्रयोग से किसी भी साहित्य का दर्जा बढ़ जाता है। मुहावरे का अर्थ न समझने पर भी उसके भावार्थ को समझना आवश्यक है। वाक्य के अनुसार मुहावरे बदल जाता है। मुहावरा अधुरा होता है। इसका प्रयोग घुमा फिर कर बात कहने के लिए किया जाता है। मुहावरे में अतिशयोक्ति का प्रयोग नहीं होता। मुहावरे में उसका अर्थ नहीं बल्कि उसके भाव को लिया जाता है। इसमें शब्दों का अनुवाद नहीं होता। इसका अर्थ वाक्य के अनुसार बदल जाता है। मुहावरा में शाब्दिक अर्थ का प्रयोग नहीं होता। मुहावरे का प्रयोग भाषा में सरलता, सहजता,चमत्कार उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

लोकोक्ति से तात्पर्य है लोगों की उक्ति। लोकोक्ति को कहावते भी कहा जा सकता है।

साहित्य में लोकोक्ति का प्रयोग रोचकता पैदा करती है। लोकोक्ति अपने आप में सम्पूर्ण है। इसे मुहावरे की तरह अन्य वाक्य से जोड़कर अर्थ नहीं निकाला जा सकता। लोकोक्ति रोचकता के साथ-साथ उपदेश भी देती है। लोकोक्ति किसी महापुरुष द्वारा कही जाने वाली उक्ति है। इन्हीं उक्तियों को कथा साहित्य में प्रयोग किया जाता है। लोकोक्ति में शाब्दिक अर्थ का प्रयोग होता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में भी मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग मिलता है। जिसके कारण उनकी कहानियों में रोचकता पैदा हुई है। उनकी कहानियों में अनेक मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ प्राप्त होती है। रत्नकुमार जी ने अपनी कहानियों में मुहावरों का प्रयोग चमत्कार उत्पन्न करने के लिए किया। साथ ही लोकोक्तियों का प्रयोग ज्ञान देने के लिए किया है। उनकी कहानियों में प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्तियाँ इस प्रकार है –

मुहावरा :

1. "दाल में काला है।"[29]

2. "वह अपनी छोटे भाई का ब्याह उसी शान-शौकत से करेगा कि जात और गाँव दोनों की आबरू को चार चाँद लग जाए।"[30]

3. "तुम जैसा भी घोड़े बेचकर कोई सोता है।"[31]

4. "सिर मूसली से जी टकराया था। आँखों के सामने अंधेरा छा गया था।"[32]

5. "उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं और आँखें फटी-फटी रह गई थीं, मूर्ति-सी।"[33]

6. "बच्चा पछाड़े खाकर रोने लगा था। बेचारे का आराम करने का अधिकार छिन गया था। रोत-रोते आसमान सिर पर उठाए जाता था वह।"[34]

7. "बूढ़ा-बूढ़ी दोनों चुप रह गए थे। उनकी उम्मीदों पर पानी फिर गया था।"[35]

8. "लेकिन शातिर चोर की तरह धनदेवी के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी।"[36]

9. "सोनवती की आँखों के सामने तारे टूट-टूट गिर रहे थे। आसमान फटा पड़ता था। पाँवों

तली से जमीन खिसक गई थी।"[37]

10. "मैं उड़ती चिड़िया पहचान गई थी, धर्म किस गली का गुबारा है।"[38]

लोकोक्तियाँ :

1. "सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली।"[39]

2. "जब तक साँस, तब तक आस।"[40]

3. "बिना बादल बरसात नहीं होती। बिन धुआँ आग नहीं होती।"[41]

4. "पुरानी कहावत है, 'जब कुम्हार का बस कुम्हारी पर नहीं चलता, तो वह अपने गधे के कान उमेठता है।"[42]

5. "अपनी सोर देख, पाँव पसारने चाहिए।"[43]

6. "गाँव में जहाँ 'दो पोई दो काख में, मोड़ा लोटे राख में, की कहावत चरितार्थ हो रही थी, यहाँ इतने स्वाद थे, खाते-खाते मुँह दुखे।"[44]

7. "बिन आस पैसा फांस।"[45]

8. "लोहा, लोहे से कटता है। धर्म, धर्म से सधता है।"[46]

9. "करेला और नीम चढ़ा।"[47]

10. "होठों पर थिरकती सुबकन को रोकते हुए वह दानीदास से मुखातिब हुआ – 'चोर सिपाही, हाथ मिलाई' कहावत हुई दादा।"[48]

10. गालियों का प्रयोग : रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में गालियों का प्रयोग हुआ है। उनकी अधिकतर कहानियाँ ग्रामीण परिवेश पर आधारित है। ग्रामीण होने के कारण जमींदार जैसे पात्रों का चित्रण हुआ हैं। जिस कारण उनके द्वारा काम करने वालों को गाली देता दिखाया है। साथ ही पति-पत्नी के झगड़ो का भी चित्रण है, जिस कारण से उनमें गालियों का

भी प्रयोग हुआ है। पुलिस द्वारा गाली का प्रयोग है। नेताओं द्वारा गाली का प्रयोग किया गया है। जैसे-

1) "उसे देहरी से बाहर धकिया कर लात मारी, 'कालाटूरी कहीं की।' घर में घुसी गर्दन कलम कर दूंगा।"[49]

2) "उल्लू का पट्ठा, चाय बिगाड़ दी। पैसा तेरा बाप देगा।"[50]

3) "मूर्खो, भैंस खड़ी करो।"[51]

4) "हो-न-हो पागल है, स्साला।"[52]

5) "अँधा ठूंठ, नीची जात! काबू में रह तू!"[53]

6) "वह तो जहन्नुम में भी जूत मारेगी तेरे।"[54]

7) "इसके दोनों गालों पर दो-दो थप्पड़ लगा जोर से। कामचोर। निकम्मा कहीं का...।"[55]

8) "नापूता कीर तेरो सत्यानाश जाएगो। कीड़ा पड़ेगा बदन में। जेल में पड़ो सड़ागो। चाकी पीसागो।"[56]

9) "नीच, तेरे कीड़े पड़ेंगे।"[57]

10) "उल्लू के पट्ठो, क्या है इसमें? बकरी के मरे हुए दो बच्चे।"[58]

11. वाक्य संरचना : वाक्य संरचना से तात्पर्य है वाक्य रचना का गठन। एक वाक्य का गठन किस तरह होता है। उसकी बनावट। व्याकरण, भाषा, शैली आदि वाक्य संरचना के अंतर्गत ही आता है। साहित्य में वाक्य संरचना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। किसी भी साहित्य में वाक्य संरचना अहम् भूमिका निभाती है। वाक्य संरचना के गठन से ही एक लेख ऊँचा स्थान प्राप्त करता है। वाक्य संरचना संक्षिप्त, लम्बी और अधूरे होते हैं।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में वाक्य संरचना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। उनके कहानियों के वाक्य राजस्थानी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू आदि शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। इनके वाक्यों में शब्दों पर पकड़ है। उन्होंने वाक्यों को पात्रों के अनुसार लिखा है। रत्नकुमार

सांभरिया की वाक्य संरचना इस प्रकार है –

1) "हम बेवकूफ हैं, जो रोज...।"[59]

2) "धीरे बोल, हरमन सुन लेंगे।"[60]

3) "छडडो तुसी।"[61]

4) "पेट की गरज दरयाव के भीतर के अक्खड़पन और तमक ने साथ छोड़ दिया था तथा उसमें नम्रता और समझ आसीन हो गई थीं।"[62]

5) "इज्जत से बड़ी रकम नहीं होती। 'बात' गिरवी रख रही हूँ। एक महीने में पैसे नहीं लौटाऊं...।"[63]

12. शब्द भण्डार : शब्द भण्डार से तात्पर्य है शब्दों का भण्डार। साहित्य में किसी भी भाषा में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों के समूह को शब्द भण्डार कहते हैं। शब्द भण्डार के अंतर्गत देशी, विदेशी, तत्सम, तद्भव आदि शब्द आते हैं। इन अनेक प्रकार के शब्दों के समूह को शब्द भण्डार कहते हैं। साहित्य रचने के लिए शब्द भण्डार का ज्ञान बहुत जरुरी है।

रत्नकुमार सांभरिया ने भी अपनी कहानियों में अनेक भाषाओं के शब्दों का सटीक प्रयोग किया है। उनकी कहानियों में अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू आदि कई भाषाओं के शब्द पाए जाते हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में प्राप्त शब्द भण्डार इस प्रकार है-

रत्नकुमार जी की 'झंझा' कहानी में हिंदी-पंजाबी शब्दों का प्रयोग मिलता है। जैसे-

1) "तुहाड़े पीऊ ने तैनूं कुछ दसिया सी?"[64]

2) "वो बंदा नहीं, जानवर है। उस नाल दरवेश सी सुध किथे। पुत्तर, तुसी छेती करो।"[65]

3) "पुत्तर, यह साडा पिंड है। तुसी फिकर ना करो। तुहाड़ी औरत की तरफ कोई अंख उठा के भी नहीं देख सकदा है।"[66]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में हिंदी-अंग्रेजी शब्दों का भी सुन्दर मिश्रण मिलता है। जैसे रत्नकुमार सांभरिया की 'राइट टाइम' कहानी में है – "राइट टाइम है।"[67]

'पुरस्कार' कहानी में- "सामने कॉमनरूम है, नीना जी।"[68]

'बाढ़ में वोट' कहानी में- "डी.एम.साहब, रीजन क्या है, रीयली?"[69]

"आला गिल्टी फील करने लगे।"[70]

'खबर' कहानी में देख सकते हैं- "वैरी गुड सर, क्या कहने।"[71]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में राजस्थानी शब्दों का प्रयोग देख सकते हैं। जैसे- उनकी 'खेत' खेत कहानी में देख सकते हैं-

1) "ताऊ कित जागा? छोरा पढ़े सै के थारा इस सकूल में?"[72]

2) "वकील जी वैंडे हमने अपनो बैल दबायो छो, बीस बोरी नमक मेल।"[73]

3) "मेरो बेटो, खट्टाराम बड़ो अफसर छे। फौन माले धरती धूजे। ना तो दो पैरां का जानवर मुनै मोस मीस कदी का खेत डकार जाता।"[74]

रत्नकुमार सांभरिया ने उर्दू के शब्दों का सुन्दर प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। जैसे- चीज़ें, इत्तफ़ाक, उम्र, उस्ताद, औरत, ठंड, बादल, पानी, पास, बदन, अगर, आप, किताब, खून, कानून, सिर्फ, खबर, कमरा, साहब, हवा, सुबह, शर्त, शिकायत, गरीबी, गर्दन, चाँद, आदमी आदि।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में प्राप्त तत्सम शब्द इस प्रकार है – पंजाबी, आखेट, कृष्ण, नव, आषाढ़, यौवन, ताप, नियम, परीक्षा, विलाप, वधू, नेत्र, क्रोध, त्राहि-त्राहि आदि।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में प्राप्त तद्भव शब्द – गाँव, भाई, दूध, आँसू, खेत, गाँठ, गाय, गेहूं, घर, घोड़ा, चमार, चिड़िया, डंक, पहनावा, पिता, पूस, पोता, बच्चा, बहन, बात, बादल, बूढ़ा, ब्याह, लाठी, सावन आदि।

13. **ध्वन्यात्मक शब्द :** ध्वन्यात्मक शब्द अर्थात वह शब्द जो ध्वनि सा प्रतीत होता है। सुनने में ध्वनि की आवृति होती है। जैसे किसी गाड़ी की आवाज, चिड़िया की आवाज आदि। ध्वन्यात्मक शब्द में ध्वनि का आभास होता है। ऐसे शब्द जिसमें किसी के द्वारा उत्पन्न की गई

ध्वनि को प्रकट करें। ध्वन्यात्मक शब्द कहलाता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में भी ध्वन्यात्मक शब्दों की प्राप्ति होती है। उन्होंने अनेक ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया है। पानी, चिड़िया, गाड़ी, हवा आदि की ध्वनि का सरलता से प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ देख सकते हैं –

1) "बादल बनते ही गाँव में पक्षी चहचहा कर बसेरा ढूंढते हैं। कोयल कूकती हैं। मोर पीहूं-पीहूं करने लगते हैं। चिड़िया रेत में नहाने लगती हैं। मेंढक टर्राते हैं। कौए घबराकर कांव-कांव करते हैं। लोगों की चक्करघिन्नी बन जाती है।"[75]

उपयुक्त पंक्तियों में पक्षी की चहचहाना, कोयल का कूकना, मोर का पीहूं-पीहूं करना, मेंढक का टर्रात, कौए का कांव-कांव करना आदि ध्वन्यात्मक शब्दों को लिया गया है।

2) "उसने गर्दन ऊँची कर ऊँची टेर दी थी – कुकड़ू कू कुकड़ू कू कु कुकड़ू - ।"[76]

यहाँ मुर्गे की आवाज का चित्रण है। यह ध्वनि के रूप में चित्रित की गई है।

3) "उन्होंने मूविंग फेन को अपनी ओर केन्द्रित कर लिया था। उनकी छाती के दोरंगी बाल फर्र-फर्र उड़ने लगे थे।"[77]

उपयुक्त पंक्ति में फेन की हवा से बालों का फर्र-फर्र उड़ने का चित्रण है।

4) "बूढ़े की आँखों से आँसू टप-टप टपक रहे थे, जैसे बरसात में पेड़ के पत्ते झरते हैं।"[78]

उपयुक्त पंक्तियों में आँसू का टप-टप टपकने का चित्रण है। यहाँ टप-टप द्वारा ध्वन्यात्मक शब्द का चित्रण है।

5) "नीम के एक दरख्त पर बैठे उल्लू की हू-हू-हू की डरावनी आवाज रात के सन्नाटे पर प्रहार कर जाती है।"[79]

उपयुक्त पंक्तियों में उल्लू की आवाज की ध्वनि का चित्रण किया गया है।

6) "वह अपने बरामदे में पड़ी खाट पर बैठ, खाट पर हुक्का धरे, हुक्का पी रहा था एक साँस। गुड-गुड, गुड-गुड, बेपरवाह।"[80]

प्रस्तुत पंक्तियों में हुक्का पीने की ध्वनि का चित्रण है।

7) “भाँय-भाँय करता जंगल।”[81]

प्रस्तुत पंक्तियों में हवा के कारण जंगल से आ रही ध्वनि का चित्रण है।

8) “एक ट्रक चौतरी के ऐन सामने आकर रुक गया था, चर्र-चूं-चर्र-चूं करता।”[82]

प्रस्तुत पंक्ति में ट्रक की धवली का चित्रण है।

9) “साढ़े दस का टेम रहा होगा। ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन फोन की घंटी घनघना उठी थी।”[83]

प्रस्तुत पंक्ति में फोन बजने की ध्वनि का चित्रण हुआ है।

10) “गाड़ी घर्र-घर्र करती आगे बढ़ गई थी।”[84]

प्रस्तुत पंक्ति में गाड़ी की चलने की आवाज का वर्णन है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में भाषा की भिन्नता है। उनकी कहानियों में विभिन्न भाषाओं के शब्द तथा वाक्यों का प्रयोग मिलता है। चित्रात्मक, प्रतीकात्मक, सांकेतिक आदि इसके उदाहरण हैं। साथ ही उन्होंने मुहावरे और लोकोक्तियाँ, गालियाँ, शब्द भण्डार, ध्वन्यात्मक शब्द आदि का प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं उन्होंने ग्रामीण भाषा का भी प्रयोग किया है। उनकी अधिकतर कहानियाँ ग्रामीण परिवेश पर आधारित है। जिस कारण उनकी कहानियों में ग्रामीण भाषा का मिलना स्वाभाविक है। इनकी भाषा पात्र तथा परिवेश के अनुकूल है। उन्होंने ग्रामीण पात्र के लिए आंचलिक भाषा का प्रयोग किया है, तो शहरी पात्र के लिए आंचलिक भाषा से हटकर मानक भाषा का प्रयोग किया है। डॉ. वैकुंठनाथ ठाकुर कथा साहित्य में भाषा के महत्व को उजागर करते हुए कहते हैं कि – “भाषा कहानी का कोई ऐसा तत्व नहीं है, जैसा कथावस्तु, चरित्र-चित्रण या कथोपकथन आदि। ..... कहानी के अन्य सभी तत्वों को भाषा ही धारण करती है। भाषा के बिना कहानी संभव ही नहीं है। यद्यपि घटना के बिना, दृश्य-श्रव्य के बिना भी कहानी लिखी जा सकती है। कहानीकार अपनी संवेदनाओं को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। कहानी में जो कुछ भी वक्तव्य होता है, उसकी अभिव्यक्ति वह भाषा के सहारे ही करता है। भाषा ही वह दर्पण है, जिसमें कहानीकार की आत्मा अपनी

प्रतिच्छवि देखती है।"[85]

डॉ. वैकुंठ ठाकुर के अनुसार – "कहानीकार भाषा प्रयोग में पर्याप्त जागरूक रहता है। उसकी भाषागत प्रकृति उद्देश्य-विहीन नहीं होती। भाषा के किसी स्वरूप विशेष को अपनाने के पीछे एक उद्देश्य होता है। कहानी को प्रभावशाली बनाने के लिए जिस वातावरण की सृष्टि आवश्यक है, उसको कहानीकार मुख्य रूप से भाषा के सहारे ही साकार करता है। ग्रामीण कथावस्तु की कहानियों में जहाँ दुख दैन्य का वातावरण अपेक्षित है। वहाँ कहानीकार ऐसे शब्दों के प्रयोगों में भी नहीं हिचकता, जो सामान्यतः मानक हिंदी में प्रयुक्त नहीं होते हैं।"[86]

ख. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का शिल्प :

"शिल्प का तात्पर्य है – बुनावट अथवा बनावट। वस्तुतः किसी वस्तु या रचना के निर्माण में जो पद्धति/ प्रक्रिया अपनाई जाती है, उसे ही शिल्प कहते हैं।"[87] शिल्प एक तरह की कला है। इसमें किसी भी वस्तु को बनाने के लिए तोर-तरीकों का प्रयोग किया जाता है। शिल्प को अंग्रेजी में 'Technique' कहा जाता है। 'Technique' का अर्थ होता है तरीका। किसी भी वस्तु को बनाने का तरीका ही शिल्प है। इसे प्रकिया भी कहा जा सकता है।

"अंग्रेजी भाषा में जिस विधि के लिए 'टेकनीक' शब्द प्रयुक्त होता है हिंदी में उसे 'शिल्प' कहा जाता है। 'शिल्प' शब्द के पर्याय के रूप में आर्तीस्ती, फार्म, कंस्ट्रक्शन, क्रैफ्ट, मेकनिक्स, सेटिंग, स्ट्रक्चर आदि शब्दों का प्रचालन है।"[88]

"साहित्य अथवा कला के सन्दर्भ में शिल्प का अभिप्राय साहित्य कृति अथवा कलात्मक वस्तु के निर्माण की विधि से है। 'शिल्प' न केवल एक परिणामगत कलात्मक सौन्दर्य है, अपितु यह उस सौन्दर्य को सिद्ध करने की प्रक्रिया भी है। अतएव शिल्प के अंतर्गत वे सभी उपविधियां, प्रविधियां, तरीके, क्रियाएं, प्रतिक्रियाएँ सम्मिलित हैं, जिनके द्वारा कलाकार कलात्मक सौन्दर्य की सिद्धि करता है। दुसरे रूप में शिल्प वस्तु, विषय अथवा अनुभूति को अभिव्यक्ति करने की प्रक्रिया का वैशिष्ट्य है जो कलाकृति की सम्पूर्ण सार्थकता तथा सौन्दर्य के

लिए किए गए सभी विधान, व्यवस्थाएं, विधियाँ, आवास और प्रयास रूप गठन और रूप योजनाएँ शिल्प में सम्मिलित हैं।"[89]

इससे स्पष्ट होता है कि साहित्य के संदर्भ में शिल्प से तात्पर्य कृति में कलात्मक वस्तु की रचना से है। जिसे कृति का गठन कह सकते हैं। एक कृति को रचने के लिए लेखक जो पद्धति अपनाता है, वही शिल्प है। लेखक जब कुछ लिखता है, वह अपने मन में अनेक कल्पनाएँ करता है। उसके मन में तरह-तरह के सोच विचार आते हैं। लेखक एक कृति के लिए तरह-तरह के तरीके अपनाता है। इन्हीं तरीकों के माध्यम से एक कलात्मक कृति का सृजन होता है। लेखक अपने लेखन को स्पष्ट और प्रभावी बनाने के लिए शिल्प का प्रयोग करता है। प्रभावात्मक और स्पष्ट लेख सफल बनता है। शिल्प ही है, जो किसी कृति विशेष को साधारण कथन भिन्न बनाती है।

(i) परिभाषा :

भारतीय एवं पाश्चात्यों विद्वानों द्वारा निम्नलिखित परिभाषाएँ हैं :

भारतीय विद्वानों के अनुसार :

1) जेनेन्द्र के अनुसार, "टेकनीक उस ढाँचे के नियमों का नाम है पर ढाँचे की जानकारी की उपयोगिता इसी में है कि वह सजीव मनुष्य के जीवन में काम आए। वैसे ही 'टेकनीक' साहित्य सृजन में योग देने के लिए है।"[90]

2) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के अनुसार, "शिल्प विधि का बोध अंग्रेजी के 'टेकनीक' शब्द से किया जाता है।"[91]

3) डॉ. महेश चन्द्र शर्मा के अनुसार, "शिल्प के माध्यम से ही लेखक अनुभावों को सम्यक कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने में समर्थ होता है।"[92]

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार :

1) टालस्टाय कहते हैं – "जब तक कला का रूप उपयुक्त न होगा तब तक कोई भी कहानी,

गीत, लय, चित्र, मूर्ति, नृत्य-नाटक अथवा आभूषण और इमारत अपने रचयिता के मनोभावों को दर्शकों तक पहुंचाने में असमर्थ रहेगी। किसी वस्तु की कलात्मकता उसके बाहरी रूप पर निर्भर है।"[93]

2) विलियम वान ओ कान्नर के अनुसार, "रूप तो विचार का बाहरी परिधान है। अतएव यह रूप जितना ही विचारानुकूल होगा, उतना ही वह उत्कृष्ट माना जाएगा।"[94]

3) हावर्ड फास्ट के अनुसार, "यद्यपि यह सत्य है कि श्रेष्ठ लेखन कुछ सीमा तक शिल्प सम्बन्धी अभ्यास के अभाव में अस्तित्व प्राप्त नहीं कर सकता और यह भी सत्य है कि ज्ञान की भांति शिल्प के भी अनेक स्तर होते हैं। यह दोनों का सर्वोच्च स्तरीय समन्वय है, जिसे प्रतिभा कह सकते हैं।"[95]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में शिल्प के विविध रूप का कौशल प्रयोग मिलता है। कथानक, चरित्र-चित्रण, परिवेश, उद्देश्य, भाषा-शैली जैसे शिल्पों का सफल प्रयोग हुआ है।

1. कथानक शिल्प : कथानक शिल्प में कहानी के कथानक का चित्रण होता है। लेखक कथानक का चित्रण कलात्मक रूप से करता है। कथानक का चित्रण इस तरह से किया जाता है जिससे पाठक वर्ग में प्रभाव उत्पन्न हो।

कथानक को परिभाषित करते हुए विद्वानों ने अपना मत अभिव्यक्त किए हैं। कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं –

भारतीय साहित्य कोश के अनुसार :– "सभी प्रकार के कथ्यात्मक साहित्य रूपों की वस्तु का एक सुनिश्चित योजना एवं क्रम के अनुसार युक्ति-युक्त कार्य-करण का सुसंबद्ध नियोजन कथानक है।"[96]

हिंदी साहित्य कोश के अनुसार :- "कथानक का शाब्दिक अर्थ होगा कथा का छोटा रूप या सारांश।"[97]

वेबस्टर के अनुसार :- "किसी साहित्यिक कृति (उपन्यास, नाटक, कहानी अथवा कविता) की

ऐसी योजना घटनाओं के पैटर्न अथवा मुख्य कथा को कथानक कहते हैं, जिसका निर्माण उद्दिष्ट प्रसंगों की सहेतुक संयोजित स्तरक्रम के क्रमिक उद्घाटन से किया गया हो।"[98]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं :– "उपन्यास और कहानी में और कुछ हो न हो, एक कहानी या कथा जरूर होता है। कहानी या कथानक में जो बातें आवश्यक हैं, वे उनमें अवश्य होनी चाहिए। कोई उपन्यास या कहानी सफल है या नहीं, इस बात की प्रथम कसौटी यह है कि कहनेवालों ने कहानी ठीक से सुनायी है या नहीं। अनावश्यक बातों को तो नहीं दिया है। जहाँ-जहाँ कहानी अधिक मर्मस्पर्शी हो सकती थी, वहाँ-वहाँ उसने उचित रीति से संभाला है या नहीं..... कहानीपन इस साहित्य की प्रथम शर्त है।"[99]

कथा साहित्य में कथानक की भूमिका महत्वपूर्ण है। कथानक की सहायता से कहानी को रूप दिया जाता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि कथा साहित्य में कथानक का होना आवश्यक है। कथानक के इर्द-गिर्द सभी घटनाएँ घूमती है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'खेत' में लोगों की स्वार्थपरता और पारिवारिक विघटन को रूप प्रदान किया गया है। कहानी में बूढ़ा के माध्यम से एक अकेले बूढ़ा व्यक्ति का चित्रण है। वह अपनी पूरी कमाई अपने बेटे को पढ़ाने में लगा देता है। नौकरी मिलने के बाद बेटा गाँव लौटकर नहीं आता। वह शहर में शादी करके बस जाता है। जिस कारण बूढ़ा अकेला पड़ जाता है। वह गाँव में अकेले रहने लगता है। लोग उसकी हाल-चाल तक पूछने नहीं आते। एक दिन बूढ़ा बीमार पड़ता है। तब उसकी खबर लेने वे लोग भी आते हैं, जिसका दूर-दूर तक कोई पता न था। कहानी में देख सकते हैं – "हवा में रंगत आ गई। बीमार बूढ़ा के पास आने वालों का तांता लगा रहता; मरणासन्न कीट को कीरियां घेर लेती हैं। जिनका कोसों खोज नहीं था, वे तन के लत्ते से बूढ़ा के करीबी हो गए थे। खैरियत जानना जरिया रहा, साध बूढ़ा का खेत थी। बगुला इधर-उधर गर्दन घुमाए, टकटकी मछली पर होती है।"[100]

कहानी में आधुनिकता का प्रभाव दिखाया गया है। बूढ़ा अतीत को याद करता है। वह

सोचता है कि इतने सालों में कितना कुछ बदल गया है। जहाँ कभी उसका खेत था आज वहाँ स्कूल बन गया है। बड़े-बड़े बिल्डिंगें बन गई है। सड़क बन गया है – "प्लाट के तीनों और बिल्डिंगें बनी हुई थीं. सामने तीस फीट की सड़क थी। हवा-पानी दोनों इसी राह आते, बूढ़ा के लिए। गेट के नाम पर बबूल की छाजन का फाटक था। आड़, चाहे बाड़ हो।"[101]

कहानी में बूढ़ा के मन के अंतर्द्वंद्व को दिखाया गया है। बूढ़ा जमीन बेचना नहीं चाहता था। पर अपने बेटे की पढ़ाई और शादी के लिए बेचना पड़ा। वह अपने बैचे हुए जमीन देखकर दुखी रहता है। वह रोज अपनी जमीन को देखने जाता है। वहाँ बड़ा स्कूल बन गया था। वह दुखी होता है फिर खुद को सांत्वना भी देने लगता है। "अंतर्वेदना लहरों की हिलौरों सी उठती। बूढ़ा खुद को सांत्वना देता। अपने पूर्वजों को मानो ढाढ़स बंधाता सब कुछ बेचकर भी कुछ गंवाया नहीं है, मैंने। अपने पास जो टुकड़ा है, उसका रोकड़ा, उस सगली जमीन से घाना है, आज। बूढ़ा आकाश में खिले तारों की तरह खिलखिलाता 'उसके खेतों पर शहर बस रहा है।"[102] बूढ़ा दुखी है पर वह कुछ नहीं कर सकता था। इसलिए वह अपने आप को समझाता है। खुश रहने की कौशिश करता है। यहाँ बूढ़ा के माध्यम से एक अकेले, साहसी व्यक्ति का वर्णन है।

'चपड़ासन' कहानी का कथानक स्त्री समस्या पर आधारित है। एक अकेली स्त्री पितृ-सत्तात्मक समाज में सूरक्षित नहीं है। लोग शोषण करना चाहते हैं। कहानी का पात्र मीता के पति पहले तहसीलदार थे। उसकी मृत्यु के बाद वह उसी के दफ्तर में चपड़ासन का काम करती है। वह ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं थी। जिस कारण उसे चपड़ासी की नौकरी करनी पड़ी थी। तहसीलदार की नजर मीता पर होती है। वह मीता के प्रति वासना का भाव रखता है। मीता उसकी इरादों को भाप लेती है। वह तहसीलदार से बचकर रहती है। तहसीलदार पहले नायब तहसीलदार थे। उस समय वह मीता के साथ अच्छा व्यवहार करता था। जब वह तहसीलदार बना। मीता को वह तुम कहकर बुलाने लगा था। "अरे भाई, कार्यालय सहायक के पास ले जा इसे।"[103] यहाँ दिखाया है कि लोग पद के अनुसार लोगों से बाते करते हैं। मीता जब तहसीलदार की पत्नी थी तब वर्तमान तहसीलदार सम्मानपूर्वक बात करता था। आज जब मीता चपड़ासन बनी तो उसके साथ अच्छे से पेश नहीं आता है।

इसी तरह ओ.ए का बरताव भी ठीक नहीं था। मीता जब उसके कमरे में जाती है, तो वह मीता को बैठने तक नहीं कहता। वही पहले मीता के साथ बहुत आदर्श से पेश आया था। "मेरा हाथ काँप रहा था। अर्जी काँप रही थी। उन्होंने अर्जी ले कर हाजिरी रजिस्टर मेरे ओर बढ़ा दिया था। उनके सामने दो कुर्सियां पड़ी थीं। बैठने तक का नहीं कहा उन्होंने। आश्चर्य और अफसोस ने मुझे झकझोरा। आदमी गिरगिट से भी बेहतर रंग बदलू होता है। यह वही रूढ़सिंह हैं। उस दिन मैं दफ्तर में बैठी थी और ये नाश्ते की प्लेट आरती की थाली की तरह मेरे सामने किए थे।"[104] मीता इनके व्यवहार देख बहुत आश्चर्य चकित थी। वह सोचती है कि मनुष्य इतना जल्दी कैसे बदल सकता है। यहाँ मनुष्य के बदलते रूप को दिखाया गया है।

कहानी में दिखाया है कि एक दिन तहसीलदार और ओ.ए अचानक मीता के घर आते हैं। पहले जब मुनीन्द्र था तब यह आते और गेट खोलने तक खड़े रहते। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब वह बिना किसी के आदेश के ही घर के भीतर चले आते हैं। मीता कुछ बोल भी नहीं सकती थी। वह चुप रह जाती थी। मीता को तहसीलदार का बदलता रूप अच्छा नहीं लगता है। ओ.ए. मीता को कहता है कि तहसीलदार घर में अकेला रहता है। इसलिए वह वहाँ खाना बनाया करे। दफ्तर सिर्फ तनखा के लिए आया करे- "मीता पाक कला का जो कुदरती हुनर औरत के कोमल हाथों में है, वह मरद की सख्त हत्थलों में कहाँ। साहब की घंटी वह अर्दली सुन लेगा। गाड़ी तुम्हें घर से बंगले ले जाएगी। बंगले से घर छोड़ जाएगी। बस तुम्हें तनखा के लिए दफ्तर आना होगा।"[105] मीता यह सुनकर बहुत गुस्सा होती है। लेकिन कुछ बोल भी नहीं पाती। वह चुप-चाप सह लेती है। उसे तहसीलदार और ओ.ए. के इरादे ठीक नहीं लग रहे थे। दोनों का चरित्र उनकी बातों से ही साफ दिख रहा था।

प्रस्तुत कहानी के कथानक द्वारा कहानीकार ने पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की दशा का वर्णन हुआ है। स्त्री कहीं पर भी सूरक्षित नहीं है। दफ्तर में हो या घर में हर स्थान स्त्री का शोषण होता है। मीता के ऑफिस के लोग मीता को केवल दफ्तर में ही नहीं घर पर भी शोषण करने का प्रयास करते हैं। उसका फायदा उठाना चाहता है।

रत्नकुमार सांभरिया की 'इत्तफ़ाक' कहानी स्त्री समस्या पर आधारित कहानी है। इसमें

घरेलू हिंसा का भी चित्रण मिलता है। साथ ही स्त्री और पुरुष की सोच का भी वर्णन है। कहानी में एक नयी-नवेली दुल्हन को मार-मार कर घर से निकाल दिया जाता है। उसका कसूर बस इतना था कि वह काली थी। उसके काले रूप के कारण पति उसे निकाल देता है। उसकी भाभी कहती है- "भाभी बैरन थी। बोली, तुम राजकुमार जैसे हो और बहू तवे का निचला भाग सी है। चाँद सा मुखड़ा लाऊंगी, इसे धकिया दो।"[106] इस तरह भाभी की बातों में आकर वह पत्नी को निकाल देता है। फिर पैंतालिस साल बाद दोनों एक बस में इत्तफ़ाक से मिलते हैं। कहानी में दिखाया है कि स्त्री ही स्त्री की शत्रु होती है। काली होने के कारण उसे घर से निकाल दिया। एक बार भी नहीं सोचा कि वह कहाँ जाएगी।

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों के कथानक में तत्कालीन समाज के परिस्थिति को ही रूप प्रदान किया है।

2. चरित्र-चित्रण : चरित्र-चित्रण कहानी का अन्य एक शिल्प रूप है। इसके जरिए पात्रों का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत किया जाता है। पात्रों के स्वभाव, हाव-भाव आदि का चित्रण होता है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों के पात्रों का चरित्र-चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों के पात्रों में साहस का स्वर देखने को मिलता है। वे निडर एवं सहनशील हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों के पात्र कभी हार नहीं मानते। वे डटकर अपनी चुनौतियों का सामना करते हैं। कहानियों की कथा के विकास में चरित्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आर्नल्ड बेनेट चरित्र सृष्टि के महत्व को बताते हुए लिखते हैं कि – "कथा साहित्य का मूलाधार चरित्र चित्रण ही है, अन्य कुछ नहीं। कथा की घटनाएँ तो प्रायः पात्रों के स्वभाव और प्रकृति से प्रसूत होती हैं। उसके देशकाल और वातावरण का निर्माण चरित्रों को स्वाभाविकता और वास्तविकता प्रदान करने के लिए ही किया जाता है। ..... मनोविज्ञान को जो साहित्य में महत्ता मिली है उसका आधार भी चरित्र चित्रण ही है।"[107] अरस्तु के अनुसार चरित्र की परिभाषा – "जिसके बल पर हम अभिकर्ताओं में कुछ गुणों का आरोप करते हैं, उसे ही चरित्र कहते है।"[108]

इस प्रकार स्पष्ट है कि पात्र के आधार पर कथा का विकास होता है। चरित्र चित्रण कहानी के महत्वपूर्ण तत्वों में से है।

रत्नकुमार सांभरिया की 'बात' कहानी एक स्त्री की कहानी है। इस कहानी का प्रमुख पात्र है सुरती। सुरती में बहुत ही साहस एवं धैर्य भरा है। वह अपने बच्चे को अकेले ही पालती है। कभी उसे किसी चीज की कमी होने नहीं देती थी। वह किसी के सामने भी हाथ नहीं फैलाती थी। वह मेहनत से अपना और अपने बेटे का पेट भरती थी। चाहे कितनी ही मुसीबत आ जाय वह हार नहीं मानती। अपने बेटे को पढ़ाने के लिए वह खूब मेहनत करती है। उसे बेटे की स्कूल फीज के लिए धींग नाम का एक व्यक्ति से पैसे उधार लेना पड़ा। धींग की नजर सुरती पर थी। सुरती अपनी इज्जत की बात गिरवी रखकर पैसे ले आती है। पैसे लाने के बाद वह सोच में पर जाती है। तीन सौ रुपए एक महीने में कैसे लौटाएगी। उसके मन में एक तरकीब आती है। वह सोचती है कि वह दिन-रात काम करेगी। और जैसे भी करके धींग के पैसे लौटाएगी। वह सोचती है – "सोचते-सोचते उसे एक सूझ सूझी। दिन कर्जा काटते बीत जाता है। गाँव से दो मिल दूर ऊन की फैक्ट्री खुली है। तिन औरतें ऊन की लच्छियाँ लाती हैं। पूनियां बना, दुसरे दिन दे आती हैं। अगर दिन उसका अपना नहीं है, रात तो है।"[109]

सुरती दिन-रात काम करती है। वह धींग का पैसा लौटाना चाहती थी। उसका जी घबरा रहा था। वह बहुत ही चिंतित थी। लेकिन वह हार नहीं मानती। वह दिन-रात मेहनत करके पैसा लौटाना चाहती थी। वह तीन सौ पंद्रह रुपए धींग को ब्याज के साथ देने रखती है। "सौ-सौ के तीन और पचास का एक नोट अपनी मुट्ठी में दबाए सुरती इतनी खुश हुई घर आई मानो उसकी मुट्ठी में नोट नहीं, मोहरे हों। हर्ष के आँसू रोके नहीं रुक रहे थे, उसके नेत्रों से। उसके दो ध्येय थे। ब्याज समेत तीन सौ पंद्रह रुपए धींग के माथे मार देगी।"[110]

कहानी में सुरती को एक मेहनती, साहसी स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है। वह अपनी बात रखने के लिए कुछ भी कर सकती है। वह बहुत ही ईमानदार और सरल स्वभाव की है। साथ ही सुरती के मन में विद्रोह का भाव भी है। वह पैसा घर में रख काम करने चली जाती है। आकर देखती है कि पैसे नहीं है। वह बहुत ढूंढती है। बाद में पता चलता है कि उससे बात मनवाने के लिए धींग चुपके से पैसे ले गया। वह बहुत क्रोधित होती है। "नाहर गच्चा खा जाए। बाज चूक जाए। क्रोध झागती सुरती धींग पर बिजली सी टूट पड़ी थी।"[111] यहाँ सुरती के

विद्रोह रूप को प्रकट किया गया है।

'पुरस्कार' कहानी साहित्यिक संस्थाओं में होने वाले घोटालों का यथार्थ चित्रण करती है। साथ ही स्त्री समस्या का भी वर्णन है। नीना कहानी की प्रमुख पात्र है। वह ईमानदार के साथ-साथ साहसी भी है। उसे जो भी चाहिए उसे मेहनत के बल पर लेना चाहती है। उसे किसी और का मुफ्त में दिया नहीं चाहिए।

नीना अपनी लिखी कहानी देने अकादमी अध्यक्ष धौज के पास जाती है। वह धौज से कहती है – "सर, मैंने भी कथा पुरस्कार के लिए अपना कहानी-संग्रह भिजवाया है, इस बार।"[112] धौज उस समय कुछ नहीं कहता। वह बस कहता है – "आप समय से संपृक्त नहीं हैं।"[113] नीना की बातों से पता चलता है कि उसने पुरस्कार के लिए अपनी कहानी भेजी है। वह अपनी मेहनत से पुरस्कार पाना चाहती थी। बाद में नीना को पता चलता है कि पुरस्कार के लिए पहचान वाले का होना जरुरी है। पुरस्कार के लिए सृजनात्मकता की आवश्यकता नहीं। यह सब बातें धौज स्वयं नीना को बताता है– "एक बात कहूँ, नीना जी, आपको। पुरस्कार का सृजन से कोई सरोकार नहीं होता है। यह तो समीकरणों और आपसी सहमती की सरणी भर है। मैं पिछले दो साल से अकादमी का अध्यक्ष हूँ। संयोग से दोनों ही बार रिजल्ट शीट बदली है।"[114] नीना को सुनकर बहुत बड़ा झटका लगा। उसे यह पसंद नहीं आया। वह इस तरह से पुरस्कार नहीं चाहती थी। उसे सच्चाई के आधार पर दी गई पुरस्कार चाहिए थी। उसे इस तरह के गैर कानूनी चीजे पसंद नहीं।

धौज के मुँह से ऐसी बातें सुनकर नीना को बहुत बुरा लगता है। वह जहाँ अपनी सृजनात्मकता की जाँच करने देती है। नीना को ऐसी बातों की आशा नहीं थी। वह घर के अन्दर जाकर अपने बेटे के हाथो कागज में भेजती है – "धौज जी, कथा पुरस्कार के लिए प्रेषित मैं अपनी प्रविष्टि वापस लेती हूँ। आप मेरी कहानी को भी अकादमी की पत्रिका में प्रकाशित न करें।"[115] इससे पता चलता है कि नीना एक ईमानदार स्त्री है। उसमें साहस के साथ-साथ विद्रोह का स्वर भी विद्यमान है। वह सृजनात्मक कार्यों में घोटालों का जरा भी सहन नहीं

करती। इसलिए वह निडर होकर धौज का सामना करती है। वह उसके गैर कानूनी करतूतों के लिए आवाज उठाती है। वह गलत हो रहे काम के लिए तुरंत मना कर देती है।

'बेस' कहानी में स्त्रियों की समस्या का चित्रण है। साथ ही 'बेस' कपड़े पर अधिक ध्यान दिया गया है। कहानी का प्रमुख पात्र है 'अगनी'। वह एक आदिवासी लड़की है। वह शहर में नौकरी करती है। उसकी मंगनी थी इसलिए वह घर आती है। आते वक्त वह बेस लाती है। वह उसे मंगनी के दिन पहनना चाहती थी। बेस एक तरह का परिधान है जिसे राजपूत महिलाएँ पहनती थी। अगनी को उसकी माँ बेस सिलवाने से मना करती है। कहती है बेस राजपूत लोगों द्वारा ही पहना जाता है। यह उनकी परंपरा के खिलाफ है। वह कहती है – "मना किया था, बेटी ये बेस राजपूत महिलाएं पहनती हैं। पाट में छेद मत कर। अपनी जात जी, रीत निभा।"[116] अगनी माँ की बातों का विरोध करते हुए कहती है – "माँ दुनिया अंतरिक्ष में डोल रही है। हम हैं कि कपड़े-लत्तों की जात से चिपके हैं। मैं बेकार के बंधन नहीं मानती। वह बेस मेरी चाह है। मंगनी के टेम पहनूंगी।"[117]

अगनी अपनी माँ की बातों का विरोध करती है। वह अपनी मंगनी के लिए बेस सिलवाती है। इसमें अगनी का विद्रोह सामने आता है। आदिवासियों को बेस पहनने की अनुमति नहीं थी। अगनी व्यवस्था का विरोध करती है। वह अपने लिए बेस सिलवाती है। यहाँ अगनी के माध्यम से अपने अधिकार के लिए आवाज उठाती एक विद्रोही स्त्री का चित्रण है। वह अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिए समाज से भी लड़ जाने की हिम्मत रखती है। आदिवासी महिलाओं को बेस पहनने का अधिकार नहीं था। अगनी पहली बार इस व्यवस्था के विरोध आवाज उठाती है। वह अपनी इसी विद्रोहात्मक आवाज के कारण बलात्कार होने से बच जाती है।

अगनी एक आत्मनिर्भर लड़की थी। उसके पिता के देहांत के बाद से ही वह स्वयं नौकरी करती थी। वह नौकरी करके अपना और अपने परिवार को पाल रही थी। "बाप का साया सिर से उठा, अगनी बी.ए. में थी। अगनी को अनुकम्पा कोटे से लिपिक की नौकरी मिली जरुर, लेकिन शहर से बाहर 90-95 किलोमीटर दूर सुदूर एक गाँव के बड़े स्कूल में।"[118] अगनी आत्मनिर्भर के साथ-साथ एक आधुनिक सोच वाली लड़की थी। अगनी एक साहसी लड़की के

रूप में सामने आती है। वह साहसी थी जिस कारण वह घर आते वक्त जंगल में रात को सियार से नहीं डरती। वह साहस से काम लेती है। वह उन्हें भगाने लगती है।

कहानीकार ने अपनी कहानियों के पात्रों को समाज से ही लिया है। उनके पात्र अपनी परिस्थितियों से भागते नहीं। वह उनका डटकर सामना करता है। उनके कहानियों के पात्रों में समस्याओं से लड़ने का साहस है। वह अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं निकालते हैं। उनके पात्रों में साहस है। उनमें धैर्य है।

3. परिवेश : परिवेश का अर्थ कहानी में निर्मित वातावरण या देश काल से है। लेखक अपनी कहानी में विभिन्न परिवेश का समावेश करता है। वह अपनी कहानी वातावरण के अनुकूल बनाता है। कहानीकार सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवेश के माध्यम से कथा को एक साँचे में ढालता है। कहानीकार अपनी कहानियों को परिवेश के अनुकूल ढालता है। जिसके कारण कहानी सशक्त बन पड़ती है। परिवेश के अंतर्गत परिस्थितियाँ भी आती है। कहानीकार इन्हें देखकर ही कहानी लिखता है। परिवेश या वातावरण ही वह कड़ी है जो समाज और साहित्य को जुड़ती है।

परिवेश के संबंध में पाश्चात्य विद्वान जोला का मत है कि – "मानव का समाज से कोई पृथक अस्तित्व नहीं है। वह सामाजिक वातावरण में ही जीता है। और जहाँ उपन्यासकार का उससे संबंध है, यह वातावरण निरंतर उसकी घटनाओं का रूप परिवर्तित करता है।"[119]

डॉ. त्रिभुवन सिंह लिखते हैं कि – "जिस प्रकार प्राण को अस्तित्व प्रदान करने के लिए शरीर की रचना होती है, जिनमें न जाने कितने विधायक तत्व सम्मिलित होते हैं, उसी प्रकार वर्णित विविध घटनाओं, पात्रों और उनके कार्य-कलापों के सहयोग से निर्मित उपन्यास रचना कथ्य और प्रतिपाद्य को अस्तित्व प्रदान करती है।"[120]

प्रताप नारायण टण्डन लिखते हैं कि – "देश-काल के अंतर्गत किसी भी देश या समाज की सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा समाज की कुरीतियाँ या विशेषताएँ आदि समझी जाती है।"[121]

बाबू गुलाबराय लिखते हैं कि – "व्यक्ति के निर्माण में वातावरण का बहुत कुछ हाथ होता है। जिस प्रकार बिना अंगूठी के नगीना शोभा नहीं देता है, उसी प्रकार बिना देश-काल के पात्रों का व्यक्तित्व भी स्पष्ट नहीं होता है और घटना को समझने के लिए भी उसकी आवश्यकता होती है।"[122]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में परिवेश बृहद रूप में विद्यमान है। उनकी कहानियों में ज्यादातर ग्रामीण परिवेश का चित्रण है। उनकी कहानियाँ ग्रामीण परिवेश पर ही आधारित है। इसके अंतर्गत राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण हुआ है। 'राइट टाइम' का परिवेश एक ट्रेन है। कहानी में जो भी बाते होती है वह सब ट्रेन के अन्दर ही होती है। लेखक ने कहानी में एक पति-पत्नी के माध्यम से अकेली स्त्री के प्रति क्रूर मानसिकता को प्रकट किया है। पुरुष की भी अपनी पत्नी है। फिर भी दूसरी औरत को बुरा भला कहता है। कूल मिलाकर कहानी ट्रेन, ट्रेन स्टेशन का चित्रण करती है। कहानी में सामाजिक परिवेश का भी चित्रण हुआ है। जिसमें उस विधवा स्त्री को अकेली पाकर वह पुरुष बुरा-भला कहता है। यहाँ स्त्री समस्या का चित्रण मिलता है। लोग अकेली स्त्री को पाकर कुछ भी कह देते हैं। यहाँ एक पुरुष की स्त्री के प्रति संकीर्ण मानसिकता को प्रस्तुत किया गया है। समाज एक अकेली स्त्री को किस नजरिए से देखता है उसका यथार्थ चित्रण है। कहानी में पुरुष महिला को अकेली पाकर बेहयायी से पूछने लगता है – "कहाँ जाएगी ? महिला चुप्पी साधे थी। सुना नहीं, कहाँ जाएगी तू? उसकी ऊँची आवाज में बेहयायी थी। महिला की नजरें कबूतर की आँखों-सी इनायत होती थीं, पुरुष में बाज-सी बेरहमी बढ़ती गई थी।"[123]

'विद्रोहिणी' कहानी सामाजिक परिवेश पर आधारित है। इसमें एक विधवा स्त्री की कहानी है। उसके प्रति समाज की नजरिये का चित्रण है। लोग एक अकेली स्त्री को कुछ अलग ही नजरों से देखते हैं। गाँव में तरह-तरह की बाते करते हैं। वह चाहे कुछ भी न कहे पर उसकी हर जगह चर्चा चलती है। उसका सुख से रहना समाज को नहीं सुहाता। "गाँव में बात में बात फूटती है, बेहिसाब। गाँव के घर-घर, चूल्हे-चौके नासूर थी बात। कोई कहता- कौन सी बी.ए. है। बिल्ली

के भाग छींका टूट गया। खसम मर गया, नौकरी पा गई।' कोई क्षुब्ध होता – नवोढ़ाओं-सा सुरुर है। अफसर-सा गुरुर है।' कोई नाक मारता – 'इज्जत-आबरू, मान-मरियादा बगल में दबाए घुमती है।' बतरस, गार सनी एक भैंस बीस को गार लगाती है। गाँव में बेटियां भी हैं, बहुएँ भी हैं। एसी बेलाज, एसी द्रोही नहीं देखी।"[124]

गाँव में इस प्रकार उस विधवा स्त्री(सुंदरी) के बारे में बातें होती थी। कोई भी उसके अन्दर की मन की बात नहीं समझता था। न ही कोई जानता था। न ही कोई जानने की कोशिश करता था। बस सब बुरा भला कहते रहते थे। वह जब पति की अस्थियाँ गंगा में बहाने जाती है। उस समय भी वहाँ के पांडा को पता चलने के बाद उसे बुरा भला कहता है। साथ ही उसके साथ अछूतों सा व्यवहार करता है। यहाँ समाज में एक विधवा स्त्री के प्रति समाज की मानसिकता को चित्रित किया है। कहानी में एक स्त्री की मनस्थिति का चित्रण किया गया है। उसकी भावनाओं को प्रकट किया गया है।

'बाढ़ में वोट' कहानी राजनीतिक परिवेश पर आधारित है। यहाँ राजनीति का यथार्थ चित्रण हुआ है। चुनाव हो जाने के बाद वह अपना कर्तव्य भी भूल जाता है। कहानी में बाढ़ का चित्रण है। पूरी कहानी बाढ़ को आगे लेते हुए ही चलती है। एक गाँव में बाढ़ आती है। लोग बाढ़ से बहुत परेशान होते हैं। उनके घर के भीतर भी पानी भर जाता है। रहने को जगह नहीं होती। आपदा प्रबंधन प्रभारी आका आता है। वह बस देखता है कुछ नहीं करता। आका के आने से गाँव की हालत का इस प्रकार चित्रण किया गया है – "गाय, भैंस, बकरी की काया से चिमटे चिंचड़ो को चूंट-चूंट कर नीचे पटक देते हैं। प्रशासन ने आका के पांवों चिपटे बच्चों को पकड़-पकड़कर दूर पटक दिया था, जबरन। औरतों को हड़का – हटो हटो, जानती नहीं हो, मंत्री जी हैं।"[125] मंत्री के आने से जो स्थिति उत्पन्न होती है उसका चित्रण है।

'बंजारन' कहानी एक सामाजिक परिवेश पर आधारित है। इसका परिवेश एक दुकान है। जिसका नाम 'बंजारन टी स्टाल' है। उस चाय की दुकान के सामने तीन जन बैठे हुए थे। रुना बाई और उसका दो पति सादूराम और दोदूराम। वह बंजारन थे। वे तीनों वहाँ बैठकर अपनी

बेटी की शादी की बात कर रहे थे। बेटी कक्षा दस में पढ़ रही थी। रुना बाई अपनी छोटी सी बच्ची की शादी करवाना नहीं चाहती थी। लेकिन उसका पति करवाना चाहता था। रुना बाई के साथ-साथ पति को भी पता था कि वह लड़का पहले से ही शादीशुदा है। उसका बच्चा भी है। उसने अपनी पत्नी को मार-मार कर घर से निकाल दिया था। फिर भी रुना बाई का पति अपनी बेटी की शादी करवाना चाहता था। रुना बाई इसका विरोध करती है। वह अपनी बेटी की जिंदगी बरबाद होने से बचा लेती है। यहाँ स्त्री और पुरुष के सोच में अंतर दिखाया गया है। यहाँ रुना बाई बेटी का बालविवाह होने से रोकती है।

'शर्त' कहानी सामाजिक परिवेश पर आधारित है। जमींदार का घर इसका केंद्र में है। कहानी की पूरी घटना जमींदार के घर पर ही होती है। जमींदार के घर से शुरू होकर जमींदार के घर पर ही खत्म भी होती है। यहाँ एक बेवस पिता का चित्रण हुआ। जिसकी बेटी के साथ जमींदार का बेटा कुकर्म करता है। पर जमींदार उसकी बेटी को ही दोषी ठहराता है। यहाँ एक जमींदार की संकीर्ण मानसिकता का पता चलता है। वह गरीब लोगों के प्रति मानवीय व्यवहार नहीं रखता। यहाँ जमींदार की गरीबों के प्रति मानसिकता का पता चलता है। वह जमींदार होने का कर्तव्य ही भूल गया।

'फुलवा' कहानी में शहरी परिवेश का चित्रण है। बीच-बीच में ग्रामीण परिवेश का भी चित्रण मिलता है। कहानी शुरू होती है गाँव के जमींदार रामेश्वर के शहर आने से। वह किसी पंडित जो गाँव से है उसका घर ढूंढता है। जब पंडित का घर नहीं मिलता वह फुलवा के घर चला जाता है। वह फुलवा का घर देख चौक जाता है। वह सोचने लगता है कि गाँव में वह कितनी गरीब थी। बेटे की नौकरी मिलने के बाद वह शहर आती है। यह बात रामेश्वर को पसंद नहीं आई। रामेश्वर फुलवा के घर तो गया पर वह पानी तक नहीं पीया। फुलवा को अमीर देख उससे सहन नहीं हो रहा था। यहाँ एक जमींदार की गरीबों के प्रति मानसिकता को दिखाया है। रामेश्वर अपनी जमींदारी सब पर चलाना चाहता था। पर ऐसा नहीं हुआ। कहानी में फुलवा के घर काम करने वाली का भी जिक्र है। उसका पति नौकरी मिलने के बाद उसे छोड़ देता है। क्योंकि कुंवर पढ़ी लिखी नहीं थी। कुंवर का पति दूसरी शादी कर लेता है। यहाँ एक पुरुष की मानसिकता का चित्रण है। यहाँ स्त्री समस्या का चित्रण है। इसलिए यहाँ सामाजिक

परिवेश का भी चित्रण हुआ है। कहानी में इन दो पुरुषों के माध्यम से स्त्रियों के प्रति उनकी तुच्छ मानसिकता का चित्रण हुआ है।

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में तत्कालीन समाज के विविध परिवेश के चित्रण से कथा को रूप दिया है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवेश को चित्रण करने के लिए रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में समाज की परंपरा, रीति-नीति, गरीबी, शोषण आदि का चित्रण किया है।

4. उद्देश्य : कोई भी कहानीकार का कहानी लिखने के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। कारण होता है। उद्देश्य होता है। हर कहानी में कोई-न-कोई उद्देश्य जरुर होता है। बिना किसी उद्देश्य के कहानी नीरस होती है। कहानी के उद्देश्य से ही कहानी सफल हो पाती है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ भी उद्देश्य से परिपूर्ण है।

रत्नकुमार सांभरिया की 'गाड़िया' कहानी का उद्देश्य स्त्री शोषण है। साथ ही इसमें सरपंच द्वारा सत्ता का गलत प्रयोग करते भी दिखाया है। 'गाड़िया' कहानी एक लोहार के परिवार की कहानी है। जमींदार का बेटा होने के कारण सरपंच बात को दबाने की कौशिश करता है। जबकि वह लोहार की बेटी के बारे में कोई नहीं सोचता। एक दिन रात को सोने के बाद जमींदार का बेटा लोहार की लड़की के साथ कुकर्म करने की कोशिश करता है। वह चिल्लाती है और उसके माता-पिता आ जाते हैं। जमींदार का बेटा(फकीरचंद) वहाँ से भाग जाता है। लोहार भी उसके पीछे-पीछे चला जाता है। शोर सुनकर सरपंच वहाँ आता है। वह सारी बात सुनकर लोहार को समझाने लगता है – "चौधरी जी ! यह तो जन्म का ऊत (बदमाश) है। माँ नहीं। बाप नहीं। बाल बच्चों का ख्याल करो इसके। बीस बरस पहले गाँव के नुक्कड़ गाड़ी खड़ी की थी तुमने। रेत चढ़ गया पहियों। वह लड़की यही गाड़ी में ही पैदा हुई। गाँव के हो गए हो। गाँव की रख लो।"[126]

कहानी में दिखाया है कि गरीबों के साथ होने वाली समस्याओं पर कोई भी ध्यान नहीं देता। उनकी समस्याओं को टालने की कौशिश की जाती है। उनके साथ हुए हादसों को दबा

दिया जाता है। कहानी में एक पिता की मनोदशा का चित्रण हुआ है।

'बिल्लो का ब्याह' कहानी का उद्देश्य भी स्त्री समस्या है। साथ ही कहानी पुरुषवादी मानसिकता को चित्रित करता है। कहानी में दीदी का देहांत होने के पश्चात बिल्लो की शादी उसके जीजा से होती है। बिल्लो यह शादी नहीं करना चाहती थी। लेकिन वह मजबूर थी। कोई उसके बारे में सोच ही नहीं रहा था। उसके घर वाले ही उसकी शादी करवाते हैं। पपेंद्र पहले मना करता है क्योंकि बिल्लो उसकी बेटी की उम्र की थी। पपेंद्र पैंतालीस के होने के बाद भी उसकी उम्र ज्यादा नहीं है कहकर शादी करने को कहते हैं। जब बिल्लो की उम्र की बात आई तो कहते हैं – "बूढ़ा-बुढ़ियाँ के मान को यूँ मोड़ना ठीक कोनी ननदोई जी, हम भी आबरुदार हैं। अब तो किताब-कॉपी भी छुट गई है, बिल्लो के हाथ से। अठारा, उन्नीस की सयानी हो गयियो है।"[127]

यहाँ बिल्लो के माध्यम से एक नाबालिक लड़की की शादी होते दिखाया है। यहाँ एक स्त्री के प्रति समाज की नजरियों का चित्रण है। बिल्लो छोटी है, फिर भी उसे शादी लायक समझा जाता है। जबकि पपेंद्र का पैंतालीस साल होने के बावजूद उम्र कम है कहते हैं। कहानी में दो छोटी लड़कियों की मनोदशा का चित्रण है। दोनों सहेली थी। दोनों के मन में उठनेवाली भावनाओं का चित्रण हुआ है। दोनों वेदना ग्रस्त होती है। पिता समान व्यक्ति जब पति बनता है। दोनों सहेलियों पर पहाड़ टूट पड़ता है। दोनों लाचार एवं विवश होती है। दोनों सहेली से माँ-बेटी बन जाती है।

'भैंस' कहानी में पशु का मनुष्य के प्रति लगाव को दिखाया है। साथ ही लंबरदार तैमुर जैसे लोगों की क्रूरता का चित्रण है। कहानी का पात्र मंगला एक भैंस लाती है। वह उसकी देखभाल करती है। उस भैंस का एक बच्चा होता है। बच्चा होते ही लंबरदार तैमुर आता है। वह मंगला से कहता है कि वह उस भैंस को ले जाने आया है। लंबरदार कहता है कि मंगला के पिता ने उससे दस हजार लिए थे। कूल मिलाकर बीस हजार देना है। जबकि सबको पता था कि पैसे पहले ही मंगला के पिता ने दे दिया था। जब मंगला देने से मना करता है। लंबरदार तैमुर अपनी कारिंदे से कहता है कि मंगला की भैंस खोल ले। लेकिन वह भैंस को नहीं ले जा पाता –"कारिन्दा भैंस

खोलने के लिए खूंटे की ओर बढ़ा। भैंस में वाफादारी थी। सयानापन था। मंगला के हाथों बच्चे की तरह पलकर बड़ी हुई थी। भैंस खेत चर रही होती। मंगला खालों पर खड़ी हरी-हरी घास खुरपी से छीलता और भैंस को अपने हाथों चराता, जैसे चिड़िया चुग्गा लाकर अपने बच्चे को खिलाती है। भैंस में मति आई, दाल में कुछ काला है। उसने पाड़ी को चाटना बंद कर दिया था। चाक चौबद हो उसने इधर-उधर देखा। वह जमीन पर बैठ गई थी। एक कारिंदे ने खूंटे से बेल खोल ली थी। भैंस को उठाने के लिए हट-हट की, फटकार दी। भैंस जस की तस रही।"[128] कहानी में मनुष्य और पशु के बीच के जुड़ाव को दिखाया गया है।

'हथौड़ा' कहानी में छोटूराम मजदूर के बारे में है। कहानी में उसकी मेहनत के साथ-साथ उसकी इमानदारी और आत्मसम्मान को प्रस्तुत किया गया है। छोटूराम मजदूरी करते समय हथौड़ा को बेंसा लगाने जाता है। सड़क पार करते वक्त चप्पल टूटकर गिर जाता है। तेज चलती एक गाड़ी उसके हाथ को रौंदती चली जाती है। चार महीने बाद वह हथौड़ा और पैसे लेकर लौटाने को आता है। कहानी में छोटूराम की इमानदारी का वर्णन किया गया है। कहानी में एक जगह है कि छोटूराम ने चार महीने से मालीक के पैसे को संभालकर रखा हुआ था – "मैंने जेब से नब्बे रुपये निकाले और उसकी और बढ़ा दिए थे। मैंने देखा रुपयों पर लहू के सूखे धब्बे थे। मैंने दांतों तलेउंगली दबाई – 'ओह इसने चार महीने खाट काट ली। दवादारू होती रही। परिवार अभावों में जीता रहा। कर्जदार हो गया। लेकिन मेरे नब्बे रुपए नहीं तोड़े। जीवट, खुद्दारी और इमानदारी का पर्याय है, छोटूराम। हाथ तंग, मन मंगल।"[129] छोटूराम का हाथ कट गया था लेकिन वह हार नहीं मानता। वह अपने एक हाथ से ही काम करने की कौशिश करता है। लेकिन उसका मालिक रोक लेता है। यहाँ एक मजदूर की वेदना का चित्रण है।

'मियांजान की मुर्गी' कहानी में एक मुर्गी की करुण कथा है। मुर्गी अपनी जान बचाने की जी तोड़ कौशिश करती है। यहाँ एक मुर्गी की मानसिकता का चित्रण है। उसके मन की खौफ को यहाँ दिखाया गया है। मनुष्य मुर्गी को मारकर खाते वक्त कुछ नहीं सोचता। उसी प्रक्रिया में एक मुर्गा या मुर्गी की जो हालत होती है उसका चित्रण करना कहानी का मूल उद्देश्य है। साथ

ही यहाँ हलाल करने की प्रक्रिया का भी वर्णन किया गया है। हलाल करने से एक तरह का खौफनाक मौत देना होता है। इसका जिक्र कहानी में इस प्रकार है – "मुर्गी दड़बे के फाटक की झिर्री में से देखा करती थी। मियांजान के बूढ़े हाथों, भोथरी छुरी तले हलाल होते मुर्गे-मुर्गियां कैसे तड़प-तड़प ठंडे होते थे।"[130]

अतः रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों की रचना किसी न किसी उद्देश्य को लेकर रचा है। उन्होंने अपनी कहानियों में समाज के विभिन्न विषयों को लिया है। उनका उद्देश्य समाज की सच्चाई को लोगों के सामने लाना है। समाज में हो रहे सही-गलत का चित्रण करना है। वे कहानियों के माध्यम से सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक समस्याओं को प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों को सोचने पर मजबूर करती है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से लोगों को सच्चा आईना दिखाया है। उनका उद्देश्य समाज में हो रहे गलत को सुधारना है। उन्होंने शिक्षा को भी महत्त्व दिया है। उन्होंने दिखाया है कि गरीब होने पर भी उनके पात्र अपने बच्चों को स्कूल पढ़ाते हैं। गरीबों के बच्चों को अफसर बनते भी उन्होंने चित्रित किया है। रत्नकुमार सांभरिया अपनी कहानियों के माध्यम से लोगों को सचेत करना चाहते हैं।

5. शैली :

अर्थ : शैली से तात्पर्य है तरीका या प्रणाली। शैली के माध्यम से एक व्यक्ति अपने कथन की अभिव्यक्ति करता है। व्यक्ति अपने बोलने के ढंग से ही पहचाना जाता है। शैली बात करने का एक विशिष्ट तरीका होता है। डॉ. श्याम सुंदर दास ने भाषा और शैली के महत्व को बताते हुए लिखते हैं कि – "भाषा ऐसे शब्द समूहों का नाम है जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात प्रभावित करने में समर्थ होती है। अतएव भाषा का मूलाधार शब्द है, जिन्हें उपयुक्त रीति से प्रयुक्त करने के कौशल को ही शैली का मूल तत्व समझना चाहिए। अर्थात किसी लेखक या कवि की शब्द योजना वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और उसकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है।"[131]

बाबू गुलाब राय ने शैली के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि – "काव्य में शैली का वही

स्थान है। जो मनुष्य में उसकी आकृति, वेश-भूषा का। यद्यपि यह हमेशा ठीक नहीं कि जहाँ सुंदर आकृति हो वहाँ सुंदर गुण भी होते हो। तथापि आकृति और वेश-भूषा गुणों के मुल्यांकन करने में बहुत कुछ प्रभावित करते है।"[132]

परिभाषा :

शैली की कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं -

जेम्स स्लेड : "एक कथ्य को कहने की कई प्रणालियाँ होती हैं। स्पष्ट है कि भाषिक 'शैली' भाषिक चयन का ही पर्याय सिद्ध होती है।"[133]

रेल्फ सैंडेल : "शैली भाषा के अर्थेतर चयनीकरण का विशेष कौशल है।"[134]

प्लेटो के मतानुसार – "जब विचारों को तात्विक रूप दे दिया जाता है तो शैली का उदय होता है।"[135]

डॉ. जॉनसन के अनुसार – "शैली सामान्य व्यवहार में बातचीत करने का ढंग या लहजा।"[136]

बर्नार्ड शॉ का मत है कि – "प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति ही शैली का अर्थ और इति है।"[137]

डॉ. गुलाबराय का विचार है कि – "शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को सामान्य रूप में दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।"[138]

डॉ. श्यामसुंदर के अनुसार – "किसी कवि या लेखक की शब्द-योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और उसकी ध्वनि आदि ही शैली है।"[139]

रामदहिन मिश्र का मत है कि – "किसी वर्णनीय विषय के स्वरूप को खड़ा करने के लिए उपयुक्त शब्दों का चुनाव और उनकी योजना को शैली कहते हैं।"[140]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में प्रयुक्त शैली :

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। उनके द्वारा प्रयोग शैली से कहानी प्रभावशाली बन गई है। रत्नकुमार सांभरिया ने वर्णनात्मक,

संवादातात्मक, काव्यात्मक, चित्रात्मक आदि जैसे अनेक शैली का प्रयोग किए हैं। उन्होंने इनका प्रयोग करके अपनी बातों की अभिव्यक्ति की है। उन्होंने अपनी कहानियों को सजीव बनाया है। उनके द्वारा प्रयुक्त शैलियाँ संक्षेप में इस प्रकार है –

1. वर्णनात्मक शैली : वर्णनात्मक शैली में किसी भी वस्तु या घटना का वर्णन किया जाता है। यह मनुष्य, प्रकृति, घटना, स्थान आदि कोई भी हो सकता है। वर्णनात्मक शैली के अंतर्गत एक-एक करके वस्तु का वर्णन किया जाता है। जिससे पाठक को पता चल जाता है कि क्या हो रहा है। साहित्यकार अपने साहित्य में इसका प्रयोग अपनी लेखनी में करता है। जिससे एक-एक करके सारी चीजे स्पष्ट हो जाय। पाठकों के मन में कोई इच्छा या संका न रह जाय। लेखक वर्णनात्मक शैली के माध्यम से अपनी लेखनी को प्रभावी बनाता है। लेखक अपनी छोटी से छोटी बात को भी इस शैली के द्वारा प्रस्तुत करता है। वह हर एक क्षण का जिक्र करता है, जो वह दिखाना चाहता है।

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में वर्णात्मक शैली का प्रयोग किया है। इसके कारण उनकी कहानी सजीव हो उठी है। पाठक वर्ग को एक-एक करके सारी बाते पता चल जाती है। रत्नकुमार सांभरिया ने व्यक्ति जगह या ऋतु आदि का बड़े ही मनोरम तरीके से वर्णन किया है। उनका वर्णन करने का तरीका सुबोध बन पड़े हैं। रत्नकुमार सांभरिया ने एक-एक करके छोटी से छोटी चीज का भी वर्णन किया है। उनकी कहानी का एक उदाहरण देख सकते हैं – "लोहार की लड़की ! सन की रस्सी-सी सूती काया। आभता-झलकता यौवन। पंचम की रात्रि-सा संवलाया रंग। उसके चेहरे की लुनाई, तारों की करुणायी-सी शरमाई थी। वह सूट-सलवार पहने, छोटा-सा तकिया लगाए, गाड़ी में बेधडक सोई थी, आसमान ओढ़े।"[141] यहाँ कहानीकार ने एक सोती हुई लड़की का वर्णन किया है। वह दिखने में कैसी है? उसका शरीर कितना पतला है? वह क्या पहनी हुई है? कहाँ सोई है? कैसे सोई है? आदि का सुन्दर वर्णन किया है। इससे लड़की के बारे में सब ज्ञात हो गया है।

कहानीकार ने वर्णनात्मक शैली का अच्छा प्रयोग किया है। उनका अन्य एक उदाहरण देख

सकते हैं। जिसमें रत्नकुमार सांभरिया ने एक लड़के का वर्णन किया है। इसमें उन्होंने लड़के की उम्र, शरीर, सिर आदि का वर्णन किया है। उन्होंने यहाँ सिर के पके बाल तक का वर्णन किया है –"कालू की उम्र आज चालीस थी। काया पाड़ा सी सुती और स्याह। उसका जितना भारी पेट था, उतना ही भारी उसका पीछा था। सिर पर घने काले बल थे, जिनमें जहाँ-तहाँ सफेद तार छिटके नजर आते थे। हाथी की हाल और कालू की चल को गंवई एक ही आँख से देखते थे।"[142]

"कालू की उम्र आज चालीस के थी। काया पाड़ा सी सुती और स्याह। उसका जितना भारी पेट था, उतना ही भारी उसका पीछा था। सिर पर घने काले बाल थे, जिनमें जहां-तहां सफेद तार छिटके नजर आते थे। हाथी की हाल और कालू की चाल को गंवई एक ही आँख से देखते थे।"[143] कहानी में कालू के शारीरिक रूप का वर्णन किया गया है।

2. संवादात्मक शैली : संवादात्मक शैली का अर्थ है संवाद युक्त शैली। वह शैली जो संवाद जैसा हो। इसमें लेखक अपनी लेखनी में संवाद का प्रयोग करता है। लेखक पात्रों के माध्यम से संवाद करवाता है। इससे लेखन जीवंत हो उठता है। लेखक अपनी बातों को पात्रों के जरिए कहलवाता है। रत्नकुमार सांभरिया ने भी संवादात्मक शैली का प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। उदाहरण के रूप में देख सकते हैं – 'बिल्लो का ब्याह' कहानी में पपेन्द्र और उसकी पत्नी के बीच के संवाद इस प्रकार है-

"बस में सवारियां एक ही बात पूछती हैं कि ये दोनों लडकियाँ जुड़वां बहाने हैं क्या?

तुम क्या जवाब देती हो शारदा?

मैं बिल्लो का हाथ पकड़ कर बता देती हूँ। यह मेरी छोटी बहन है। फिर सपना के सिर पर हाथ रख देती हूँ। मेरी बिटिया से चार दिन छोटी है।"[144]

रत्नकुमार सांभरिया ने कुछ छोटे संवाद का भी प्रयोग किया है। जैसे – 'फुलवा' कहानी में फुलवा और रामेश्वर के बीच का संवाद इस प्रकार है-

"फुलवा !

कौन, रामेश्वर?

हाँ, भाभी।"[145]

'राइट टाइम' कहानी में एक पुरुष और स्त्री के संवाद का चित्रण इस प्रकार है-

"लो, चने के पैसे ले लो अपने।

मैंने तो आप ही के लिए खरीदे हैं, अलग से।

तो क्या हुआ? पैसे तो लेने ही होंगे अपने।

ना-ना। मैंने साफ मना कर दिया था।

नहीं। मैं खरीदती, तो भी पैसे तो देने ही पड़ते, फेरीवाले को।"[146]

रत्नकुमार जी ने अपनी कहानियों में लम्बे, छोटे सभी तरह के संवादों का प्रयोग किया है।

3. काव्यात्मक शैली : काव्यात्मक शैली यानि काव्य युक्त शैली। इस शैली में एक लय होता है। यह कविता तो नहीं है पर कविता की ही भाषा है। काव्यात्मक शैली में लिखा गया वाक्य एक लय उत्पन्न करता है। इस शैली में लिखा गया वाक्य पाठकों में आकर्षण पैदा करता है। लेखक इस शैली में लेख लिखकर अपनी लेखनी को कविता की तरह मनोरम बनाता है। लेखक काव्यात्मक शैली का प्रयोग चमत्कार पैदा करने के लिए करता है।

रत्नकुमार सांभरिया ने भी अपनी कहानियों में काव्यात्मक शैली का सुन्दर प्रयोग किया है। उनका यह प्रयोग कहानी को आकृष्ट बनाती है। उदाहरण के रूप में देख सकते हैं – "काल का साया, सुन गोऊ का जाया। तेरा जीव ले जाए, जा भाया।"[147] यहाँ लेखक ने काव्यात्मक शैली का सुन्दर प्रयोग किया है।

काव्यात्मक शैली का अन्य एक उदाहरण देख सकते हैं। यहाँ एक स्त्री के मन की व्याकुलता का चित्रण किया है। "उसकी आँखों के सामने आसमान फट रहा था। धरती दरक रही थी । उसे बेचेनी के दौरे पड़ने लगे थे। वह तेजाब में पड़े लोहे की तरह जल भी रही थी, गल भी रही थी।"[148]

काव्यात्मक शैली का अन्य एक उदाहरण-

"हुलसीराम अर्दली की खाट के पास टूटी-सी कुर्सी पर बैठा था। मन मारता। वह पल-पल घुट रहा था। कण-कण टूट रहा था।"[149]

रत्नकुमार सांभरिया की काव्यात्मक शैली का प्रयोग सफल एवं सुबोध बन पड़ा है।

4. आत्मकथात्मक शैली : आत्मकथात्मक शैली यानि आत्मकथा से युक्त शैली। इसमें 'मैं' शैली का प्रयोग किया जाता है। इसमें 'मैं' कहकर लेखक पात्र द्वारा अपनी पूरी बात कह देता है। इस शैली में लिखी गई कहानी को पढ़कर लगता है जैसे पाठक स्वयं वहाँ मौजूद है। आत्मकथात्मक शैली में लेखक छोटी सी छोटी बात को भी बताता है। इस शैली में पात्र शुरू से अंत तक स्वयं अपनी बात रखता है। आत्मकथात्मक शैली साहित्य का एक कलात्मक रूप है। इस शैली के अंतर्गत मैं, मेरा, मुझे आदि शब्दों का प्रयोग होता हैं।

रत्नकुमार सांभरिया ने भी आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। उन्होंने भी इसके अंतर्गत मैं शैली का प्रयोग किया है। उदाहरण के रूप में देख सकते है –

"बीस मिनट पहले की दुनियाँ में आई थी मैं। मेरा गला दाई-माई ने साफ थोड़े न किया था, मैं गला फाड़ कर रोती। मैं तो रुकी बाँसुरी-सी महीन-महीन रो रही थी।"[150] यहाँ एक नव जन्मी बच्ची का चित्रण हुआ है। वह अपने जन्म के बाद की घटना को बयां कर रही है।

"मैं भीतर तक डरा-सहमा था। मैंने रुपया जेब से निकाला। नाबालिक बिल्लो की शादी मुझ अधेड़ के साथ। प्रस्ताव लौटाने के लिए मैंने आगे हाथ बढ़ाया। मेरी बड़ी सलहज लम्बा घूँघट किए लपककर दो कदम आगे बढ़ी – 'बूढ़ा-बुढ़िया के मान को यूँ मोड़ना ठीक कोनी ननदोई जी, हम भी आबरुदार हैं। अब तो किताब-कापी भी छूट गई है, बिल्लो के हाथ से। अठारा, उन्नीस की सयानी हो गई है।'"[151] यहाँ लेखक ने आत्मकथात्मक शैली के माध्यम से स्त्री समस्या का चित्रण किया है। वह समाज की सच्चाई को आत्मकथात्मक रूप में कहना चाहता है।

"मैं उत्तरदायित्व और निष्ठा के बीच आत्मद्वंद्व से दोहरा हुआ जाता था। मेरे पास जो सूचना

है, डिक्टेट करा दूँ या विभाग के प्रति अपनी वफादारी का पल्लू और मजबूरी से पकड़ लूँ। कॉफी के कप से उठते धुआँ को मैं निगाह बाँध कर देख रहा था। भाप है, धुआँ दिखाई देता है। ठंडा होते धुआँ विलीन हो जाता है। मैंने पेन उठा लिया था और टेबल पर धीरे-धीरे ठकठक करने लगा था, सोच से, अफसोस से। यह ठक-ठक मेरे मानस-पटल पर भी हो रही थी।"[152]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में आत्मकथात्मक शैली का सफल प्रयोग हुआ है। उनकी कहानियों की शुरुआत में से शुरू होकर अंत तक चलती गई है। उन्होंने पात्रों के द्वारा मैं शैली का प्रयोग किया। अंत तक इसे बरकरार भी रखा है। उनके पात्र स्वयं अपनी बातें कहता है।

5. चित्रात्मक शैली: चित्रात्मक शैली यानि चित्र युक्त शैली। वह शैली जिसमें चित्र की झलक हो। कहानीकार चित्रात्मक शैली का प्रयोग अपनी लेखनी को सार्थक बनाने के लिए करता है। चित्रात्मक शैली के द्वारा कहानीकार अपनी रचना में किसी व्यक्ति, दृश्य का चित्र प्रस्तुत करता है। चित्रात्मक को छवि का रूप भी कह सकते हैं। जब कहानी में चित्रात्मक शैली का प्रयोग होता है तब एक छवि प्रतिबिंबित होती है। उस कहानी को पढ़कर लगता है जैसे चित्रित किया हुआ व्यक्ति या दृश्य आँखों के सामने हो। वह चित्र आँखों के सामने सजीव हो उठता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में भी चित्रात्मक शैली का चित्रण मिलता है। उन्होंने चित्रात्मक शैली का ऐसा प्रयोग किया है जिसमें चित्र सजीव हो उठता है। आँखों के सामने छवि प्रकट हो जाती है। कहानी को पढ़ने से लगता है जैसे चित्रित किया गया दृश्य आँखों के सामने ही हो रहा है। उनकी चित्रात्मक शैली का उदाहरण इस प्रकार है। इसमें जाड़े का सजीव चित्रण हुआ है – "सर्दभरी जनवरी का उन्मेष। बंद आसमान। ठहरी धरती। सहमा परिवेश। घना कोहरा। कोहरे की श्वेत चादर ने समूचे गाँव को ढांप लिया हो, जैसे। सेही का भी सिर सिहरा देने वाले जाड़े से कंपकंपाते, धूजते, ठिठुरते लोग। लोग-बाग मिन्नते मनाए कि कोहरा छंटे और वे अपने काम-धंधे पर चले जाएं। लेकिन कोहरे ने तो कोबरा की तरह अपना फन निकाल रखा था।"[153] यहाँ चित्रात्मक शैली का ऐसा प्रयोग किया है जिसे पढ़ने से लगता है

जैसे सब आँखों के सामने हो रहा है।

चित्रात्मक शैली का अन्य एक उदाहरण देख सकते हैं। यहाँ पोष की सर्दी का भयानक वर्णन किया गया है – "पोष की सर्दी हड्डियों से निकल रही है। थरथरी छूटती है। पेड़-पौधे तक में जाड़े की मार है। तनिक सी हवा सुई सी चुभती है। शरीर चीसने लगता है। दांत किटकिटा जाते हैं।"[154] पोष की सर्दी में मनुष्य में कैसा असर होता है। उसका सजीव चित्रण हुआ है।

रत्नकुमार सांभरिया की चित्रात्मक शैली का अन्य एक उदाहरण देख सकते हैं। इसमें कहानीकार ने एक बूढ़ी औरत का चित्र प्रस्तुत करने के लिए चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। वह जेठ की दोपहरी में गरमी से बचने के लिए पंखा झुला रही थी। जेठ महीने की तपती हुई गरमी उसके लिए असहनीय बन गई थी। "बूढ़ी ने अपने टूटे उड़े झोपड़े में लूगड़ी बिछा रखी थी। वह अपनी अंगिया उतारकर लुगड़ी पर लेटी हुई थी। वह धीरे-धीरे हाथ-पंखी झल रही थी। वह पंखी झलती। उसके हाथ की चाम झूमती, हाथी के कान हिलते हो जैसे। पंखी रूकती। उसकी देह से आग का भभूका सा निकलता. सत्तर साल की हो गई है चुन्नी। ऐसी बैरन गर्मी कभी नहीं देखी उसने। हलक बिना पानी घड़ी-घड़ी सूख जाता है।"[155] यहाँ बूढ़ी द्वारा किया गया हर एक काम आँखों के सामने छवि बनकर उभरी है। ऐसा लगता है जैसे सब अपनी आँखों से देख रहे हो।

6. प्रश्नात्मक शैली : प्रश्नात्मक शैली यानि प्रश्न से युक्त शैली। प्रश्नात्मक शैली में प्रश्नों के माध्यम से बात-चीत की जाती है। इस शैली में प्रश्न पूछे जाते हैं। जवाब दिया जाता है । लेखक इस शैली का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए करता है। रत्नकुमार सांभरिया ने भी इस शैली का प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। उन्होंने पात्रों के माध्यम से प्रश्न किए हैं साथ ही उत्तर भी दिए हैं। उनका इस शैली से युक्त एक उदाहरण देख सकते हैं –

"बाबा, कौन सा गाँव है, अपना?

रेतपुर!

रेतपुर!

नाम?

रामदयाल!

कौन जूण हो?

बलाइयां के हूँ, बुढ़िया।"[156] यहाँ एक बूढ़ी द्वारा एक बूढ़ा को सवाल-जवाब करता दिखाया है।

प्रश्नात्मक शैली का अन्य एक उदाहरण देख सकते हैं। इसमें पति-पत्नी से गाय के बारे में पूछ रहा होता है-

"गाय भूखी है क्या, सलमा?

नहीं, पानी पिला दिया था। ल्हास भरी है, न्यार की।

कभी नहीं रंभाती थी?

हरमन चचा की लाठी से डर रही है।"[157]

प्रश्नात्मक शैली का अन्य एक उदाहरण इस प्रकार है –

"क्या नाम है, तुम्हारा?

वीमा।

गाँव?

भाड़।

जात?

झेरा।

घर-परिवार?

नरक।"[158]

रत्नकुमार सांभरिया ने प्रश्नात्मक शैली का सफल प्रयोग किया है।

7. पूर्व दीप्ति शैली : पूर्व दीप्ति शैली को फ्लैश बेक शैली भी कहा जाता है। इस शैली के अंतर्गत अतीत की झलक देख सकते हैं। अतीत में जो भी घटनाएं घटती है वह तरंग के रूप में याद आती है। इसे यादे भी कह सकते हैं। पूर्व दीप्ति शैली में पात्र बीच-बीच में वर्तमान से अतीत में

विचरण करने लगता है। वह वर्तमान में रहकर भी अतीत में जीने लगता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग मिलता है। एक उदाहरण इस प्रकार है– "मेरी आँखों के सामने अँधेरी छा गई थी। मैं अतीत की अंधी गुफा में उतरती गई। आदमी औरत को चापने में चाहे उम्र गँवा दे, औरत आदमी को पतियाते पल नहीं करती। मेरी शादी के बीस दिन पहले ही वह लड़का हमारे घर के सामने वाले मकान में आकर रहने लगा था, किराये पर। लम्बा तगड़ा पहलवान-सा गठा-सधा शरीर। भरा हुआ चौड़ा सीना। जितना काला उसका रंग, उससे घने काले घुंघराले उसके बाल। पच्चीस-छब्बीस की उम्र। चेहरे पर कुतरी-संवरी मूंछे। शरीर पर उगे बाल उसकी मर्दानगी के चिह्न थे। वह सुबह-शाम छत पर कसरत करता, तेल मसलता। उसके पांवों की पिंडलियाँ और बाजुओं की मछलियाँ केंचुल उतरे नाग की चाम-सी चिलकतीं।"[159] यहाँ पात्र अपनी शादी के बीस दिन पहले की बातों को याद करता है।

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानी में पूर्व दीप्ति शैली का सफल प्रयोग किया है। इस शैली का अन्य एक उदाहरण इस प्रकार है – "अतीत चलचित्र की तरह उसके मस्तिष्क में घुमने लगा था। ग्यारह वर्ष पीछे का वह दिन जैसे कल था। मालू सात साल का था। उसके हाथ में पाटी थी। वह पड़ोसी लड़कों के साथ स्कूल जा रहा था। मालू के हाथ की पाटी कालू की आँख में कंकड़ी से बुरी रड़की। उसमें सामंती भाव उग आए थे। पढ़ा-लिखा मालू बावला थोड़े न रहेगा। उसमें विद्रोह के बीज उग आएंगे। कालू उस दिन मुनीम के भेष में था। वह मुर्गी के अंडा जैसे सफेद झक धोती-कुरता पहने था। सिर पर जरी की टोपी थी। माथे पर तिलक था। तिलक के ऊपर नीचे ठोड़ी-नरेटी और दोनों कानों की लवों पर हल्दी की बुँदे थीं। उसके हाथ में बही थी। कान में पेन टंगा था।"[160]

यहाँ एक लड़का अपने अतीत में खो जाता है। वह अपनी बचपन को याद करने लगता है।

कहानी 'हुकम की दुक्की' में शेरु-मेरु अपनी अतीत को याद करते हैं- "बाईस-तेईस बरस पहले के वे दिन चित्रपट की तरह उनके सामने घूमने लगे थे। पिता जतन लाल पतरा-पोथी

बाँधे घर लौटते थे। उनकी अगली जेब में नोट होते थे। कुरते की अलग-बलग की दोनों जेबें चिल्लड़ से भरी बकरी के थनों की मानिन्द लटकी होतीं। जतन लाल चारपाई पर बैठते, इससे पहले ही दोनों भाई एक-एक जेब हथिया लिया करते थे।"[161]

रत्नकुमार सांभरिया ने पूर्व दीप्ति शैली का सुन्दर प्रयोग किया है। उनका यह प्रयोग सफल बन पड़ा है। उन्होंने इस शैली के सहारे पात्रों के अतीत का झिलमिल चित्र अंकित किया है। इस शैली के द्वारा अतीत में जाकर उनकी यादों को दिखाया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में शिल्प के विभिन्न रूपों का चित्रण मिलता है। उन्होंने कथानक, परिवेश, चरित्र-चित्रण आदि जैसे अनेक शिल्प रूपों का चित्रण किया है। उनकी कहानियों में वर्णनात्मक, संवादात्मक, चित्रात्मक जैसी प्रमुख शैलियों का भी प्रयोग हुआ है। रत्नकुमार सांभरिया ने शिल्प का सफल प्रयोग किया है। उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक जैसे परिवेश का चित्रण किया है। उनके पात्र साहसी के साथ-साथ विद्रोही भी हैं। वे कभी हार नहीं मानते। उनकी कहानियों का उद्देश्य सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं का चित्रण है। कहानीकार ने शिल्प का प्रयोग कौशल रूप में किया है। उनका कथानक का तरीका, चरित्र-चित्रण अद्‌भुत है। उनके कथानक में यथार्थ का भाव विद्यमान है।

संदर्भ :

1. भाषाविज्ञान की भूमिका, देवेन्द्रनाथ शर्मा, दीप्ति शर्मा, पृ. 20
2. वही, पृ. 21
3. वही, पृ. 22
4. वही, पृ. 22
5. वही, पृ. 21
6. वही, पृ. 21
7. वही, पृ. 22
8. एयरगन का घोड़ा, बेस, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 77
9. वही, गाड़ियाँ, पृ. 22
10. वही, बेस, पृ. 83
11. वही, हिरणी, पृ. 174
12. वही, पृ. 174
13. वही, पृ. 174
14. दलित समाज की कहानियां, काल, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 113
15. वही, लाठी, पृ. 130
16. वही, काल, पृ. 111
17. वही, झंझा, पृ. 221
18. एयरगन का घोड़ा, झुंझुना, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 87
19. एयरगन का घोड़ा, कील, पृ. 161
20. दलित समाज की कहानियां, खेत, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 237
21. दलित समाज की कहानियां, खेत, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 237
22. वही, झंझा, पृ. 121
23. एयरगन का घोड़ा, हुकम की दुक्की, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 26
24. वही, मैं जीती, पृ. 52
25. दलित समाज की कहानियाँ,भैंस, रत्नकुमार सांभरिया,पृ. 110
26. वही, आखेट, पृ. 42
27. वही, पृ. 52

28. दलित समाज की कहानियाँ, खेत, पृ. 234-235
29. वही, झंझा, पृ. 123
30. एयरगन का घोड़ा, धूल, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 152
31. दलित समाज की कहानियाँ, लाठी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 136
32. एयरगन का घोड़ा, एयरगन का घोड़ा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 75
33. वही, अनुष्ठान, पृ. 41
34. वही, झुनझुना, पृ. 92
35. वही, पृ. 97
36. वही, कील, पृ. 168
37. वही, पृ. 172
38. एयरगन का घोड़ा, राज, पृ.185
39. वही, एयरगन का घोड़ा, पृ. 74
40. वही, हिरणी, पृ. 176
41. वही, सनक, पृ. 187
42. वही, हुकम की दुक्की, पृ. 36
43. एयरगन का घोड़ा, बिल्लो का ब्याह, पृ.138
44. वही, कील, पृ.165
45. दलित समाज की कहानियाँ, मुक्ति, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 215
46. वही, पृ. 214
47. वही, भैंस, पृ. 109
48. एयरगन का घोड़ा, मांडी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 12
49. दलित समाज की कहानियाँ, इत्तफ़ाक, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 78
50. वही, मियांजान की मुर्गी, पृ. 100
51. वही, भैंस, पृ. 110
52. एयरगन का घोड़ा, द्वंद्व, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 106
53. दलित समाज की कहानियाँ, सवांखें, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 193
54. वही, पृ. 193
55. एयरगन का घोड़ा, एयरगन का घोड़ा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 66

56. एयरगन का घोड़ा, एयरगन का घोड़ा, रत्नकुमार सांभरिया पृ. 68
57. दलित समाज की कहानियाँ, डंक, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 145
58. वही, बकरी के दो बच्चे, पृ. 35
59. वही, लाठी, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 130
60. वही, पृ. 131
61. वही, लाठी, रत्नकुमार सांभरिया, झंझा, पृ. 120
62. वही, पृ. 120
63. वही, बात, पृ. 153
64. वही, झंझा, पृ. 119
65. दलित समाज की कहानियाँ, झंझा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 121
66. वही, पृ. 121
67. एयरगन का घोड़ा, राइट टाइम, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 216
68. वही, पुरस्कार, पृ. 116
69. दलित समाज की कहानियाँ, बाढ़ में वोट, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 222
70. वही, पृ. 224
71. एयरगन का घोड़ा, खबर, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 234
72. दलित समाज की कहानियाँ, खेत, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 236
73. वही, पृ. 237
74. वही, पृ. 240
75. वही, फुलवा, पृ. 17
76. दलित समाज की कहानियाँ, गूंज, पृ. 65
77. वही, बूढ़ी, पृ. 54
78. वही, इत्तफ़ाक, पृ. 78
79. वही, झंझा, पृ. 122
80. वही, बात, पृ. 151
81. एयरगन का घोड़ा, बेस, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 77
82. वही, पृ. 82
83. वही, द्वंद्व, पृ. 102

84. एयरगन का घोड़ा, कील, पृ. 167
85. फणीश्वरनाथ रेणु के कहानी साहित्य में संवेदना और शिल्प (अप्रकाशित उपाधिप्राप्त शोध प्रबंध), रंजीत यादव, असम विश्वविद्यालय, सिलचर (2008), पृ. 264
86. वही, पृ. 272
87. अंतिम दशक की हिंदी कहानियाँ: संवेदना और शिल्प, डॉ. नीरज शर्मा, पृ. 45
88. शिवानी के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प, डॉ. पंकज वीरवाल, पृ. 168
89. वही, पृ. 168
90. वही, पृ. 169
91. वही, पृ. 169
92. वही, पृ. 169
93. शिवानी के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प, डॉ. पंकज वीरवाल, पृ. 169
94. वही, पृ. 169
95. वही पृ. 169
96. भारतीय साहित्य कोश, डॉ. नगेन्द्र (सं.), पृ. 182
97. हिंदी साहित्य कोश, धीरेन्द्र वर्मा (सं.), पृ. 203
98. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/कथानक
99. साहित्य का साथी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 88
100. दलित समाज की कहानियाँ, खेत, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 235
101. वही, पृ. 234
102. वही, पृ. 236
103. वही, चपड़ासन, पृ. 176
104. वही, पृ. 176
105. वही, पृ. 180
106. वही, इत्तफ़ाक, पृ. 77
107. रांगेय राघव के जीवनीपरक उपन्यासों के चरित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन(प्रकाशित शोध प्रबंध), अनिल कुमार, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक (2016), पृ. 30
108. वही, पृ. 2
109. दलित समाज की कहानियाँ, बात, पृ. 154
110. वही, पृ. 157

111. दलित समाज की कहानियाँ, बात, पृ. 158
112. एयरगन का घोड़ा, पुरस्कार, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 116
113. वही, पृ. 116
114. वही, पृ. 119
115. वही, पृ. 120
116. वही, बेस, पृ. 79
117. वही, पृ. 79
118. वही, पृ. 79
119. साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों का शिल्प विकास, शोभा बेरेकर, पृ 315
120. वही, पृ. 317
121. वही, पृ. 317
122. वही, पृ. 319
123. वही, राइट टाइम, पृ. 214
124. वही, बंजारन, पृ. 121
125. दलित समाज की कहानियाँ, बाढ़ में वोट, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 222
126. एयरगन का घोड़ा, गाड़िया, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 22-23
127. वही, बिल्लो का ब्याह, पृ. 132-133
128. दलित समाज की कहानियाँ, भैंस, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 110
129. वही, हथौड़ा, पृ. 273
130. वही, मियांजान की मुर्गी, पृ. 94
131. साहित्यालोचन, श्यामसुंदर दास (डॉ.), पृ. 316
132. धर्मवीर भारती के कथा साहित्य का संरचनात्मक अध्ययन, (अप्रकाशित उपाधिप्राप्त शोध प्रबंध), जयदीप धोबी, असम विश्वविद्यालय, सिलचर (2011), पृ. 237
133. शैली और शैली-विश्लेषण, पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु', पृ. 48
134. वही, पृ. 51
135. https://www.knowledgeindiahub.com/2022/02/blog-post.html
136. https://www.knowledgeindiahub.com/2022/02/blog-post.html
137. https://www.knowledgeindiahub.com/2022/02/blog-post.html
138. https://www.knowledgeindiahub.com/2022/02/blog-post.html

139. https://vishwahindijan.blogspot.com/2021/01/blog-post 19.html
140. https://vishwahindijan.blogspot.com/2021/01/blog-post 19.html
141. एयरगन का घोड़ा, गाड़िया, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 21
142. दलित समाज की कहानियाँ, गूंज, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 65
143. वही, पृ. 65
144. एयरगन का घोड़ा, बिल्लो का ब्याह, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 135
145. दलित समाज की कहानियाँ, फुलवा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 18
146. एयरगन का घोड़ा, राइट टाइम, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 213
147. वही, पुरस्कार, पृ. 116
148. दलित समाज की कहानियाँ, बात, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 147
149. एयरगन का घोड़ा, धूल, रत्नकुमार सांभरिया, पृ.149
150. वही, मैं जीती, पृ. 52
151. वही, बिल्लो का ब्याह, पृ. 132-133
152. वही, खबर, पृ. 235
153. दलित समाज की कहानियाँ, बकरी के दो बच्चे, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 29
154. दलित समाज की कहानियाँ, आखेट, पृ. 41
155. वही, बूढ़ी, पृ. 52
156. वही, इत्तफ़ाक, पृ. 76-77
157. वही, लाठी, पृ. 135
158. वही, सवांखें, पृ. 198
159. एयरगान का घोड़ा, राज, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 182
160. दलित समाज की कहानियाँ, गूंज, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 73
161. एयरगन का घोड़ा, हुकम की दुक्की, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 34

उपसंहार

रत्नकुमार सांभरिया का जन्म 6 जनवरी, 1956 को ग्राम भाड़ावास, जिला रेवाड़ी (हरियाणा) में हुआ था। उनके पिता का नाम सिंहराम सांभरिया और माता का नाम जुगरी देवी है। उन्होंने सन् 1978 में बी.एड. की उपाधि प्राप्त की। 31 मई, 1974 को उनका विवाह रामरती देवी से हुआ। उनके दो सुपुत्र (हेमंत सिंह, सौरभ सिंह) और एक सुपुत्री (अंजुलता) है। उन्होंने नौकरी की शुरुआत सन् 1980 में की। वे सर्वप्रथम शिक्षक बने, तत्पश्चात लेखाकार, अनुवादक तथा जनसंपर्क अधिकारी के पदों पर कार्यरत रहे। उन्हें अनेक साहित्यिक सम्मानों से विभूषित किया गया है।

रत्नकुमार सांभरिया के पाँच कहानी संग्रह हैं -

1. कहानी संग्रह:

   i. हुकम की दुग्गी(2003)

   ii. काल तथा अन्य कहानियाँ (2004)

   iii. खेत तथा अन्य कहानियाँ (2012

   iv. एयरगन का घोड़ा (2016)

   v. दलित समाज की कहानियाँ (2017)

2. उपन्यास : साँप (2022)

3. नाटक : वीमा, भभूल्या, उजास तीन नाटक (2020)

4. लघुकथा : रत्नकुमार सांभरिया की लघुकथाएँ (2020)

5. आलोचनात्मक कृति : 'मुंशी प्रेमचंद और दलित समाज'

रत्नकुमार सांभरिया का कृतित्व हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, लघुकथा, आलोचना आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है। रत्नकुमार सांभरिया की रचनाओं में समाज का स्वर है। उनकी कृतियों में समाज के निशक्त लोगों के प्रति एक नया दृष्टिकोण है। उन्होंने निशक्तों को असहाय नहीं, बल्कि संघर्षशील

चित्रित किया है। उनकी कृतियों के पात्र जीने की इच्छा रखते हैं। उनमें लड़ने की क्षमता है। वे निराश होकर मरने की नहीं सोचते। उनकी कृतियाँ मानवतावादी चेतना की ओर उन्मुख हैं। उनकी रचनाएँ समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हैं।

समकालीन के विषय में गंगा प्रसाद विमल लिखते हैं - "समकालीन का अर्थ यह नहीं है कि दो व्यक्ति एक विशेष कालखंड में जी रहे हों और संयोग से वे रचनाशील भी हैं। जिस समकालीनता की बात की जा रही है, उसका शब्दार्थ की धारणा से संबंध नहीं है, अपितु वह जीवन बोध के आधार पर समानधर्मी रचनाकारों के बोध की समानधर्मिता है।" डॉ. सुखवीर सिंह के अनुसार -"वस्तुतः समकालीन एक व्यापक एवं बहुआयामी शब्द है और आधुनिकता के आधार तत्व है। जो समकालीन है, वह आधुनिक भी हो, यह आवश्यक नहीं है, किंतु जो आधुनिक दृष्टि से संवलित है। वह निश्चित रूप से समकालीन भी होती है।"

समकालीन कहानी का प्रारंभ 1960 ई. के पश्चात से माना जाता है। इसके प्रवर्तक गंगाप्रसाद विमल हैं। समकालीन प्रवृत्तियों के अंतर्गत् स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, वृद्ध विमर्श, पारिवारिक विघटन, स्त्री-पुरुष संबंध, मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ, पीढ़ियों का टकराव आदि का चित्रण मिलता है। समकालीन हिन्दी कहानीकारों की कहानियों में ये सभी प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। स्त्री विमर्श समकालीन कहानीकारों की एक बड़ी विशेषता रही है। उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्रियों की समस्याओं का चित्रण बखूबी किया है। स्त्री चाहे घरेलू हो या कामकाजी उसका हर जगह शोषण होता है। दलित विमर्श में दलितों के शोषण का स्पष्ट चित्रण है। वृद्ध विमर्श में वर्तमान समय में वृद्धों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उनका जीवंत चित्रण हुआ है। पारिवारिक विघटन आज के समय की आवश्यकता बन गया है। इसके फलस्वरूप एकल परिवार का गठन हो रहा है।

समकालीन कहानीकार हैं – गंगाप्रसाद विमल, निर्मल वर्मा, रवींद्र कालिया, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा आदि।

समकालीन हिन्दी कहानी और रत्नकुमार साम्भरिया की कहानियों का विवेचन करने के बाद यह ज्ञात होता है कि रत्नकुमार सांभरिया की कहानी, समकालीन हिन्दी कहानी में प्रमुख स्थान रखती हैं। उनकी कहानियाँ समकालीन हिन्दी कहानी से भिन्न हैं। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में पात्रों को जीवन की कठिनाइयों से हारकर शोषित होते नहीं दिखाया है। उनके पात्र अपने पर हुए शोषण, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाते हैं। समकालीन हिन्दी कहानियों में अधिकतर स्त्रियों, दलितों को शोषित होते ही दिखाया गया है। परन्तु रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में शोषित के साथ-साथ विद्रोह करते भी दिखाया गया है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ समकालीन हिन्दी कहानियों से अलग इसलिए भी हैं, क्योंकि उनकी अधिकतर कहानियाँ किसी न किसी महीने से शुरू होती हैं । जैसे- 'आखेट' कहानी में 'पौष की सर्दी हड्डियों से निकल रही है', 'लाठी' कहानी में 'भादो की सड़ी गर्मी पड़ रही थी', 'गाड़िया' कहानी में 'मध्यरात्रि वैशाख की गहराती रात' आदि। इन कहानियों का आरंभ महीना से ही किया गया है।

समकालीन हिन्दी कहानी में कहानीकारों ने ग्रामीण जीवन के अलावा शहरी जीवन का चित्रण भी किया है। परन्तु रत्नकुमार साम्भरिया की कहानियों में ऐसा नहीं है। उनकी अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन को ही दर्शाती हैं । इनकी कहानियों के सभी पात्र गाँव के ही हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की एक खासियत यह भी है कि उनकी कहानियाँ ग्रामीण परिवेश पर आधारित होते हुए भी उनकी कहानियों में आधुनिकता बोध की प्राप्ति होती है। आधुनिकता बोध से तात्पर्य है - नवीनता का बोध। उनकी कहानियों में आधुनिकता बोध की सभी विशेषताएं विद्यमान हैं। जैसे- मानवीयता, तनाव ग्रस्त जीवन, अकेलापन, भ्रष्टाचार, संबंधों का टूटन, स्त्री अस्मिता, स्त्री-दलित शोषण, नारी शिक्षा, बेरोजगारी आदि। समकालीन हिन्दी कहानी में कहानीकारों ने मध्यवर्गीय जीवन पर अधिक लिखा है। साथ ही दलित एवं स्त्री जीवन पर प्रकाश डाला है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री तथा दलित जीवन पर ही अधिक लिखा गया है। रत्नकुमार सांभरिया ने दलितों की पीड़ा, स्त्रियों की पीड़ा, आदि को लेखनी का मूल केंद्र बिंदु बनाया है। साथ ही उन्हें पीड़ित एवं शोषित के साथ-साथ विद्रोह करते भी दिखाया है। रत्नकुमार सांभरिया ने केवल दलित और स्त्रियों का

चित्रण ही नहीं बल्कि दिव्यांग लोगों का चित्रण भी किया है। दिव्यांग को दिव्यांग के रूप में ही नहीं बल्कि उन्हें अपने अधिकार के लिए लड़ते एवं अपने लिए आवाज उठाते दिखाया है। उन्हें हार मानते चित्रित नहीं किया है। उन्होंने दिव्यांगों को केवल असहाय या लाचार के रूप में चित्रित न करके उन्हें बहादुर के रूप में चित्रित किया है, ऐसा अन्यत्र दुर्लभ है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री चेतना का वर्णन हुआ है। 'राइट टाइम' एक अकेली स्त्री की कहानी है। स्त्री ट्रेन से दिल्ली अपने बेटे से मिलने जाती है। जल्दबाजी के कारण वह टिकट नहीं ले पाती। टिकट न होने के कारण वहाँ खड़ा एक व्यक्ति उसके साथ बदतमीजी से बात करने लगता है। वह उस स्त्री को टिकट के बारे में पूछता है और कहता है- "टिकट क्यों लेकर बैठेगी यह? ऐसी वालियों को खूब जानता हूँ मैं। टी.टी. और जी. आर. पी. वालों से साँठ-गाँठ होती है इनकी।" कहानीकार ने यहाँ पुरुष मानसिकता का चित्रण किया है। आलोच्य कहानी में एक अकेली स्त्री के प्रति लोगों की संकीर्ण सोच का चित्रण है। स्त्री अकेली थी, जिस कारण से उसे भला-बुरा कहा जा रहा था। कहानीकार ने यहाँ पितृसत्तात्मक समाज पर करारी चोट की हैं।

'विद्रोहिणी' कहानी में अकेली स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण को दर्शाया गया है। कहानी की पात्र सुंदरी के पति का देहांत हो जाता है। समाज के लोग उसे सहानुभूति देने की बजाये बुरा-भला कहने लगते हैं। उसके घर वाले तक उसका साथ छोड़ देते हैं। पति की अस्थियाँ वह स्वयं त्रिवेणी धाम-प्रयागराज ले जाती है। सुंदरी द्वारा अस्थियाँ स्वयं ले जाने से लोग कहने लगते हैं- "बातें बनी थीं, या तो यह औरत मूर्खों की मूर्ख है या राक्षसों की राक्षस। पति की मृत्यु का गम, औरत की लाज, जात की कान, गाँव का कायदा सब ताक पर रख दिए। ऐसी कामनगारी तो बेड़िनें भी नहीं होती। वक्त करवट ले गया, वरना इसके सुंदर बाल नोच कर गंजी कर देते और सफेद कपड़े पहना कर दूर बैठा देते। खामोश चीख बनी रहती जिंदगी भर।" कहानी में स्त्री के प्रति पितृसत्तात्मक समाज की मानसिकता का यथार्थ चित्रण हुआ है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में पारिवारिक विघटन का चित्रण भी मिलता है।

'धूल','कील' आदि इसी विषय पर आधारित कहानियाँ हैं। 'धूल' कहानी में पारिवारिक विघटन का स्पष्ट रूप मुखरित हुआ है। कहानी में बड़ा भाई(हुलसीराम) अपने छोटे भाई धूल को पढ़ा-लिखाकर काबिल बनाता है। वही छोटा भाई नौकरी मिलने के बाद भाई को पूछता तक नहीं। वह शहर में ही रहकर शादी कर लेता है। गाँव में भाई के पास आता तक नहीं। धूल की शादी के समय खेत गिरवी रखना पड़ा। धूल कहता है – "खेत गिरवी रख देते हैं। मेरी अच्छी नौकरी लग गयी है। सबसे पहले खेत छुड़ाऊँगा।" लेकिन शादी के बाद पैसा तो दूर की बात, भाई से मिलने तक नहीं आता। उक्त कहानी में रिश्तों में पड़ती दरार का मार्मिक चित्रण है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दिव्यांग जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने दिव्यांगों को कमजोर एवं लाचार नहीं बल्कि उन्हें अपने लिए संघर्ष करते दिखाया है। अपने हक के लिए लड़ते दिखाया है। 'सवांखें' उनकी इसी विषय पर आधारित कहानी है। कहानी में जमन अपनी पत्नी वीमा को वापिस घर लाने के लिए संघर्ष करता है। कहानी के पात्र जमन और वीमा दोनों नेत्रहीन थे। घर वालों के अत्याचार से तंग आकर वीमा घर से भाग जाती है। जमन से वीमा की मुलाकात होती है। वे दोनों शादी कर लेते हैं। घर वालों को जब यह पता चलता है कि वीमा ने जमन से शादी कर ली है, तो वीमा को उसके घरवाले जबरदस्ती अपने घर ले जाते हैं। जमन पुलिस के पास जाता है। पुलिस उसकी मदद नहीं करती। जमन का दोस्त देवत और अन्य दिव्यांग उसकी मदद करते हैं।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में वृद्ध जीवन का सजीव वर्णन हुआ है। 'कील','मियांजान की मुर्गी','खेत','आश्रय','बूढ़ी' आदि कहानियाँ वृद्ध जीवन की समस्याओं को उद्घाटित करती हैं। 'कील' कहानी में बूढ़ी माँ को बेटा-बहू ठगते हैं। माँ(सोनवती) को गाँव से बुलाकर बेटा-बहू उसकी सारी संपत्ति हड़प लेते हैं। सोनवती मजबूर होकर घर छोड़ देती है। घर से जाने के बाद भी बेटा माँ की खबर तक नहीं लेता। एक दिन पता चलता है कि सोनवती गाँव गई ही नहीं। तब बेटा-बहू फसने के डर से रिपोर्ट लिखाने जाते हैं। रास्ते में देखते है कि

सोनवती जूते में कील ठोक रही है- "चैत की भभकती धूप थी। पगडंडी पर मोचिन बैठी थी। सोनवती उसकी बगल में बैठी सामने खड़े ग्राहक के जूते में कील ठोक रही थी।" शहर में बेटे का घर होते हुए भी, वहाँ रहने के लिए उनके पास जगह नहीं है। अपने पुत्र के होते हुए भी वह मजदूरी का काम करती है। सोनवती के माध्यम से कहानीकार ने वृद्धों की समस्याओं का यथार्थ वर्णन किया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंधों का वास्तविक चित्रण भी हुआ है। स्त्री-पुरुष का संबंध कहीं सरल रूप में चित्रित है, तो कहीं बिखरा हुआ है। कहीं प्रेम की अनुभूति है, तो कहीं झगड़े अथवा तनाव का चित्रण है। रत्नकुमार सांभरिया ने 'इत्तफाक' कहानी में स्त्री-पुरुष के संबंधों में झगड़े होते हुए दिखाया है। शादी के बाद ही पति अपनी पत्नी को काली होने के कारण मार-मार कर घर से निकाल देता है। पत्नी से अच्छी तरह बात भी नहीं करता।

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में स्त्रियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उनकी कहानियों के स्त्री पात्र सरल, सहज जरूरत पड़ने पर विद्रोही भी हैं। उनकी कहानियों में स्त्रियाँ शोषित तो हैं लेकिन वे विद्रोह करती हैं। अपने घर में हो रहे शोषण के खिलाफ आवाज उठाने की क्षमता भी रखती हैं। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ माँ, पत्नी, बेटी, बहन आदि के रूप में सामने आती हैं। रत्नकुमार सांभरिया ने स्त्रियों के प्रति समाज की नजरिए को दिखाया है। उनकी 'विद्रोहिणी','राइट टाइम','बात','पुरस्कार' आदि कहानियाँ इसका प्रमाण हैं।

रत्नकुमार सांभरिया की 'बात' कहानी में अकेली स्त्री के संघर्ष को दिखाया है। कहानी में दिखाया है कि अकेली स्त्री का लोग कितना फायदा उठाते हैं। कहानी में सुरती के साथ ऐसा ही होता है। सुरती बहुत गरीब थी। वह अपने बेटे की स्कूल फीस भरने के लिए धींग नाम के व्यक्ति से पैसे उधार लेती है। धींग की नजर सुरती पर थी। वह पैसे के बदले कुछ गिरवी रखने को कहता है। सुरती अपनी बात गिरवी रखती है- "इज्जत से बड़ी रकम नहीं होती। "बात" गिरवी रख रही हूँ। एक महीने में पैसे नहीं लौटाऊँ...।" सुरती धींग के पैसे जुटाने में हर संभव

प्रयास करती है। धींग उसका प्रयास नष्ट करने में लगा रहता है। अंत में सुरती पैसे इकट्ठा कर लेती है। और धींग को दे देती है। यहाँ दिखाया है कि समाज स्त्री को कितना मजबूर कर देता है। अकेली होने के कारण वह हर पल डर डर कर जीती है। अकेली स्त्री समाज में कहीं पर भी सुरक्षित नहीं है। हर कोई उसका फायदा उठाना चाहता है।

रत्नकुमार सांभरिया ने स्त्री पक्ष का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ सरल एवं सहज स्वभाव की है। कहानीकार ने विद्रोही के साथ-साथ स्त्रियों के कोमल रूप का चित्रण किया है। कहानी 'फुलवा' इसका सशक्त उदाहरण है। गाँव के जमींदार निम्न जाति होने के कारण उसको अपने कुएँ से पानी तक लेने नहीं देता था। परंतु उसी जमींदार का बेटा शहर में फुलवा के घर जाने पर फुलवा उसका आदर सम्मान करती है। उक्त कहानी में फुलवा के माध्यम से एक कोमल स्त्री का चित्रण हुआ है।

रत्नकुमार सांभरिया दलित रचनाकार हैं। उनकी अधिकतर कहानियाँ दलित जीवन पर ही आधारित हैं। उन्होंने दलितों को अपनी लेखनी का विषय बनाकर दलित जीवन की विषमताओं का सजीव चित्रण किया है। उनकी कहानियाँ दलितों में जागरूकता एवं विद्रोह का भाव उत्पन्न करती हैं। शोषण के खिलाफ आवाज उठाने का साहस जगाती हैं। उनकी कहानियाँ दलितों के लिए नई राह दिखाती हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों के दलित पात्र कभी हार नहीं मानते। यह उनकी कहानियों की बड़ी खूबी है। 'बदन दबना','बकरी के दो बच्चे','फुलवा','भैंस','शर्त' आदि कहानियाँ दलित जीवन पर आधारित हैं।

'शर्त' कहानी दलित समाज की कहानी है। कहानी का पात्र पानाराम की बेटी के साथ मुखिया का बेटा कुकर्म करता है। पानाराम उसकी शिकायत मुखिया से करता है। मुखिया बेटे को दोषी कहने के बजाये पानाराम की बेटी को ही दोष देता है। मुखिया पानाराम को किसी भी शर्त पर मानने को कहता है। पानाराम जो शर्त रखता है उससे मुखिया बहुत ही गुस्सा होता है। पानाराम शर्त रखता है – "मुखिया साब, इज्जत का सवाल है यह। आपकी इज्जत सो मेरी इज्जत। आपकी लड़की मेरे लड़के के साथ रात रहेगी।" पानाराम की शर्त सुनकर मुखिया

गुस्से से पागल हो जाता है। वह गुस्से में आकार पानाराम को गोली मार देता है साथ ही दिल का दौरा पड़ने से उसकी भी मौत हो जाती है। कहानीकार यह कहना चाहते हैं कि अपनी बेटी की बात सुनकर मुखिया सहन नहीं कर पाया। जब वही हादसा पानाराम की बेटी के साथ हुआ तो नजरंदाज करने लगता है। यहाँ दिखाया है कि दलितों की इज्जत की कोई मायने ही नहीं। दलितों पर होने वाले शोषण को दबाने की कोशिश की जाती है। या फिर उन्हीं को गुनेहगार ठहरा दिया जाता है।

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में संस्कृति को भी स्थान दिया है। उनकी कहानियों में सांस्कृतिक पक्ष का वर्णन मिलता है। संस्कृति के अंतर्गत वेश-भूषा, त्योहार, पूजा-पाठ, अंधविश्वास, खान-पान, धर्म, विवाह आदि आते हैं। उनकी 'बेस','बिल्लो का ब्याह','विद्रोहिणी','कील','अनुष्ठान','मांडी','राज''इत्तफाक' आदि कहानियों में संस्कृति का स्पष्ट रूप मिलता है।

'मांडी' कहानी में संस्कृति का सजीव चित्रण हुआ है। कहानी में मांडी नाम की एक रीति का चित्रण है। इस रीति के अनुसार अमावस्या के दिन गाय को रोटी और खीर दी जाती है। इसके पश्चात ही घर वाले भोजन कर सकते हैं। यह एक पुण्य का कार्य माना जाता है। कहानी में इसका जिक्र है – "मांडी! ग्रामीण अमावस्या के दिन पहली सिकी रोटी और उस पर खीर या चावल रख कर गाय को देते हैं। इसे पितरों का तर्पण और पुण्य माना जाता है। उनके दूसरे हाथ में पानी का गिलास था। मांडी खिलाने से पहले और मांडी खिलाने के बाद गाय के मुँह पर पानी डालना रीति है।" कहानीकार ने इस तरह की रीति से संस्कृति का सजीव चित्रण किया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में राजनीतिक संदर्भ का भी सजीव चित्रण मिलता है। राजनीतिक संदर्भ के अंतर्गत भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता,कार्यालयों, शिक्षा संस्थाओं में होने वाले घोटाले आदि, यहाँ नेता, संवाददाता आदि के कार्यकलापों में होनेवाले भ्रष्टाचारों का सजीव वर्णन है। सांप्रदायिकता से उत्पन्न होने वाली हिंसा का भी चित्रण मिलता है।

'लाठी','पुरस्कार','काल','बाढ़ में वोट','हुकम की दुक्की','झुनझुना','धूल','खबर' आदि कहानियों में इनका स्पष्ट चित्रण मिलता है। 'पुरस्कार' कहानी में दिखाया है कि किस तरह आजकल कथा पुरस्कार पाने के लिए भी पहचान की आवश्यकता होती है। कहानी में स्पष्ट है कि पुरस्कार के लिए अपनी सृजनात्मकता की आवश्यकता नहीं, बल्कि पुरस्कार देने वाली संस्था की उच्च अधिकारी से पहचान की आवश्यकता है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने साहित्य जगत में होने वाले घोटालों का यथार्थ वर्णन किया है। धोज नीना से कहता है- "एक बात कहूँ नीना जी, आपको। पुरस्कार का सृजन से कोई सरोकार नहीं होता है। यह तो समीकरणों और आपसी सहमति की सरणी भर है। मैं पिछले दो साल से अकादमी का अध्यक्ष हूँ। संयोग से दोनों ही बार रिजल्ट सीट बदली है। श्री और शोहरत के ऐसे समीकरण बन जाते हैं कि.....।"

रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में आर्थिक संदर्भ का मार्मिक चित्रण किया है। गरीबी के कारण ही माता-पिता अपने बच्चे को दूसरे के घर में काम करने के लिए रख देते हैं। ताकि वे अपनी जरूरत को पूरा कर सकें। आर्थिक अभाव के कारण मनुष्य समाज में अच्छा स्थान नहीं पाता। आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर ही मनुष्य समाज में उच्च स्थान पाता है। फिर चाहे वह किसी भी वर्ग का हो। उक्त कथन की पूर्ति 'फुलवा' कहानी में है। "पंडिताइन ने उसे डपटा- तू तो कुएँ का मेढ़क ही रहा रामेसरिया। अब तो पद और पैसे का जमाना है, जात-पाँत का नहीं।" आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। 'बदन दबना' कहानी आर्थिक शोषण का सटीक निदर्शन है। कहानी में आर्थिक रूप से कमजोर लोग बच्चों को पैसे लेकर हवेली में छोड़ जाते थे। अमीर गरीबों की मजबूरी का फायदा उठाते थे। वे बच्चों को पाँच साल के लिए बंधवा रखते थे। पूछाराम का पिता अपनी बेटी की शादी के लिए बेटे को बंधवा रख जाता है। पिता पैसे लेकर जाते वक्त बेटे को एक बार भी नहीं देखता। उसे चिंता नहीं थी कि बेटा कैसे रहेगा? अपनी विवशता के कारण ही गरीब पिता अपने बेटे को दूसरों के घर में काम करने के लिए रख जाता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में आर्थिक शोषण का चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों के पात्रों में धैर्य एवं साहस भरा हुआ है। वे गरीब होते हुए भी ईमानदारी को पहले रखते हैं। वे अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए खूब मेहनत करते हैं। अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ाते हैं। अपने बच्चों को बड़ा अफसर बनाने का सपना देखते हैं। कुछ कहानियों में उनके बच्चों को नौकरी मिलते भी दिखाया है। रत्नकुमार सांभरिया ने आर्थिक स्थिति के साथ-साथ आर्थिक शोषण का भी चित्रण किया है।

किसी भी कहानीकार के लिए भाषा का ज्ञान होना और भाषा में पकड़ होना आवश्यक है। तभी एक रचना सार्थक होगी। क्योंकि भाषा के सहारे ही कहानीकार अपने विचारों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। रत्नकुमार सांभरिया ने तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज शब्दों का प्रयोग किया है। उन्होंने मुहावरे और लोकोक्ति का भी प्रयोग किया है, जिससे भाषा रोचक होने के साथ-साथ सजीव भी हो उठी है। अलंकारों के प्रयोग से उनकी भाषा में मनोरमता है। उनकी कहानियों में काव्यात्मक, संवादात्मक, चित्रात्मक, प्रतीकात्मक, बिंबात्मक एवं आलंकारिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

किसी भी कहानी में कथानक शिल्प का महत्वपूर्ण स्थान है। कथानक ही कथा को रूप प्रदान करता है। शिल्प के अन्य सभी तत्व कथानक को रूप देने का काम करता हैं। प्रत्येक कहानीकार की अपनी विशेष शैली होती है। जिसकी सहायता से कथा को कहानी का रूप दिया जाता है। कहानीकार रत्नकुमार सांभरिया की भी अपनी शैली है। जिसकी सहायता से उन्होंने अपनी कहानियों को एक भिन्न रूप प्रदान किया है। भाषा के माध्यम से साहित्यकार अपने विचारों को शब्द रूप देता है तो शैली की सहायता से उन विचारों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। परिवेश शिल्प का भी कहानी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। कथा का विकास किसी न किसी परिवेश में होता है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में प्रयुक्त प्रमुख कथा कहने की शैली हैं- वर्णनात्मक, काव्यात्मक, चित्रात्मक, पूर्वदीप्ति, संवादात्मक, आत्मकथात्मक, प्रश्नात्मक आदि। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में

शिल्प का सफल प्रयोग किया है।

शोध-प्रबंध के महत्वपूर्ण निष्कर्ष

1. रत्नकुमार सांभरिया समकालीन हिंदी कहानीकार हैं।

2. समकालीन कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की समानताओं और असमानताओं को उद्घाटित किया गया है।

3. रत्नकुमार सांभरिया की अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन पर आधारित हैं।

4. उनकी कहानियों के पात्रों में जीने की इच्छा है। साहस का स्वर है। उनके पात्र कष्ट तथा कठिनाइयों से डर कर मरने के बारे में नहीं सोचते हैं। अपने ऊपर हो रहे शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं।

5. रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन, दलित जीवन, दिव्यांग जीवन, वृद्ध जीवन आदि से जुड़ी सभी समस्याओं का चित्रण किया है।

6. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में शिक्षा के महत्व को उद्घाटित किया गया है। उन्होंने शिक्षा को जीवन में आगे बढ़ने का माध्यम माना है। शिक्षा से ही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है।

7. उनकी कहानियों में घुमंतू लोगों का चित्रण हुआ है। बेघर लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर जीवन निर्वाह करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्होंने मदारिन, बंजारन, सपेरा, लोहार जैसे लोगों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है।

8. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का वास्तविक चित्रण मिलता है।

9. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में समाज की राजनीतिक (भ्रष्टाचार और सत्ता का दुरूपयोग) और आर्थिक स्थिति का सजीव वर्णन मिलता है। आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति का समाज में कोई स्थान नहीं है। यह समाज की सबसे बड़ी सच्चाई है। उन्होंने अपनी कहानियों के

गरीब पात्र को झुकते हुए नहीं बल्कि उनको अपने हक के लिए लड़ते हुए दिखाया है। वे आर्थिक रूप से कमजोर होने पर भी मानसिक रूप से कमजोर नहीं हैं।

10. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की भाषा सहज, सरल, सुबोध तथा शिल्प अनुपम है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ :

1. रत्नकुमार सांभरिया, हुकम की दुग्गी, रचना प्रकाशन, जयपुर, 2003
2. रत्नकुमार सांभरिया, काल तथा अन्य कहानियाँ, रचना प्रकाशन,जयपुर, 2004
3. रत्नकुमार सांभरिया, खेत तथा अन्य कहानियाँ, आधार प्रकाशन, पंचकुला, 2012
4. रत्नकुमार सांभरिया, एयरगन का घोड़ा, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स(प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2016
5. रत्नकुमार सांभरिया, दलित समाज की कहानियाँ, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स(प्रा.) लिमिटेड,नई दिल्ली, 2017

सहायक ग्रंथ :

1. अभय कुमार दुबे, सेकुलर/सांप्रदायिक : एक भारतीय उलझन के कुछ आयाम, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2016
2. अभय कुमार दुबे, आधुनिकता के आईने में दलित, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2020
3. असगर अली इंजीनियर, धर्म और सांप्रदायिकता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
4. उत्पल के. पटेल, भारतीय समाज एवं संस्कृति, पैराडाइज़ पब्लिशर्स, जयपुर, 2018
5. उषा द्विवेदी, निराला का कथा साहित्य वस्तु और शिल्प, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय,कोलकाता, 2004
6. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2013
7. कमला प्रसाद, राजेन्द्र शर्मा, स्त्री : मुक्ति का सपना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
8. कुलदीप सिंह मीना, डॉ. जनक सिंह, भारत की आदिवासी चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
9. कैलाश उपाध्याय, नरेश मेहता के उपन्यासों में चरित्र सृष्टि, श्री निवास पब्लिकेशन, दिल्ली,2008
10. खगेन्द्र ठाकुर, कहानी परंपरा और प्रगति, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2018
11. गिरिधारी लाल शर्मा, कहानी एक कला, ग्रंथ माला प्रकाशन,बांकीपुर, 1941
12. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
13. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास- 2, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, 2014

14. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास - 3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
15. जितेंद्र 'जीतू' (सं.), रत्नकुमार सांभरिया की लघुकथाएँ, वनिका पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2020
16. दानबहादूर पाठक एवं डॉ. मनहरगोपाल भार्गव, भाषा विज्ञान, प्रकाशन केंद्र, लखनऊ, 2015
17. देवेन्द्रनाथ शर्मा, दीप्ति शर्मा, भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
18. धीरजभाई बणकर, कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ, ज्ञान प्रकाशन, 2010
19. नगेन्द्र(सं.), हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबेक्स, नौएडा, 2010
20. नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
21. नीरज शर्मा, अंतिम दशक की हिन्दी कहानियाँ : संवेदना और शिल्प, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
22. प्रेमलता तिवारी, कथाकार राजेंद्र यादव के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व का अनुशीलन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2010
23. प्रेम सिंह, भ्रष्टाचार : विरोध, विभ्रम और यथार्थ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
24. पुरुषोत्तम अग्रवाल, संस्कृति : वर्चस्व और प्रतिरोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
25. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012
26. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2015
27. भारत यायावर(सं), हिन्दी भाषा (महावीर प्रसाद द्विवेदी), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
28. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद, 2009
29. मुकेश भारद्वाज, सत्ता का सत्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
30. रत्नकुमार सांभरिया, वीमा, भभूल्या, उजास तीन नाटक, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, 2020
31. रत्नकुमार सांभरिया, साँप, सेतु प्रकाशन, नौएडा, 2022
32. राघव प्रकाश, शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्यशात्र, राजस्थान

हिन्दी ग्रंथ अकादमी,जयपुर, 1983

33. राजमणि शर्मा, आधुनिक भाषा विज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
34. राजेन्द्र यादव, कहानी स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020
35. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी, 2006
36. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
37. रामस्वरूप चतुर्वेदी, काव्यभाषा पर तीन निबंध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002
38. विवेक शंकर(सं.), डॉ. अनीता वर्मा, समाजद्रष्टा साहित्यकार रत्नकुमार सांभरिया, दृष्टि प्रकाशन,जयपुर, 2020
39. शरण कुमार लिंबाले(सं.), दलित साहित्य : वेदना और विद्रोह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
40. शशिभूषण शीतांशु, शैली और शैली विश्लेषण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
41. सच्चिदानंद वात्स्यायन (सं.), सामाजिक यथार्थ और कथाभाषा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली, 1986
42. सुरेंद्र चौधरी, हिंदी कहानी प्रक्रिया और पाठ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,2010
43. सूर्यनारायण, दलित चेतना की पहचान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012

कोश :

1. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
2. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी मुहावरा कोश, हिन्दी बुक सेंटर,नई दिल्ली, 2010
3. शोभाराम शर्मा, वर्गीकृत हिंदी लोकोक्ति कोश, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1983

शोधार्थी का जीवन-वृत्त

1. नाम : बर्णाली गोगोई

2. पिता का नाम : फूलेश्वर गोगोई

3. माता का नाम : मंजू गोगोई

4. पता : नलकता, बगलीजान, लखिमपुर, असम- 787031

5. जन्म तिथि : 19-04-1994

6. शैक्षणिक योग्यता : एम.फिल. (हिंदी)

7. मोबाइल : 9366961215

8. ईमेल : bornaligogoi733@gmail.com

9. प्रकाशन :

क) बर्णाली गोगोई एवं सीनियर प्रो. सुशील कुमार शर्मा, रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना, अपनी माटी, अंक : 47, जून, 2023

ख) बर्णाली गोगोई एवं सीनियर प्रो. सुशील कुमार शर्मा, रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में चित्रित राजनीतिक चेतना, शोध दिशा, अंक :62, अप्रैल-जून, 2023

10. संगोष्ठियों में ऑनलाइन पत्र वाचन :

क) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री विमर्श(बेस कहानी के विशेष संदर्भ में), आयोजक : कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल, महाराष्ट्र, 30-31 मार्च, 2022

ख) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में व्याप्त भ्रष्टाचार(झुनझुना कहानी के विशेष संदर्भ में) आयोजक: गुरु विद्यापीठ, रोहतक, हरियाणा,05 अक्टूबर, 2023

बर्णाली गोगोई

अनुसंधित्सु का विवरण

नाम	: बर्णाली गोगोई
शिक्षा	: पी-एच.डी.
विभाग	: हिंदी
शोध-प्रबंध का शीर्षक	: रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन
प्रवेश शुल्क के भुगतान की तिथि	: 02-11-2020
शोध प्रस्ताव की संतुस्ति:	
1. विभागीय शोध समिति की तिथि	: 06-04-2021
2. बी.ओ.एस. की तिथि	: 04-05-2021
3. स्कूल बोर्ड की तिथि	: 20-05-2021
मिज़ोरम विश्वविद्यालय पंजीयन संख्या	: 2010703
पी-एच.डी. पंजीयन संख्या	: MZU/Ph.D./1676 of 02.11.2020
समयावधि विस्तार का पत्र संख्या	: N/A

(प्रो. संजय कुमार)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल

शोध-प्रबंध सार
ABSTRACT

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन
RATANKUMAR SAMBHARIA KI KAHANIYON KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN

(मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध का सारांश)

AN ABSTRACT SUBMITTED IN PARTIAL FULFILLMENT OF THE REQUIREMENTS FOR THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

बर्णाली गोगोई
BORNALI GOGOI
MZU REGN. NO: 2010703
Ph.D. REGN. NO.: MZU/Ph.D./1676 of 02.11.2020

हिंदी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
DEPARTMENT OF HINDI
SCHOOL OF HUMANITIES AND LANGUAGES

जून, 2024
JUNE, 2024

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

RATANKUMAR SAMBHARIA KI KAHANIYON KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN

अनुसंधित्सु

बर्णाली गोगोई

हिंदी विभाग

By

BORNALI GOGOI

DEPARTMENT OF HINDI

शोध-निर्देशक

वरिष्ठ आचार्य सुशील कुमार शर्मा

SUPERVISOR

Senior Professor SUSHIL KUMAR SHARMA

DEPARTMENT OF HINDI

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के मानविकी एवं भाषा संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) की उपाधि के लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध का सारांश

An abstract submitted in partial fulfillment of the requirement of the Degree of Doctor of Philosophy in Hindi of Mizoram University, Aizawl.

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन :

प्रथम अध्याय : रत्नकुमार सांभरिया : व्यक्तित्व और कृतित्व

क. व्यक्तित्व

(i) जन्म (ii) शिक्षा

(iii) परिवार (iv) नौकरी

(v) सम्मान

ख. कृतित्व

(i) कहानी संग्रह (ii) उपन्यास

(iii) नाटक (iv) लघुकथा

(v) आलोचना

द्वितीय अध्याय : समकालीन हिंदी कहानी लेखन और रत्नकुमार सांभरिया

क. समकालीन हिंदी कहानी लेखन :

(i) परिभाषा (ii) समय

(iii) प्रवृत्तियाँ

ख. समकालीन हिंदी कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया :

(i) समकालीन हिंदी कहानीकार और उनकी कहानियाँ

(ii) समकालीन हिंदी कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ

(अ) समानताएँ (आ)असमानताएँ

तृतीय अध्याय: रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ: सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ

क. सामाजिक संदर्भ

(i) परिभाषा (ii) तत्व

(iii) समस्याएँ

(iv) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सामाजिक जीवन

(अ) स्त्री पक्ष (आ) दलित चेतना

ख. सांस्कृतिक संदर्भ

(i) परिभाषा (ii) तत्व

(iii) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सांस्कृतिक जीवन

(अ) परंपरा (आ) अंधविश्वास

चतुर्थ अध्याय : रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ: राजनीतिक और आर्थिक संदर्भ

क. राजनीतिक संदर्भ

(i) परिभाषा (ii) तत्व

(iii) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में राजनीतिक जीवन

(अ) भ्रष्टाचार (आ) सत्ता का दुरुपयोग

ख. आर्थिक संदर्भ

(i) रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में आर्थिक जीवन

पंचम अध्याय : रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का शिल्प

क. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की भाषा

ख. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का शिल्प

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ-सूची

शोध-प्रबंध का सार

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

हिन्दी साहित्य की गद्य विधाओं में से कहानी एक महत्वपूर्ण विधा है । कहानी ही एक ऐसी विधा है, जिसके माध्यम से कहानीकार अपने विचारों को कल्पनाओं के सहारे पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। पहले कहानियाँ मौखिक होती थीं। लोग मौखिक रूप से ही कहानियाँ सुनाते थे। उन मौखिक कहानियों को लोककथा की संज्ञा दी गयी। वे कहानियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से प्रचलित रहीं। लेकिन धीरे-धीरे कहानियों ने लिखित रूप ले लिया। 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन वर्ष(1900) से ही हिन्दी कहानी का प्रारंभ माना जाता है। हिंदी कहानी का विकास- क्रम है – 1. प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी(1900-1918), 2. प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी(1919-1936), 3. प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी(1937 से आज तक)। हिन्दी कहानी का उद्देश्य नीतिपरक एवं मनोरंजनपरक है। रत्नकुमार सांभरिया समकालीन हिन्दी कहानी के प्रमुख कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ समाज के यथार्थ का सजीव वर्णन करती हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय है –**"रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन।"** इसमें रत्नकुमार सांभरिया के कुल पाँच कहानी संग्रहों को आधार बनाकर इनका आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध पाँच अध्यायों में विभक्त है।

शोध-प्रबंध का प्रथम अध्याय- **'रत्नकुमार सांभरिया : व्यक्तित्व और कृतित्व'** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। पहला उप-अध्याय –**"व्यक्तित्व"** है। इस उप-अध्याय में रत्नकुमार सांभरिया के जीवन का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। रत्नकुमार सांभरिया का जन्म 6 जनवरी, 1956 को ग्राम भाड़ावास, जिला रेवाड़ी (हरियाणा) में हुआ था। उनके पिता का नाम सिंहराम सांभरिया और माता का नाम जुगरी देवी है। उन्होंने सन् 1978 में बी.एड. की उपाधि प्राप्त की। 31 मई, 1974 को उनका विवाह रामरती देवी से हुआ। उनके दो सुपुत्र (हेमंत सिंह, सौरभ सिंह) और एक सुपुत्री (अंजुलता) है। उन्होंने नौकरी

की शुरुआत सन् 1980 में की। वे सर्वप्रथम शिक्षक बने, तत्पश्चात लेखाकार, अनुवादक तथा जनसंपर्क अधिकारी के पदों पर कार्यरत रहे। उन्हें अनेक साहित्यिक सम्मानों से विभूषित किया गया है।

दूसरा उप-अध्याय –**"कृतित्व"** है। इस उप-अध्याय में रत्नकुमार सांभरिया के रचना संसार पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में रत्नकुमार सांभरिया के पाँच कहानी संग्रह हैं।

1. कहानी संग्रह:

i. हुकम की दुग्गी(2003) : इस कहानी संग्रह में पंद्रह कहानियाँ हैं : फुलवा, बकरी के दो बच्चे, अनुष्ठान, आखेट, बूढ़ी, द्वंद्व, गूंज, सनक, इत्तफाक, बिल्लो का ब्याह, शर्त, मियाँजान की मुर्गी, हुकम की दुग्गी, मैं जीती और भैंस। उक्त कहानी संग्रह में रत्नकुमार सांभरिया ने समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है।

ii. काल तथा अन्य कहानियाँ (2004) : इस कहानी संग्रह में बारह कहानियाँ हैं: लाठी, बात, झंझा, चपड़ासन, धूल, काल, चमरवा, कील, डंक, झुनझुना, तलाश और मूंगफली के दाने। उक्त कहानी संग्रह में रत्नकुमार सांभरिया ने स्त्री समस्या, सांप्रदायिकता, गरीबी, पारिवारिक विघटन आदि का चित्रण किया है।

iii. खेत तथा अन्य कहानियाँ (2012): इस कहानी संग्रह में पंद्रह कहानियाँ हैं : खबर, सवांखें, बाघ के दीदार, राज, मुक्ति, बाढ़ में वोट, खेत, बिपर सूदर एक कीने, बदन-दबना, पुरस्कार, बेस, हथौड़ा, बदलू को बुलाओ, राइट टाइम और मेरा घर। इस कहानी संग्रह में कहानीकार ने समाज में व्याप्त विभिन्न सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है।

iv. एयरगन का घोड़ा (2016) : इस कहानी संग्रह में 21 कहानियाँ हैं : मांडी, गाड़िया, हुकम की डुग्गी, अनुष्ठान, मैं जीती, एयरगन का घोड़ा, बेस, झुनझुना, द्वन्द्व, पुरस्कार, विद्रोहिणी, बिल्लो का ब्याह, धूल, कील, हिरणी, राज, सनक, राइट टाइम, बंजारन, बाघ के दीदार और खबर। उक्त कहानी संग्रह में रत्नकुमार सांभरिया ने सांस्कृतिक वैभव का सजीव वर्णन किया है।

v. दलित समाज की कहानियाँ (2017): इस कहानी संग्रह में 24 कहानियाँ हैं : फुलवा, बकरी के दो बच्चे, आखेट, बूढ़ी, गूंज, इत्तफाक, शर्त, मियांजान की मुर्गी, भैंस, काल, झंझा, लाठी, डंक, बात, चमरवा, चपड़ासन, सवांखें, मुक्ति, बाढ़ में वोट, खेत, बिफर सूदर एक कीने, बदन दबना, हथौड़ा और मेरा घर। इस कहानी संग्रह में कहानीकार ने राजनीतिक और आर्थिक स्थिति का सजीव चित्रण किया है।

साहित्य केवल समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि समाज सचेतक भी है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों के माध्यम से केवल समाज की समस्याओं का चित्रण ही नहीं किया है। उन्होंने पाठकों में जागरुकता पैदा करने का भी प्रयास किया है।

2. उपन्यास :

साँप (2022) : इस उपन्यास में घुमंतू जनजातियों के जीवन तथा उनसे जुड़ी समस्याओं का चित्रण किया गया है।

3. नाटक :

वीमा, भभूल्या, उजास तीन नाटक (2020)

i. वीमा : इस नाटक में दिव्यांगों के प्रति समाज के नजरिये को चित्रित किया गया है।

ii. भभूल्या : इस नाटक में भ्रष्टाचार तथा सत्ता के दुरुपयोग का वर्णन किया गया है।

iii. उजास : इस नाटक में शिक्षा का महत्व और जाति-भेद के नाम पर होने वाली राजनीति का वर्णन किया गया है।

4. लघुकथाएँ :

रत्नकुमार सांभरिया की लघुकथाएँ (2020) : इस लघुकथा संग्रह में 104 लघुकथाएँ हैं। उनकी लघुकथाएँ सोद्देश्य हैं।

5. आलोचनात्मक कृति :

'मुंशी प्रेमचंद और दलित समाज': इसमें प्रेमचन्द और दलित जीवन पर आधारित कुछ कहानियों की आलोचना है।

रत्नकुमार सांभरिया का कृतित्व हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, लघुकथा, आलोचना आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है। रत्नकुमार सांभरिया की रचनाओं में समाज का स्वर है। उनकी कृतियों में समाज के निशक्त लोगों के प्रति एक नया दृष्टिकोण है। उन्होंने निशक्तों को असहाय नहीं, बल्कि संघर्षशील चित्रित किया है। उनकी कृतियों के पात्र जीने की इच्छा रखते हैं। उनमें लड़ने की क्षमता है। वे निराश होकर मरने की नहीं सोचते। उनकी कृतियाँ मानवतावादी चेतना की ओर उन्मुख हैं। उनकी रचनाएँ समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हैं।

द्वितीय अध्याय **–"समकालीन हिन्दी कहानी लेखन और रत्नकुमार सांभरिया"** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में बाँटा गया है। पहला उप-अध्याय **–"समकालीन हिन्दी कहानी लेखन"** है। इसके अंतर्गत समकालीन का अर्थ, परिभाषाएँ, समय एवं प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। समकालीन के विषय में गंगा प्रसाद विमल लिखते हैं - "समकालीन का अर्थ यह नहीं है कि दो व्यक्ति एक विशेष कालखंड में जी रहे हों और संयोग से वे रचनाशील भी हैं। जिस समकालीनता की बात की जा रही है, उसका शब्दार्थ की धारणा से संबंध नहीं है, अपितु वह जीवन बोध के आधार पर समानधर्मी रचनाकारों के बोध की समानधर्मिता है।"[1]

डॉ. सुखवीर सिंह के अनुसार -"वस्तुतः समकालीन एक व्यापक एवं बहुआयामी शब्द है और आधुनिकता के आधार तत्व है। जो समकालीन है, वह आधुनिक भी हो, यह आवश्यक नहीं है, किंतु जो आधुनिक दृष्टि से संवलित है। वह निश्चित रूप से समकालीन भी होती है।"[2]

समकालीन कहानी का प्रारंभ सन् 1960 के पश्चात से माना जाता है। इसके प्रवर्तक गंगाप्रसाद विमल हैं। समकालीन प्रवृत्तियों के अंतर्गत् स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, वृद्ध विमर्श, पारिवारिक विघटन, स्त्री-पुरुष संबंध, मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ, पीढ़ियों का टकराव आदि का चित्रण मिलता है। समकालीन हिन्दी कहानीकारों की कहानियों में ये सभी प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। स्त्री विमर्श समकालीन कहानीकारों की एक बड़ी विशेषता रही है। उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्रियों की समस्याओं का चित्रण बखूबी किया है। स्त्री चाहे घरेलू हो या कामकाजी उसका हर जगह शोषण होता है। दलित विमर्श में दलितों के शोषण का स्पष्ट चित्रण है। वृद्ध विमर्श में वर्तमान समय में वृद्धों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उनका जीवंत चित्रण हुआ है। पारिवारिक विघटन आज के समय की आवश्यकता बन गया है। इसके फलस्वरूप एकल परिवार का गठन हो रहा है।

दूसरा उप-अध्याय **–"समकालीन हिन्दी कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया"** है। इसके अंतर्गत समकालीन हिन्दी कहानीकार की कहानियों तथा रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों पर सविस्तार प्रकाश डाला गया है। समकालीन हिंदी की कहानियाँ और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की समानताओं और असमानताओं की भी तुलना की है। समकालीन कहानीकार हैं – गंगाप्रसाद विमल, निर्मल वर्मा, रवींद्र कालिया, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा आदि।

समकालीन हिन्दी कहानी और रत्नकुमार साम्भरिया की कहानियों का विवेचन करने के बाद यह ज्ञात होता है कि रत्नकुमार सांभरिया की कहानी, समकालीन हिन्दी कहानी में प्रमुख स्थान रखती हैं। उनकी कहानियाँ समकालीन हिन्दी कहानी से भिन्न हैं। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में पात्रों को जीवन की कठिनाइयों से हारकर शोषित होते नहीं दिखाया है। उनके पात्र अपने पर हुए शोषण, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाते हैं। समकालीन हिन्दी कहानियों में अधिकतर स्त्रियों, दलितों को शोषित होते ही दिखाया गया है। परन्तु रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में शोषित के साथ-साथ विद्रोह करते भी दिखाया

गया है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ समकालीन हिन्दी कहानियों से अलग इसलिए भी हैं, क्योंकि उनकी अधिकतर कहानियाँ किसी न किसी हिंदी महीने से शुरू होती हैं। जैसे- 'आखेट' कहानी में 'पौष की सर्दी हड्डियों से निकल रही है', 'लाठी' कहानी में 'भादो की सड़ी गर्मी पड़ रही थी', 'गाड़िया' कहानी में 'मध्यरात्रि वैशाख की गहराती रात' आदि। इन कहानियों का आरंभ महीना से ही किया गया है।

समकालीन हिन्दी कहानी में कहानीकारों ने ग्रामीण जीवन के अलावा शहरी जीवन का चित्रण भी किया है। परन्तु रत्नकुमार साम्भरिया की कहानियों में ऐसा नहीं है। उनकी अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन को ही दर्शाती हैं । इनकी कहानियों के सभी पात्र गाँव के ही हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की एक खासियत यह भी है कि उनकी कहानियाँ ग्रामीण परिवेश पर आधारित होते हुए भी उनकी कहानियों में आधुनिकता बोध की प्राप्ति होती है। आधुनिकता बोध से तात्पर्य है - नवीनता का बोध। उनकी कहानियों में आधुनिकता बोध की सभी विशेषताएं विद्यमान हैं । जैसे- मानवीयता, तनाव ग्रस्त जीवन, अकेलापन, भ्रष्टाचार, संबंधों का टूटन, स्त्री अस्मिता, स्त्री-दलित शोषण, नारी शिक्षा, बेरोजगारी आदि। समकालीन हिन्दी कहानी में कहानीकारों ने मध्यवर्गीय जीवन पर अधिक लिखा है। साथ ही दलित एवं स्त्री जीवन पर प्रकाश डाला है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री तथा दलित जीवन पर ही अधिक लिखा गया है। रत्नकुमार सांभरिया ने दलितों की पीड़ा, स्त्रियों की पीड़ा, आदि को लेखनी का मूल केंद्र बिंदु बनाया है। साथ ही उन्हें पीड़ित एवं शोषित के साथ-साथ विद्रोह करते भी दिखाया है। रत्नकुमार सांभरिया ने केवल दलित और स्त्रियों का चित्रण ही नहीं बल्कि दिव्यांग लोगों का चित्रण भी किया है। दिव्यांग को दिव्यांग के रूप में ही नहीं बल्कि उन्हें अपने अधिकार के लिए लड़ते एवं अपने लिए आवाज उठाते दिखाया है। उन्हें हार मानते चित्रित नहीं किया है। उन्होंने दिव्यांगों को केवल असहाय या लाचार के रूप में चित्रित न करके उन्हें बहादुर के रूप में चित्रित किया है, ऐसा अन्यत्र दुर्लभ है।

तृतीय अध्याय –**"रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ: सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ"** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला उप-अध्याय- **"सामाजिक संदर्भ"** है। इसके अंतर्गत समाज का अर्थ, परिभाषा, तत्व आदि का वर्णन किया है।

काम्टे के अनुसार – "समाज एकमात्र सामाजिक संस्था है। समाज ही एक ऐसा विज्ञान है, जो समस्त सामाजिक घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है।"[3]

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में समाज की यथार्थ स्थिति का चित्रण हुआ है। उन्होंने स्त्री, दलित, दिव्यांग, वृद्ध, भ्रष्टाचार आदि को अपनी कहानी का केंद्रीय विषय बनाया है। उनकी कहानियाँ समाज की सच्चाई को उजागर करती हैं।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री चेतना का वर्णन हुआ है। 'राइट टाइम' एक अकेली स्त्री की कहानी है। स्त्री ट्रेन से दिल्ली अपने बेटे से मिलने जाती है। जल्दबाजी के कारण वह टिकट नहीं ले पाती। टिकट न होने के कारण वहाँ खड़ा एक व्यक्ति उसके साथ बदतमीजी से बात करने लगता है। वह उस स्त्री को टिकट के बारे में पूछता है और कहता है- "टिकट क्यों लेकर बैठेगी यह? ऐसी वालियों को खूब जानता हूँ मैं। टी.टी. और जी. आर. पी. वालों से साँठ-गाँठ होती है इनकी।"[4] कहानीकार ने इस कहानी में पुरुष मानसिकता का चित्रण किया है। आलोच्य कहानी में एक अकेली स्त्री के प्रति लोगों की संकीर्ण सोच का चित्रण है। स्त्री अकेली थी, जिस कारण से उसे भला-बुरा कहा जा रहा था। कहानीकार ने यहाँ पितृसत्तात्मक समाज पर करारी चोट की हैं।

'विद्रोहिणी' कहानी में अकेली स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण को दर्शाया गया है। कहानी की पात्र सुंदरी के पति का देहांत हो जाता है। समाज के लोग उसे सहानुभूति देने की बजाये बुरा-भला कहने लगते हैं। उसके घर वाले तक उसका साथ छोड़ देते हैं। पति की अस्थियाँ वह स्वयं त्रिवेणी धाम-प्रयागराज ले जाती है। सुंदरी द्वारा अस्थियाँ स्वयं ले जाने से लोग कहने लगते हैं- "बातें बनी थीं, या तो यह औरत मूर्खों की मूर्ख है या राक्षसों की राक्षस। पति की मृत्यु का गम, औरत की लाज, जात की कान, गाँव का कायदा सब ताक पर रख दिए। ऐसी कामनगारी तो बेड़िनें भी नहीं होती। वक्त करवट ले गया, वरना इसके सुंदर बाल नोच

कर गंजी कर देते और सफेद कपड़े पहना कर दूर बैठा देते। खामोश चीख बनी रहती जिंदगी भर।"[5] कहानी में स्त्री के प्रति पितृसत्तात्मक समाज की मानसिकता का यथार्थ चित्रण हुआ है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में पारिवारिक विघटन का चित्रण भी मिलता है। 'धूल','कील' आदि इसी विषय पर आधारित कहानियाँ हैं। 'धूल' कहानी में पारिवारिक विघटन का स्पष्ट रूप मुखरित हुआ है। कहानी में बड़ा भाई(हुलसीराम) अपने छोटे भाई धूल को पढ़ा-लिखाकर काबिल बनाता है। वही छोटा भाई नौकरी मिलने के बाद भाई को पूछता तक नहीं। वह शहर में ही रहकर शादी कर लेता है। गाँव में भाई के पास आता तक नहीं। धूल की शादी के समय खेत गिरवी रखना पड़ा। धूल कहता है – "खेत गिरवी रख देते हैं। मेरी अच्छी नौकरी लग गयी है। सबसे पहले खेत छुड़ाऊँगा।"[6] लेकिन शादी के बाद पैसा तो दूर की बात, भाई से मिलने तक नहीं आता। उक्त कहानी में रिश्तों में पड़ती दरार का मार्मिक चित्रण है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दिव्यांग जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने दिव्यांगों को कमजोर एवं लाचार नहीं बल्कि उन्हें अपने लिए संघर्ष करते दिखाया है। अपने हक के लिए लड़ते दिखाया है। 'सवांखें' उनकी इसी विषय पर आधारित कहानी है। कहानी में जमन अपनी पत्नी वीमा को वापस घर लाने के लिए संघर्ष करता है। कहानी के पात्र जमन और वीमा दोनों नेत्रहीन थे। घर वालों के अत्याचार से तंग आकर वीमा घर से भाग जाती है। जमन से वीमा की मुलाकात होती है। वे दोनों शादी कर लेते हैं। घर वालों को जब यह पता चलता है कि वीमा ने जमन से शादी कर ली है, तो वीमा को उसके घर वाले जबरदस्ती अपने घर ले जाते हैं। जमन पुलिस के पास जाता है। पुलिस उसकी मदद नहीं करती। जमन का दोस्त देवत और अन्य दिव्यांग उसकी मदद करते हैं।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में वृद्ध जीवन का सजीव वर्णन हुआ है। 'कील','मियांजान की मुर्गी','खेत','आश्रय','बूढ़ी' आदि कहानियाँ वृद्ध जीवन की समस्याओं को उद्घाटित करती हैं। 'कील' कहानी में बूढ़ी माँ को बेटा-बहू ठगते हैं। माँ(सोनवती) को गाँव से

बुलाकर बेटा-बहू उसकी सारी संपत्ति हड़प लेते हैं। सोनवती मजबूर होकर घर छोड़ देती है। घर से जाने के बाद भी बेटा माँ की खबर तक नहीं लेता। एक दिन पता चलता है कि सोनवती गाँव गई ही नहीं। तब बेटा-बहू फसने के डर से रिपोर्ट लिखाने जाते हैं। रास्ते में देखते है कि सोनवती जूते में कील ठोक रही है- "चैत की भभकती धूप थी। पगडंडी पर मोचिन बैठी थी। सोनवती उसकी बगल में बैठी सामने खड़े ग्राहक के जूते में कील ठोक रही थी।"[7] शहर में बेटे का घर होते हुए भी, वहाँ रहने के लिए उनके पास जगह नहीं है। अपने पुत्र के होते हुए भी वह मजदूरी का काम करती है। सोनवती के माध्यम से कहानीकार ने वृद्धों की समस्याओं का यथार्थ वर्णन किया है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंधों का वास्तविक चित्रण भी हुआ है। स्त्री-पुरुष का संबंध कहीं सरल रूप में चित्रित है, तो कहीं बिखरा हुआ है। कहीं प्रेम की अनुभूति है, तो कहीं झगड़े अथवा तनाव का चित्रण है। रत्नकुमार सांभरिया ने 'इत्तफाक' कहानी में स्त्री-पुरुष संबंधों को दिखाया है। शादी के बाद ही पति अपनी पत्नी को काली होने के कारण मार-मार कर घर से निकाल देता है। पत्नी से अच्छी तरह बात भी नहीं करता।

रत्नकुमार सांभरिया की अधिकतर कहानियाँ दलित जीवन पर ही आधारित हैं। उन्होंने दलितों को अपनी लेखनी का विषय बनाकर दलित जीवन की विषमताओं का सजीव चित्रण किया है। उनकी कहानियाँ दलितों में जागरूकता एवं विद्रोह का भाव उत्पन्न करती हैं। शोषण के खिलाफ आवाज उठाने का साहस जगाती हैं। उनकी कहानियाँ दलितों के लिए नई राह दिखाती हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों के दलित पात्र कभी हार नहीं मानते। यह उनकी कहानियों की बड़ी खूबी है। 'बदन दबना','बकरी के दो बच्चे','फुलवा','भैंस','शर्त' आदि कहानियाँ दलित जीवन पर आधारित हैं।

'शर्त' कहानी दलित समाज की कहानी है। कहानी का पात्र पानाराम की बेटी के साथ मुखिया का बेटा कुकर्म करता है। पानाराम उसकी शिकायत मुखिया से करता है। मुखिया बेटे को दोषी कहने के बजाये पानाराम की बेटी को ही दोष देता है। मुखिया पानाराम को किसी

भी शर्त पर मानने को कहता है। पानाराम जो शर्त रखता है उससे मुखिया बहुत ही गुस्सा होता है। पानाराम शर्त रखता है – "मुखिया साब, इज्जत का सवाल है यह। आपकी इज्जत सो मेरी इज्जत। आपकी लड़की मेरे लड़के के साथ रात रहेगी।"[8] पानाराम की शर्त सुनकर मुखिया गुस्से से पागल हो जाता है। वह गुस्से में आकार पानाराम को गोली मार देता है साथ ही दिल का दौरा पड़ने से उसकी भी मौत हो जाती है। कहानीकार यह कहना चाहते हैं कि अपनी बेटी की बात सुनकर मुखिया सहन नहीं कर पाया। जब वही हादसा पानाराम की बेटी के साथ हुआ तो नजरंदाज करने लगता है। यहाँ दिखाया है कि दलितों की इज्जत की कोई मायने ही नहीं। दलितों पर होने वाले शोषण को दबाने की कोशिश की जाती है। या फिर उन्हीं को गुनेहगार ठहरा दिया जाता है।

दूसरा उप-अध्याय- **"सांस्कृतिक संदर्भ"** है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में संस्कृति को भी स्थान दिया है। उनकी कहानियों में सांस्कृतिक पक्ष का वर्णन मिलता है। संस्कृति के अंतर्गत वेश-भूषा, त्योहार, पूजा-पाठ, अंधविश्वास, खान-पान, धर्म, विवाह आदि आते हैं। उनकी 'बेस','बिल्लो का ब्याह','विद्रोहिणी','कील','अनुष्ठान','मांडी','राज''इत्तफाक' आदि कहानियों में संस्कृति का स्पष्ट रूप मिलता है।

'मांडी' कहानी में संस्कृति का सजीव चित्रण हुआ है। कहानी में मांडी नाम की एक रीति का चित्रण है। इस रीति के अनुसार अमावस्या के दिन गाय को रोटी और खीर दी जाती है। इसके पश्चात ही घर वाले भोजन कर सकते हैं। यह एक पुण्य का कार्य माना जाता है। कहानी में इसका जिक्र है – "मांडी! ग्रामीण अमावस्या के दिन पहली सिकी रोटी और उस पर खीर या चावल रख कर गाय को देते हैं। इसे पितरों का तर्पण और पुण्य माना जाता है। उनके दूसरे हाथ में पानी का गिलास था। मांडी खिलाने से पहले और मांडी खिलाने के बाद गाय के मुँह पर पानी डालना रीति है।"[9] कहानीकार ने इस तरह की रीति से संस्कृति का सजीव चित्रण किया है।

चतुर्थ अध्याय- **"रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ: राजनीतिक और आर्थिक संदर्भ"** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला उप-अध्याय - **"राजनीतिक संदर्भ"** है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में राजनीतिक संदर्भ का सजीव चित्रण मिलता है। राजनीतिक पक्ष के अंतर्गत भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, कार्यालयों-शिक्षा संस्थाओं में होने वाले घोटाले, नेता, संवाददाता आदि के कार्यकलापों में होने वाले भ्रष्टाचारों का सजीव वर्णन है। सांप्रदायिकता से उत्पन्न होने वाली हिंसा का भी चित्रण मिलता है। 'लाठी','पुरस्कार','काल','बाढ़ में वोट','हुकम की दुक्की','झुनझुना','धूल','खबर' आदि कहानियों में इनका स्पष्ट चित्रण मिलता है। 'पुरस्कार' कहानी में दिखाया है कि किस तरह आजकल कथा पुरस्कार पाने के लिए भी पहचान की आवश्यकता होती है। कहानी में स्पष्ट है कि पुरस्कार के लिए अपनी सृजनात्मकता की आवश्यकता नहीं, बल्कि पुरस्कार देने वाली संस्था की उच्च अधिकारी से पहचान की आवश्यकता है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने साहित्य जगत में होने वाले घोटालों का यथार्थ वर्णन किया है। धोज नीना से कहता है- "एक बात कहूँ नीना जी, आपको। पुरस्कार का सृजन से कोई सरोकार नहीं होता है। यह तो समीकरणों और आपसी सहमति की सरणी भर है। मैं पिछले दो साल से अकादमी का अध्यक्ष हूँ। संयोग से दोनों ही बार रिजल्ट सीट बदली है। श्री और शोहरत के ऐसे समीकरण बन जाते हैं कि.....।"[10]

दूसरा उप-अध्याय –**"आर्थिक संदर्भ"** है। रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में आर्थिक संदर्भ का मार्मिक चित्रण किया है। गरीबी के कारण ही माता-पिता अपने बच्चे को दूसरे के घर में काम करने के लिए रख देते हैं। ताकि वे अपनी जरूरत को पूरा कर सकें। आर्थिक अभाव के कारण मनुष्य समाज में अच्छा स्थान नहीं पाता। आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर ही मनुष्य समाज में उच्च स्थान पाता है। फिर चाहे वह किसी भी वर्ग का हो। उक्त कथन की पूर्ति 'फुलवा' कहानी में है। "पंडिताइन ने उसे डपटा- तू तो कुएँ का मेढ़क ही रहा रामेसरिया। अब तो पद और पैसे का जमाना है, जात-पाँत का नहीं।"[11] आर्थिक रूप से

कमजोर व्यक्ति को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। 'बदन दबना' कहानी आर्थिक शोषण का सटीक निदर्शन है। कहानी में आर्थिक रूप से कमजोर लोग बच्चों को पैसे लेकर हवेली में छोड़ जाते थे। अमीर गरीबों की मजबूरी का फायदा उठाते थे। वे बच्चों को पाँच साल के लिए बंधवा रखते थे। पूछाराम का पिता अपनी बेटी की शादी के लिए बेटे को बंधवा रख जाता है। पिता पैसे लेकर जाते वक्त बेटे को एक बार भी नहीं देखता। उसे चिंता नहीं थी कि बेटा कैसे रहेगा? अपनी विवशता के कारण ही गरीब पिता अपने बेटे को दूसरों के घर में काम करने के लिए रख जाता है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में आर्थिक शोषण का चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों के पात्रों में धैर्य एवं साहस भरा हुआ है। वे गरीब होते हुए भी ईमानदारी को पहले रखते हैं। वे अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए खूब मेहनत करते हैं। अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ाते हैं। अपने बच्चों को बड़ा अफसर बनाने का सपना देखते हैं। 'फुलवा' कहानी में उनके बच्चों को नौकरी मिलते भी दिखाया है। रत्नकुमार सांभरिया ने आर्थिक स्थिति के साथ-साथ 'भैंस' कहानी में आर्थिक शोषण का भी चित्रण किया है।

पंचम अध्याय –**"रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का शिल्प"** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में नियोजित किया गया है। पहला उप-अध्याय- **"रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की भाषा"** है। इसके अंतर्गत भाषा का अर्थ, परिभाषा एवं रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में प्रयुक्त भाषा को सोदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। किसी भी कहानीकार के लिए भाषा का ज्ञान होना और भाषा में पकड़ होना आवश्यक है। तभी एक रचना सार्थक होगी। क्योंकि भाषा के सहारे ही कहानीकार अपने विचारों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। रत्नकुमार सांभरिया ने तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज शब्दों का प्रयोग किया है। उन्होंने मुहावरे और लोकोक्ति का भी प्रयोग किया है, जिससे भाषा रोचक होने के साथ-साथ सजीव भी हो उठी है। अलंकारों के प्रयोग से उनकी भाषा में मनोरमता है।

उनकी कहानियों में काव्यात्मक, संवादात्मक, चित्रात्मक, प्रतीकात्मक, बिंबात्मक एवं आलंकारिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

दूसरा उप-अध्याय –**"रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का शिल्प"** है। इसके अंतर्गत शिल्प का अर्थ, परिभाषा एवं शिल्प के प्रकारों पर प्रकाश डाला गया है। किसी भी कहानी में कथानक शिल्प का महत्वपूर्ण स्थान है। कथानक ही कथा को रूप प्रदान करता है। शिल्प के अन्य सभी तत्व कथानक को रूप देने का काम करते हैं। प्रत्येक कहानीकार की अपनी विशेष शैली होती है। जिसकी सहायता से कथा को कहानी का रूप दिया जाता है। कहानीकार रत्नकुमार सांभरिया की भी अपनी शैली है। जिसकी सहायता से उन्होंने अपनी कहानियों को एक भिन्न रूप प्रदान किया है। भाषा के माध्यम से कहानीकार अपने विचारों को शब्द रूप देता है तो शैली की सहायता से उन विचारों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

संदर्भ :

1. स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, रेखा कस्तवार, पृ.16
2. समकालीन हिंदी कहानी : दलित विमर्श, मोहम्मद रफी एच हंचिलाल, पृ.44
3. निराला के कथा साहित्य में व्यक्ति एवं समाज का स्वरूप, श्यामधारी नरेश यादव,पृ.158
4. एयरगन का घोड़ा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 215
5. वही, पृ. 125
6. एयरगन का घोड़ा, पृ. 152
7. वही, पृ. 173
8. दलित समाज की कहानियाँ, रत्नकुमार सांभरिया, पृ. 92
9. एयरगन का घोड़ा, रत्नकुमार सांभरिया, पृ . 7
10. दलित समाज की कहानियाँ, पृ . 119
11. वही , पृ. 27

शोध-प्रबंध के महत्वपूर्ण निष्कर्ष

1. रत्नकुमार सांभरिया समकालीन हिंदी कहानीकार हैं।

2. समकालीन कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की समानताओं और असमानताओं को उद्घाटित किया गया है।

3. रत्नकुमार सांभरिया की अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन पर आधारित हैं।

4. उनकी कहानियों के पात्रों में जीने की इच्छा है। साहस का स्वर है। उनके पात्र कष्ट तथा कठिनाइयों से डर कर मरने के बारे में नहीं सोचते हैं। अपने ऊपर हो रहे शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं।

5. रत्नकुमार सांभरिया ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन, दलित जीवन, दिव्यांग जीवन, वृद्ध जीवन आदि से जुड़ी सभी समस्याओं का चित्रण किया है।

6. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में शिक्षा के महत्व को उद्घाटित किया गया है। उन्होंने शिक्षा को जीवन में आगे बढ़ने का माध्यम माना है। शिक्षा से ही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है।

7. उनकी कहानियों में घुमंतू लोगों का चित्रण हुआ है। बेघर लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर जीवन निर्वाह करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्होंने मदारिन, बंजारन, सपेरा, लोहार जैसे लोगों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है।

8. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का वास्तविक चित्रण मिलता है।

9. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में समाज की राजनीतिक (भ्रष्टाचार और सत्ता का दुरूपयोग) और आर्थिक स्थिति का सजीव वर्णन मिलता है। आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति का समाज में कोई स्थान नहीं है। यह समाज की सबसे बड़ी सच्चाई है। उन्होंने अपनी कहानियों के गरीब पात्र को झुकते हुए नहीं बल्कि उनको अपने हक के लिए लड़ते हुए दिखाया है। वे आर्थिक रूप से कमजोर होने पर भी मानसिक रूप से कमजोर नहीं हैं।

10. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की भाषा सहज, सरल, सुबोध तथा शिल्प अनुपम है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ :

1. रत्नकुमार सांभरिया, हुकम की दुग्गी, रचना प्रकाशन, जयपुर, 2003
2. रत्नकुमार सांभरिया, काल तथा अन्य कहानियाँ, रचना प्रकाशन,जयपुर, 2004
3. रत्नकुमार सांभरिया, खेत तथा अन्य कहानियाँ, आधार प्रकाशन, पंचकुला, 2012
4. रत्नकुमार सांभरिया, एयरगन का घोड़ा, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स(प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2016
5. रत्नकुमार सांभरिया, दलित समाज की कहानियाँ, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स(प्रा.) लिमिटेड,नई दिल्ली, 2017

सहायक ग्रंथ :

1. अभय कुमार दुबे, सेकुलर/सांप्रदायिक : एक भारतीय उलझन के कुछ आयाम, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2016
2. अभय कुमार दुबे, आधुनिकता के आईने में दलित, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2020
3. असगर अली इंजीनियर, धर्म और सांप्रदायिकता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
4. उत्पल के. पटेल, भारतीय समाज एवं संस्कृति, पैराडाइज़ पब्लिशर्स, जयपुर, 2018
5. उषा द्विवेदी, निराला का कथा साहित्य वस्तु और शिल्प, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय,कोलकाता, 2004
6. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2013
7. कमला प्रसाद, राजेन्द्र शर्मा, स्त्री : मुक्ति का सपना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
8. कुलदीप सिंह मीना, डॉ. जनक सिंह, भारत की आदिवासी चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
9. कैलाश उपाध्याय, नरेश मेहता के उपन्यासों में चरित्र सृष्टि, श्री निवास पब्लिकेशन, दिल्ली,2008
10. खगेन्द्र ठाकुर, कहानी परंपरा और प्रगति, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2018
11. गिरिधारी लाल शर्मा, कहानी एक कला, ग्रंथ माला प्रकाशन,बांकीपुर, 1941
12. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

13. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास- 2, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, 2014
14. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास - 3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
15. जितेंद्र 'जीतू'(सं.), रत्नकुमार सांभरिया की लघुकथाएँ, वनिका पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2020
16. दानबहादूर पाठक एवं डॉ. मनहरगोपाल भार्गव, भाषा विज्ञान, प्रकाशन केंद्र, लखनऊ, 2015
17. देवेन्द्रनाथ शर्मा, दीप्ति शर्मा, भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
18. धीरजभाई बणकर, कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ, ज्ञान प्रकाशन, 2010
19. नगेन्द्र(सं.), हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबेक्स, नौएडा, 2010
20. नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
21. नीरज शर्मा, अंतिम दशक की हिन्दी कहानियाँ : संवेदना और शिल्प, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
22. प्रेमलता तिवारी, कथाकार राजेंद्र यादव के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व का अनुशीलन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2010
23. प्रेम सिंह, भ्रष्टाचार : विरोध, विभ्रम और यथार्थ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
24. पुरुषोत्तम अग्रवाल, संस्कृति : वर्चस्व और प्रतिरोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
25. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012
26. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2015
27. भारत यायावर(सं), हिन्दी भाषा (महावीर प्रसाद द्विवेदी), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
28. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद, 2009
29. मुकेश भारद्वाज, सत्ता का सत्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
30. रत्नकुमार सांभरिया, वीमा, भभूल्या, उजास तीन नाटक, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, 2020
31. रत्नकुमार सांभरिया, साँप, सेतु प्रकाशन, नौएडा, 2022

32. राघव प्रकाश, शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्यशात्र, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी,जयपुर, 1983
33. राजमणि शर्मा, आधुनिक भाषा विज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
34. राजेन्द्र यादव, कहानी स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020
35. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी, 2006
36. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
37. रामस्वरूप चतुर्वेदी, काव्यभाषा पर तीन निबंध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002
38. विवेक शंकर(सं.), डॉ. अनीता वर्मा, समाजद्रष्टा साहित्यकार रत्नकुमार सांभरिया, दृष्टि प्रकाशन,जयपुर, 2020
39. शरण कुमार लिंबाले(सं.), दलित साहित्य : वेदना और विद्रोह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
40. शशिभूषण शीतांशु, शैली और शैली विश्लेषण, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 1996
41. सच्चिदानंद वात्स्यायन (सं.), सामाजिक यथार्थ और कथाभाषा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली, 1986
42. सुरेंद्र चौधरी, हिंदी कहानी प्रक्रिया और पाठ, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली,2010
43. सूर्यनारायण, दलित चेतना की पहचान, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2012

कोश :

1. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,2021
2. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी मुहावरा कोश, हिन्दी बुक सेंटर,नई दिल्ली, 2010
3. शोभाराम शर्मा, वर्गीकृत हिंदी लोकोक्ति कोश, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1983